राज्य पाठ्यचर्या : फाउण्डेशनल स्टेज- 2023

उत्तर प्रदेश

शिक्षा का अधिकार
समग्र शिक्षा, उत्तर प्रदेश

NIPUN BHARAT

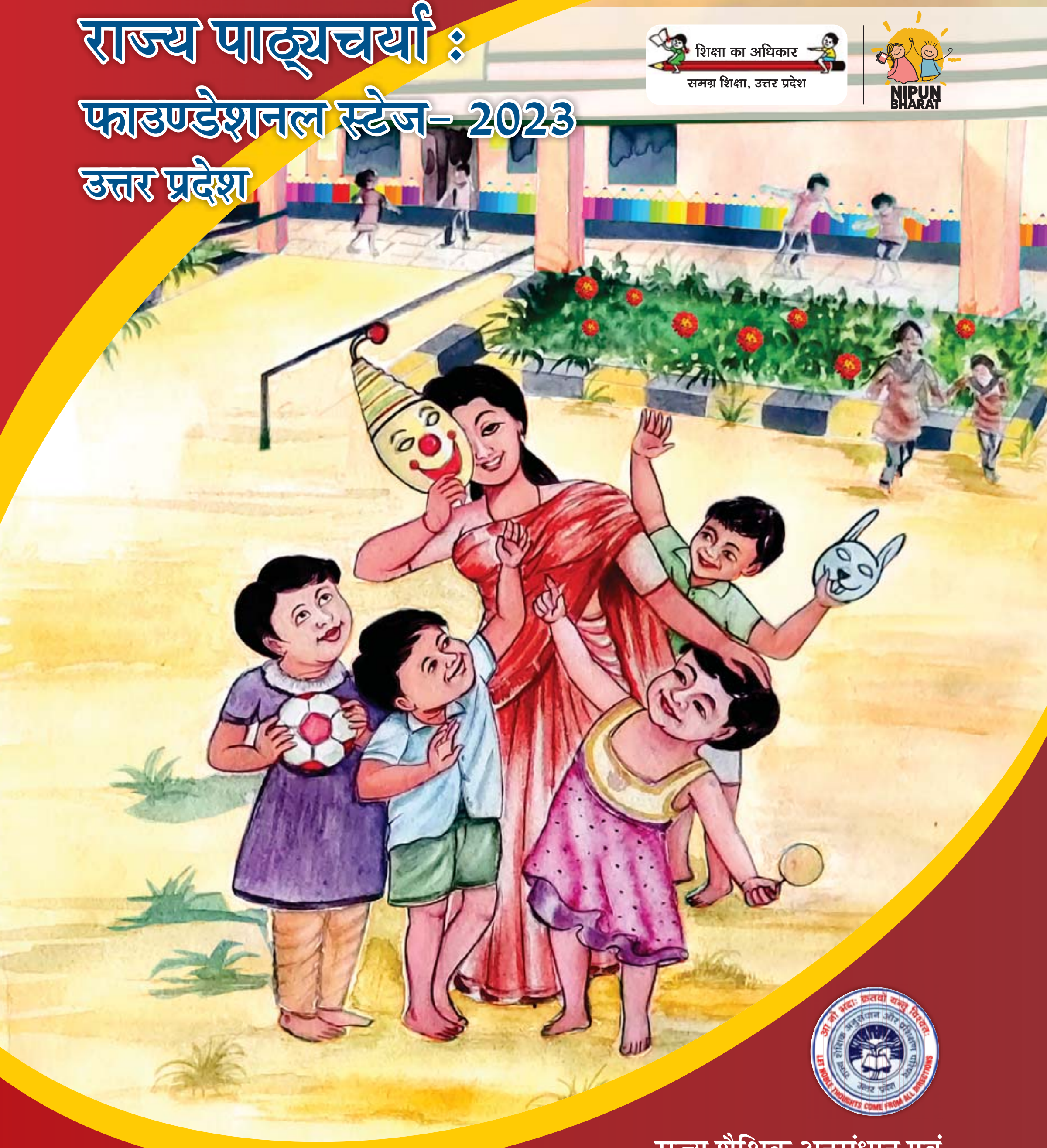

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं
प्रशिक्षण परिषद् उत्तर प्रदेश, लखनऊ

राज्य पाठ्यचर्या

फाउण्डेशनल स्टेज-2023

उत्तर प्रदेश

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
उत्तर प्रदेश, लखनऊ
वर्ष - 2023

मुख्य संरक्षण :

श्री दीपक कुमार, अपर मुख्य सचिव, बेसिक शिक्षा।

संरक्षण :

श्रीमती अपर्णा यू., सचिव बेसिक शिक्षा, उत्तर प्रदेश शासन।

मार्गदर्शन :

श्री विजय किरन आनन्द, महानिदेशक, स्कूल शिक्षा एवं राज्य परियोजना निदेशक, समग्र शिक्षा, उ.प्र., लखनऊ।

निर्देशन :

डॉ. पवन सचान, निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ.प्र. लखनऊ।

सह निर्देशन :

श्रीमती दीपा तिवारी, उप शिक्षा निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ.प्र., लखनऊ।

श्रीमती पुष्पा रंजन, सहायक उप शिक्षा निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ.प्र., लखनऊ।

परामर्श :

डॉ. धीर झींगरन, निदेशक, लैंग्वेज एण्ड लर्निंग फाउंडेशन, डॉ. रंजना अरोड़ा, प्रोफेसर एण्ड हेड, सी.आई.ई.टी., एन.सी.ई.आर.टी., डॉ. रीतू चन्द्रा, उप सचिव, ई.सी.सी.ई. एवं एफ.एल.एन. मिशन, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, प्रो. अनूप कुमार राजपूत, हेड पब्लिकेशन डिविज़न, एन.सी.ई.आर.टी., डॉ. गंगा महतो, असिस्टेंट प्रोफेसर, एन.सी.ई. आर.टी., आर.आई.ई., भोपाल, प्रो. अमिता बाजपेई, शिक्षा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, डॉ. स्कन्द शुक्ला, प्राचार्य, आंग्ल भाषा शिक्षण संस्थान, प्रयागराज, डॉ. उर्वशी साहनी निदेशक, स्टडी हॉल, गोमती नगर, लखनऊ।

समन्वयन एवं समीक्षा :

श्रीमती शिप्रा सिंह, प्रवक्ता–शोध, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ.प्र., लखनऊ।

लेखक मण्डल :

डॉ. अभय सिंह चौहान, प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, लखनऊ, सुश्री अर्चना पाण्डेय, प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, गौतमबुद्ध नगर, श्री परशुराम यादव, प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, देवरिया, श्री दिनेश कुमार, प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, उन्नाव, श्री राकेश कुमार, प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, सहारनपुर, श्री राकेश सिंह, प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, गोरखपुर, डॉ. बृजेश कुमार यादव, प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, उन्नाव, डॉ. फहमीना, प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान,

बरेली, श्री राशिद अली, प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, मुरादाबाद, श्री आकाश दुबे, प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, एटा, श्री देवेन्द्र कुमार दुबे, प्रवक्ता एवं सुश्री गायत्री, प्रवक्ता, राज्य हिन्दी संस्थान, वाराणसी, डॉ. रेनू सिंह, प्रवक्ता एवं सुश्री प्रज्ञा सिंह प्रवक्ता, राज्य शिक्षा संस्थान, प्रयागराज, डॉ. अमरेन्द्र सिंह, प्रवक्ता, राजकीय शिशु प्रशिक्षण महिला महाविद्यालय, प्रयागराज, सुश्री ऋचा पण्डित, स.अ., राजकीय शिशु प्रशिक्षण महिला महाविद्यालय, आगरा, डॉ. कुसुम मानसी द्विवेदी, ए.आर.पी., मवई, अयोध्या, डॉ. रंजना मिश्रा, स.अ., बेसिक विद्यालय, अल्लू नगर, डिगुरिया, चिनहट, लखनऊ, श्री राजेश यादव, एस.आर.जी., कानपुर नगर, श्री राहुल कुमार शुक्ल, एस.आर.जी., बाराबंकी, सुश्री नेहा सिंह, स.अ., पूर्व माध्यमिक विद्यालय टिकरी, बक्शी का तालाब, लखनऊ, डॉ. अम्बिकेश त्रिपाठी, एस.आर.जी., अयोध्या, श्री आशुतोष दुबे, स.अ., उच्च प्राथमिक विद्यालय तालग्राम, कन्नौज, सुश्री नीलिमा सिंह, स.अ., प्रा.वि. आलमपुर, हरदोई, सुश्री निष्ठा मिश्रा, ए.आर.पी., चिनहट, लखनऊ, सुश्री रंजना मिश्रा, स.अ., कम्पोजिट विद्यालय, अहिबनपुर, महमूदाबाद, सीतापुर, श्री दिनेश कुमार वर्मा, स.अ., उच्च प्राथमिक विद्यालय, कोपवा, सिद्धौर, बाराबंकी, सुश्री संतोष राय, स.अ., प्राथमिक विद्यालय, उर्दू अमेठी ब्लॉक–गोसाईगंज, लखनऊ, श्री अनिल चौबे, एस.आर.जी., बरेली, डॉ. सर्वेष्ट मिश्र, प्र.अ., प्राथमिक विद्यालय, मूड़घाट, बस्ती, सुश्री ज्योति सिंह, सुपरवाइजर, बाल विकास सेवा एवं पुष्टाहार विभाग, लखनऊ, सुश्री पूनम यादव, सुपरवाइजर, बाल विकास सेवा एवं पुष्टाहार विभाग, बाराबंकी, सुश्री क्रांति वर्मा, एवं सुश्री अखिलेश रावत, आंगनबाड़ी कार्यकर्त्री, बाल विकास सेवा एवं पुष्टाहार विभाग, बाराबंकी।

सहयोग :

यूनिसेफ, एल.एल.एफ., विक्रमशिला, शिवनाडर फाउंडेशन, केयर इंडिया, सेंट्रल स्क्वेअर फाउंडेशन।

कवर डिज़ाइन :

डॉ. परशुराम यादव, प्रवक्ता–कला, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, देवरिया।

तकनीकी सहयोग :

श्री हसरत हुसैन, कम्प्यूटर सहायक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ.प्र., लखनऊ।

दीपक कुमार
आई.ए.एस.
अपर मुख्य सचिव

अर्द्धशा.प.स. ..../..................../ 2023
बेसिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा,
एवं वित्त विभाग
उत्तर प्रदेश शासन
लखनऊ : दिनाँक 25.09.2023

संदेश

शिक्षा न केवल ज्ञान का स्रोत है, बल्कि वह समाज के सभी क्षेत्रों में सुधार व प्रगति की मुख्य कुंजी होती है। संस्कृत में सूक्ति है– 'किं किं न साधयति कल्पलतैव विद्या' अर्थात विद्या उस कल्पलता की भाँति है, जिससे किसी भी मनोरथ को पूर्ण किया जा सकता है। शिक्षा व्यक्ति के साथ राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करती है। यह तभी संभव है, जब प्रारम्भिक वर्षों में शिक्षा की सुदृढ़ नींव रखी जाए। इस स्तर पर बच्चे अपनी रूचियों, आदतों व क्रियाओं को व्यवस्थित रूप से अभिव्यक्त करते हुए खेल–खेल में सीखते हैं। यह भी महत्वपूर्ण है कि बच्चों को किस प्रकार का पाठ्यक्रम, पाठ्यसामग्री व वातावरण उपलब्ध हो रहा है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में प्रारम्भिक स्तर (3–8 वय वर्ग) पर सीखी गयी भाषा एवं संख्या सम्बंधी बुनियादी संक्रियाओं को करने की क्षमता को, सीखने की बुनियाद तथा भविष्य की शिक्षा की पूर्व शर्त माना गया है। इस क्रम में एन.सी.आर.टी. द्वारा ''राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा : फाउण्डेशनल स्टेज'' जारी की गयी, जिसके आलोक मे राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ.प्र., द्वारा ''राज्य पाठ्यचर्या : फाउण्डेशनल स्टेज'' का विकास कराया गया। राज्य स्तर पर अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप ''राज्य पाठ्यचर्या : फाउण्डेशनल स्टेज'' विकसित किया जाना, राज्य की विशिष्टताओं एवं बच्चों की गुणवत्तापरक शैक्षिक उपलब्धियों हेतु उपयोगी एवं सार्थक प्रयास है।

उत्तर प्रदेश सांस्कृतिक परिवेशीय एवं सामाजिक रूप से विभिन्नताओं वाला प्रदेश है। प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों की बोली, रीति–रिवाज, परम्पराएँ एक दूसरे से अलग–अलग हैं। फाउण्डेशनल स्टेज पर बच्चों के लिए उचित वातावरण, पोषण, देखभाल, मार्गदर्शित एवं निर्देशित तथा स्वतंत्र खेल अत्यन्त आवश्यक होते हैं। इस पाठ्यचर्या में उपरोक्त बिन्दुओं का समावेशन करते हुए शिक्षक, अभिभावक, समाज एवं राज्य के स्तर पर उठाए जाने वाले महत्वपूर्ण प्रयासों को भी रेखांकित किया गया है। राज्य पाठ्यचर्या मे समाहित नैतिक मूल्य, परिवेशीय वातावरण एवं संसाधनों का समावेशन इसे और मजबूती देता है।

उत्तर प्रदेश द्वारा इस पाठ्यचर्या का विकास उच्च स्तरीय मानकों के अनुरूप अत्यन्त अल्प समय में कराया गया है। इस हेतु मैं डॉ. पवन सचान, निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ.प्र. तथा उनकी पूरी टीम को बधाई देता हूँ। मुझे आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि अगामी वर्षों में इस पाठ्यचर्या के सुखद परिणाम हम सभी के समक्ष होंगे, जो भविष्य में उत्तर प्रदेश को शिक्षा की गुणवत्ता के उच्च फलक पर लेकर जायेगा।

(दीपक कुमार)

डॉ. पवन सचान
निदेशक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, उत्तर प्रदेश, लखनऊ।
फोन (कार्यालय) : 0522–780385, 2780505
फैक्स : 0522–2781125
ई–मेल : dscertup@gmail.com

प्राक्कथन

बच्चे राष्ट्र का भविष्य हैं, युग निर्माता हैं, ऐसे नन्हें बीज हैं, जो प्रस्फुटित होकर विशाल वट वृक्ष की तरह अपने व्यक्तित्व का विकास करते हुए, अपने समाज के विकास में योगदान करते हैं और प्रदेश तथा देश को वैश्विक स्तर पर लाकर कीर्तिमान स्थापित करते हैं। उन्हें आवश्यकता होती है तो बस एक कुशल शिक्षक के निर्देशन एवं मनोवैज्ञानिक शिक्षण की। प्रारिम्भक स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का समाज में व्यक्ति को स्थापित करने एवं सम्मानपूर्वक सहज जीवन व्यतीत करने में महत्वपूर्ण योगदान है। इसके लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, प्रारम्भिक बाल्यावस्था से ही बच्चों को भावी जीवन के लिए तैयार करने हेतु प्रतिबद्ध है। इसी क्रम में उत्तर प्रदेश राज्य के लिए उसके वर्तमान परिदृश्य एवं परिस्थितियों के अनुरूप 3 से 8 वय वर्ग के बच्चों की नींव को मजबूत करने एवं समृद्ध आधारशिला के निर्माण के उद्देश्य से **राज्य पाठ्यचर्या: फाउण्डेशनल स्टेज** का विकास किया गया है।

इस राज्य पाठ्यचर्या में न केवल शिक्षा के सैद्धान्तिक पक्ष को देखा गया है, अपितु बच्चे के समग्र विकास हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में उल्लिखित संस्तुतिओं, अवधारणाओं तथा व्यावहारिक अनुभवों को दृष्टिगत रखते हुए, खेल आधारित अधिगम शिक्षण तथा साथ–साथ बच्चों में संवेगात्मक, सामाजिक, भावनात्मक विकास के पक्षों को प्राथमिकता प्रदान की गयी है, जिससे उत्तर प्रदेश में प्रचलित संस्कृतियों, रीतियों, परंपराओं, स्थानीय बोलियों तथा परिवेशीय विभिन्नताओं में समावेशन के साथ बच्चों की सीखने–सिखाने की प्रक्रिया सुगम एवं प्रभावी बन सके।

उत्तर प्रदेश राज्य द्वारा फाउण्डेशनल स्टेज हेतु विकसित यह राज्य पाठ्यचर्या, अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार के साथ–साथ पुनरावृत्ति, उपचारात्मक शिक्षण तथा आनन्दपूर्ण आकलन की बात करती है। यही कारण है कि रटने के स्थान पर समझ विकसित करने के प्रयासों को महत्व दिया गया है, ताकि हम मात्र अंकपत्र के आधार पर नहीं बल्कि विकास की प्रक्रियाओं और नैतिक मूल्यों को देखते हुए मापन एवं आकलन करें। राज्य पाठ्यचर्या: फाउण्डेशनल स्टेज में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के आधार पर बच्चों के साथ उनकी

भाषा (L1) में सहजता से वार्तालाप द्वारा बाल मन को विद्यालय में घर जैसा वातावरण देने की अनुशंसा की गयी है।

विज्ञान और मशीनीकरण ने आधुनिकता का अर्थ इस प्रकार बदला है कि संवेदना और आत्मीय संबन्ध दोनों के ही पर्याय तेजी से बदल रहे हैं। ऐसे में यह पाठ्यचर्या संस्कार, कर्त्तव्यबोध, मानवता, परोपकार, नैतिकता के बीजारोपण हेतु नैतिक शिक्षा के सहयोग से आदर्श नागरिक निर्माण हेतु प्रतिबद्ध है। इस पाठ्यचर्या का निर्माण उत्तर प्रदेश के शैक्षिक परिदृश्य, भविष्य की आवश्यकताओं तथा बच्चों, शिक्षकों, अभिभावकों तथा विद्यालयों की आकांक्षाओं एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए किया गया है।

राज्य पाठ्यचर्या: फाउण्डेशनल स्टेज के विकास में मार्गदर्शन हेतु मैं श्री विजय किरन आनन्द, महानिदेशक, स्कूल शिक्षा एवं राज्य परियोजना निदेशक, समग्र शिक्षा, उत्तर प्रदेश को विशेष धन्यवाद देता हूँ, जिनके नेतृत्व व समय–समय पर दिये गए अमूल्य दिशा–निर्देश पाठ्यचर्या के निर्माण में पथ प्रदर्शक रहे हैं। इस पाठ्यचर्या के विकास में सहनिर्देशन हेतु मैं श्रीमती दीपा तिवारी, उप शिक्षा निदेशक, श्रीमती पुष्पा रंजन, सहायक उप शिक्षा निदेशक, समन्वयन एवं समीक्षा हेतु श्रीमती शिप्रा सिंह, प्रवक्ता–शोध, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश, लखनऊ तथा उनके सहयोगी लेखक मण्डल को बधाई देता हूँ, जिन्होंने परिश्रम एवं प्रतिबद्धता से उक्त पाठ्यचर्या का विकास किया।

मुझे आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि फाउण्डेशनल स्टेज हेतु विकसित यह राज्य पाठ्यचर्या, फाउण्डेशनल स्टेज के पाठ्यक्रम के विकास तथा शिक्षण एवं अन्य सहायक सामग्री के विकास में शिक्षकों तथा अन्य हितधारकों का मार्गदर्शन करेगी। इसके साथ ही शिक्षा के विकास की यह अनोखी पहल सकारात्मक कक्षा–कक्षीय वातावरण की विभिन्न प्रक्रियाओं को पूर्ण करते हुए बच्चों में दक्षताओं एवं कौशलों के विकास को सुनिश्चित कर उन्हें सफल एवं आदर्श नागरिक बनाने में सक्षम होगी और शिक्षा के नए आयाम गढ़ेगी।

सितम्बर, 2023

डॉ. (पवन सचान)
निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद, उ.प्र. लखनऊ

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	**अध्याय 1 : प्रस्तावना एवं परिचय** ❖ खण्ड 1.1 : परिचय ❖ खण्ड 1.2 : प्रारम्भिक बाल्यावस्था एवं शिक्षा का विकास ❖ खण्ड 1.3 : फाउण्डेशनल स्टेज में बच्चे सीखते कैसे हैं ? ❖ खण्ड 1.4 : फाउण्डेशनल स्टेज के लिये विद्यालयी संदर्भ	1—3
2.	**अध्याय 2 :फाउण्डेशनल स्टेज में पाठ्यचर्या के लक्ष्य, उद्देश्य, दक्षताएँ और सीखने के प्रतिफल** ❖ खण्ड 2.1 : परिभाषाएँ ❖ खण्ड 2.2 : लक्ष्य से सीखने के प्रतिफल तक ❖ खण्ड 2.3 : पाठ्यचर्या के उद्देश्य ❖ खण्ड 2.4 : दक्षताएँ ❖ खण्ड 2.5 : उदाहरणात्मक सीखने के प्रतिफल	4—17
3.	**अध्याय 3 : फाउण्डेशनल स्टेज में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया** ❖ खण्ड 3.1 : शिक्षण शास्त्र के सिद्धान्त ❖ खण्ड 3.2 : कक्षा—कक्ष प्रक्रियाओं की रणनीतियाँ ❖ खण्ड 3.3 : खेल—खेल में सीखना ❖ खण्ड 3.4 : शिक्षक और बच्चे के बीच सकारात्मक सम्बन्धों का निर्माण ❖ खण्ड 3.5 : शिक्षक, अभिभावक और समुदाय के बीच सम्बन्ध	18—37
4.	**अध्याय 4 : फाउण्डेशनल स्टेज पर भाषा शिक्षा एवं साक्षरता** ❖ खण्ड 4.1 : प्रारम्भिक स्तर पर भाषा शिक्षा एवं साक्षरता ❖ खण्ड 4.2 : फाउण्डेशनल स्टेज में भाषा शिक्षा और साक्षरता पर राज्य पाठ्यचर्या : फाउण्डेशनल स्टेज का दृष्टिकोण ❖ खण्ड 4.3 : प्रारम्भिक भाषा और साक्षरता के घटक	38—51

	❖ खण्ड 4.4 : मूलभूत साक्षरता के कौशल ❖ खण्ड 4.5 : संतुलित साक्षरता दृष्टिकोण ❖ खण्ड 4.6 : साक्षरता शिक्षण के लिए चार–ब्लॉक पद्धति ❖ खण्ड 4.7 : शिक्षण योजना निर्माण के पाँच चरण ❖ खण्ड 4.8 : मूलभूत साक्षरता एवं भाषा शिक्षा से संबन्धित उत्तर प्रदेश का संदर्भ	
5.	**अध्याय 5 : फाउण्डेशनल स्टेज में गणितीय शिक्षण सम्बन्धी पाठ्यक्रम सामग्री एवं अधिगम शिक्षण सामग्री** ❖ खण्ड 5.1 : गणित शिक्षण ❖ खण्ड 5.2 : बुनियादी संख्यात्मकता ❖ खण्ड 5.3 : मूलभूत संख्यात्मकता के घटक ❖ खण्ड 5.4 : गणित शिक्षण हेतु दृष्टिकोण ❖ खण्ड 5.5 : गणित शिक्षण सम्बन्धी पद्धतियाँ ❖ खण्ड 5.6 : गणित शिक्षण सम्बन्धी प्रक्रियाएँ ❖ खण्ड 5.7 : गणित शिक्षण के लिए ब्लॉक्स ❖ खण्ड 5.8 : परिवेशीय संसाधनों के माध्यम से गणित सीखना ❖ खण्ड 5.9 : बेसिक शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित कार्यक्रम	**52–72**
6.	**अध्याय 6 : फाउण्डेशनल स्टेज में अन्य मुद्दों से सम्बंधित पाठ्यक्रम सामग्री एवं शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया** ❖ खण्ड 6.1 : जागरूकता ❖ खण्ड 6.2 : सामाजिक–भावनात्मक एवं नैतिक अधिगम विकास ❖ खण्ड 6.3 : लिंग संवेदीकरण ❖ खण्ड 6.4 : दिव्यांगता संवेदीकरण ❖ खण्ड 6.5 : सुरक्षा एवं संरक्षा के आयाम ❖ खण्ड 6.6 : मनो–सामाजिक विकास	**73–86**

7.	**अध्याय 7 : सीखने–सिखाने की विभिन्न विधियाँ एवं वातावरण** ❖ खण्ड 7.1 : सीखने की विधियाँ ❖ खण्ड 7.2 : सीखने के क्रियाकलाप ❖ खण्ड 7.3 : विविधतापूर्ण तथा समावेशी अधिगम सामग्री का प्रयोग	87–98
8.	**अध्याय 8 : गतिविधियों के क्रियान्वयन की योजना एवं सहायक सामग्री** ❖ खण्ड 8.1 : गतिविधियों के क्रियान्वयन की मुख्य बातें ❖ खण्ड 8.2 : संस्थागत व्यवस्था ❖ खण्ड 8.3 : शैक्षिक व्यवस्था ❖ खण्ड 8.4 : वार्षिक योजना ❖ खण्ड 8.5 : पाठ्यक्रम के अनुरूप सामग्रियों का चयन	99–109
9.	**अध्याय 9 : आनन्दपूर्ण आकलन** ❖ खण्ड 9.1 : आकलन के प्रकार ❖ खण्ड 9.2 : आकलन के उद्देश्य ❖ खण्ड 9.3 : आकलन के तरीके ❖ खण्ड 9.4 : आकलन के माध्यम और उपकरण ❖ खण्ड 9.5 : आकलन का विश्लेषण ❖ खण्ड 9.6 : आकलन का दस्तावेजीकरण और सम्प्रेषण ❖ खण्ड 9.7 : आकलन का उपयोग ❖ खण्ड 9.8 : समग्र प्रगति पत्रक	110–128
10.	**अध्याय 10 : एकीकृत, समावेशी एवं सुरक्षित वातावरण निर्माण, दिन की योजना** ❖ खण्ड 10.1 : समावेशी वातावरण ❖ खण्ड 10.2 : समावेशी कक्षा ❖ खण्ड 10.3 : विकासात्मक विलम्बन ❖ खण्ड 10.4 : समावेशी वातावरण बनाने हेतु सुझाव ❖ खण्ड 10.5 : समय का नियोजन	129–143

11.	**अध्याय 11 : शिक्षण में सहयोगी पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण** ❖ खण्ड 11.1 : सीखने हेतु परिवेशीय संसाधन एवं अनुकूल समुचित वातावरण का सृजन करना ❖ खण्ड 11.2 : अकादमिक और प्रशासनिक पदाधिकारियों की भूमिका ❖ खण्ड 11.3 : प्रारम्भिक बाल्यावस्था में परिवार एवं समुदाय की भूमिका	**144—152**
12.	**अध्याय 12 : शिक्षण के लिए पाठ्यक्रम का विकास, विषयवस्तु का चयन, संगठन और संदर्भीकरण** ❖ खण्ड 12.1 : पाठ्यक्रम का विकास ❖ खण्ड 12.2 : विषयवस्तु चयन के सिद्धान्त ❖ खण्ड 12.3 : विषयवस्तु को संगठित करने की पद्धतियाँ ❖ खण्ड 12.4 : अधिगम शिक्षण सामग्री ❖ खण्ड 12.5 : पुस्तकें एवं पाठ्यपुस्तकें ❖ खण्ड 12.6 : सीखने का सौहार्दपूर्ण वातावरण	**153—181**
13.	**भविष्य की संभावनाएँ**	**182**
14.	**संदर्भ (References)**	**183**
15.	**राज्य पाठ्यचर्या : फाउण्डेशनल स्टेज का विकासशील स्वरूप एवं समावेशन**	**184**

अध्याय-1

प्रस्तावना और परिचय

1.1 परिचय

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, इक्कीसवीं शताब्दी की पहली शिक्षा नीति है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का लक्ष्य देश के विकास की अनिवार्य आवश्यकताओं को सुनिश्चित करना है। यह नीति प्रत्येक व्यक्ति में निहित रचनात्मक क्षमताओं के विकास पर विशेष बल देती है।

फाउण्डेशनल स्टेज पर राज्य पाठ्यचर्या का विकास राज्य के संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के लक्ष्यों को क्रियान्वित करने एवं उन्हें सक्षम बनाने के लिए महत्वपूर्ण है। राज्य पाठ्यचर्याः फाउण्डेशनल स्टेज को पूर्ण विकसित करने की प्रक्रिया में पाठ्यचर्या के लक्ष्य, उद्देश्य, पाठ्यक्रमीय विषयवस्तु, पेडागॉजी, आकलन एवं विद्यालयी संदर्भ में सीखने–सिखाने के वातावरण को सम्मिलित करना अति आवश्यक हो जाता है।

राज्यों को इस हेतु पर्याप्त अवसर प्रदान किये गये हैं कि वह अपनी विशिष्ट राज्य संदर्भित पाठ्यचर्या की रूखरेखा के प्रति अपने दृष्टिकोण को सुनिश्चित कर सकें। अतः उत्तर प्रदेश द्वारा अपने उपलब्ध संसाधनों, सांस्कृतिक विरासतों, संवैधानिक अधिकार एवं कर्तव्यों तथा सीखने–सिखाने के उपलब्ध परिवेषीय वातावरण को राज्य पाठ्यचर्या में सम्मिलित करना एक महत्वपूर्ण एवं सार्थक प्रयास होना चाहिए।

1.2 प्रारम्भिक बाल्यावस्था एवं शिक्षा का विकास

प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा से तात्पर्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 की संस्तुतियों के आधार पर 5+3+3+4 ढाँचे की प्रारम्भिक 3 वर्ष की आयु से 8 वर्ष की आयु है। इस ढाँचे में 3 वर्ष की आयु से अधिक के बच्चों को शामिल करना एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में माना गया है, जिससे आगे चलकर बच्चे बेहतर विकास के साथ नये आयाम की ओर बढ़ सकेंगे तथा मजबूत नींव के आधार पर एक खुशहाल एवं उपलब्धिपरक जीवन पथ पर अग्रसर हो सकेंगे।

बच्चों के मस्तिष्क का 85 प्रतिशत विकास प्रारम्भिक 6 वर्ष की आयु तक हो जाता है। बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास की यह अति महत्वपूर्ण आयु मानी गयी है। राज्य पाठ्यचर्या में 3 से 8 वर्ष की अवस्था के बच्चों पर विशेष ध्यान केन्द्रित करने से उन्हें आगे बढ़ने के पर्याप्त अवसर प्रदान हो सकेंगे। 3 वर्ष से अधिक की आयु के बच्चे अपने घर एवं परिवार से प्रारम्भिक भाषायी दक्षताओं को प्राप्त करना आरम्भ कर लेते हैं। राज्य में बहुत सारे बच्चे 6 वर्ष तक की आयु पूर्ण कर सीधे कक्षा 1 में प्रवेश पाते हैं। ऐसे बच्चे अपने बाल्यावस्था शिक्षा एवं देखभाल के शुरूआती 3 वर्ष गैर संस्थागत एवं गैर प्रणालीगत तरीके से पूर्ण करते हैं, जो कि किसी भी दशा में उचित नहीं है। ऐसी स्थिति में राज्य पाठ्यचर्या : फाउण्डेशनल स्टेज के माध्यम से यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि राज्य के सभी बच्चों की प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा एवं देखभाल का कार्य नियोजित व व्यवस्थित रहे।

प्रारम्भिक बाल्यावस्था में बच्चों का स्वास्थ्य एक महत्वपूर्ण कारक है, जो सीधे बच्चों के सीखने को प्रभावित कर सकता है। इस अवस्था में यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि प्रारम्भिक बाल्यावस्था में बच्चे स्वस्थ एवं स्वच्छ वातावरण में सीख रहे हों, बढ़ रहे हों।

1.3 फाउण्डेशनल स्टेज में बच्चे सीखते कैसे हैं

उत्तर प्रदेश के ग्रामीण परिवेश में बहुत सारे बच्चे संयुक्त परिवारों में बड़े होते हैं। वे धीरे–धीरे परिवेश एवं संयुक्त परिवार से एकल परिवारों, क्रैच आदि में बड़े हो रहे बच्चों से कुछ ज्यादा ही सीखते हैं। यह सीखने की प्रक्रिया जाने–अनजाने निरन्तर गतिमान रहती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 की प्राथमिकताओं में से एक और सबसे बड़ी प्राथमिकता 3 वर्ष की आयु से अधिक के सभी बच्चों को संरचनात्मक विकास के अधिकतम अवसर उपलब्ध कराना है, जिससे बच्चों को शारीरिक, मानसिक विकास एवं पोषण के पर्याप्त संसाधन उपलब्ध हो सकें।

[illegible] उनका शारीरिक और गत्यात्मक, सामाजिक–भावनात्मक, संज्ञानात्मक, सम्प्रेषण (घर की भाषा में) तथा संख्या ज्ञान की मौखिक शुरूआती समझ आदि पर विकास सम्भव हो सकेगा। 3 वर्ष से अधिक आयु के बच्चों में शुरूआती सीखने की यह गतिविधियाँ अनुभव के आधार पर निश्चित रूप से आरम्भ हो जानी चाहिए। जैसे–जैसे बच्चे 4–5 वर्ष की आयु पूर्ण कर रहे होंगे, वे अपनी संस्था में समूह में कार्य करना, अपना विचार बनाना तथा व्यक्त करना (राय देना), नेतृत्व प्रदान करना, अच्छी आदतों में विकास की शुरूआत आदि सीख रहे होंगे। यहाँ हम बच्चों को नैतिक गुणों में विकास हेतु कुछ अनुभव एवं वातावरण उपलब्ध करा सकते हैं। नैतिक गुणों के विकास हेतु किसी ज्ञान अथवा उपदेश को थोपने या सीधे प्रदान करने की आवश्यकता नहीं, बल्कि वे उनमें व्यावहारिक प्रक्रिया द्वारा स्वयं से विकसित होने चाहिए।

खेल आधारित शिक्षा का आरम्भ भी इसी आयु में हो जाता है। खेल आधारित शिक्षा से बच्चों में उनकी जिज्ञासा, सृजनात्मकता, टीम भावना का विकास, सहानुभूति–समानुभूति, समावेशिता, आस–पास के वातावरण एवं साथियों के साथ समावेशन की क्षमताओं का विकास सम्भव हो पाता है। इन्हीं गतिविधियों से बच्चों की जन्मजात प्रवृत्तियों एवं क्षमताओं का भी पता लगाया जा सकता है।

इस आयु में बच्चे खेल द्वारा बहुत तीव्रता से सीखते हैं। खेल एकल अथवा सामूहिक हो सकते हैं। जहाँ तक सम्भव हो, संस्थागत ढाँचे में उनकी आयु के प्रतिभागियों से बने समूहों के खेलों को प्राथमिकता प्रदान करें।

3–5 वर्ष की आयु में घर–परिवार एवं संस्था के सदस्यों का भी यह दायित्व रहेगा कि वे बच्चों के सीखने में एक प्रेरक एवं मार्गदर्शक की भूमिका का निर्वहन निरन्तर करते रहें। इसके लिये सस्थाएँ एवं अभिभावक दोनों की ही ओर से खुली चर्चा इसका माध्यम बने। यह कहानियों, घटनाओं अथवा समस्या समाधान की क्रियाओं द्वारा सम्भव किया जा सकता है।

हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि बच्चों के पंचकोश यथा – अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश और आनंदमय कोश इत्यादि के विकास (सर्वांगीण विकास) हेतु एक सौहार्दपूर्ण एवं सुव्यवस्थित दिनचर्या का होना अतिआवश्यक है जिससे बच्चे सुरक्षा भाव के साथ उस समयावधि में क्या–क्या करें, सुनिश्चित हो।

1.4 फाउण्डेशनल स्टेज के लिये विद्यालयी संदर्भ

3 से 8 वर्ष की आयु में बच्चों के पोषण एवं देखभाल की सबसे अधिक आवश्यकता होती है क्योंकि इस आयु में बच्चे अत्यंत शीघ्रता के साथ सीख एवं बढ़ रहे होते हैं। सीखने की इस प्रक्रिया में संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका हो जाती है। इससे पूर्व 3 वर्ष तक की आयु में अपने अनुभवों से, देखकर, दोहराकर, नकल करके या जिज्ञासा के आधार पर बच्चे जो कुछ भी सीखते हैं, वह ढाँचागत या प्रणालीगत नहीं होता है। उन सारे सीखने के अनुभवों को एक स्थान पर एकत्र कर सीखने की प्रक्रिया को ढाँचागत तरीके से आगे बढ़ाने में संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में कहा गया है, कि संस्थायें ऐसी हों जहाँ प्रत्येक छात्र का स्वागत किया जाता हो, उसकी देखभाल की जाती हो। जहाँ बच्चा

स्वयं को सदैव सुरक्षित पाता हो।

3 वर्ष की आयु के पश्चात् बच्चों के लिये राज्य में ऐसी संस्थाओं की संकल्पना की जायेगी, जिसमें छात्रों को अनुभव प्राप्त करने एवं स्वयं करके सीखने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध हों। प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा हेतु बच्चों को ऐसी संस्थायें उपलब्ध करायी जाए, जिनमें आनन्ददायी वातावरण में सभी आयामों खेल, गतिविधि, कविताएं, नाटक, गीत के साथ सीखने के अधिक से अधिक अवसर उपलब्ध हों। विद्यालय या केन्द्र ऐसा स्थान होगा जहाँ बच्चों–बच्चों के बीच तथा शिक्षक–बच्चों के बीच सामंजस्य दिखायी दे रहा हो। समावेशन की प्रक्रिया सहज एवं प्राकृतिक रूप से परिलक्षित हो रही हो। संस्थाओं अथवा केन्द्रों पर बच्चों को उनकी क्षेत्रीय या घरेलू भाषा के साहित्य जैसे परिवेशीय पशु–पक्षियों, कृषि उपकरणों, धरोहरों, व्यक्तियों एवं घटनाओं के चित्रण पर बाल साहित्य आदि सामग्री युक्त पुस्तकालय हों, जहाँ बच्चे उपलब्ध सामग्री का अपनी रूचियों एवं आवश्यकताओं के अनुरूप उपयोग कर रहे हों।

इसी आयु वर्ग में बच्चों को संज्ञानात्मक एवं सामाजिक–भावनात्मक विकास हेतु प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं दृढ़ता प्रदान की जानी चाहिए। इस आयु के बच्चे अपने घर एवं परिवार से स्वयं में अधिक व्यस्त रहने, मोबाइल या अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों पर कार्य करने विशेषतः खेल खेलते नजर आते हैं। उनकी अपनी दुनिया स्वयं तक सीमित रहती है किन्तु जब वे किसी संस्था से जुड़ते हैं, वहाँ उनको अन्य बच्चों के साथ, शिक्षकों के साथ तथा संस्था के साथ भी समायोजन का अवसर मिलता है। वे टीम बनाते हैं, नेतृत्व प्रदान करते हैं तथा दूसरों के नेतृत्व को स्वीकार करते हैं। यह उनके सामाजिक–भावनात्मक विकास की पहली सीढ़ी होती है। संस्थाओं का यह दायित्व रहेगा कि सतर्कता एवं निगरानी के साथ इस पर पूर्ण सकारात्मकता से कार्य करें।

संस्था के माध्यम से विभिन्न गतिविधियों द्वारा बच्चों में संवैधानिक अधिकारों एवं कर्तव्यों के प्रति जागरूक करते हुए अत्यंत व्यवहारिक रूप से, उनमें नैतिक मूल्यों के विकास की प्रक्रिया आरम्भ की जानी चाहिए।

3 से 8 वर्ष की आयु में संस्थाएं ऐसा वातावरण विकसित करें कि सीखने–सिखाने की प्रक्रिया केवल संस्था तक ही सीमित न रहे, बल्कि यह बच्चों के घर–परिवार एवं समाज तक जाये। बच्चे विद्यालय में, विद्यालय से बाहर, परिवार में कहीं भी बेझिझक सवाल कर रहे हों, अपनी जिज्ञासाएँ उजागर कर रहे हों। शिक्षक और अभिभावक कभी भी बच्चों को इसके लिये रोकें नहीं, न ही चुप करायें। बच्चों के शिक्षकों एवं अभिभावकों आदि सभी का यह दायित्व रहेगा कि वे बच्चों की जिज्ञासाएँ शान्त करने को निरन्तर प्रयासरत रहें तथा उनके द्वारा किये गये प्रश्नों के उत्तर के नजदीक तक ले जायें।

इस आयु में अभिभावक, शिक्षक एवं स्वयं बच्चों का भी निजी दायित्व रहेगा कि वे सीखने की इस औपचारिक एवं अनौपचारिक प्रक्रिया पर निरन्तर समालोचनात्मक एवं सकारात्मक दृष्टिकोण रखें। इस दौरान यह भी आवश्यक है कि बच्चों के क्रियाकलापों, उनके उत्तरों, प्रश्नों एवं व्यवहारों द्वारा ही उनकी सीखने की प्रगति का पता लगायें। उनके अनुभवों, विचारों को महत्व प्रदान करें तथा अपने विचारों से सरल भाषा में उन्हें अवगत करायें एवं आवश्यकतानुसार आगे बढ़ने हेतु निरंतर प्रेरित करते रहें।

❖❖❖

अध्याय-2

फाउण्डेशनल स्टेज में पाठ्यचर्या के लक्ष्य, उद्देश्य, दक्षताएँ और सीखने के प्रतिफल

2.1 परिभाषाएँ

प्रस्तुत अध्याय में प्रयुक्त कुछ महत्वपूर्ण शब्दों को परिभाषित किया गया है जिससे हम इन शब्दों को सही अर्थों मे समझ सकें।

(क) शिक्षा के लक्ष्यः–

किसी कार्य को दिशा प्रदान करने के लिए लक्ष्य का निर्धारण किया जाता है। यह क्रिया या अभ्यास हमेशा ही लक्ष्य के आधार पर संचालित की जाती है। शिक्षा में लक्ष्य के सम्बन्ध में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 बताती है कि **"शिक्षा प्रणाली का लक्ष्य अच्छे इन्सान का विकास करना है, जो विवेकशील, तर्कसंगत और कर्म करने में सक्षम हो, जिसमें करुणा और समानुभूति, साहस और लचीलापन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और रचनात्मक कल्पनाशक्ति, साथ ही ठोस नैतिक आधार और मूल्य हों। इसका लक्ष्य हमारे संविधान द्वारा परिकल्पित, न्यायसंगत, समावेशी और बहुलतावादी समाज के निर्माण के लिए सजग, उत्पादक और योगदान करने वाले नागरिकों को तैयार करना है।"**

लक्ष्य मूलतः सामाजिक पृष्ठभूमि से जुड़े हुए होने चाहिए। इनका संबंध पाठ्यचर्या के समस्त विषयों से प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से होना चाहिए और साथ ही इसकी प्रकृति व्यापकता लिए हुए हो। उदाहरण के तौर पर अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में उत्तर प्रदेश के विशेष सन्दर्भ को ध्यान में रखते हुए सामाजिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक परिवेश में कक्षा एक की छात्रा जिसमें समाज एवं राष्ट्र की आवश्यकतानुसार सुयोग्य नागरिक के गुण विकसित होने हैं उसके लिए हमें उसे एक लचीला, वैज्ञानिक, कल्पनायुक्त, साहस और करुणा से पूर्ण ऐसा वातावरण उपलब्ध कराना होगा जिसमें हमारे द्वारा परिकल्पित लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।

(ख) पाठ्यचर्या के उद्देश्यः–

पाठ्यचर्या के उद्देश्य देश की नीति एवं योजनाओं के क्रियान्वयन एवं मूल्यांकन की प्रक्रिया को निश्चित आधार प्रदान करते हैं। ये उद्देश्य व्यापक स्तर पर निर्धारित लक्ष्यों से प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए होते हैं और स्वयं की प्रकृति के अनुरूप विशिष्ट प्रकार के होते हैं। पाठ्यचर्या निर्धारण के समय स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप कुछ विशेष उद्देश्यों को ध्यान में रखना अत्यन्त आवश्यक होता है, जैसे– बहुमुखी विकास, अंतर्निहित शक्तियों को जागृत करना, सामाजिक गुणों का विकास, कर्त्तव्यपालन की भावना, आदर्श नागरिक के गुणों का विकास, कल्पनाशक्ति, चिंतन, निर्णयन तथा तर्कशक्ति का विकास करना और जीवन मूल्यों का निर्माण करना तथा अभिभावकों की अपेक्षा आदि। पाठ्यचर्या शिक्षकों के अनुदेशों को नियोजित करने में सहायक होती है और साथ ही अधिगम अनुभवों की गुणवत्ता तथा

सार्थकता ही पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन को उचित दिशा प्रदान करती है।

(ग) दक्षताएँः–

दक्षता किसी दिए गये कार्य को पूर्ण रूप से करने के सामर्थ्य को दर्शाती है। इसमें तथ्यों/ सिद्धांतों, कौशलों, ज्ञान के अनुप्रयोग, आदतों तथा अभिवृत्तियों के ज्ञान तथा समझ को सम्मिलित किया जाता है। उदाहरणस्वरूप– बच्चों को संख्याओं की पहचान, बिना अवरोध के विवेकपूर्ण बातचीत।

(घ) सीखने के प्रतिफल :–

सीखने के प्रतिफल वह प्रतीक हैं जिनके द्वारा बच्चों में दक्षताओं की प्राप्ति हेतु सीखने की प्रगति का चिह्नांकन किया जा सकता है। सीखने के प्रतिफल सभी बच्चों के लिए समान हैं लेकिन यहाँ जरूरत इस बात की है कि इन्हें शिक्षकों द्वारा प्रत्येक बच्चे की वैयक्तिक आवश्यकताओं के साथ गहराई से जोड़ा जाए और आवश्यकता के अनुसार संतुलित किया जाए। जैसे– उनकी आयु व अधिगम स्तर के अनुरूप विभिन्न सामग्री उपलब्ध कराना, मातृभाषा का सम्मान, उनके सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश एवं विद्यालय के वातावरण में सामंजस्य बैठाना। ये सभी क्रियाएँ बच्चों को उनके स्वयं के अनुभवों और आवश्यकताओं से सिखाना चाहिए। इस प्रकार सीखने के प्रतिफल सीखने के मूल आधार हैं। जिनके द्वारा व्यवस्थित क्रम में आगे बढ़ते हुए दक्षताओं की प्राप्ति होती है। सीखने के प्रतिफल विशिष्ट दक्षताओं को प्राप्त करने में शिक्षकों का मार्गदर्शन करते हैं। यहाँ शिक्षकों को स्थानीय परिवेश में सीखने के प्रतिफलों के निर्धारण एवं उनकी प्राप्ति के लिए पर्याप्त स्वतंत्रता होनी चाहिए।

2.2 लक्ष्य से सीखने के प्रतिफल तक

राष्ट्रीय शिक्षा नीति की संस्तुतियों के अनुसार पाठ्यचर्या का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है, अच्छे, सुसंस्कृत समाज हेतु मानवीय गुणों का व्यक्तित्व में समावेश सुनिश्चित करना। शिक्षा के व्यवहार में प्रयोग हेतु अमूर्त और समेकित धारणाओं को अधिक स्पष्ट घटकों में विभाजित करना आवश्यक है। इस विभाजन के क्रम में शिक्षा के लक्ष्य से सीखने के प्रतिफल तक एक अधोप्रवाह क्रम (Flowdown Pattern) बनता है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखाः फाउण्डेशनल स्टेज 2022 की संस्तुति के आधार पर इस क्रम में बच्चों के सीखने के स्पष्ट उद्देश्य निश्चित किए जाने चाहिए, जो इस राज्य पाठ्यचर्या : फाउण्डेशनल स्टेज में वर्णित हैं और फाउण्डेशनल स्टेज पर शैक्षिक प्रयासों का पथ प्रदर्शन का कार्य करेंगे। इसको नीचे दिये गये ग्राफ द्वारा समझा जा सकता है–

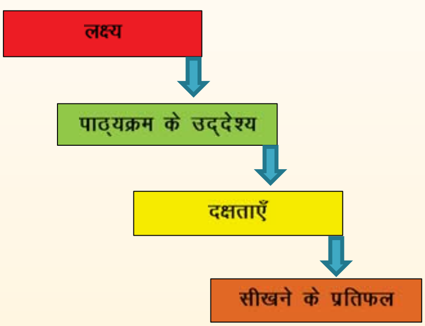

यह प्रतिफल उद्देश्यों में जुड़ते हुए लक्ष्य की प्राप्ति तक ले जाएंगे। राज्य के पाठ्यक्रम के लिये जिम्मेदार संस्थानों को इस अधोप्रवाह की समझ विकसित करने की आवश्यकता होगी।

2.2.1लक्ष्य से पाठ्यचर्या के उद्देश्यों तक

पाठ्यचर्या के उद्देश्य देश की नीतियों एवं योजनाओं के क्रियान्वयन एवं आकलन की प्रक्रिया को निश्चित आधार प्रदान करते हैं। ये उद्देश्य व्यापक स्तर पर निर्धारित लक्ष्यों से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए होते हैं और स्वयं के प्रकृति अनुरूप विशिष्ट प्रकार के होते हैं। उदाहरणार्थ—एक पांच वर्षीय बालिका भावी जीवन में डॉक्टर बन कर समाज सेवा करना चाहती है तो यहाँ लक्ष्य के रूप में डॉक्टर बनकर समाज सेवा करने को इंगित कर सकते हैं और क्रमशः इसकी प्राप्ति के लिए जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अलग–अलग समय पर कई विशिष्ट उद्देश्यों का निर्धारण कर इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयास कर सकते हैं।

2.2.2पाठ्यचर्या के उद्देश्यों से दक्षताओं तक

फाउण्डेशनल स्टेज में दक्षताओं पर पहुँचने हेतु पाठ्यचर्या के उद्देश्य, वर्तमान शोध साहित्य, देश के विभिन्न हिस्सों के शैक्षिक प्रयासों आदि को समझना आवश्यक है। विद्यालयी शिक्षा में सभी हितधारकों को उन दक्षताओं की स्पष्ट दृश्यता होनी चाहिए जिन्हें हासिल करना अपेक्षित है। फाउण्डेशनल स्टेज में प्रत्येक बच्चे के लिए इन दक्षताओं की प्राप्ति की प्रगति पर नजर रखने से विद्यालय प्रणाली को यह सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी कि सभी बच्चों को राज्य पाठ्यचर्या : फाउण्डेशनल स्टेज के उद्देश्य तक पहुँचने के लिए सीखने के उपयुक्त अवसर प्राप्त हों।

2.2.3दक्षताओं से सीखने के प्रतिफल तक

सीखने के प्रतिफल दक्षताओं की प्राप्ति की दिशा में सीखने की उपलब्धि के अंतरिम चिह्न हैं, जिन्हें सामाजिक, सांस्कृतिक संदर्भों की बारीकियाँ, उपलब्ध सामग्री व संसाधनों और कक्षा आकस्मिकताओं के आधार पर परिभाषित किया गया है। हमारी शिक्षा प्रणाली के अंदर की व्यापक समझ के आधार पर इस राज्य पाठ्यचर्या : फाउण्डेशनल स्टेज में सीखने के प्रतिफलों का एक समूह उदाहरण के तौर पर दिया गया है।

2.3 पाठ्यचर्या के उद्देश्य

इस खण्ड में फाउण्डेशनल स्टेज के लिए पाठ्यचर्या के उद्दश्यों का विवरण दिया गया है। जिनकी समय अंतराल पर समीक्षा की जानी चाहिए। पाठ्यचर्या के उद्देश्यों (Curriculum Goal) को CG 1, CG 2 और इसी तरह से क्रमांकित किया गया है।

❖ **कार्यक्षेत्र—शारीरिक विकास**

CG 1. बच्चे ऐसी आदते विकसित करते हैं जो उन्हे स्वस्थ और सुरक्षित रखती हैं।

CG 2. बच्चे संवेदी अनुभूतियों में कुशाग्रता विकसित करते हैं।

CG 3. स्वास्थ्य के लिए योग, पोषण एवं कसरत को नियमित दिनचर्या में सम्मिलित करते हैं।

CG 4. पाठ्य सामग्री एवं पाठ्य सहगामी क्रियाओं में सामंजस्य स्थापित करते हुए बच्चे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहते हैं।

CG 5. ऋतु चक्र को ध्यान में रखते हुए स्थानीय व भौगोलिक परिवर्तन के प्रति जागरूकता एवं सामंजस्य स्थापित करते हैं।

❖ कार्यक्षेत्र– सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक विकास

CG 6. बच्चे भावनात्मक बुद्धिमत्ता से सम्बन्धित सकारात्मक प्रतिक्रिया देने की क्षमता विकसित करते हैं।

CG 7. नागरिक कर्तव्यों और अधिकारों की समझ विकसित करते हैं।

CG 8. बच्चे धार्मिक व सामाजिक कार्यक्रमों में प्रतिभाग करते हैं।

CG 9. बच्चे स्थानीय पर्व एवं त्योहारों के विषय में समझ विकसित करते हैं।

CG 10. बड़ों का आदर, सम्मान व सामाजिक संबंध स्थापित करते हैं।

❖ कार्यक्षेत्र– संज्ञानात्मक विकास

CG 11. दैनिक जीवन के क्रियाकलापों को जोड़ते हुए संख्या पूर्व अवधारणाएँ विकसित करते हैं।

CG 12. बच्चे आकृतियों और मात्राओं के माध्यम से गणितीय समझ विकसित करते हैं।

CG 13. बच्चे चीजों को देखकर, सुनकर, स्पर्शकर, सूंघकर व स्वाद लेकर संज्ञानात्मक समझ विकसित करते हैं।

❖ कार्यक्षेत्र– भाषा और साक्षरता का विकास

CG 14. बच्चे दो भाषाओं में रोजमर्रा की बातचीत के लिए प्रभावी सम्प्रेषण कौशल विकसित करते हैं।

CG 15. बच्चे स्थानीय बोली (जैसे–अवधी, भोजपुरी, ब्रजभाषा, बुन्देली इत्यादि) को माध्यम बनाकर परिनिष्ठित भाषा की समझ विकसित करते हैं।

CG 16. बच्चे भाषा 2 (L2) में पढ़ना और लिखना शुरू करते हैं।

❖ कार्यक्षेत्र– सौंदर्यबोध और सांस्कृतिक विकास

CG 17. बच्चे कला व क्राफ्ट के प्रति प्रायोगिक रूप से समझ उत्पन्न करते हैं।

CG 18. बच्चे सांस्कृतिक विकास के लिए भारतीय व उत्तर प्रदेश के लोकगीत, लोकनृत्य, भाषा एवं कला से परिचित होते हैं।

CG 19. बच्चे दैनिक जीवन के क्रियाकलापों को जोड़ते हुए सृजनात्मकता का विकास करते हैं।

❖ कार्यक्षेत्र– सीखने की सकारात्मक आदतें

CG 20. बच्चे सीखने की ऐसी आदतें विकसित करते हैं जो उन्हें विद्यालय की कक्षा जैसे औपचारिक सीखने के वातावरण में सक्रिय रूप से संलग्न रहने में मदद करती हैं।

नैतिक आचरण, उत्तम व्यक्तित्व और स्वभाव का सृजन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, बाल केंद्रित होने के साथ–साथ बच्चों के सर्वांगीण विकास की बात करते हुए उनको एक अच्छा नागरिक बनाने की बात करती है। यह बच्चों के शारीरिक, संवेगात्मक, संज्ञानात्मक और सामाजिक विकास पर केंद्रित है। बच्चों के परिवेश और बाहरी प्रेरणा का सीधा प्रभाव उनके सर्वांगीण विकास पर पड़ता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, इक्कीसवीं सदी के ज्ञान और समाज को वैज्ञानिक सोच के करीब लेकर आती है। इसका उद्देश्य बच्चों के बारे में पहले से बनी पारंपरिक अवधारणाओं एवं नवीन अवधारणाओं में सामंजस्य स्थापित करना है ताकि बच्चे (3 से

8 वर्ष के) जो कच्ची मिट्टी की तरह हैं उनके व्यक्तित्व को निखारा जाए और साथ ही आयु के अनुरूप शारीरिक व मानसिक विकास के लिए संज्ञानात्मक व संवेगात्मक विकास भी सम्भव हो सके। बच्चों में अति जिज्ञासा और उत्साह रहता है कि वे अपने आसपास की वस्तुओं और घटनाओं के विषय में जानना चाहते हैं। इस उद्देश्य के लिए शिक्षक को अपनी तरफ से बच्चों को कुछ बताने की अपेक्षा उनके प्रश्नों का उत्तर देना अधिक प्रभावी होगा। साथ ही बच्चों में भारतीय रहन–सहन, संस्कृति और परंपराओं के साथ–साथ देश की विभिन्नताओं का बोध कराना उचित होगा। उनके सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है कि पाठ्यक्रम में आचारगत नैतिक जागरूकता और तर्क को सम्मिलित करने को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तरीके से बढ़ावा दिया जाए। अच्छा इंसान बनने के क्रम में शिक्षा के ढाँचे को व्यापक विषयों जैसे–सहिष्णुता, अहिंसा, ईमानदारी, समानता का भाव तक विस्तारित किया जाना चाहिए ताकि बच्चों को अपने जीवन के संचालन में नैतिक मूल्यों को अपनाने, कई परिप्रेक्ष्यों से नैतिक मुद्दों के बारे में दृष्टिकोण या तर्क बनाने और सभी दैनिक गतिविधियों में आचारगत और नैतिक व्यवहारों का उपयोग करने में सक्षम बनाया जा सके। बुनियादी नैतिक तर्क के परिणाम के रूप में सेवा, निष्काम कर्म, स्वच्छता, ईमानदारी से कड़ी मेहनत, सत्यनिष्ठा, महिलाओं का सम्मान, बड़ों का सम्मान, सभी लोगों का व उनकी अंतर्निहित क्षमताओं का सम्मान, चाहे वह किसी भी पृष्ठभूमि से हो और पर्यावरण का सम्मान जैसे पारंपरिक भारतीय मूल्यों को रोपित किया जाना चाहिए। हमारी सभ्यता कृषि और ऋषि की रही है। उसको अपने जीवन में अंगीकार करना, महत्व समझना व अनुसरण करना है। बच्चों में श्रम के महत्व की समझ विकसित करना है तथा उनमें सेवा की भावना उत्पन्न करना है, उदाहरणस्वरूप–माता–पिता की सेवा करना, पशुओं के प्रति दयालुता, प्रकृति के प्रति सजगता और सतर्कता की शिक्षा प्रदान करना है।

2.4 दक्षताएँ

इस खंड में प्रत्येक पाठ्यचर्या के उद्देश्य की दक्षताओं को परिभाषित किया गया है। इन दक्षताओं को पाठ्यक्रम विकासकर्ताओं के लिए दिशा–निर्देशों के रूप में देखा जाना चाहिए और इन्हें निर्देशात्मक नहीं माना जाना चाहिए। प्रत्येक कार्यक्षेत्र के उद्देश्यों (CG) को अनेक दक्षताओं (C) के रूप में विस्तारित किया गया है।

दक्षताओं को C-1.1, C-1.2 आदि के रूप में क्रमांकित किया गया है।

2.4.1 कार्यक्षेत्र – शारीरिक विकास

CG 1 बच्चे ऐसी आदतें विकसित करते हैं जो उन्हें स्वस्थ और सुरक्षित रखती हैं।

C1.1 वह अपनी दिनचर्या में स्व देखभाल कार्यों जैसे– हाथ धोना, ब्रश करना, नहाना, कंघी करना आदि सामान्य व्यवहार कुशलता पूर्वक कर लेते हैं।

C1.2 पौष्टिक भोजन में रुचि व समझ विकसित करते हैं। भोजन बर्बाद नहीं करते।

C1.3 अपने आसपास के वातावरण (घर, विद्यालय आदि) को स्वच्छ रखते हैं, जैसे– कूड़ा कूड़ेदान में फेंकते हैं।

C1.4 अपनी चीजों को व्यवस्थित ढंग से रखते हैं, जैसे– जूते, मोजे, यूनीफॉर्म आदि को यथा स्थान रखते हैं।

C1.5 खानपान व पहनावे के दौरान व्यवस्थित तरीका अपनाते हैं।

C1.6 गतियों (चलना, दौड़ना, साइकिल चलाना) में सुरक्षा संबंधी सावधानी प्रदर्शित करते हैं और समुचित तरीके से यह कार्य करते हैं।

C1.7 सामग्रियों और सरल उपकरणों के सुरक्षित उपयोग का व्यवहार करते हैं।

C1.8 असुरक्षित स्थितियों को समझते और मदद मांगते हैं।

C1.9 अच्छे और बुरे स्पर्श में अंतर करते हैं।

CG2 बच्चे संवेदी अनुभूतियों में कुशाग्रता विकसित करते हैं।

C2.1 खेल व अनुकरण द्वारा अपने आस–पास की वस्तुओं, प्राणियों तथा वातावरण से संबंध स्थापित करते हैं।

C2.2 आकृतियों, रंगों और उनके शेड्स के बीच अंतर करते हैं।

C2.3 प्रतीकों और निरूपणों के लिए दृश्यस्मृति विकसित करते हैं।

C2.4 ध्वनियों में उनके पिच, वॉल्यूम से और ध्वनि पैटर्न में पिच वॉल्यूम और टेम्पो से अंतर करते हैं।

C2.5 विभिन्न गंधों और स्वादों के बीच अंतर करते हैं।

C2.6 स्पर्श की अनुभूतियों में विभेद की क्षमता विकसित करते हैं।

C2.7 अनुभवों की समग्र जागरूकता प्राप्त करने के लिए संवेदी अनुभूतियों को एकीकृत करना शुरू करते हैं।

CG3 स्वास्थ्य के लिए योग, पोषण एवं कसरत को नियमित दिनचर्या में सम्मिलित करते हैं।

C3.1 चलना, दौड़ना, कूदना आदि मूल कौशलों में नियंत्रण, समन्वय और लचीलापन बना पाते हैं।

C3.2 विभिन्न गतिविधियों में संवेदी अनुभूतियों और शरीर संचालन के बीच समन्वय दिखाते हैं।

CG4 पाठ्य सामग्री एवं पाठ्य सहगामी क्रियाओं में सामंजस्य स्थापित करते हुए बच्चे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता उत्पन्न करते हैं।

C4.1 वस्तुओं को पकड़ना, चित्रकारी करना आदि क्रियाओं में हाथों और उंगलियों से काम करने में सटीकता और नियंत्रण दिखाते हैं।

C4.2 बच्चे रेंगने, खिसकने, झूलने, लुढ़कने, चढ़ने–उतरने, फेंकने–पकड़ने आदि क्रियाओं द्वारा स्थूल मांसपेशियों का विकास करते हैं।

C4.3 बच्चे संबंधित क्रियाओं जैसे– चॉक से/रंग से रेखा खींचना, मिट्टी से छोटी–बड़ी गोलियाँ बनाना, कागज काटना, रंग भरना, विभिन्न प्रकार के अनाज/वस्तुओं को अलग–अलग करना आदि के द्वारा सूक्ष्म मांसपेशियों का विकास करते हैं।

CG5 ऋतु चक्र को ध्यान में रखते हुए स्थानीय व भौगोलिक परिवर्तन के प्रति जागरूकता एवं सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता विकसित करते हैं।

C5.1 बच्चे बदलते मौसम के अनुरूप खान–पान, वेशभूषा में होने वाले बदलावों को चिह्नित करते हैं।

C5.2 मौसम परिवर्तन के कारण होने वाले रोगों से बचाव की समझ विकसित करते हैं।

❖ कार्यक्षेत्र– सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक विकास

CG6 बच्चे भावनात्मक बुद्धिमत्ता से सम्बन्धित सकारात्मक प्रतिक्रिया देने की क्षमता विकसित करते हैं।

C6.1 परिवार और समुदाय से संबंधित व्यक्ति के रूप में स्वयं को पहचानने लगते हैं।

C6.2 प्रत्येक क्रिया के प्रति प्रेम, विश्वास, स्नेह व समानुभूति की प्रतिक्रियाएं प्रकट करते हैं।

C6.3 दूसरे बच्चों के विभिन्न विचारों, प्राथमिकताओं और भावनात्मक जरूरतों को समझते हैं और उनके प्रति सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देते हैं।

C6.4 समूह में होने वाली गतिविधियों पर काम करते समय दूसरों के साथ बातचीत व समन्वय स्थापित करते हैं।

C6.5 दूसरे बच्चों के साथ सहयोगात्मक व्यवहार प्रदर्शित करते हैं तथा बिना भेदभाव किए वस्तुओं को साझा करते हैं।

CG 7 नागरिक कर्तव्यों और अधिकारों की समझ विकसित करते हैं।

C7.1 अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ रखते हैं।

C7.2 दूसरों के प्रति (जीवों, पौधों सहित) दयालुता और मदद का भाव प्रदर्शित करते हैं।

CG 8 बच्चे धार्मिक व सामाजिक कार्यक्रमों में प्रतिभाग करते हैं।

C8.1 बच्चे सभी धर्मों को समझते हैं और सम्मान की भावना विकसित करते हैं।

C8.2 बच्चों में आत्मविश्वास की भावना जागृत होती है और अपनी क्षमताओं को पहचानते हैं।

C8.3 जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करते हैं।

CG 9 बच्चे स्थानीय पर्व एवं त्योहारों के विषय में समझ विकसित करते हैं।

C9.1 बच्चे अपनी सभ्यता और संस्कृति को समझते हैं। त्योहार मनाने के उद्देश्य को जानते हैं।

उदाहरण : दशहरा–सत्य की असत्य पर विजय, रक्षाबंधन–भाई बहन के प्रेम का प्रतीक, ईद–भाईचारे की भावना विकसित करते हैं।

CG 10 बड़ों का आदर, सम्मान व सामाजिक संबंध स्थापित करते हैं।

C10.1 बच्चे शिष्टाचार, सदाचार और अनुशासन में रहते हैं।

C10.2 बच्चे परिवार, समाज व देश के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझते हैं।

C10.3 बच्चे दूसरों के प्रति आदरभाव बनाए रखते हैं। बच्चे सत्कार, आदर और अभिवादन करते हैं।

❖ कार्यक्षेत्र– संज्ञानात्मक विकास

CG11 दैनिक जीवन के क्रियाकलापों को जोड़ते हुए संख्यापूर्व अवधारणाएँ विकसित करते हैं।

C11.1 बच्चे आमतौर पर इस्तेमाल होने वाली वस्तुओं को क्रम में व्यवस्थित करते हैं।

C11.2 दैनिक जीवन की परिस्थितियों में और सीखने के लिए उपयुक्त उपकरणों व तकनीकी का इस्तेमाल करते हैं, जैसे–मोतियों वाली स्लेट, अबेकस।

C11.3 वस्तुओं को उनकी विशेषताओं के आधार पर समूह एवं उपसमूह में वर्गीकृत करते हैं।

C11.4 बच्चे हाव–भाव के साथ गणितीय कविताओं और गीतों को सुनते और सुनाते हैं, जैसे–एक मोटा हाथी झूम के चला ...., one, two, buckle my shoe ...., एक–दो– तीन–चार, आज शनि है कल इतवार ....

CG 12 बच्चे आकृतियों और मात्राओं के माध्यम से गणितीय समझ विकसित करते हैं।

C12.1 संख्याओं, वस्तुओं, आकृतियों एवं घटनाओं को समझकर सरल पैटर्न को पहचानते हैं और क्रमागत रूप से व्यवस्थित करते हैं।

C12.2 समस्याओं का चिंतन करके कारण व निदान खोजने का प्रयत्न करते हैं।

C12.3 सीधी और उल्टी गिनती गिन सकते हैं, 10–10 एवं 20–20 के समूहों में गिनती कर पाते हैं।

C12.4 आरोही–अवरोही क्रम में 99 तक की संख्याओं को व्यवस्थित करते हैं।

C12.5 दाशमिक स्थानीय मान प्रणाली की समझ के साथ 99 तक की मात्राओं को दर्शाने के लिए संख्याओं को पहचानते और उपयोग करते हैं।

C12.6 दैनिक जीवन में रूपये 100 तक की मुद्रा का उपयोग करके सरल लेनदेन करते हैं।

C12.7 समय (सेकेन्ड, मिनट, घंटा, दिन, सप्ताह, महीने और वर्ष) का सरल मापन करते हैं।

C12.8 बराबर बंटवारे की समझ से भाग व बार–बार जोड़ को गुणा के रूप में समझ को विकसित करते हैं।

C12.9 अपने आसपास के वातावरण में वस्तुओं की लंबाई, वजन और आयतन का सरल मापन करने के लिए उपयुक्त उपकरणों और इकाइयों का चयन करते हैं।

C12.10 संयोजन और वियोजन की लचीली रणनीतियों का उपयोग करके आसानी से दो अंकों की संख्याओं का जोड़ और घटाव करते हैं।

C12.11 बुनियादी ज्यामितीय आकृतियों और उनके अवलोकनीय गुणों को पहचानते, बनाते और वर्गीकृत करते हैं, और किसी स्थान में वस्तुओं के सापेक्ष सम्बन्ध को समझते व समझाते हैं।

CG 13 बच्चे चीजों को देखकर, सुनकर, स्पर्शकर, सूंघकर व स्वाद लेकर संज्ञानात्मक समझ विकसित करते हैं।

C13.1 बच्चे स्पर्श द्वारा वस्तुओं की आकृति, प्रकार, वजन का आकलन करते हैं।
मारिया मांटेसरी–''हाथ जो करते हैं, दिमाग उसे याद रखता है।''

C13.2 बच्चे वस्तुओं को देखकर आकार, लंबाई, चौड़ाई, रंग की जानकारी विकसित करते हैं और सरल गणितीय समस्याओं को निरूपित व हल करते हैं।

C13.3 बच्चे सुनकर भाषा शैली व संगीत की समझ से आसपास की भावनाओं की अनुभूति करते हैं।

❖ कार्यक्षेत्र– भाषा और साक्षरता का विकास

CG 14 बच्चे दो भाषाओं में रोजमर्रा की बातचीत के लिए प्रभावी सम्प्रेषण कौशल विकसित करते हैं।

C14.1 प्राकृतिक घटनाओं के बारे में बात करते हैं।

C14.2 नई वस्तुओं का अवलोकन करते हैं और अपनी जिज्ञासा प्रस्तुत करते हैं।

C14.3 प्रिंट–रिच वातावरण का उपयोग पठन व लेखन से जुड़ी सूक्ष्म गतिविधियों में करते हैं और क्या, क्यों, कैसे जैसे प्रश्नों के उत्तर देते हैं।

C14.4 खुद सरल गीत और कविताएँ बनाते हैं।

C14.5 स्पष्ट कथानक और पात्रों के साथ छोटी कहानियाँ सुनाते हैं।

C14.6 प्रभावी ढंग से रोज़मर्रा की बातचीत करने के लिए पर्याप्त शब्द जानते हैं, उनका इस्तेमाल करते हैं और मौजूदा शब्दावली का इस्तेमाल करके नए शब्दों के अर्थ का अनुमान लगा लेते हैं।

CG 15 बच्चे स्थानीय बोली (जैसे–अवधी, भोजपुरी, ब्रजभाषा, बुन्देली इत्यादि) को माध्यम बनाकर परिनिष्ठित भाषा का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

C15.1 बच्चे समझते हुए सुनते हैं और सामान्य निर्देशों को सुनकर प्रतिक्रिया करते हैं।

C15.2 सुनी हुई कविताओं/कहानियों को हाव–भाव से सुनाते हैं।

C15.3 सुनी हुई कविताओं/कहानियों पर आधारित सरल प्रश्नों के उत्तर देते हैं।

C15.4 अनुकरण द्वारा नए शब्दों का प्रयोग करते हुए छोटे–छोटे वाक्य बोलते हैं।

CG 16 बच्चे भाषा 2 (L2) में पढ़ना और लिखना शुरू करते हैं।

C16.1 ध्वनि जागरूकता विकसित करते हैं और स्वनिमों (phonemes)/शब्दाशों (syllables) को मिलाकर शब्द बनाते हैं और शब्दों को स्वनिमों (phonemes)/शब्दाशों (syllables) में विभाजित करते हैं।

C16.2 लिपि की वर्णमाला के निरन्तर अभ्यास से वह डिकोडिंग में गति पकड़ते हैं व समय के साथ पढ़ने के दिशा में अग्रसर होते हैं।

C16.3 छोटी कहानियाँ पढ़ते हैं और पात्र, कथानक और लेखक क्या कहना चाहता है, इसकी पहचान करके, खुद से ही उनका अर्थ समझते हैं।

C16.4 किताब का बुनियादी ढाँचा/प्रारूप, छपे हुए शब्दों के विचारों को समझते हैं और मूलभूत विराम चिह्नों को पहचानते हैं।

C16.5 लघु समाचारों, निर्देशों, व्यंजन विधियों और प्रचार सामग्री को पढ़ते–समझते हैं।

C16.6 कहानियों और गद्यांशों को सटीकता और प्रवाह के साथ, उचित विरामों और आवाज़ में उतार–चढ़ाव के साथ पढ़ते हैं।

C16.7 छोटी कविताएँ पढ़ते हैं और शब्दों व कल्पना के चुनाव के लिए कविता की सराहना करना शुरू करते हैं।

C16.8 अपनी समझ और अनुभव को व्यक्त करने के लिए एक अनुच्छेद लिखते हैं।

C16.9 विविध प्रकार की बच्चों की किताबें चुनने और पढ़ने में रूचि दिखाते हैं।

❖ कार्यक्षेत्र– सौंदर्यबोध और सांस्कृतिक विकास

CG 17 बच्चे कला व क्राफ्ट के प्रति प्रायोगिक रूप से समझ उत्पन्न करते हैं।

C17.1 स्वतंत्र रूप से अपने खिलौने के साथ नाटक–अभिनय करते हैं।

C17.2 संगीत, रोलप्ले, नृत्य और गतिविधियाँ निर्मित करने के लिए अपनी आवाज़, शरीर, स्थानों और तरह–तरह की चीज़ों की खोज करते हैं और उनसे खेलते हैं।

C17.3 कला में सहयोगात्मक ढंग से कार्य करते हैं।

C17.4 कला के माध्यम से विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए नए तरीकों की खोज करते हैं और कल्पनाशीलता के साथ कार्य करते हैं।

CG 18 बच्चे सांस्कृतिक विकास के लिए भारतीय व उत्तर प्रदेश के लोकगीत, लोकनृत्य, भाषा एवं कला से परिचित होते हैं।

C18.1 कला, स्थानीय, संस्कृति और विरासत के विभिन्न रूपों की रचना और अनुभव करते हुए विभिन्न तरह की प्रतिक्रियाएँ संप्रेषित करते हैं और इनकी सराहना करते हैं।

CG 19 बच्चे दैनिक जीवन के क्रियाकलापों को जोड़ते हुए सृजनात्मकता का विकास करते हैं।

C19.1 मिट्टी से अपनी पसंद की आकृतियां बनाते हैं।

C19.2 दी गई आकृति को कागज पर चिपकाते हैं। अपनी पसंद के रंगों का चुनाव कर आकृतियों में रंग भरते हैं।

C19.3 विभिन्न आकारों की द्विआयामी और त्रिआयामी कलाकृतियाँ बनाने के लिए तरह–तरह की सामग्रियों और उपकरणों का उपयोग करते हैं।

❖ कार्यक्षेत्र– सीखने की सकारात्मक आदतें

CG 20 बच्चे सीखने की ऐसी आदतें विकसित करते हैं जो उन्हें स्कूल की कक्षा जैसे औपचारिक सीखने के वातावरण में सक्रिय रूप से संलग्न रहने में मदद करती हैं।

C20.1 ध्यान व सुविचारित कर्मः विशिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए योजना बनाने, ध्यान केंद्रित करने तथा गतिविधियां निर्देशित करने के कौशल हासिल करते हैं।

C20.2 स्मृति और मानसिक लचीलापनः समुचित कार्यकारी स्मृति, मानसिक लचीलापन (समुचित तरीके से ध्यान बनाए रखने या बदलने के लिए) और आत्म–नियंत्रण (आवेगी क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं के प्रतिरोध के लिए) विकसित करते हैं जो संरचित वातावरण में सीखने में उसकी मदद करेगा।

C20.3 अवलोकन, आश्चर्य, जिज्ञासा और अन्वेषणः वस्तुओं के सूक्ष्म विवरणों का अवलोकन करते हैं, आश्चर्य करते हैं और विभिन्न इंद्रियों का इस्तेमाल करते हुए अन्वेषण करते हैं, वस्तुओं के साथ छेड़–छाड़ करते हैं, सवाल पूछते हैं।

C20.4 कक्षा के नियमः प्रतिनिधित्व और समझ के साथ नियमों को अपनाते और उनका पालन करते हैं।

2.5 उदाहरणात्मक सीखने के प्रतिफल

इस खण्ड में अभी तक वर्णित प्रत्येक कार्यक्षेत्र की एक दक्षता को आगे जाकर किस प्रकार प्रतिफलों में विस्तारित करना है यह स्पष्ट किया गया है। इससे स्पष्ट होगा कि फाउण्डेशनल स्तर पर सीखने के प्रतिफल कैसे व्यक्त किये जा सकते हैं।

❖ कार्यक्षेत्र : शारीरिक विकास

पाठ्यचर्या का उद्देश्य CG 4: बच्चा एक स्वस्थ और लचीले शरीर का विकास करता है।

दक्षता (C4.1) : वस्तुओं को पकड़ना, चित्रकारी करना आदि क्रियाओं में हाथों और उँगलियों से काम करने में सटीकता और नियन्त्रण दिखाते हैं। (संदर्भ— विद्यालय तैयारी कैलेंडर)

3—4 वर्ष	4—5 वर्ष	5—6 वर्ष	6—7 वर्ष	7—8 वर्ष
बच्चा कागज/ गीली मिट्टी से गोले बनाने जैसे कार्य कर सकता है। शुरुआती तौर पर खिलौनों को उठा कर एक जगह से दूसरी जगह रख सकता है।	बच्चा ब्लॉक्स, खिलौनों को व्यवस्थित ढंग से रख सकता है, और मिट्टी या रेत में उंगलियों से या पेंसिल/चॉक/क्रेयॉन को ठीक से पकड़ कर रेखाएं व गोले जैसी स्पष्ट आकृतियाँ बना लेता है।	बच्चा आकृतियों में रंग भर सकता है, पैटर्न को आगे बढ़ा सकता है, बैट जैसे खिलौनों से खेल सकता है।	बच्चा कुछ सरल चित्र बनाता है। अपनी कमीज के बटन बंद कर लेता है। जूते के फीते बांध लेता है। चित्र बना कर रंग भर सकता है।	बच्चा ब्रश, पेंट आदि से चित्रों में रंग भर लेता है। छोटी क्राफ्ट सामग्री बना सकता है। जिग—सॉ पजल के टुकड़े जोड़ लेता है आदि।

❖ कार्यक्षेत्र : सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक विकास

पाठ्यचर्या का उद्देश्य CG 6 : बच्चे भावनात्मक बुद्धिमत्ता (emotional intelligence) अर्थात् अपनी भावनाओं का प्रबंधन और सामाजिक मानदंडों के प्रति सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देने की क्षमता विकसित करते हैं।

दक्षता (C6.3) : दूसरे बच्चों के साथ सहयोगात्मक व्यवहार प्रदर्शित करते हैं तथा बिना भेदभाव के वस्तुओं को साझा करते हैं।

3—4 वर्ष	4—5 वर्ष	5—6 वर्ष	6—7 वर्ष	7—8 वर्ष
बच्चा दूसरे बच्चों के साथ खेल कूद में सम्मिलित होता है। कक्षा में अन्य बच्चों के साथ सामंजस्य बिठाता है।	बच्चा अन्य बच्चों के साथ कक्षा—कक्ष को व्यवस्थित करने में शिक्षक की मदद करता है।	भोजन के समय खुद और साथियों के प्लेट लाने और भोजन के बाद उसे साफ करने की पहल करता है।	कक्षा—कक्ष को मिल जुल कर सजाने में शिक्षक की सहायता करता है तथा साथी बच्चों के साथ किताब, रंग, पेंसिल, रबर आदि साझा करता है।	साथी बच्चे की आपात स्थिति में सहायता करता है। देखभाल करता है। बीमार साथी का हाल—चाल पूछने जाता है।

❖ **कार्यक्षेत्र : संज्ञानात्मक विकास**

पाठ्यचर्या का उद्देश्य CG 12 : बच्चे आकृतियों और मात्राओं के माध्यम से गणितीय समझ विकसित करते हैं।

दक्षता (C12.9) : बच्चे अपने आसपास के वातावरण में वस्तुओं की लंबाई वजन और आयतन का सरल मापन करने के लिए उपयुक्त उपकरणों और इकाइयों का चयन करते हैं।

3–4 वर्ष	4–5 वर्ष	5–6 वर्ष	6–7 वर्ष	7–8 वर्ष
बच्चा बीज, कंकड़, गोलियों आदि की सहायता से संख्याओं का पता लगाता है। बच्चा समान रंग वाली वस्तुओं की पहचान कर लेता है।	बच्चा बीज, कंकड़, गोलियों आदि की सहायता से संख्याओं का पता लगाते हैं।	बच्चा कागज के चित्र, इमोजी, पतला, मोटा, छोटा, बड़ा आदि की पहचान कर लेते हैं।	बच्चा विभिन्न फलों, सब्जियों, आकृतियों की पहचान कर उनकी विशेषताएं बता सकता है।	बच्चा अमानक इकाइयों से मापन का कार्य करता है जैसे– गिलासों से जग भरना, कदमों से दूरी मापना आदि।

❖ **कार्यक्षेत्र : भाषा और साक्षरता विकास**

पाठ्यचर्या का उद्देश्य CG 16 : बच्चे भाषा (L2) को पढ़ने और लिखने में धाराप्रवाहिता विकसित करते हैं।

दक्षता (C16.3) : छोटी कहानियाँ पढ़ते हैं और पात्र, कथानक और लेखक क्या कहना चाहता है, इसकी पहचान करके खुद ही उनका अर्थ समझते हैं।

3–4 वर्ष	4–5 वर्ष	5–6 वर्ष	6–7 वर्ष	7–8 वर्ष
बच्चा कक्षा में रीडिंग कॉर्नर में रखी हुई चित्रात्मक किताबें, बिग–बुक आदि को उलट–पलट कर देखता है।	बच्चा कक्षा में लगे हुए विविध पोस्टर्स में वस्तुओं को पहचनाने की कोशिश करता है और कहानियाँ सुन कर समझता है।	बच्चा चित्रात्मक पुस्तकों/बिग बुक में दो अक्षर वाले कुछ शब्दों से बनी छोटी कहानी शिक्षक की सहायता से पढ़ कर अपने आप पढ़ने का अभिनय करता है।	बच्चा दो अक्षर वाले कुछ सरल शब्दों से बनी छोटी कहानियों को स्वयं पढ़ने का प्रयास करता है।	बच्चा छोटे अनुच्छेद वाली कहानियों को पढ़ कर अर्थ समझ लेता है।

❖ कार्यक्षेत्र : सौन्दर्यबोध और सांस्कृतिक विकास

पाठ्यचर्या का उद्देश्य CG 17 : बच्चे दृश्य और प्रदर्शन कलाओं में क्षमताएं और संवेदनशीलता विकसित करते हैं और कला के माध्यम से अपनी भावनाओं को सार्थक और आनंदपूर्ण तरीके से अभिव्यक्त करते हैं।

दक्षता (C17.2) : संगीत, रोल–प्ले, नृत्य और गतिविधियाँ निर्मित करने के लिए अपनी आवाज, शरीर, स्थान और तरह तरह की चीजों की खोज करते हैं और उनसे खेलते हैं।

3–4 वर्ष	4–5 वर्ष	5–6 वर्ष	6–7 वर्ष	7–8 वर्ष
बच्चे परिवेश के विभिन्न पशु पक्षियों की आवाज की नकल बना लेते हैं और आवाज सुन कर उन्हें पहचानने की कोशिश करते हैं। अलग–अलग चीजों में फूंक मार कर, थाप लगाकर आवाजें निकालने की कोशिश करते हैं।	बच्चे डॉक्टर सेट, किचन सेट या टूल्स, चॉक–डस्टर लेकर डॉक्टर, मैकेनिक, टीचर आदि बनने का अभिनय करते है, कविताओं में भी रोल–प्ले करते हैं।	बच्चे शरीर के विभिन्न अंगों, उनके कार्य आदि की जानकारी प्राप्त करते हैं।	बच्चे अपने परिवेश में विभिन्न स्थानों जैसे– अस्पताल डाकघर, थाना आदि को देखते है और अपनी जरूरत के अनुसार कार्य की समझ बनाते हैं।	बच्चे उपलब्ध वस्तुओं के नए प्रयोग करते हुए नये–नये खेल बनाते हैं, और चीजों को स्वतंत्र रूप से उपयोग करके नए अनुभव बनाते हैं।

❖ कार्यक्षेत्र : सीखने की सकारात्मक आदतें

पाठ्यचर्या का उद्देश्य CG 20 : बच्चे सीखने की आदतें विकसित करते हैं जो उन्हें स्कूल की कक्षा जैसे औपचारिक सीखने के वातावरण में सक्रिय रूप से संलग्न रहने में मदद करती हैं।

दक्षता (C20.3) : अवलोकन, आश्चर्य, जिज्ञासा और अन्वेषणात्मक वस्तुओं के सूक्ष्म विवरणों का अवलोकन करते हैं, आश्चर्य करते हैं और विभिन्न इन्द्रियों का इस्तेमाल करते हुए अन्वेषण करते हैं, वस्तुओं को उलटते–पुलटते हैं और प्रश्न पूछते हैं।

3–4 वर्ष	4–5 वर्ष	5–6 वर्ष	6–7 वर्ष	7–8 वर्ष
बच्चे उपलब्ध सामग्री को उठा कर, छूकर, पलटकर, उस पर बैठकर, सूंघकर, फेंककर, खिसकाकर देखते हैं।	बच्चे एक समान वस्तुओं को छांटते हैं, कतार बनाते या आपस मे समायोजित करने की कोशिश करते हैं।	बच्चे उपलब्ध सामग्री को खोलकर देखते हैं, उसका अपनी तरह से प्रयोग करने की कोशिश करते हैं। कुछ जोड़–तोड़ भी कर सकते हैं।	बच्चे शिक्षक से वस्तुओं/घटनाओं के बारे में, उनके उपयोग और स्वरुप के बारे में सवाल/बात करते हैं, जैसे– विद्यालय आते समय उन्हें रास्ते में क्या दिखा ?	बच्चे विविध वस्तुओं, सामग्री का उपयोग करते हुए खुद खिलौने आदि बनाने लगते हैं, जैसे– आम की गुठली को घिस कर सीटी बनाना इत्यादि।

इन लक्ष्यों उद्देश्यों, दक्षताओं और सीखने के प्रतिफल के माध्यम से फाउण्डेशनल स्टेज में पाठ्यचर्या छात्रों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान करने में सहायक होगी। यह बच्चे के शारीरिक विकास, सामाजिक विकास, भावनात्मक एवं नैतिक विकास, संज्ञानात्मक विकास, भाषा और साक्षरता विकास, सौंदर्यबोध और सांस्कृतिक विकास करने में सहयोगी होगी।

❖❖❖

अध्याय-3

फाउण्डेशनल स्टेज में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया

3.1 शिक्षणशास्त्र के सिद्धांत

बच्चों में सीखने की प्रक्रिया जन्म से ही शुरू हो जाती है। बच्चे जिज्ञासु होते हैं और अपने सामाजिक, भौतिक और प्राकृतिक वातावरण में जो भी देखते हैं, उसके बारे में जानने और सीखने के लिए इच्छुक होते हैं। बच्चे अपने अनुभवों एवं दैनिक दिनचर्या की गतिविधियों से सीखते हैं तथा प्रारम्भिक बाल्यावस्था के अनुभवों से ही बच्चे के जीवन की नींव तैयार होती है। बच्चे खेल के माध्यम से सबसे अधिक मात्रा में एवं तेज़ गति से सीखते हैं। प्रारम्भिक बाल्यावस्था में बच्चों की आयु के अनुसार उपयुक्त विकासात्मक व सीखने की उपलब्धियों की प्राप्ति के लिए कुछ बिंदुओं पर ध्यान देना आवश्यक है, जो निम्नवत् हैं–

I. सर्वांगीण विकास : प्रारम्भिक बाल्यावस्था में बच्चों के सर्वांगीण विकास, अर्थात शारीरिक एवं मोटर विकास, संज्ञानात्मक विकास, सामाजिक–भावनात्मक–नैतिक विकास, रचनात्मक/सांस्कृतिक विकास एवं भाषा विकास तथा प्रारम्भिक साक्षरता और संख्यात्मक कौशलों के विकास के लिए कार्य करना चाहिए–

- बच्चों की आयु के अनुसार उनकी विकासात्मक उपलब्धियाँ (डेवलपमेंटल माईलस्टोन्स) अलग–अलग होती हैं।
- बच्चों की आयु अनुसार खेल एवं गतिविधियों का आयोजन किया जाए।
- किसी भी खेल के दौरान बच्चों में विकास के सभी क्षेत्रों में वृद्धि होती है एवं विकास के सभी क्षेत्र आपस में जुड़े हुए हैं।
- विकास के सभी क्षेत्रों में वृद्धि का स्तर विभिन्न आयु में अलग–अलग होता है।

II. वातावरण : एक प्रेरणाप्रद, अर्थवान और सुरक्षित, भौतिक एवं मनोसामाजिक वातावरण बच्चों के लिए एक स्वस्थ, सकारात्मक और गुणवत्तापूर्ण सीखने का माहौल प्रदान करता है इसलिए कक्षा–कक्ष का भौतिक एवं सामाजिक वातावरण बच्चों के उचित विकास और सीखने के लिए सर्वोपरि है। जिसको निम्न बिदुओं के आधार पर समझा जा सकता है–

- कक्षा–कक्ष के अंदर एवं बाहर का वातावरण स्वच्छ एवं सुरक्षित हो तथा कक्षा–कक्ष हवादार हो एवं प्रकाश की पर्याप्त व्यवस्था हो।
- सभी बच्चों की ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए कक्षा–कक्ष में विविधता हो।
- कक्षा–कक्ष बच्चों के विकास एवं सीखने की दृष्टि से प्रिंट एवं खेल सामग्रियों से सुसज्जित हो।
- कक्षा–कक्ष में बच्चों द्वारा निर्मित की गयी सामग्रियों का प्रदर्शन हो।
- कक्षा–कक्ष में बैठने व गतिविधि करने की उपयुक्त व्यवस्था हो।
- कक्षा–कक्ष की निचली दीवार पर हरी पट्टी हो, जिसका प्रयोग बच्चे स्वतंत्र रूप से कर सकें।

- ❖ कक्षा–कक्ष में समावेशी वातावरण, जिसमें जाति, धर्म, लिंग, दिव्यांगता आदि के आधार पर भेद–भाव न हो एवं सभी बच्चों के साथ समान व्यवहार हो।
- ❖ शिक्षक द्वारा कक्षा में सभी बच्चों का सकारात्मक मनोभाव के साथ स्वागत हो।
- ❖ बच्चों को बात करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए, जिससे कि वे अपने विचारों और भावों को बिना झिझक के व्यक्त कर सकें।

III. खेल : बच्चे अपनी इंद्रियों के प्रयोग एवं खेल के माध्यम से सीखते हैं, जो कि उनके सर्वांगीण विकास में सहायक होता है, इसलिए बुनियादी स्तर पर खेल से संबंधित निम्नवत् बिंदुओं को ध्यान में रखना चाहिए–

- ❖ मुक्त, निर्देशित एवं संरचित खेल के बीच संतुलन हो।
- ❖ बच्चों को उनके परिवेश के साथ बेहतर जोड़ने के लिए निर्देशित एवं संरचित खेल में स्थानीय संदर्भ सम्मिलित हों।
- ❖ खेल आनंदमय होने चाहिए जिसमें बच्चों की पूर्ण प्रतिभागिता हो।
- ❖ खेल बच्चों के आयु अनुसार उपयुक्त हों।
- ❖ कक्षा–कक्ष के अंदर एवं बाहर, दोनों प्रकार के खेल हों।
- ❖ बातचीत, कहानी, संगीत, गतिविधि, कला, शिल्प एवं खिलौनों जैसी पद्धतियों के माध्यम से बच्चों को खेल के साथ जोड़ा जाए।

IV. व्यक्तिगत सीखने की गति :

- ❖ बच्चों के सीखने की गति उनकी आयु के अनुसार अलग–अलग होती है।
- ❖ सभी बच्चों की व्यक्तिगत ज़रूरतों में भिन्नता होती है।
- ❖ किसी विशिष्ट स्थिति में अलग–अलग बच्चे अलग–अलग प्रतिक्रिया देते हैं।
- ❖ कक्षा–कक्ष में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में विविधता से सभी बच्चों को सीखने के अवसर प्राप्त होते हैं।

V. बच्चे के घर की भाषा :

- ❖ शिक्षण और आपसी संवाद की भाषा घरेलू/परिचित भाषा हो।
- ❖ कक्षा–कक्ष में घर की भाषा के प्रयोग को प्रेरित और प्रोत्साहित किया जाए।
- ❖ घर की भाषा से औपचारिक/विद्यालय की भाषा की ओर परिवर्तन सहज होना चाहिए।

VI. सीखने की प्रक्रिया :

- ❖ बच्चे परिचित से अपरिचित अवधारणाओं के बारे में सीखते हैं।
- ❖ बच्चे अपने जीवन के अनुभवों से सीखते हैं।
- ❖ बच्चे सरल से जटिल प्रक्रियाओं के माध्यम से सीखते हैं।
- ❖ बच्चे मूर्त से अमूर्त अवधारणाओं के बारे में सीखते हैं।

VII. बहुकक्षीय शिक्षण :

"ऐसी स्थिति जहाँ पर एक से अधिक कक्षाओं को एक साथ बैठाकर एक ही शिक्षक द्वारा शिक्षण कराया जाता है शिक्षण की एक से अधिक कक्षाओं के संयोजन की इस स्थित को बहुकक्षीय शिक्षण कहा जाता है"।

बहुकक्षीय शिक्षण के उद्देश्य : विद्यालयों में शिक्षकों या कक्षा कक्ष की कमी होने पर बहुकक्षीय शिक्षण बहुत उपयोगी हो जाता है, इसके निम्नवत् उद्देश्य हैं–

- छात्रों के समय का सदुपयोग करना।
- छात्रों को उपयुक्त विधि से शिक्षण कार्य करना।
- शिक्षकों के अभाव में उत्पन्न समस्याओं का समाधान करना।
- विद्यालय परिसर में अनुशासन बनाना।
- छात्रों में सृजनात्मक शक्ति का विकास करना।
- शिक्षा–शिक्षण प्रक्रिया को सुचारू रूप से चलाना।
- छात्रों को कक्षा के अनुसार निर्धारित लक्ष्यों में निपुण बनाना।
- बहुकक्षीय एवं बहुस्तरीय परिस्थितियों की वास्तविक स्थिति को समझना।
- प्रत्येक बच्चे की सीखने की क्षमता विकसित करना।
- सामग्री के प्रबंधन एवं रखरखाव की प्रक्रिया को समझना।
- कक्षा के परंपरागत ढाँचे में परिवर्तन कर पाने की क्षमता विकसित करना।

बहुकक्षीय शिक्षण की उपयोगिता : विद्यालयों में शिक्षकों की कमी के कारण बहुकक्षीय शिक्षण बहुत उपयोगी होता है। बहुकक्षीय शिक्षण के लिए विचार करने योग्य मुख्य बिंदु निम्नवत् हैं–

समय विभाजन : सर्वप्रथम विद्यालयों में उपलब्ध अध्यापकों की संख्या के अनुरूप समय विभाजन चक्र का निर्माण कर लेना चाहिए, तत्पश्चात समान शैक्षिक स्तर वाली कक्षाओं का समायोजन एक साथ करना चाहिए।

समेकित पाठों का चयन : सबसे पहले उन पाठों का चयन कर लेना चाहिए, जिनकी विषयवस्तु समान हो तथा अलग–अलग कक्षाओं के हो जिससे एक से अधिक कक्षाओं के विद्यार्थियों का शिक्षण कार्य सुचारू रूप से चलता रहे।

बैठक व्यवस्था : बहुकक्षीय शिक्षण में बैठक व्यवस्था की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। बैठक व्यवस्था इस प्रकार हो कि अध्यापक सभी कक्षाओं के विद्यार्थियों पर ध्यान दे सके, जैसे चन्द्राकार, गोलाकार आकृति आदि। कुछ विद्यालयों में खुली जगह या आँगन होता है, वहाँ भी कक्षा लगाई जा सकती है।

समूहीकरण : बहुकक्षीय गणित शिक्षण में बच्चों को उनके शैक्षिक स्तर के अनुसार आकलन कर समूहों में विभाजित करके शिक्षण कार्य किया जाना चाहिए।

बुनियादी स्तर पर बहुकक्षा शिक्षण : जन्म के पश्चात् बच्चों का शारीरिक व मानसिक विकास बहुत ही तीव्र गति से होता है। मानसिक कौशल जिनकी आवश्यकता सोचने और अपने आसपास की दुनिया को समझने के लिए होती है साथ ही 3–8 वर्ष की उम्र में बच्चा ज्ञानेंद्रियों से अलग–अलग मिली जानकारी को समन्वित कर अनुभव के रूप

में ग्रहण करता है तथा मौखिक सांकेतिक एवं भावनात्मक रूप से अभिव्यक्त करता है। बुनियादी स्तर पर बहुकक्षा शिक्षण एक चुनौतीपूर्ण कार्य है परंतु इसको बुनियादी स्तर पर कैसे लागू करें इसके लिए कुछ महत्वपूर्ण सुझाव इस प्रकार हैं:

- ❖ सर्वप्रथम हमें बच्चों की प्रगति स्तर का पता करना पड़ेगा कि कौन सा बच्चा किस गति से सीख रहा है। बच्चों का शैक्षिक स्तर पता हो जाने से गतिविधि कराना सरल हो जाता है।
- ❖ शिक्षण हेतु अपनी आवश्यकताएँ निर्धारित की जानी चाहिए।
- ❖ बच्चों को समूह में विभाजित कर उनसे अलग–अलग क्रियाकलाप कराए जाने चाहिए।
- ❖ छात्रों को उनकी रूचि के आधार पर उनका वर्गीकरण किया जाना चाहिए।
- ❖ बच्चों को सामग्री देकर कार्य करने हेतु अवसर प्रदान किया जाना चाहिए।
- ❖ जिन समूहों में सीखने की प्रगति नहीं हो रही है, उनके लिए रुचिपूर्ण गतिविधियों के साथ अधिगम हेतु अधिक अवसर प्रदान किये जाने चाहिए।
- ❖ सीखने में बच्चों के परिवेश तथा संस्कृति के अनुभव को सम्मिलित करना चाहिए।
- ❖ शिक्षक को बच्चों के बारे में उनके अभिभावकों से विशिष्ट जानकारियाँ प्राप्त कर उनके साथ शिक्षण कार्य करना चाहिए।
- ❖ बच्चों को स्वतंत्र अध्ययन का मौका देना चाहिए।
- ❖ खेल आधारित गतिविधियों से सीखने के लिए प्रेरित करना चाहिए।
- ❖ शिक्षकों को प्रशिक्षण देकर शिक्षण कौशलों मे दक्ष बनाया जाना चाहिए।
- ❖ सीखने का समुचित माहौल सुनिश्चित कराया जाना चाहिए।
- ❖ बुनियादी स्तर के लिए एक पाठ्यक्रम तैयार करा कर लागू किया जाना चाहिए।
- ❖ बुनियादी स्तर के बच्चों के लिए प्रिंटरिच सामग्री, खिलौने तैयार किए जाने चाहिए।
- ❖ गणित किट, टीएलएम, चार्ट, पोस्टर का अधिक से अधिक उपयोग किया जाना चाहिए।
- ❖ विभिन्न वस्तुओं के बीच उन्हें अंतर और समानताएँ ढूँढने को कहना चाहिए।
- ❖ बच्चों को पत्थर, मोती, तिनके, पत्ते आदि दें तथा इनकी छोटे–बड़े, हल्के–भारी आदि वर्गों में बाँटने को कहें।
- ❖ बच्चों को तरह–तरह का सामान हाथों से, धागे से या किसी लकड़ी से नापने को कहना चाहिए ताकि वे अनौपचारिक रूप से माप लेना सीखें।
- ❖ रंग, आकार, आकृति के आधार पर बच्चों को तरह–तरह की सामग्री देनी चाहिए।
- ❖ वस्तुओं के फिसलने, लुढ़कने तथा पानी के बहाव से संबंधित खेल व गतिविधियाँ करायी जानी चाहिए।

VIII.बहुकक्षीय कक्षा–कक्ष :

- ❖ एक ही कक्षा–कक्ष में एक से अधिक कक्षा के बच्चों (मल्टीग्रेड) के लिए लचीली एवं अनुकूलनीय (adaptable) सीखने–सिखाने की पद्धतियों का प्रयोग करना आवश्यक है।

IX. क्षेत्रीय विविधता / सामग्रियों का सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में प्रयोग (एन.ई.पी. 2020) :

- ❖ शिक्षणशास्त्र में क्षेत्रीय सामग्रियों के प्रयोग से बच्चों को सीखने में दिलचस्पी अधिक होगी एवं बच्चे अपने परिवेश से बेहतर जुड़ पाएंगे।

X. शिक्षक और बच्चे के बीच सम्बन्ध : एक आनंदमय एवं सकारात्मक सीखने का वातावरण, शिक्षक और बच्चे के बीच के सम्बन्ध से काफी प्रभावित होता है, इसलिए –

- ❖ शिक्षक को प्रत्येक बच्चे की ज़रूरतों के प्रति संवेदनशील होना चाहिए।
- ❖ शिक्षक को बच्चों के साथ अधिक से अधिक बातें करनी चाहिए एवं उनकी बातों को ध्यानपूर्वक सुनना चाहिए।
- ❖ शिक्षक को बच्चों को डांटना नहीं चाहिए, बल्कि उदाहरण से बच्चे को सकारात्मक आदतों को अपनाने में मदद करने का प्रयास करना चाहिए।
- ❖ बच्चे के साथ बेहतर संबंध बनाने के लिए उसके द्वारा घर पर बोली जाने वाली भाषा का प्रयोग करने का प्रयास करना चाहिए।

XI. शिक्षक, अभिभावक और समुदाय के बीच संबंध : प्रारम्भिक बाल्यावस्था में बच्चे की परवरिश एवं विकास में शिक्षक के साथ–साथ उसके अभिभावक एवं समुदाय का बहुत बड़ा योगदान होता है। इसलिए–

- ❖ शिक्षक को बच्चों के अभिभावकों के साथ निरंतर संवाद बनाए रखना चाहिए।
- ❖ शिक्षक को बच्चों के अभिभावकों को उनके द्वारा प्राप्त की गई विकासात्मक एवं अधिगम उपलब्धियों के बारे में अवगत कराना चाहिए।
- ❖ शिक्षक को बच्चों की ज़रूरतों के बारे में समुदाय को अवगत कराना चाहिए।

3.2 कक्षा–कक्ष प्रक्रियाओं की रणनीतियाँ

शिक्षण योजना निर्माण हेतु ध्यातव्य बिन्दु :

कक्षा–कक्ष में शिक्षक द्वारा किया जाने वाला शिक्षण, एक ऐसी प्रक्रिया है जो एक निश्चित समय अवधि में बच्चों को अलग–अलग दक्षताएँ सिखाने के लिए किया जाता है। शिक्षण प्रक्रिया में उपयोग में लाये जाने हेतु चिह्नित संसाधनों, नियत समयावधि में सिखायी जाने वाली दक्षताओं को ध्यान में रखते हुए यह जरुरी है कि शिक्षण योजनाओं को रणनीतिपूर्वक बनाया जाए। बेहतर रणनीति एवं योजनाबद्ध तरीके से तैयार शिक्षण योजनाएँ सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में उत्प्रेरक का कार्य करती हैं। ऐसे में यह आवश्यक है कि शिक्षण योजना बनाते समय कुछ महत्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखा जाए और उन्हें योजनाबद्ध तरीके से बनाया जाए। एक बेहतर शिक्षण योजना बनाते समय जिन बातों को ध्यान में रखा जाना चाहिए उनका विवरण निम्नवत् हैं–

I. विकासात्मक लक्ष्य एवं अधिगम दक्षताएँ

विकासात्मक लक्ष्य एवं अधिगम दक्षताएँ किसी भी शिक्षण योजना के मूल तत्व हैं। शिक्षण योजना तैयार करते समय शिक्षक को यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि आयु एवं कक्षा स्तर को ध्यान में रखते हुए

बच्चों को पूरे वर्ष भर में, मासिक स्तर पर, साप्ताहिक एवं दैनिक स्तर पर किन–किन विकासात्मक लक्ष्यों एवं अधिगम दक्षताओं को सिखाना है। अधिगम दक्षताओं पर आधारित शिक्षण योजना बनाने पर योजना की समीक्षा और बच्चों का आकलन करना भी आसान हो जाता है। दक्षता, सीखने के प्रतिफल और पाठ के उद्देश्यों पर अध्याय 2 में विस्तार से चर्चा की गयी है।

II. विषयवस्तु

शिक्षण योजनाओं के निर्माण में विषयवस्तु का ध्यान रखना अति आवश्यक है। अलग–अलग विषयवस्तु के आधार पर निर्मित शिक्षण योजनाएँ अलग–अलग और विशेष होंगी। विषयवस्तु के ही आधार पर शिक्षण योजना में शिक्षण की रणनीति तैयार होती है। जैसे–

- ❖ अगर भाषा में आप किसी चित्र पर चर्चा करने के लिए शिक्षण योजना बना रहे हैं तो उसमें आपको ध्यान में रखना होगा कि प्रश्न करते समय बच्चों के अनुभव से शुरुआत करें। साथ ही इसमें समूह/जोड़ियों में चर्चा और लेखन के अवसर भी दिए जाएँ।
- ❖ गणित में अगर आप मूलभूत संक्रियाओं जैसे–जोड़ या घटाना आधारित शिक्षण योजनाओं का निर्माण कर रहे हैं तो आपको E.L.P.S (Experience-Language- Pictures-Symbols) के बुनियादी सिद्धांतों को ध्यान में रखना होगा।

III. लचीलापन

शिक्षण योजनाएँ लचीली होनी चाहिए ताकि कक्षा–कक्ष में इनके क्रियान्वयन के दौरान जरुरी बदलावों को तुरंत किया जा सके। शिक्षण योजनाओं में लचीलापन सतत् आकलन को प्रभावी रूप से क्रियान्वित करने में भी काफी मददगार होता है।

IV. गतिविधियों का क्रम एवं समय सीमा

शिक्षण योजनाओं का निर्माण करते समय गतिविधियों का क्रम एवं उनमें लगने वाली समय सीमा का भी ध्यान में रखा जाना जरुरी है। शिक्षण योजना में किसी कालांश/दिवस विशेष में क्रियान्वित की जाने वाली अलग–अलग गतिविधियों का क्रम और समय सीमा स्पष्ट रूप से लिखने से शिक्षण योजना के प्रत्येक भाग पर एक नियत समय देना आसान हो जाता है।

जैसे– अगर भाषा के किसी कालांश में डिकोडिंग आधारित शिक्षण योजना बनानी है तो उसमें ध्वनि जागरूकता, वर्ण/अक्षर पहचान, ब्लेंडिंग, शब्द/वाक्यांश/वाक्य पठन की अलग–अलग गतिविधियों के लिए अलग–अलग समयसीमा निर्धारित करने से एक ही कालांश या शिक्षण योजना में डिकोडिंग के अलग–अलग आयामों पर बच्चों के साथ कार्य किया जा सकता है।

V. समूह एवं व्यक्तिगत गतिविधियाँ

शिक्षण योजना बनाते समय यह भी ध्यान रखना चाहिए कि बच्चों को अलग–अलग समूहों/जोड़ियों में और स्वतंत्र रूप से कार्य करने के पर्याप्त अवसर मिलें। जैसे– भाषा शिक्षण की किसी शिक्षण योजना में अगर समझ के साथ पढने के कौशल पर कार्य किया जाना है तो उसमे कुछ खुले छोर के प्रश्न देकर बच्चों

से उन प्रश्नों पर समूहों/जोड़ियों में चर्चा कराई जा सकती है। चर्चा आधारित लेखन कार्य करने हेतु बच्चों को स्वतंत्र रूप से कार्य दिया जा सकता है।

बच्चे जब समूह में चर्चा करते हैं तो एक दूसरे से काफी कुछ सीखते हैं। साथ ही स्वतंत्र रूप से लेखन के अवसर देने पर उनमें आत्मविश्वास के साथ–साथ रचनात्मक क्षमता का भी विकास होता है।

VI. निर्देशित एवं मुक्त खेल

शिक्षण योजनाओं में खेल को भी पर्याप्त अवसर देना चाहिए। कक्षा 2 तक के बच्चों को अलग–अलग दक्षताओं को सिखाने के लिए खेल एक कारगर रणनीति हो सकती है। अलग–अलग खेलों से एक तरफ जहाँ बच्चों में मोटर स्किल्स का विकास होता है, वहीं दूसरी तरफ बच्चों में टीम भावना, त्वरित निर्णयन क्षमता और आत्मविश्वास का भी विकास होता है। शिक्षण योजनाओं में खेलों को स्थान देते समय यह ध्यान में रखना चाहिए कि खेल स्थानीय हों और उनमें अलग से किसी ऐसे अतिरिक्त संसाधन की जरुरत न हो जो विद्यालय में स्थानीय परिवेश में उपलब्ध न हो। रस्सी कूद, पकड़म–पकड़ाई, दौड़, खो–खो, जैसे खेल कराये जा सकते हैं। शब्द अन्त्याक्षरी जैसे इनडोर खेल भी आसानी से करवाए जा सकते हैं। शिक्षण योजना में इन खेलों को जगह देते समय यह भी स्पष्ट रूप से ध्यान देना होगा कि अलग–अलग खेलों में किस–किस तरह की सावधानियाँ रखनी चाहिए।

VII. सीखने–सिखाने की गतिविधियों में विविधता

किसी भी एक कक्षा में अलग–अलग रुचियों के बच्चे होते हैं। सबके सीखने की गति अलग–अलग होती है। हो सकता है कोई बच्चा सीधे पढ़कर समझ लेता हो, तो हो सकता है कि कोई बच्चा वीडियो के माध्यम से ज्यादा बेहतर तरीके से सीख और समझ सके। कुछ बच्चे ऐसे भी हो सकते हैं जो सीधे–सीधे स्वयं करके बेहतर तरीके से सीखते हैं। ऐसे में शिक्षण योजना बनाते समय इन बातों का भी ध्यान में रखा जाना जरुरी होता है। विविधताओं से भरे कक्षा–कक्ष में एक तरह की शिक्षण योजना कारगर नहीं होगी। शिक्षण योजनाओं में बच्चों की रुचियों का, विविधताओं का समावेश करना ही होगा। विविधतापूर्ण शिक्षण योजना बनाने के लिए सबसे जरुरी कदम है कि शिक्षक प्रत्येक बच्चे का बारीकी से अवलोकन करे और उसके अनुसार उनकी रुचियों को, सीखने के स्तर को ध्यान में रखते हुए शिक्षण योजनाओं का निर्माण करें। विविधतापूर्ण शिक्षण योजना निर्माण के कुछ संभावित तरीकों का विवरण निम्नवत् हैं–

- ❖ अगर पर्यावरण अध्ययन की किसी एक शिक्षण योजना में बाहर बाग में जाकर पौधों के अवलोकन की योजना बनाई गयी है तो बच्चों को अलग–अलग कार्य दिया जा सकता है। जैसे– कुछ बच्चे यह नोट कर सकते हैं कि किस पौधे का फूल किस रंग का है ? अपेक्षाकृत किन पौधों पर पत्तियाँ छोटी हैं ? किन पौधों पर पत्तियाँ बड़ी हैं ? किस–किस पौधे पर फल लगे हैं? हम किन–किन फलों को खाते हैं? आदि।
- ❖ गणित में टेनग्राम का उपयोग करते समय किसी बच्चे को मीनार, किसी को गणित के अंक, किसी को मछली, किसी को उसकी पसंद की कोई आकृति बनाने को दी जा सकती है।
- ❖ भाषा में कहानी आधारित शिक्षण योजना में कुछ बच्चों को उनकी पसंद के पात्रों का चित्र बनाने,

कुछ बच्चों को रोल–प्ले करने और कुछ बच्चों को कहानी को अपने शब्दों में सुनाने को कहा जा सकता है।

VIII. बहुकक्षीय एवं बहुस्तरीय योजना

शिक्षण योजना के निर्माण के समय विद्यालय और कक्षा की वास्तविक स्थितियों को ध्यान में रखकर ही एक बेहतर योजना बनाई जा सकती है। अगर किसी विद्यालय में ऐसी स्थिति है कि शिक्षक को एक ही कक्ष में अलग–अलग कक्षाओं के बच्चों को बैठाकर शिक्षण कार्य करना पड़ रहा है तो वहां पर बहुकक्षीय शिक्षण योजना ज्यादा कारगर होगी। बहुकक्षीय शिक्षण योजना बनाते समय इस बात का ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि कक्ष में बैठे प्रत्येक बच्चे को उसकी कक्षा और स्तर के अनुरूप गतिविधियों को करने का मौका मिले। जैसे– अगर किसी कक्ष में कक्षा 2 और 3 के बच्चे एक साथ बैठे हुए हैं और भाषा की शिक्षण योजना में मौखिक भाषा विकास पर कार्य करना है तो हम बच्चों के स्तर को ध्यान में रखते हुए मौखिक कहानी सबको एक साथ सुना सकते हैं और उसके बाद कक्षा 2 के बच्चों में व्यक्तिगत रूप से अपने मनपसन्द पात्र का चित्र बनाने को कह सकते हैं। इसी क्रम में कक्षा 3 के बच्चों को कुछ खुले छोर के प्रश्नों पर समूहों/जोड़ियों में चर्चा करने को कह सकते हैं। जब अलग–अलग बच्चे यह कार्य कर लें तो उनमें से कुछ बच्चों को अपने चित्र के बारे में बताने और खुले छोर पर हुई चर्चा के बारे में सबको बताने के लिए कहा जा सकता है। अगर किसी विद्यालय में बहुकक्षा की स्थिति न हो फिर भी बहुस्तर की स्थिति तो होती ही है। ऐसे में हमें बच्चों के अलग–अलग स्तरों को ध्यान में रखते हुए ही शिक्षण योजना का निर्माण करना चाहिए।

IX. रचनात्मक आकलन

रचनात्मक आकलन किसी भी शिक्षण योजना का अभिन्न हिस्सा होता है। रचनात्मक आकलन आपको शिक्षण योजना में सतत् रूप से जरुरत के अनुसार बदलाव के अवसर प्रदान करता है। साथ ही आपको यह भी जानने और समझने का अवसर देता है कि किसी दिन विशेष में, कौन से बच्चे, सीखने के किस स्तर पर हैं।

X. प्रोजेक्ट कार्य

प्रोजेक्ट कार्य शिक्षण योजना का ही हिस्सा होना चाहिए। बुनियादी स्तर पर प्रोजेक्ट कार्य देते समय यह ध्यान रखना चाहिए की यह मजेदार हो और घर के लोग भी गृहकार्य करवाने में रूचि लें। शिक्षण योजना में प्रोजेक्ट कार्य का समावेश अलग–अलग विषय के आधार पर अलग–अलग हो सकता है, जैसे– भाषा शिक्षण में मौखिक भाषा के अंतर्गत प्रोजेक्ट कार्य देते समय आप बच्चों से कह सकते हैं कि वे आज अपने दादा/दादी/पापा/मम्मी से कोई कहानी सुनकर आएंगे और कल सबको सुनायेंगे।

3.2.2 उत्प्रेरक

I. कक्षा–कक्ष की बैठक व्यवस्था

शिक्षण योजना के क्रियान्वयन में कक्षा–कक्ष की बैठक व्यवस्था की भी एक अहम् भूमिका है। कक्षा–कक्ष में बैठक व्यवस्था बनाते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि सभी बच्चे शिक्षक से सीधे संवाद स्थापित कर पाएँ। इसके लिए अर्धचन्द्राकर तरीके से बैठाना एक बेहतर विकल्प हो सकता है। शिक्षण योजना में

दी गयी अलग–अलग गतिविधियों के अनुसार बच्चों को समूहों में, गोल घेरे में भी बैठाया जा सकता है। जैसे–

❖ अगर भाषा शिक्षण के अंतर्गत चित्र चार्ट पर चर्चा करनी है तो बच्चों को गोल घेरे में बैठाकर शिक्षक को भी उनके साथ ही बैठना चाहिए।

❖ समूह कार्य की गतिविधियों में अलग–अलग स्तर के बच्चों को एक साथ बैठाना चाहिए।

II. कक्षा–कक्ष का वातावरण और शिक्षण योजना का संरेखण

कक्षा–कक्ष में साप्ताहिक/पाक्षिक या मासिक स्तर पर दीवारों पर प्रदर्शित प्रिंट सामग्रियों को बदलते रहना चाहिए। दीवारों पर वही प्रिंट सामग्रियां लगायी जानी चाहिए जिनका उपयोग हम अपनी शिक्षण योजनाओं में करने वाले हैं। बच्चों के बनाए चित्र, लिखी कहानियों को भी प्रिंट सामग्री के रूप में कक्षा–कक्ष की दीवारों पर लगाया जा सकता है।

III. पूर्व से सामग्रियों की व्यवस्था

शिक्षण योजना बनाते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि किसी दक्षता विशेष को सिखाने के लिए जिन–जिन सामग्रियों की जरुरत है जैसे –गणित किट, अवधारणा बोर्ड, चित्र चार्ट, कहानी पोस्टर, अन्य स्थानीय सामग्रियां आदि, उनका स्पष्ट विवरण शिक्षण योजना में दिया जाए। साथ ही प्रत्येक कालांश की शुरुआत के पहले ही शिक्षक इन सामग्रियों की उपलब्धता सुनिश्चित कर ले।

3.2.3 बुनियादी साक्षरता एवं गणित के लिए संरचित शिक्षाशास्त्र (Structured pedagogy for Foundational Literacy and Numeracy)

उत्तर प्रदेश के शिक्षा विभाग द्वारा मिशन प्रेरणा के अंतर्गत विगत कुछ वर्षों से बुनियादी साक्षरता और गणित के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए संरचित शिक्षाशास्त्र (Structured pedagogy) आधारित शिक्षण डिजाइन को संचालित किया जा रहा है। यह शिक्षाशास्त्र अधिगम प्रतिफलों एवं शिक्षण प्रक्रियाओं को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। विभिन्न देशों में भी इस शिक्षाशास्त्र का उपयोग किया जा रहा है जिसका परिणाम बहुत ही प्रभावी पाया जा रहा है। संरचित शिक्षाशास्त्र को शिक्षण डिजाइन के एक ऐसे व्यापक पैकेज के रूप में समझ सकते हैं जिसमें उन सभी महत्वपूर्ण घटकों को संरचित एवं व्यवस्थित रूप से सम्मलित किया जाता है, जो बुनियादी साक्षरता एवं गणित की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

संरचित शिक्षाशास्त्र के मुख्य घटक की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं, जिन्हें अनिवार्य रूप से शिक्षण डिजाइन में सम्मिलित करना महत्वपूर्ण हैः–

1. **विशिष्ट दक्षताएँ, अधिगम प्रतिफल एवं शैक्षणिक योजना तैयार करना** : इस पद्धति के अनुसार, पहले बच्चों के अधिगम के लिए स्पष्ट दक्षताएँ, अधिगम प्रतिफल और पूरे वर्ष की शैक्षणिक योजना तय की जाती है। जिससे कि इसके आधार पर दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया को डिजाइन किया जा सके, बच्चों के अधिगम को ट्रैक किया जा सके और इसे प्राप्त करने के लिए जरूरी कदम उठाए जा सकें।
2. **वार्षिक, साप्ताहिक रूपरेखा एवं दैनिक पाठ योजना** : अपेक्षित अधिगम प्रतिफलों के आधार पर वर्ष को शैक्षणिक सप्ताहों में बाँटा जाता है। इन सप्ताहों के आधार पर दैनिक पाठ योजना बनाया जाता है जो NCF-FS

में सुझाए गए साक्षरता और गणित के 4 ब्लॉक मॉडल पर आधारित होता है । इस पाठ योजना के लिए पहले दक्षताओं का स्कोप एंड सीक्वेंस (Scope and Sequence) तैयार करना महत्वपूर्ण है।

3. **बच्चों के लिए अधिगम शिक्षण सामग्री और शिक्षकों के शिक्षक संदर्शिका :** विभिन्न अधिगम शिक्षण सामग्रियों के साथ बच्चों के लिए पाठ्यपुस्तक, अभ्यास पुस्तिका और शिक्षकों के लिए संदर्शिका तैयार की जाती है। शिक्षक संदर्शिका और अभ्यास पुस्तिका यह सुनिश्चित करता है कि सीखने की प्रक्रिया में सही दिशा में प्रगति हो रही है। इस प्रकार शिक्षकों को उपयुक्त संसाधन प्रदान होता है और उनके क्षमता संवर्धन में भी मदद करता है। अभ्यास–पुस्तिका को शिक्षक संदर्शिका के पाठ योजना के अनुसार साप्ताहिक एवं दिवसवार तैयार किया जाता है।

4. **अधिगम लक्ष्यों की प्रगति को ट्रैक करने के लिए नियमित आकलन एवं उपचारात्मक शिक्षण :** बच्चों की प्रगति को ट्रैक करने के लिए नियमित रूप से आकलन किया जाता है शिक्षण योजना में आकलन के अनुसार समायोजन कर साप्ताहिक एवं सावधिक पुनरावृति किया जाता है। जो बच्चे अधिगम लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाते हैं, उनका समूह बनाकर प्रत्येक सप्ताह एवं समय–समय पर उपचारात्मक शिक्षण भी किया जाता है, जिससे की समता के उद्देश्य को पूरा किया जा सके।

5. **संरचित शिक्षाशास्त्र पर आधारित शिक्षकों का नियमित क्षमता संवर्द्धन प्रशिक्षण :** अधिगम लक्ष्यों को प्राप्त करने में शिक्षकों की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। संरचित पैडागॉजी में प्रशिक्षण, कोर्स, मेंटरिंग, मासिक बैठकों में चर्चा आदि के माध्यम से नियमित रूप से क्षमता संवर्द्धन किया जाता है जिससे कि कार्यक्रम के गुणवत्तापूर्ण संचालन, अधिगम लक्ष्यों की प्राप्ति एवं शिक्षण प्रक्रियाओं में सुधार को सुनिश्चित किया जा सके। इससे उनकी शिक्षण क्षमताएँ मजबूत होती हैं और वे नवाचारी तरीकों का उपयोग करके बच्चों के सीखने को बेहतर बनाते हैं।

6. **शिक्षकों को नियमित शैक्षणिक अनुसमर्थन और फीडबैक जो प्रमुख शिक्षण प्रक्रियाओं को सुदृढ़ करता है :** विकास खण्ड एवं जनपद स्तर के संसाधन समूहों (Resource Groups) के द्वारा शिक्षकों को नियमित रूप से शिक्षण प्रक्रियाओं में सुधार के लिए मदद किया जाता है जिसमें गतिविधियों का डेमो करके दिखाना, अधिगम स्तर पर चर्चा और शिक्षण प्रक्रियाओं पर फीडबैक देना सम्मलित है। इससे शिक्षकों को शिक्षण प्रक्रिया में सुधार करने में मदद मिलती है।

7. **मुख्य शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं पर विशेष जोर :** कुछ शिक्षण प्रक्रियाएँ बहुत ही महत्वपूर्ण होती हैं जैसे अधिगम शिक्षण सामग्री का उपयोग, अवधारणाओं या प्रक्रियाओं का मॉडलिंग करना, बच्चों को फीडबैक देना, बच्चों को खुद से करने का अवसर देना आदि। इस पद्धति में कुछ खास महत्वपूर्ण शिक्षण प्रक्रियाओं को मजबूत करने पर विशेष जोर दिया जाता है।

8. **कक्षा अवलोकन एवं आकड़ों का फॉलोअप :** नियमित रूप से कक्षा अवलोकन करना, आँकड़ों को एकत्रित करना, उनका विश्लेषण कर आवश्यक कदम उठाना अधिगम प्रक्रिया एवं बच्चों के अधिगम को सुधारने के लिए आवश्यक है। इस अप्रोच के तहत नियमित रूप से कक्षा अवलोकन, शिक्षकों को फीडबैक और बच्चों को स्पॉट असेसमेंट करना और आँकड़ों के आधार पर आवश्यक निर्णय लेकर आगे की रणनीति पर कार्यवाही करना महत्वपूर्ण होता है ।

इस प्रकार, संरचित शिक्षाशास्त्र एक विशेषतापूर्ण पद्धति है जो शिक्षा प्रक्रिया को सार्थक और प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मिशन ''प्रेरणा'' के अंतर्गत संरचित शिक्षाशास्त्र आधारित शिक्षण डिज़ाइन बुनियादी साक्षरता और गणित के लक्ष्यों को प्राप्त करने में प्रभावी भूमिका निभा रहा है। इस पद्धति ने आशाप्रद परिणाम दिखाए हैं और यह महत्वपूर्ण होगा कि राज्य अपनी इस अहम पहल से हुए बदलावों से सीख लेते हुए इसे और मजबूत करे जिससे कि यह बुनियादी साक्षरता एवं गणित के डिजाइन का मुख्य स्तम्भ बन सके।

I. पंचादि

शिक्षण योजना के निर्माण में पांच चरणों में सीखने वाली प्रक्रिया को अवश्य ही ध्यान में रखा जाना चाहिए।

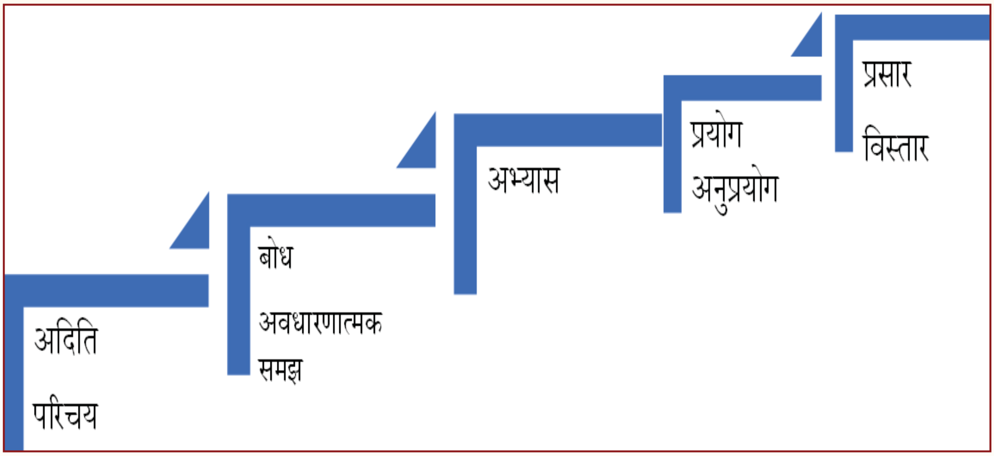

(क) अदिति (परिचय) : बच्चे के पूर्व–ज्ञान से जोड़कर एक नई अवधारणा/टॉपिक का परिचय देना पहला चरण है। बच्चे सवाल पूछकर, खोजबीन करके और विचारों व सामग्री के साथ प्रयोग करके शिक्षक की मदद से नयी विषयवस्तु के बारे में आवश्यक जानकारी इकट्ठा करते हैं।

(ख) बोध (अवधारणात्मक समझ) : दूसरे चरण में बच्चे खेल, पूछताछ, प्रयोग, चर्चा या पढ़ने के माध्यम से मूल अवधारणाओं को समझने की कोशिश करते हैं। शिक्षक प्रक्रिया को देखता है और बच्चों का मार्गदर्शन करता है। शिक्षण योजना में बच्चों द्वारा सीखी जाने वाली अवधारणाओं की सूची होती है।

(ग) अभ्यास : तीसरा चरण कई दिलचस्प गतिविधियों के माध्यम से समझ और कौशल को मजबूत करने के लिए अभ्यास के बारे में है। अवधारणात्मक समझ और दक्षताओं की प्राप्ति को सुदृढ़ करने के लिए शिक्षक समूह कार्य या छोटी परियोजनाओं (projects) का आयोजन कर सकते हैं।

(घ) प्रयोग (अनुप्रयोग) : चौथा चरण बच्चों के दैनिक जीवन में अर्जित समझ को लागू करने के बारे में है। यह विभिन्न गतिविधियों और छोटी परियोजनाओं के माध्यम से पूरा किया जा सकता है।

(ङ) प्रसार (विस्तार) : पाँचवाँ चरण दोस्तों के साथ बातचीत के माध्यम से अर्जित समझ को अभिव्यक्त करने के बारे में है। एक–दूसरे को नई कहानियाँ सुनाना, नए गाने गाना, साथ में नई किताबें पढ़ना और एक–दूसरे के साथ नए खेल खेलना। सीखी गयी प्रत्येक नयी विषयवस्तु के लिए, हमारे मस्तिष्क में एक तंत्रिका मार्ग का निर्माण होता है। ज्ञान बाँटने से हमारा ज्ञान मजबूत होता है। यदि हम सीखी हुई अवधारणा को नहीं सिखाते हैं, तो तंत्रिका मार्ग अधूरा है। शिक्षण सीखने को स्पष्ट और दीर्घकालिक बनाता है।

II. जिम्मेदारियों का क्रमिक हस्तांतरण

बच्चों की सहायता करना शिक्षण प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है। ऐसे में शिक्षण कार्य के दौरान शिक्षक की यह जिम्मेदारी होती है कि वह एक बेहतर रणनीति के साथ प्रत्येक बच्चे की आवश्यकतानुसार सहायता करें। हम जानते हैं कि किसी भी कक्षा में बच्चे सीखने के अलग–अलग स्तरों पर होते हैं। आदर्श स्थिति तो यह है कि हर बच्चे की उसके स्तर के अनुसार सहायता की जाए। लेकिन यह हमेशा संभव नहीं हो पाता है। ऐसे में शिक्षक के लिए यह बेहद जरूरी है कि उनके पास बच्चों के पूर्वज्ञान और कौशल की पूरी जानकारी हो। ऐसा होने पर बच्चों की सहायता के लिए अलग–अलग रणनीतियाँ बनाई जा सकती हैं।

III. कक्षा–कक्षीय प्रक्रिया के दौरान सहायता करने के तरीके

- बच्चों के पूर्व ज्ञान को सक्रिय करके उसे पाठ से जोड़ा जाए। इसके लिए बच्चों से पूछा जा सकता है कि वे इस विषय के बारे में क्या–क्या जानते हैं? नए पाठ को पहले पढ़े गए पाठों से भी जोड़ा जाना चाहिए। बच्चों से यह पूछा जा सकता है कि वे इस विषय को अपने दैनिक जीवन में कहाँ देखते हैं।
- बच्चों के घर की भाषा का प्रयोग करने से भी बच्चों को काफी सहायता मिलती है। इसके बाद वे शिक्षक की सहायता से स्कूल की भाषा/मानक भाषा में दक्षता हासिल कर सकते हैं। गतिविधियों (अनुभव पर चर्चा, सुनी हुई कहानी को अपनी भाषा में सुनाना, शब्दावली विकास आदि) पर कार्य करने के दौरान बच्चों को घर की भाषा में बोलने के लिए प्रोत्साहित करें।
- बच्चों की सहायता करने के दौरान ध्यान रखें कि वे जितना सीख चुके हैं, उससे आगे की विषय वस्तु को सिखाया जाए। साथ ही, बच्चों से ऐसे सवाल नहीं किए जाएँ, जो कि उनके स्तर से आगे के हों। बच्चों के स्तरानुकूल प्रश्न नहीं होने पर वे पूर्वज्ञान से नहीं जुड़ पाते हैं। जिससे उनमें सीखने के प्रति अरूचि उत्पन्न होने लगती है। बच्चों के साथ ऐसी गतिविधियाँ करनी चाहिए, सवाल पूछने चाहिए, जो कि वे शिक्षक व अपने किसी साथी की सहायता से कर पाएँ। ऐसा करने से बच्चे रूचि से सीखते और आगे बढ़ते हैं।
- बच्चों की सहायता करने की प्रक्रियाओं में जिम्मेदारियों का क्रमिक हस्तांतरण (GRR) जरूरी होता है। इस प्रक्रिया में शिक्षक धीरे–धीरे अपनी जिम्मेदारियों को बच्चे तक हस्तांतरित करते हैं। इसके लिए नीचे दी गई प्रक्रिया के अनुसार काम किया जाता है।

मैं करूँ I Do	हम करें We Do	तुम करों You Do
शिक्षक द्वारा आदर्श रूप में करके दिखाना। जो भी नए कौशल सिखाए जाने हैं, उन्हें आप आदर्श रूप में करके दिखाएँ, ताकि बच्चे अच्छी तरह से देख सकें कि वह काम कैसे किया जा सकता है, जैसे– हाव–भाव के साथ किसी पाठ का आदर्श वाचन करना आदि।	**बच्चों और शिक्षक द्वारा मिलकर कार्य करना।** आप बीच–बीच में बच्चों का योगदान लेते हैं, जैसे– साझा पठन के दौरान शिक्षक द्वारा पढ़े हुए अधूरे वाक्य को बच्चों द्वारा वाक्यांश जोड़ते हुए पूरा करना आदि। **बच्चों द्वारा आपके मार्गदर्शन में कार्य करना** आप बच्चों को उन कौशलों का अभ्यास करने का अवसर देते हैं और साथ में आवश्यकतानुसार सहायता भी करते हैं।	**स्वयं बच्चों द्वारा कार्य किया जाना।** आप बच्चों को स्वतंत्र रूप से कार्य करने को प्रेरित करते हैं। इसमें बच्चों को जोड़ों/समूहों में अथवा स्वतंत्र रूप से कार्य करने के लिए कहा जाता है। साथ ही, आप बच्चों के कार्य करने के दौरान, इस बात का आकलन करते रहते हैं कि वे कार्य करने में कितने सक्षम हुए हैं।

3.3 खेल–खेल में सीखना :

बाल मन को समझना और उनके अनुरूप कक्षा–कक्ष में वातावरण का सृजन करना सीखने के लिए अतिआवश्यक है। खेल बच्चों को सबसे प्रिय लगता है। चाहे घर हो या विद्यालय, खेल में बच्चे इस प्रकार घुल–मिल कर एक आत्मीय सम्बन्ध स्थापित करते है जिसमें खुशनुमा व आनन्ददायी वातावरण का निर्माण होता है। इसके अंतर्गत शारीरिक खेल, अन्तःक्रिया, बातचीत, प्रश्न बनाना, उत्तर निर्माण, मुखर होकर बोलना, साझा पठन, पहेलिया, खेल के खिलौने, ड्राईंग, पेंटिंग, दौड़ना, कूदना आदि गतिविधियों को हम व्यवहार में ला सकते हैं। खेल बच्चों को सक्रिय और प्रेरणादायक सीखने के अवसर प्रदान करता है और इसे विभिन्न तौर तरीको से उपयोग में लाया जा सकता है।

3.3.1बच्चों को खेल–खेल में सिखाने के तरीके

I. **मजेदार और स्वाभाविक खेल खिलौने :** इस उम्र के बच्चों के लिए मजेदार और स्वाभाविक खेल खिलौने चुनें। रंगबिरंगे खिलौने, पहेलियां, नाटकीय खेल, गुब्बारे उड़ाने, बिल्डिंग ब्लॉक्स, लोगो इत्यादि उन्हें काफी रुचिकर लगते हैं। उन्हें इस सब चीजो के साथ खिलौने के रूप में खेलने के लिए प्रेरित करें।

II. **बच्चों के साथ समय बिताना :** बच्चों को खेल में सिखाने के लिए उनके साथ खेलें और समय बिताएं। उनके साथ सब कुछ देखकर, सुनकर, उनके साथ संवाद करके और उनसे सीखकर आप उन्हें बेहतर तरीके से खेलना सिखा सकते हैं।

III. **संरचित खेल–खिलौने :** बच्चों को संरचित तरीके से खेल–खिलौनों में व्यस्त करना सिखाएं। उन्हें बताएं कि एक खेल से दूसरे खेल में कैसे जाया जाता है और उसमें कौन–कौन से नियम होते हैं।

IV. **बच्चों की रुचि के अनुसार खेल खेलना :** बच्चों को उनकी रुचि और दिलचस्पी के अनुसार खेल खेलने के लिए प्रोत्साहित करें। कुछ बच्चे खेल खेलना पसंद करते हैं, तो कुछ आर्ट और क्राफ्ट में रूचि रखते हैं। उनकी रूचि के अनुसार खेलने से उनका विकास और सीखना बेहतर होगा।

V. **खेल–खिलौने में साथियों को सम्मिलित करना :** बच्चों को साथियों के साथ खेलने के लिए प्रोत्साहित करें। साथियों के साथ खेलने से उनका सामाजिक विकास होता है और उनमे टीमवर्क, सहभागिता और समझदारी के गुण विकसित होगें।

VI. **सकारात्मक प्रोत्साहन और प्रशंसा :** बच्चों को खेल–खिलौने में सकारात्मक प्रोत्साहन और प्रशंसा दें। जब वे कुछ अच्छा करते हैं, तो उनकी प्रशंसा करें और उन्हें बढ़ने के लिए प्रेरित करें।

VII. **स्वतंत्रता देना :** बच्चों को स्वतंत्रता दें और उन्हें खेल–खिलौनों से अपने तरीके से खेलने दें। यह उनकी रचनात्मकता और सोचने की क्षमता को विकसित करेगा।

ध्यान देने योग्य बात है कि हर बच्चे की रुचि, समझ, और विकास की आवश्यकता अलग होती है, इसलिए उन्हें उनके स्तर के अनुसार खेल–खिलौने प्रदान करें। खेल–खिलौने उनकी स्वतंत्रता, रचनात्मकता, सामाजिक और मानसिक विकास में मदद करते हैं और उन्हें एक मजेदार तरीके से सीखने में सहायता करते हैं।

3.3.2 बातचीत से बच्चों को सिखाना

बच्चों को बातचीत कौशल सिखाना उनके सामाजिक, मानसिक और भाषायी विकास के लिए एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। बातचीत कौशल के माध्यम से वे अपने विचारों को साझा करना और अपनी भावनाओं को व्यक्त करना सीखते हैं। इसके लिए निम्नलिखित चरणों का पालन करें :–

I. **सदैव संवादप्रिय बनना :** बच्चों को संवादप्रिय बनाने के लिए उन्हें सुनने और बातचीत में सक्रिय रहने का मौका दें। उनके सवालों का उत्तर देने के लिए समय निकालें और उन्हें उनके विचारों का महत्व समझाएं।

II. **सरल भाषा का प्रयोग करना :** बच्चों के लिए सरल और समझ में आने वाली भाषा का प्रयोग करें।

III. **धैर्य रखना :** बच्चों की भाषा और सोच को समझने के लिए धैर्य रखें। कभी उन्हें एहसास न होने दें कि आप उन्हें जल्दी में समझने की कोशिश कर रहे हैं।

IV. **बच्चों के विचारों को प्रोत्साहित करना :** बच्चों को अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करें, चाहे उनके विचार सामान्य हों या नये। उन्हें समझाएं कि सभी के विचार मूल्यवान होते हैं, इसलिए उन्हें सुना जाना चाहिए।

V. **कहानियों का सहारा लेना :** बच्चों को अधिक से अधिक कहानियाँ सुनायें। कहानियाँ उन्हें समझने में मदद कर सकती हैं और विभिन्न संवादों के उदाहरण प्रदान कर सकती हैं।

VI. **सम्मान और प्रेम दिखाना :** बच्चों में सम्मान और प्रेम से बातचीत करने की आदत डालना महत्वपूर्ण है।

VII. **समृद्ध बातचीत करना :** बच्चों के साथ समृद्ध बातचीत करें, जिससे कि वह भी अपने दोस्तों के साथ बेहतर संबंध, समस्याओं के समाधान, और अधिक ज्ञान प्राप्ति कर सकें।

VIII. **स्वतंत्रता देना :** बच्चों को बातचीत में स्वतंत्रता दें, यानी उन्हें खुले मन से अपने विचार व्यक्त करने की इजाजत दें। उन्हें दबाव महसूस न होने दें कि उन्हें किसी विचार को छुपाना पड़े। समझदारी से बच्चों के साथ बातचीत करने से वे आत्मविश्वासी बनते हैं और समाज में अधिक सक्रिय होते हैं। बातचीत कौशल को सिखाने में समय लगता है, इसलिए सब्र रखें और प्रत्येक संवाद को अवसर समझें।

3.3.3 कहानी के माध्यम से बच्चों को सिखाना

कहानियाँ बच्चों को अधिक से अधिक सिखाने और उनके विकास में मदद करने का एक शानदार माध्यम है। कहानियाँ उन्हें समझने, सोचने, और समस्याओं का समाधान करने में मदद करती हैं, साथ ही नैतिक मूल्यों को समझाने में भी सहायक होती हैं। निम्नलिखित तरीकों से बच्चों को कहानियों के माध्यम से सिखाने में मदद कर सकते हैं:–

I. **उपयोगी संदेश** : चुनी गयी कहानियों में उपयोगी संदेश होना चाहिए, जैसे कि ईमानदारी, साझेदारी, सदभाव, धैर्य, अध्ययन, और पर्यावरण संरक्षण।

II. **विविधता को समझाना** : अलग–अलग जनजातियों, संस्कृतियों और धर्मों की कहानियों को चुनें ताकि बच्चे समृद्धता के साथ विविधता को समझ सकें।

III. **करके सिखाना** : कहानियों में से उदाहरण लेकर बच्चों को सिखाएं कि अच्छे कार्य करने में कैसे संघर्ष को अपनाया जा सकता है और उससे कैसे सीखा जा सकता है।

IV. **परस्पर संवाद को प्रोत्साहित करना** : बच्चों को कहानी सुनाते समय उनसे परस्पर संवाद स्थापित करें। उनसे सवाल पूछें और कहानी के संदेश, किरदार और विषय पर चर्चा करें।

V. **कहानी को जीवंत बनाना** : कहानियों को जीवंत बनाने के लिए बच्चों को उचित हाव–भाव के साथ कहानी सुनाएं।

VI. **अच्छे आदर्श** : चुनी गयी कहानियों के किरदार और उनके कार्य बच्चों के लिए आदर्श होने चाहिए। उन्हें उन आदर्शों के माध्यम से प्रेरित करें।

VII. **रचनात्मकता को प्रोत्साहित करना** : बच्चों को सुनायी गयी कहानियों के आधार पर अपनी कहानियों का निर्माण करने के लिए प्रोत्साहित करें।

VIII. **मूल्यों के लिए कहानियाँ** : बच्चों में नैतिक मूल्यों के विकास के लिए कहानियों का उपयोग करें।

IX. **रूचियों के अनुरूप कहानियाँ** : कहानियाँ बच्चों की रूचियों के अनुरूप सुनायी जानी चाहिए।

कहानियों को सिखाने के लिए बच्चों के वर्तमान स्तर और रूचियों के अनुसार उनका चयन करें। इसे बच्चों के लिए एक मनोरंजक और शिक्षाप्रद अनुभव बनाएं ताकि वे संवेदनशील नागरिक बन सकें।

3.3.4 खिलौने से बच्चों को सिखाना

खिलौने एक महत्वपूर्ण और मजेदार वस्तु है जिसके माध्यम से बच्चे रूचिपूर्ण तरीके से ज्ञान प्राप्त करते हैं और उनमें कौशल विकसित होते हैं। खिलौने उनके सीखने को उत्साहपूर्ण और सरल बनाते हैं। खिलौने बच्चों की रचनात्मकता एवं अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करते हैं। खिलौनों के माध्यम से हमें बच्चों के दृष्टिकोण के बारे में जानकारी मिलती है, जिससे हमे बच्चों के साथ बेहतर जुड़ाव करने में मदद मिलती है। खिलौनों के प्रयोग से विभिन्न अवधारणाओं पर समझ विकसित की जा सकती है। खिलौने बच्चों के सर्वांगीण विकास में मदद करते हैं और उन्हें सक्रिय और आनंददायक तरीके से सीखने में मदद करते हैं।

3.3.5 भावगीत व तुकबंदी के माध्यम से बच्चों को सिखाना

भावगीत और तुकबंदी दोनों ही शिक्षाप्रद और मनोरंजक कला–साहित्यिक रूप हैं, जिनसे बच्चों को सिखाने में बहुत लाभ होते हैं। यह एक सामाजिक, भाषिक और सांस्कृतिक संवाद का महत्वपूर्ण माध्यम है जो बच्चों में भाषा विकास, रचनात्मकता, संवेदनशीलता और सामाजिक समझ को सुदृढ़ करता है। भाव गीत और तुकबंदी का मिश्रण बच्चों को भाषा सीखने के अवसर देने के साथ–साथ संवेदनशील बनाता है। इसे सिखाने से उनमें रचनात्मक और सामाजिक कौशलों का विकास होगा और वे एक अच्छे लोकगायक संगीतकार और कवि के रूप में भी उभर सकते हैं।

3.3.6 संगीत के साथ थिरकना / गतिशीलता से बच्चों को सिखाना

संगीत के साथ थिरकना और गतिशीलता बच्चों के शिक्षाप्रद विकास के लिए एक महत्वपूर्ण और मनोरंजक माध्यम है। इससे उन्हें शारीरिक, मानसिक, और सामाजिक रूप से विकसित किया जा सकता है। इसे उनके रोजमर्रा के जीवन का एक महत्वपूर्ण और सुदृढ़ अंग बनायें।

3.3.7 लोकगीत व स्थानीय नृत्य के माध्यम से बच्चों को सिखाना

लोकगीत और स्थानीय नृत्य, भाषा और संस्कृति के महत्वपूर्ण अंग होते हैं। बच्चों को इनके माध्यम से सिखाने से सांस्कृतिक जागरूकता, सामाजिक संवेदनशीलता, और भाषायी कौशल का विकास होता है। लोकगीत और स्थानीय नृत्य के माध्यम से बच्चों को सिखाने से उन्हें उनकी संस्कृति और भाषा के प्रति प्रेम विकसित होता है, और वे सामाजिक संवेदनशीलता के साथ भाषा और संस्कृति के साथ जुड़ते हैं।

3.3.8 कला और शिल्प के माध्यम से सिखाना

कला और शिल्प बच्चों के सृजनात्मक विकास और रचनात्मकता को संवारते हैं। इनके माध्यम से बच्चों को अपनी रचनात्मक प्रतिभा को विकसित करने, समस्याओं का समाधान करने, और अपनी सृजनात्मकताओं को व्यक्त करने का अवसर मिलता है। कला और शिल्प के माध्यम से बच्चों को सिखाने से उनमें सृजनात्मकता, भावनात्मकता, और रचनात्मकता का विकास होता है। इससे उनकी संस्कृति, भाषा, और सामाजिक समझ में सुधार होता है।

3.3.9 इनडोर और आउटडोर खेल के माध्यम से बच्चों को सिखाना

इनडोर और आउटडोर खेल बच्चों के शारीरिक, मानसिक, और सामाजिक विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। ये खेल उनकी शारीरिक गतिविधियों एवं मानसिक चुस्ती को बढ़ाते हैं और साथ ही साथ सामाजिक दक्षता को भी सुधारते हैं। इनडोर और आउटडोर खेलों के माध्यम से बच्चों को सिखाने से उनके शारीरिक विकास, मानसिक चुस्ती, सामाजिक दक्षता और टीमवर्क क्षमता का विकास होता है। इससे उनमें स्वस्थ और सक्रिय जीवनशैली की अभिवृद्धि होती है।

3.3.10 क्षेत्रीय भ्रमण के माध्यम से बच्चों को सिखाना

क्षेत्रीय भ्रमण (एक्सकर्शन) बच्चों के लिए एक शिक्षाप्रद और मनोहर अनुभव हो सकता है। क्षेत्रीय भ्रमण के माध्यम से बच्चों को अपनी स्थानीय संस्कृति, ऐतिहासिक स्थलों, प्राकृतिक सुंदरता, और सामाजिक अनुभवों का परिचय होता है। यह उन्हें ज्ञानवर्धक और सृजनात्मक तरीके से सिखाने का एक शानदार विकल्प है।इससे उन्हें अपने परिवेश के प्रति गहरा सम्बन्ध बनाने का मौका मिलता है। इसके अलावा, क्षेत्रीय भ्रमण उन्हें आनंदपूर्वक अनुभव करने की अनुमति देता है और उन्हें नए और रोचक अनुभवों से जोड़ता है।

3.4 शिक्षक और बच्चे के बीच सकारात्मक सम्बन्धों का निर्माण

बच्चे अलग पारिवारिक पृष्ठभूमि व परिवेश से आते हैं। सामाजिक, आर्थिक व धार्मिक विविधताएँ बच्चे के सीखने की मानसिक स्थितियों पर भी प्रभाव डालती हैं। इतना ही नहीं सीखने और सिखाने की प्रक्रिया में तात्कालिक मनोदशा का भी प्रभाव पड़ता है। प्रत्येक बच्चे की मनोदशा को समझना, उसे सीखने की स्थिति में लाने के लिए सुखद अवसर रचना एक शिक्षक की जिम्मेदारी है। शिक्षक को यह सुनिश्चित करना होगा कि सीखने की प्रक्रिया के दौरान बच्चे सहज एवं प्रसन्न हों। फिर वह सीख कक्षा के अन्दर की हो या बाहर की। इसके लिए बच्चों का शिक्षक के साथ भयमुक्त जुड़ाव आवश्यक है।

एक शिक्षक का यह दायित्व है कि सभी बच्चे विद्यालय आने के लिए उत्साहित हों व् आनंदपूर्वक कक्षा–कक्ष की गतिविधियों में प्रतिभाग करें। इस हेतु कुछ प्रयास किए जा सकते है, जिनका विवरण निम्नवत् है –

I. बच्चों को जानें और पास आने दें

बच्चों की दुनिया, उनके खेल, रुचियां, पसंद और नापसंद को जानें कि उन्हें क्या करना बेहद पसंद है।

II. बच्चों को सुनें

हर बच्चे के पास बातों का पिटारा है। हम उस पिटारे को खोलने का प्रयास करें। उन्हें सुने, बाकी बच्चों को भी सम्मिलित करें। आप भी उनकी बातों पर मन से जुड़ें।

III. सोच को विस्तार दें

बच्चों से बातचीत के दौरान उनसे प्रश्न पूछें जिससे उन्हें सोचने और निर्णय लेने के तरीकों को थोड़ी चुनौती मिले। जब वह एक परिधि से बाहर निकल कर सोचना शुरू करते हैं तो उन्हें नया दृष्टिकोण मिलता है।

IV. उन्हें प्रोत्साहित करें

प्रोत्साहन, सीखने और बेहतर करने का ईंधन है। हम समय समय पर उन्हें प्रोत्साहित करें और आवश्यक सुधार करें। उनके बोलने, प्रतिक्रिया, निर्णयों और भावनाओं को प्रोत्साहित करें। यह बच्चों को सकारात्मक रूप से आगे बढ़ने में मदद करता है।

V. अवलोकन करें

बच्चों के संग लगातार बातचीत करें। उनके विचारों को गम्भीरता से समझने का प्रयास करें। उनके तर्क, प्रतिक्रिया, निर्णय, अनुमान आदि पर ध्यान देते हुए सिखाने की योजना बनायें।

VI. बच्चों को गलतियाँ समझने व सुधार में मदद करें

बच्चे हर रोज अपनी जिज्ञासाओं और अनुभवों के अनुसार कुछ नया करने का प्रयास करते हैं। अपने इस प्रयासों में वह कुछ गलतियाँ भी करते हैं। हम उनकी इन गलतियों को समझने व सुधारने में मदद करें।

VII. उन्हें स्वतंत्र बनायें

ऐसे सन्दर्भ रचें जो उन्हें बेहतर सीखने, सोचने व निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करें। पहले उनके साथ मिल कर कार्य करें फिर धीरे धीरे अपनी भागीदारी कम करें और उन्हें स्वतंत्र रूप से कार्य करने दें और उनका अवलोकन करें।

VIII. गृह भ्रमण– बच्चों, उनके घर के सदस्यों, घर के माहौल आदि को समझने का प्रयास करें व उसके अनुरूप रणनीति बना कर कार्य करने से सिखाने में मदद मिलेगी। उनके अभिभावकों को भी बच्चों के प्रति उनकी जिम्मेदारी का एहसास करायें और बच्चों के सीखने में उनकी भी भागीदारी सुनिश्चित करें।

यह ध्यान रखना आवश्यक होगा कि यदि कोई बच्चा कक्षा में गुमसुम या शांत है तो हम उसके पास जाकर सहानुभूतिपूर्वक उसकी इस अवस्था का कारण जानने का प्रयास करें। बच्चे को मानसिक संबल प्रदान कर सामान्य करें।

अनिता ने हाल ही में इस विद्यालय में सहायक अध्यापक के पद पर ज्वाइन किया था। उसकी कक्षा में चौबीस बच्चे थे। रोजाना की शिक्षण प्रक्रिया के दौरान उसका ध्यान सबसे पीछे बैठी सोनम पर गया, जो एकटक उसकी ओर निहार रही थी। वेश–भूषा गन्दी और बाल जैसे हफ्तों से ठीक नहीं किये गए। अनिता ने उसे डांटते हुए कहा कि पढ़ाई पर ध्यान दो, और हाँ, कल बाल ठीक से बाँध कर आना। अगले दिन सोनम को फिर उसी हाल में देख कर अनिता झल्ला पड़ी, "कल बाल धो कर बाँध कर आना वरना पिटाई करूंगी"। सोनम की आँखे डबडबा आयीं। वह सुबकती हुयी अपनी जगह पर जाकर बैठ गयी। अगले दिन अनिता अपनी कक्षा में पढ़ा रही थी तो एक बच्चे ने आकर बोला–"मैडम जी, आपको बड़ी मैडम जी बुला रही हैं।" अनिता प्रधानाध्यापिका के कमरे में पहुँची तो आश्चर्यचकित थी वंहा सोनम एक व्यक्ति के साथ खड़ी थी। उसके सिर पर बाल नहीं थे। उस व्यक्ति ने अपना परिचय देते हुए कहा–"बहन जी, मै सोनम का पिता हूँ। सोनम की मम्मी का चार माह पूर्व बीमारी से देहांत हो चुका है।" उन्होंने आगे बताया की वह रोज सुबह खाना बना कर मजदूरी के लिए निकलते हैं। उन्हें चोटी करना नहीं आता। कभी–कभी पड़ोस वाली चाची सोनम के बाल बाँध देती हैं। आप रोज डांटती हैं तो मैंने उसके बाल मुड़वा कर समस्या ही खतम कर दी। अनिता को लगा कि जैसे सोनम को डांटकर उसने कोई अपराध किया हो। अनिता ने डबडबाई आँखों के साथ सोनम को गले लगा लिया।

3.5 शिक्षक, अभिभावक और समुदाय के बीच सम्बन्ध

एक सफल शिक्षण प्रक्रिया के लिए शिक्षक और अभिभावक के बीच परस्पर सम्बन्ध बहुत महत्वपूर्ण होता है। निम्न बिन्दुओं से दोनों के सकारात्मक रिश्तों का शिक्षण प्रक्रिया पर प्रभाव समझने का प्रयास करेंगे:

- ❖ शिक्षा का सामर्थ्यीकरण अभिभावक और शिक्षक दोनों के सहयोग से होता है।
- ❖ बच्चों के सीखने और विकास में अभिभावकों की भागीदारी होती है।
- ❖ इससे बच्चों का सर्वांगीण विकास किया जा सकता है और उनके विकास में सकारात्मक बदलाव भी लाया जा सकता है।
- ❖ यह बच्चों को अधिक सकारात्मक और समर्थ वातावरण में रखता है, जिससे उनकी रुचि शिक्षा में बनी रहती है।
- ❖ इससे अभिभावक शिक्षण प्रक्रिया से बेहतर जुड़ते हैं और अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति अधिक जागरूक बनते हैं।

- ❖ बच्चों के सीखने और विकास में सहयोग करना विद्यालय और अभिभावकों की साझा जिम्मेदारी होती है जो कि अभिभावकों और शिक्षकों के बीच सकारात्मक सम्बन्धों से ही संभव है।

शिक्षक इन सम्बन्धों को स्थापित करने के लिए निम्नलिखित रणनीतियों का पालन कर सकते हैं:

I. **संवादपूर्ण रहें :** शिक्षक अभिभावकों और बच्चों के साथ नियमित संवाद रखने का प्रयास करें। अभिभावक अपने बच्चे के कक्षा कक्ष के प्रदर्शन और उनमें हो रहे सकारात्मक विकास के बारे में जानना चाहते हैं। इस काम को अभिभावक नियमित रूप से विद्यालय आकर या शिक्षक बच्चे के घर जाकर कर सकते हैं।

II. **समझदारी और सहानुभूति :** शिक्षक अभिभावक और बच्चों के विचारों को समझने का प्रयास करें और उनके दिल की बातों को महत्व दें, इससे उनके बीच परस्पर भरोसा विकसित होगा और संबंध मजबूत होंगे। शिक्षक के लिए यह अनिवार्य है कि वह बच्चों के घर के माहौल को समझें और बच्चों के लिए बेहतर सीखने के अनुभव बनाने में सक्षम हों।

III. **प्रशंसनीय होना :** शिक्षकों को अभिभावकों के सामने उनके बच्चों की सफलता और प्रदर्शन की प्रशंसा करनी चाहिए जिससे बच्चे और अभिभावक दोनों ही अधिक प्रोत्साहित होंगे और विद्यालय से जुड़ेंगे।

IV. **खुले मन के साथ समाधान की खोज :** शिक्षक अभिभावक और स्वयं के बीच किसी भी अनिच्छित स्थिति का समाधान खुले मन से खोजने का प्रयास करें। इससे अभिभावकों का शिक्षकों पर विश्वास और दृढ़ होगा।

V. **विद्यालय के सभी कार्यक्रमों में सहभागिता :** शिक्षक अभिभावकों को विद्यालय के सभी कार्यक्रमों और समारोहों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें, जैसे कि विद्यालय समितियों की बैठकों में हिस्सा लेना और बच्चों के दर्शनीय कार्यक्रमों में उनके साथ सम्मिलित होना। इसके लिए शिक्षक बच्चों के घर जाकर अभिभावकों से संवाद कर सकते हैं।

VI. **निरंतर संपर्क :** सकारात्मक संबंध बनाए रखने के लिए नियमित रूप से संपर्क बनाए रखना महत्वपूर्ण है। शिक्षक अभिभावकों के साथ सम्बन्धों को केवल विद्यालय के समय तक ही सीमित न करें, बल्कि गृह भ्रमण के माध्यम से उनसे बाहर भी संपर्क में रहें।

एक बच्चे पर अभिभावक और समुदाय दोनों का समान रूप से प्रभाव पड़ता है, इसीलिए एक शिक्षक के लिए केवल अभिभावक ही नहीं, बल्कि समुदाय के साथ भी अच्छे संबंध स्थापित करना महत्वपूर्ण है। शिक्षक समुदाय के साथ सकारात्मक सम्बन्ध स्थापित करने के लिए निम्न रणनीतियाँ अपना सकते हैं :–

I. **समुदाय के साथ सहभागिता :** शिक्षक समुदाय के सदस्यों के साथ सहभागिता स्थापित करने के लिए उनको विद्यालय के कार्यक्रमों और गतिविधियों में सम्मिलित कर सकते हैं। शिक्षक समुदाय के लोगों को कक्षा–कक्ष में अपने ज्ञान और अनुभव साझा करने के लिए आमंत्रित कर सकते हैं। समुदाय के सदस्यों के साथ मिलकर शिक्षक विशेष दिवसों की योजना भी बना सकते हैं और उनको मनाने में समुदाय की उपस्थिति भी सुनिश्चित कर सकते हैं। शिक्षक समुदाय का योगदान विद्यालय में बच्चों की नियमित उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए तथा विद्यालय में संसाधनों की आवश्यकता/उपलब्धता पर प्रतिक्रिया देने के लिए भी कर सकते हैं। इससे शिक्षक और समुदाय के बीच सामंजस्य और विश्वास बढ़ेगा।

II. **संवाद बनाए रखना** : शिक्षक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने समुदाय के सदस्यों के साथ नियमित संवाद को प्रोत्साहित करें और उनके विचारों और सुझावों को समझें।

III. **सामुदायिक सभाओं और कार्यक्रमों में प्रतिभाग** : शिक्षक यदि समुदाय द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में प्रतिभाग करते हैं तो समुदाय का शिक्षक और विद्यालय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बनेगा, जिससे विद्यालय के प्रति उनकी प्रतिभागिता बढ़ेगी और बच्चों को इसका लाभ मिलेगा।

इन रणनीतियों का प्रयोग करने से संभव है कि आप शिक्षक के रूप में बच्चों के अभिभावकों और समुदाय के साथ अच्छे सम्बन्ध स्थापित करने में सफल होंगे जिससे बच्चों को शैक्षिक और व्यक्तिगत विकास में मदद मिलेगी और विद्यालय की भी उन्नति होगी।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का मुख्य उद्देश्य बच्चों की सीखने की प्रक्रिया को संवर्द्धित करना है। बच्चों के ज्ञान, कौशल, सामाजिक मूल्य और नैतिक मूल्य के विकास में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया एक व्यवस्थित चरण प्रदान करने में सहायक होती है। बच्चों के लिए सामग्री, पाठयोजना, शिक्षण साधनों की योजना तैयार करना, प्रगति मूल्यांकन प्रश्न, परीक्षण और परियोजनाओं का उपयोग आदि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के महत्त्वपूर्ण अंग है, जो बच्चों की प्रगति को समझने, उनकी प्रतिक्रिया को सुनने तथा उन्हें सीखने की दिशा की ओर अग्रसर करने में सहयोगी होती है।

उत्तर प्रदेश में फाउण्डेशनल स्टेज की कक्षाओं में बुनियादी कौशलों को सिखाने हेतु एक व्यवस्थित रणनीति पर कार्य हो रहा है जिसके तहत सीखने के लक्ष्य और अधिगम प्रभावी योजना निर्माण, कक्षा में शिक्षण गतिविधियों, दैनिक व साप्ताहिक शिक्षण योजना, बच्चों और शिक्षकों के लिए सामग्रियाँ और आकलन को व्यवस्थित तरीके से उपयोग में लिया जाता है।

एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा कक्षा–1 और कक्षा–2 के लिए बाल मन के अनुरूप पाठ्यपुस्तकों के विकास के साथ ही रूचिपूर्ण ढंग से बच्चों का सीखने सुनिश्चित करने हेतु जादुई पिटारा किट विकसित की गयी है। जादुई पिटारा में बच्चों की रूचियों को ध्यान में रखते हुए अक्षर एवं संख्या कार्ड कार्यपत्रक, चित्र चार्ट, पपेट सहित अनेकों खिलौनों को सम्मिलित किया गया है। ठीक इसी प्रकार उत्तर प्रदेश में प्रारम्भिक कक्षाओं के लिए कविता एवं कहानी पोस्टर, बिग बुक, चित्र चार्ट, गणित कार्ड, गणित किट आदि का विकास कर विद्यालयों को उपलब्ध कराया गया है। इसके अतिरिक्त चहक किट तथा ऑडियो गतिविधियों हेतु ब्लूटूथ स्पीकर विद्यालयों में उपलब्ध हैं। उपरोक्त सामग्रियाँ न सिर्फ बच्चों को आकर्षित करती हैं बल्कि कहीं न कहीं पंचकोशीय विकास की अवधारणा व कल्पना को बल प्रदान करती हैं।

❖❖❖

अध्याय-4

फाउण्डेशनल स्टेज पर भाषा शिक्षा एवं साक्षरता

4.1 प्रारम्भिक स्तर पर भाषा शिक्षा एवं साक्षरता

आरम्भिक अवस्था (0–8 वर्ष की आयु तक) बच्चों के विकास की दृष्टि से बहुत निर्णायक एवं महत्वपूर्ण है। इसी अवस्था में उनके समग्र विकास एवं सीखने की प्रक्रिया की नींव रखी जाती है। बच्चों में भाषायी कौशलों के विकास में यह अवस्था महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भाषा तथा साक्षरता सीखने की प्रक्रिया का प्रारम्भ केवल विद्यालय से ही नहीं होता, अपितु यह आरम्भिक बचपन से लेकर प्राथमिक विद्यालयी अवस्था तक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। बच्चों में भाषा तथा साक्षरता कौशलों का विकास परस्पर बहुत नज़दीकी से जुड़े हुए हैं। अतः इन कौशलों के विकास के लिए ज्ञान, कौशलों एवं तरीकों पर समग्र रूप से विचार एवं विश्लेषण किया जाना नितान्त आवश्यक है।

भाषा प्रारम्भिक साक्षरता कौशल का प्रमुख घटक है। भाषा बच्चों की अभिव्यक्ति एवं आत्मविकास के लिए एक सशक्त माध्यम होती है। बच्चों की भाषाएँ अलग–अलग एवं विविध ज्ञानों से परिपूर्ण होती हैं। भाषा का सम्बन्ध केवल वर्णमाला सीखने से ही नहीं, अपितु यह विभिन्न सांस्कृतिक एवं सामाजिक पहलुओं से जुड़ी हुई होती है। भाषा से आशय संचार एवं सम्प्रेषण के साधन के रूप में लिया जाता है। यद्यपि निश्चित रूप से यह बातचीत करने एवं विचारों को एक दूसरे तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, लेकिन इसके अलावा सोचने, प्रतिक्रिया देने और अनुभूतियों को प्रदर्शित करने के माध्यम के रूप में इसकी उपयोगिता के रूप में हम इसे भूल जाते हैं। सीखने के प्रारम्भिक वर्षों में बाहरी संसार के बारे में बच्चों के सोच को आकार देने में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह उनके सामर्थ्य रुचियों, मूल्यों एवं उनके दृष्टिकोणों को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम है।

4.2 फाउण्डेशनल स्टेज में भाषा शिक्षा और साक्षरता पर राज्य पाठ्यचर्या : फाउण्डेशनल स्टेज का दृष्टिकोण

सम्प्रेषण का सशक्त माध्यम होने के कारण भाषा सीखने के लिए भाषा के चारों मूलभूत कौशलों–सुनना, बोलना, पढ़ना एवं लिखना को समग्र रूप से विकसित किया जाना चाहिए। फाउण्डेशनल स्टेज पर भाषा सीखने का क्रम सहज, सरल एवं प्राकृतिक होना चाहिए, जो सुनने के कौशल से प्रारम्भ होकर अभिव्यक्ति के जटिल कौशल अर्थात् स्वतन्त्र लेखन की ओर जाना चाहिए। बच्चा जन्म लेते ही सबसे पहले आवाजें या ध्वनियों को सुनता है। ऐसा माना भी गया है कि यह भाषा दक्षता या भाषा विकास का प्रथम सोपान है, जिसे हम सुनने के रूप में जानते हैं। परन्तु यह सुनना, उस सुनने से थोड़ा अलग है, जिसे हम सुनने की दक्षता के रूप में जानते हैं। सुनना वास्तव में वह दक्षता है, जिसे सुनने के बाद समझने के स्तर तक पहुँचा जा सके या फिर सुनने वाला उसे समझ सके और सार्थक/प्रतिक्रिया या दोहराव कर सके।

4.2.1 बच्चा फाउण्डेशनल स्टेज से पूर्व अर्थात् जन्म से 3 वर्ष की आयु तक घर–परिवार में जो कुछ भी सुनता है वह उसकी भाषा होती है। वह उसी को बोलता है, उसी को समझता है अर्थात् उसके सम्पूर्ण सम्प्रेषण की प्रक्रियाएं उसी भाषा में होती हैं। ये भाषाएँ एक या दो हो सकती हैं तथा एक एवं दो या उससे अधिक का मिश्रण भी हो सकता है। हर बच्चा फाउण्डेशनल स्टेज की शुरूआत से ही घर की भाषा/मातृभाषा/परिचित भाषा का पूरी तरह से प्रयोग कर करता है। इसीलिए यह भी आवश्यक है कि फाउण्डेशनल स्टेज पर ऐसे शिक्षक कार्य कर

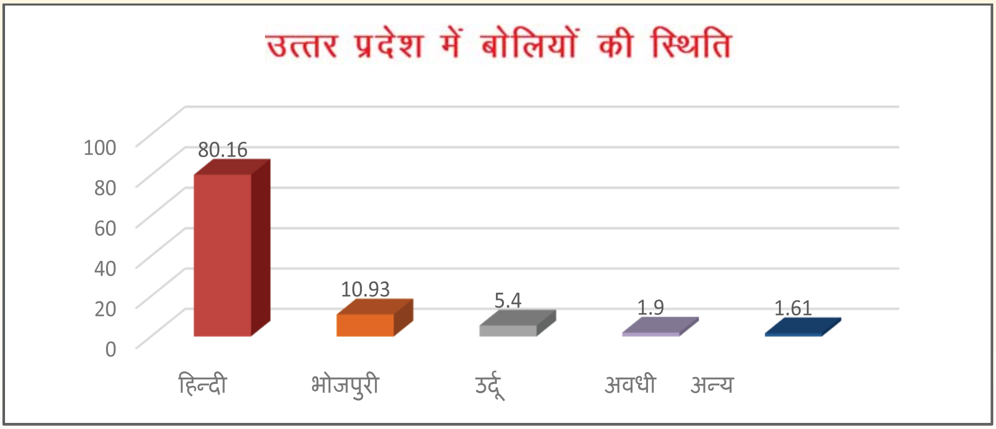

source: www.censusindia.gov.in

रहे हों जो बच्चों के घर की भाषा के साथ–साथ स्थानीय संस्कृति और परम्पराओं की भी समझ रखते हों।

भारतीय जनगणना 2011 के आंकड़ों से स्पष्ट है कि उत्तर प्रदेश में भाषा/बोलियों की विविधता है। शिक्षक अलग–अलग भाषायी पृष्ठभूमि से नियुक्त होते हैं। अतः मातृभाषा/परिचित भाषा में कक्षा–शिक्षण को सरल, सहज, रोचक एवं आनन्ददायी बनाने के लिए स्थानीय भाषा में शिक्षकों का अभिमुखीकरण अवश्य किया जाना चाहिए। इस हेतु सेवापूर्व प्रशिक्षण के अन्तर्गत डी.एल.एड. पाठ्यक्रम में भी उत्तर प्रदेश की विभिन्न भाषाओं/बोलियों में कक्षा–शिक्षण सम्बन्धी पाठ्य सामग्री का समावेश किया जाना चाहिए। इसके लिए यह और अधिक उचित रहेगा कि बच्चों की शैक्षिक प्रक्रिया में उनके अभिभावक भी जोड़े जायें। जिससे सीखने–सिखाने की प्रक्रिया अधिक रोचक बनायी जा सके। घर की भाषा के प्रयोग से बच्चे भी लगातार प्रोत्साहित रहेंगे।

4.2.2 फाउण्डेशनल स्टेज पर बच्चों का सीखना अधिक सुगम एवं सहज बनाने के लिए घर की भाषाओं में अच्छे बाल सहित्य का विकास एवं प्रकाशन किया जाना चाहिए तथा उसका उपयोग शिक्षण में प्रमुखता से किया जाना चाहिए। बच्चे सर्वप्रथम अपने घर की भाषा से परिचित होते हैं। विद्यालय से जुड़ने के पश्चात् यह आवश्यक हो जाता है कि बच्चे धीरे–धीरे अपनी मानक भाषा की ओर बढ़ें। यहाँ यह आवश्यक है कि शिक्षक इस प्रकार प्रशिक्षित एवं प्रेरित होने चाहिए कि वे घर की भाषा एवं मानक भाषाओं के बीच एक सेतु का कार्य कर सके। बच्चों के पूर्वज्ञान को सुरक्षित रखने के लिए घर की भाषाओं को निरन्तर सहयोगी भाषा के रूप में प्रयोग किया जाना चाहिए। बच्चों का पूर्वज्ञान सुरक्षित रखने के लिए यह भी आवश्यक है कि कुछ ऐसे उपाय खोजे जाने चाहिए जो दोनों भाषाओं– घर की भाषा एवं मानक भाषा के बीच सम्बन्ध बनाने में लगातार शिक्षकों एवं बच्चों की मदद कर सकें। इस हेतु विद्यालय में समुदाय के सहयोग से विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित करायी जानी चाहिए।

4.2.3 राज्य में बच्चों की घर की भाषा अन्य विषयों के शिक्षण के लिए प्रयोग नहीं की जा रही है, लेकिन घर की भाषा का सहयोग कम–से–कम मौखिक रूप से अवश्य किया जाना चाहिए। बच्चों को अपने घर की भाषा का प्रयोग करने पर सदैव प्रोत्साहन और प्रशंसा का पात्र बनाया जाना चाहिए। 5 से 8 वर्ष की आयु में बच्चे का यदि नई भाषा से परिचय कराया जाता है, तो वे अर्थपूर्ण संदर्भों के माध्यम से जल्दी सीखते हैं। यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि बहुभाषिक दृष्टिकोण से घर की भाषा अन्य भाषाओं की तुलना में अधिक प्रयोग में लायी जा रही हो। मौखिक रूप में बहुभाषिकता का उपयोग बच्चों में चिंतन एवं आलोचनात्मक विकास में अत्यंत लाभकारी प्रतीत होना चाहिए। फाउण्डेशनल स्टेज के पूर्ण होते–होते बच्चों का कम से कम दो भाषाओं में मौखिक भाषा कौशल (सुनने की क्षमता का विकास, शब्द एवं उनके स्तर के अनुरूप अभिव्यक्ति) का समुचित विकास हो जाना चाहिए।

4.2.4 प्रायः बच्चों में मौखिक भाषा का विकास जितनी तेजी से हो जाता है, इसकी तुलना में पढ़ने एवं लिखने की दक्षता का विकास तेजी से नहीं हो पाता है। इसलिए यह आवश्यक है कि अर्थ पूर्ण संदर्भों के साथ बच्चों की मदद की जानी चाहिए। विद्यालय में ऐसी कार्यपुस्तिकाएँ होनी चाहिए जो बच्चों को पर्याप्त पढ़ने एवं लिखने के नियमित अवसर प्रदान कर सके। 8 वर्ष की आयु तक यह सुनिश्चित होना चाहिए कि बच्चे स्वतंत्र रूप से पढ़ एवं लिख सकें। पढ़ना एवं लिखना सीखने के लिए संस्थाओं में पर्याप्त मात्रा में साहित्य, कविताएँ, नाटक एवं खेलों तथा अन्य रचनात्मक अंतःक्रियाओं का समावेश किया जाना चाहिए। यदि एक से अधिक भाषाएं सिखायी जानी हो (जो कि बच्चों के स्तर पर उपयोगी भी है), तो तीसरी भाषा को सिखाने की विधि सर्वप्रथम सुनने के अवसर प्रदान करने वाली होनी चाहिए। बोलकर पढ़ने से शुरू करना, फिर खेल, फिर साझा पठन, फिर निर्देशित पठन, स्वतन्त्र पठन तथा उसके साथ ही लिखने का अभ्यास, इस प्रकार की क्रमिक क्रियाएं एवं अभ्यास बच्चों को स्वतंत्र लेखन की ओर ले जाने में सक्षम होनी चाहिए।

4.3 प्रारम्भिक भाषा और साक्षरता के घटक

प्रारम्भिक कक्षाओं में शिक्षक को बच्चों के भाषायी विकास पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है, क्योंकि प्रारम्भिक कक्षाओं में मजबूत भाषा एवं साक्षरता विकास आगे आने वाली समस्त कक्षाओं का आधार होता है। इन कक्षाओं में हुआ सुदृढ़ भाषा एवं साक्षरता विकास भविष्य की सभी शिक्षाओं की नींव सिद्ध करता है। किसी भी विषय की पुस्तकों को समझ के साथ पढ़ना एक ऐसा भाषायी कौशल है जिसे केवल बच्चे की शिक्षा के महत्वपूर्ण प्रारम्भिक वर्षों में उपयुक्त माहौल एवं पठन के द्वारा ही विकसित किया जा सकता है। हिन्दी भाषा प्रधान राज्य होने के कारण उत्तर प्रदेश में प्रारम्भिक कक्षाओं में मजबूत भाषा एवं साक्षरता विकास पर विशेष बल दिया जाना और अधिक आवश्यक हो जाता है, क्योंकि बहुभाषिकता उत्तर प्रदेश के सन्दर्भ में एक अहम घटक है। उत्तर प्रदेश में बच्चों के लिए स्कूली शिक्षा तक पहुंच एवं प्रारम्भिक भाषा और साक्षरता के विकास में बहुभाषिकता के माध्यम से सुधार एवं महत्वपूर्ण प्रगति पायी जा सकती है। उक्त के दृष्टिगत प्रारम्भिक वर्षों में भाषा एवं साक्षरता के विकास के लिए प्रारम्भिक भाषा एवं साक्षरता के विभिन्न घटकों का उल्लेख किया जाना आवश्यक हो जाता है। प्रारम्भिक भाषा और साक्षरता के मुख्य घटक अग्रलिखित हैं–

i. **उद्गामी साक्षरता कौशल** : प्रारम्भिक स्तर पर बच्चों में छपी हुयी सामग्री के प्रति जागरूकता विकसित करना, चित्र देखकर पढ़ने का नाटक करना, शब्दों को चित्र के रूप में पढ़ना, अपने आपको अभिव्यक्त करने के लिए लिखने का प्रयास करना या ड्रॉइंग करना उद्गामी साक्षरता कौशल के अन्तर्गत समाहित किये जा सकते हैं।

ii. **मौखिक भाषा विकास** : इसके अन्तर्गत बच्चों को घर की भाषा में सुनने और बोलने के कौशलों का विकास आता है। इन्हें कविता, कहानी चर्चा, विषय, चित्र चर्चा आदि के माध्यम से बोलने के अवसर देकर विकसित किया जाना चाहिए।

iii. **ध्वनि संबंधी जागरूकता** : इसके अन्तर्गत बोले जाने वाले शब्द की ध्वनि संरचना का ज्ञान होना सम्मिलित है। इन्हें आवाज को सुनने, गिनने, पहचानने, जोड़ने और शब्दों में ध्वनियों को बदलने आदि खेलों के माध्यम से विकसित किया जाना चाहिए।

iv. **डिकोडिंग** : इसमें ध्वनि और लिपि चिन्हों के आपसी सह–सम्बन्ध, अक्षर ज्ञान, शब्द पहचान, प्रिंट या छपी सामग्री की समझ सम्मिलित है। इस कौशल को बच्चों के साथ अक्षर पहचान, शब्द पठन आदि अभ्यासों के माध्यम से विकसित किया जाना चाहिए।

v. **शब्द–भंडार** : मौखिक और लिखित रूप से नए शब्द सीखना, उनके अर्थ को समझना व विभिन्न संदर्भों में शब्दों का उपयोग कर पाना सम्मिलित है। बच्चों के साथ विभिन्न सार्थक संदर्भों की सहायता से शब्दावली के विकास पर कार्य किया जाना चाहिए।

vi. **समझ के साथ पढ़ना** : इसके अंतर्गत किसी भी लिखी/छपी हुए सामग्री को पढ़कर उससे विभिन्न स्तर पर अर्थ गढ़ पाने की योग्यता सम्मिलित है। बच्चों के साथ कहानियों, गहन चिंतन एवं विश्लेषण आधारित मौखिक चर्चाओं आदि के माध्यम से इस कौशल को विकसित किया जाना चाहिए।

vii. **धाराप्रवाह पठन** : किसी भी लिखी/छपी हुई सामग्री को उचित गति, शुद्धता और उपयुक्त हावभाव के साथ पढ़ना जिससे अर्थ गढ़ने में आसानी हो, धारा प्रवाह पठन के अंतर्गत आता है। बच्चों के साथ अलग–अलग पठन गतिविधियों के सघन अभ्यास से इसे विकसित किया जाना चाहिए।

viii. **लिखी/छपी सामग्री के प्रति जागरूकता** : समझ के साथ पढ़ने के कौशल को विकसित करने के लिए बच्चों को विभिन्न प्रकार के प्रिंट समृद्ध वातावरण के संपर्क की आवश्यकता होती है। बच्चों को प्रिंट समृद्ध वातावरण के सम्पर्क में आने के अधिकतम अवसर प्रदान किये जाने चाहिए।

ix. **लेखन** : लिखने का अभिनय करने से लेकर स्वतन्त्र लेखन तक की प्रक्रिया इसमें सम्मिलित है। वर्ण, शब्द, वाक्य आदि पर कौशल आधारित लेखन कार्य और अपने विचारों को स्वतंत्र रूप से लिखकर व्यक्त कर पाना इसमें सम्मिलित होता है। इसे विकसित करने के लिए बच्चों को अधिकतम अवसर प्रदान किये जाने चाहिए।

x. **पठन संस्कृति का विकास (Culture of Reading) अथवा पढ़ने की आदत का विकास** : इसमें भिन्न–भिन्न पुस्तकों और अन्य पठन सामग्रियों से जुड़ने की प्रेरणा सम्मिलित है। बच्चों के लिए स्थानीय भाषा में रचित गुणवत्तापूर्ण बाल साहित्य, भाषा समृद्ध वातावरण और पुस्तकालय गतिविधियों के माध्यम से उनमें पढ़ने की ललक और आदत का विकास किया जाना चाहिए।

4.4 मूलभूत साक्षरता के कौशल

बच्चों में जन्म से ही सीखने की प्रक्रिया का आरंभ हो जाता है। अपनी देखभाल करने वाले से परस्पर क्रिया करते हुए वे अपना स्वयं का शब्द भंडार और भाषा विकसित कर लेते हैं और जैसे–जैसे वे बड़े होते हैं, भाषा में लगातार जटिलता प्राप्त करते रहते हैं। बच्चे अपनी मौखिक भाषा में धारा–प्रवाहिता लाते हुए और अपने चारों तरफ उपलब्ध छपी हुई सामग्री के प्रति समझ बढ़ाते हुए, पढ़ने और लिखने के लिए एक नींव तैयार करते हैं। बच्चे शीघ्र ही अपने विचारों और भावनाओं को भाषा के माध्यम से साझा करना सीख लेते हैं। वे शीघ्र ही यह समझना भी प्रारंभ करते हैं कि उनके चारों तरफ जो मुद्रित सामग्री है वह अर्थपूर्ण है और उनके जीवन में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। बच्चों में मुद्रित माध्यम के विभिन्न रूपों जैसे पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, खेल और खिलौनों, संकेतों और प्रतीकों से अंतःक्रिया से मुद्रित सामग्री के प्रति स्वीकृति और समझ बढ़ जाती है जो कि पठन का मूल आधार है। पठन में (पढ़ने का अभिनय) या लिखने के बच्चे के अपरंपरागत प्रयासों को साक्षरता की उचित शुरुआत के रूप में देखा जाता है। मूलभूत साक्षरता के कौशलों के अन्तर्गत प्रारम्भिक स्तर पर सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना को सम्मिलित किया जाना चाहिए। उत्तर प्रदेश राज्य के परिप्रेक्ष्य में राज्य पाठ्यचर्या में मूलभूत साक्षरता के अन्तर्गत इन चारों कौशलों को समाहित करना समीचीन होगा।

4.4.1 मूलभूत साक्षरता के कौशल : श्रवण कौशल

बच्चे की सारी प्रारम्भिक भाषा लिखित के बदले मौखिक होती है और बच्चे का श्रवण पहलू मौखिक पहलू से पहले आता है। बच्चों की भाषा समझ का विकास दो दिशाओं में साथ–साथ होता है। एक दिशा संपूर्ण स्थिति या घटना "सोने का समय", "भोजन का समय", इत्यादि की समझ का विकास है। बच्चा इन स्थितियों का अभिप्राय समझता है और यह भी समझता है कि उनमें भाषा कैसे कार्य करती है। दूसरी दिशा व्यक्तिगत ध्वनियों उनके बाद शब्द और अंत में वाक्यों की समझ का विकास है। हमारी पहली भाषा में श्रवण अधिगम के लिए पर्याप्त संज्ञानात्मक विकास, सामाजिक और भाषायी निर्देशों का कई वर्षों तक सतत् ध्यान रखा जाना आवश्यक है। इस प्रक्रिया में बच्चे विशेष प्रकार की भाषा सीखते हैं जो उन्हें अपनी भाषा सीखने में सहायता करती है।

बोलते समय बच्चे प्रयोग की जाने वाली भाषा का चयन स्वयं करते हैं। इसलिए, कुछ सीमा तक वह सम्प्रेषणात्मक युक्तियों, जैसे बोलते समय व्याख्या या सरलीकरण के माध्यम से अपने भाषाकोश की कमियों की प्रतिपूर्ति कर सकता है। प्रायः श्रवण को निष्क्रिय कौशल कहा जाता है, परंतु आधुनिक भाषाविद् इससे सहमत नहीं हैं। (लिटिलवुड, 1991) क्योंकि श्रवण के लिए श्रोता की सक्रिय प्रतिभागिता आवश्यक है। वक्ता की अपेक्षानुरूप संदेश के पुनर्निर्माण के लिए श्रोता का सक्रिय योगदान आवश्यक है। बच्चे अपने द्वारा सुनी गई ध्वनि की धारा प्रवाहिता को अपने भाषा के ज्ञान का प्रयोग करके अर्थपूर्ण इकाइयों में विभाजित करते हैं। बच्चे इन्हें अपने पिछले भाषा अनुभव से सम्बद्ध करके इनका उपयुक्त अभिप्राय ज्ञात करने में सक्षम हैं। वास्तव में अधिकांश कथन जिन्हे हम अपने दैनिक जीवन में सुनते हैं, भिन्न–भिन्न परिस्थितियों में भिन्न–भिन्न अर्थों में सोचे जा सकते हैं और इसका केवल यह कारण है कि बच्चे सक्रिय रूप से संप्रेषण प्रक्रिया में सम्मिलित होकर उन्हें एक ही उपयुक्त अर्थ से सम्बद्ध करने में सक्षम हैं।

श्रवण कौशल के घटक

श्रवण कौशल के लिए कुछ महत्वपूर्ण घटक निम्नानुसार हैं–

❖ ध्वनियों के बीच भेद पहचानना।

- ❖ शब्द पहचानना।
- ❖ स्वराघाती शब्दों को पहचानना और शब्दों का वर्गीकरण करना।
- ❖ बातचीत में प्रकार्यों की पहचान करना (जैसे बधाई देना, क्षमा माँगना, आदेश देना, प्रश्न पूछना)।
- ❖ अभिप्राय संरचना करने के लिए भाषायी संकेतों को परा–भाषावादी संकेतों (स्वरशैली और बलाघात) से तथा ग़ैर–भाषायी संकेतों (इशारों और स्थिति में सुसंगत वस्तुओं) से भी सम्बद्ध करना।
- ❖ महत्वपूर्ण शब्दों, शीर्षकों (विषयों) और विचारों को दोहराना।
- ❖ वक्ता को समुचित प्रतिपुष्टि देना।

4.4.2 मूलभूत साक्षरता के कौशल : वाचन कौशल

भाषा की कक्षा में मौखिक कौशल विकसित करने के महत्व को कम नहीं आंका जा सकता है। बोली प्रयोगकर्त्ता को भाषा के उपयोग करने की प्रविधि को जाने बिना विचार व्यक्त करने देती है। भाषा प्रयोग में त्रुटियों को मौखिक भाषा के अधिक प्रयोग के द्वारा दूर किया जा सकता है। यद्यपि लिखित भाषा की अपेक्षा यह एक नए सीखने वाले के लिए तब अधिक जोखिम भरा है, जब उसका सामना एक बड़े समूह से होता है, ऐसे में वह अपने आपको अधिक खोखला और असुरक्षित महसूस करता है। मौखिक अभिव्यक्ति की प्रवाहिता विकसित करने के लिए अनुकूल वातावरण सुनिश्चित करना आवश्यक है। सहपाठियों द्वारा उनकी हँसी और मजाक बनाए जाने के प्रति बच्चे बहुत संवेदनशील होते हैं। नियम बनाने से पहले बच्चों से चर्चा करना अति महत्वपूर्ण है ताकि कक्षा–कक्ष में ऐसा उपयुक्त परिवेश बनाया जा सके जिससे बच्चे गलतियाँ करने पर भयभीत न हों। बच्चों को जानना चाहिए कि गलतियों से कैसे सीखा जाता है और गलतियों को अधिगम प्रक्रिया का स्वाभाविक भाग मानना चाहिए।

छोटे बच्चे बोलना सीखने में दो प्रावस्थाओं से गुजरते हैं– पहली प्रावस्था निष्क्रिय अवस्था है, जिसमें बच्चे भाषा का प्रयोग कम करते हैं और उन्हें क्या कहा गया है, उनमें से अधिकांश को समझते हैं। दूसरी प्रावस्था सक्रिय अवस्था है, जिसमें बच्चे शब्दों और शब्द समूहों का प्रयोग करना प्रारंभ करते हैं। इसलिए भाषा सुनकर बच्चे भाषा और भाषा से अपनी दुनिया के बारे में सीखते हैं। विद्यालय आने के समय तक उसकी भाषा के तरीके अधिकांशतः उसकी मूल भाषा/घर की भाषा के होते हैं। उन्होनें वह ध्वनि प्रणाली, व्याकरण और शब्दावली सीख ली होती है जो उनके घर और पड़ोस से जुड़ी हुई है। साधारणतया भाषा विकास पर अनुसंधान दर्शाते हैं कि सहयोगशील और सुविधाजनक परिवेश विकास के वर्षों में शब्द भंडार वृद्धि, और विभिन्न प्रकार के अनुभव देता है, जो विद्यालय का काम कर सकने और जो नहीं कर सकने वाले बच्चों के बीच में अंतर कर सकते हैं। अपने प्रारंभिक वर्षों में बच्चे यह समझने में कठिनाई अनुभव करते हैं कि उसके घर और परिवार के बाहर के लोगों से वह कैसे संबंधित हैं। बच्चे अस्वीकृति की, स्वीकृति की, प्रभुत्व की, समर्पण की, नेतृत्व की, अनुगमन की और समझौते की अपनी युक्तियाँ निर्मित करते हैं।

4.4.3 मूलभूत साक्षरता के कौशल : पठन कौशल

सामान्यतया भाषा सीखना स्वाभाविक प्रतीत होता है, इसलिए हम यह भी सोचने लगते हैं कि अन्य कौशल जैसे पढ़ना और लिखना भी बच्चों में स्वाभाविक रूप से आएगा। हम सोचते हैं कि यदि कोई एक भाषा बोल सकता है, तब वह स्वतः ही उस भाषा में अच्छी तरह लिख और पढ़ सकता है, परंतु ऐसा नहीं है। यद्यपि, पढ़ने और लिखने का संबंध उसी भाषा से है जो बोलने में प्रयुक्त की जाती है, परंतु इसके अन्य आयाम भी हैं जिनके लिए बोलने से संबद्ध आयामों

से बिल्कुल भिन्न प्रत्यक्षीकरण और युक्तियाँ आवश्यक हैं। इन भिन्नताओं की जानकारी यह समझने में हमारी सहायता करेगी कि पढ़ने की क्या विशेषताएँ हैं और उससे उन लक्षणों पर ध्यान देंगे जो हमें दक्षतापूर्वक पठन कौशल अर्जित करने में सक्षम बनाते हैं।

भाषा सीखने से पठन तीन प्रकार से भिन्न है। पहला, पाठक को उस विचार से परिचित होना चाहिए जो मुद्रित भाषा में है। ऐसा करने के लिए पाठक को मुद्रित कूट को भाषा में रूपांतरित करना चाहिए। दूसरा, यद्यपि भाषा सीखने के लिए अभिप्रेरण स्वाभाविक है, परंतु जहाँ तक पठन का संबंध है यहाँ ऐसा नहीं है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि बच्चा मुद्रित सामग्री से कैसे समझता है, अर्थात् क्या वह इन चिन्हों के भिन्न–भिन्न आकारों में भ्रमित हुए बिना कागज पर अंकित चिन्हों को सही ढंग से अंकित कर सकता है। परंतु इससे भी अधिक महत्वपूर्ण है कि बच्चे का पठन के लिए अभिप्रेरण बच्चे की व्यक्तिगत, सामाजिक और शैक्षिक रुचियों में मुद्रित शब्दों की भूमिका पर निर्भर करता है। तीसरा, वक्ता और श्रोता के बीच अंतःक्रिया सदा वास्तविक स्थिति में होती है जिसमें वक्ता की अमौखिक क्रियाएँ और तात्कालिक परिवेश कथन के स्पष्टीकरण में सहायता करते हैं। परंतु पठन में पाठक को अर्थ अधिक स्पष्ट करने के लिए ऐसा कोई भाषायी संकेत नहीं मिलता है।

पठन के प्रारंभिक अनुभव कल्पना करने वस्तुओं को जानने और संसार का पता लगाने के लिए बच्चे की इच्छा पर आधारित होने चाहिए। पठन से बच्चों को परिचित होने के लिए सबसे अधिक सरल तरीका उनके द्वारा पढ़ना और पुस्तकों के बारे में उनसे बातें करना है। अगला कदम पढ़ी जाने वाली मुद्रित सामग्री को दिखाना है ताकि बच्चे उसे देख सकें और उसे ध्वनि में रूपांतरित कर सुन सकें। जैसे–जैसे बच्चों का भाषा का प्रत्यक्ष ज्ञान बढ़ता है और शब्द पढ़ने के लिए उनकी क्षमता तेजी से बढ़ती है, तब वे स्वयं पढ़ना चाहते हैं और जो उन्हें रूचिकर लगता है, उसे पढ़ते हैं। परंतु इस अवस्था में पहुँचने के लिए अवसर होने चाहिए। अध्यापकों को ऐसे अवसर देने चाहिए और बच्चों को शैक्षिक, सामाजिक और व्यक्तिगत प्रयोजनों के लिए मुद्रित सामग्री का प्रयोग करना सिखाना चाहिए।

पठन कौशल विकसित करने में प्रारंभिक अवस्थाएँ

शब्द पहचानने के लिए कुछ महत्वपूर्ण सोपान निम्नानुसार हैं:–

- ❖ बच्चों को विभिन्न प्रकार के अनुभव प्रदान कर विविध भाषा विकास सुनिश्चित करना। बाजार, विभिन्न स्थानों, खरीद केन्द्रों, बगीचों आदि में जाना और इसके बारे में बातें करना, (शब्दावली बढ़ाते हुए) भाषा वृद्धि में सहायक होती है।
- ❖ बच्चों को वस्तुओं का नाम बताकर प्रारंभिक अवस्था में दृश्य शब्दावली विकसित करें।
- ❖ खेलों और क्रियाकलापों के माध्यम से बच्चों में दृश्य शब्दों के प्रति अनुक्रिया स्वतः होने दें।
- ❖ देखकर भेद करना और प्रत्यक्ष ज्ञान के अवसर सोच समझकर दिए जाने चाहिए ताकि बच्चे अंतरों को पहचान सकें। आप "अन्तर चिन्हित करें" प्रकार के कार्यों से प्रारंभ कर सकते हैं, जिनमें चित्र सम्मिलित हों। बाद में, बच्चों को वर्णमाला के अक्षरों के बीच अंतर करने के लिए कहें।
- ❖ बच्चों को दृश्य शब्द अर्जित करने में सहायता करने के लिए दृश्य संकेत दें।
- ❖ सावधानीपूर्वक सुनकर ध्वनियों के बीच अंतर करने के लिए अवसर दें।
- ❖ सावधानी के साथ दिए गए मौखिक अनुदेश भाषा विकास में सहायता करते हैं।

- श्रवण संबंधी प्रत्यक्ष ज्ञान और विभेदीकरण में पर्याप्त अभ्यास कराएँ।
- नए शब्दों में बाएँ से दाएँ जाने में बच्चों की सहायता करें।
- दृश्य विश्लेषण द्वारा पहचान, शब्द के भागों को जोड़ने से पहले होनी चाहिए।
- ध्वनि–विषयक विश्लेषण करने के लिए बच्चों की कविताओं और खेलों का प्रयोग करें।
- जैसे ही बच्चे शब्दों को मूल, प्रत्यय और उपसर्गों में तोड़ने में प्रगति करते हैं, उनकी सहायता करें।
- बच्चों को बातचीत में सम्मिलित किया जाना चाहिए और उन्हें वाक्यों का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करें।

4.4.4 मूलभूत साक्षरता के कौशल : लेखन कौशल

एक बार जब बच्चा भाषा में मौखिक रूप से सम्प्रेषण करना आरंभ करता है, तब लेखन भी प्रस्तुत किया जा सकता है। लेखन, हम क्या सोचते हैं, इसकी भौतिक अभिव्यक्ति है। लेखन और चिंतन के बीच निकट संबंध लेखन को महत्वपूर्ण बनाता है। चूँकि छोटे बच्चे इससे संघर्ष करते हैं कि आगे क्या लिखना है या इसे कागज पर कैसे लिखा जाए, वे बहुधा विचार को नए ढंग से व्यक्त करने का नया तरीका खोजते हैं। कभी–कभी वे इसके बारे में पुनः सोचते हैं। इस प्रकार लेखन का बच्चे के मस्तिष्क के अंदर आंतरिक प्रक्रियाओं से निकटता से संबद्ध है, अर्थात् बाह्य अनुभवों का आंतरिक परिचालन। इसके अलावा, लेखन व्याकरण संबंधी संरचना, मुहावरों और शब्दावली को सुदृढ़ करता है जिसे हम अपने बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षण देते हैं।

बच्चों द्वारा अधिकांश लेखन असंगठित भाषा के रूप में समझा जा सकता है, अर्थात् अनुभवों के आधे–अधूरे चित्र बच्चे के मस्तिष्क में इकट्ठे हो जाते हैं और आंतरिक बोली में रूपांतरित हो जाते हैं। फिर यह एक ग्राफिक रूप में परिवर्तित होता है जो लेखन है। प्रारंभ में बच्चे कई तरीकों से अपना अनुभव और विचार संप्रेषित करते हैं, जैसे– वार्ता के माध्यम से, क्रियाओं के माध्यम से या चित्रकला के माध्यम से। जैसे–जैसे बच्चा बढ़ता है लेखन, 'जो एक परिष्कृत, निरपेक्ष और जटिल प्रतीक प्रणाली है,' धीरे–धीरे महत्व प्राप्त करती है।

जैसा कि अभिव्यक्ति के अधिकांश रूपों में होता है, लेखन तब तक विकसित नहीं होगा जब तक यह बच्चों को किसी प्रकार की संतुष्टि नहीं देता है। अधिक महत्वपूर्ण और दीर्घकालिक संतुष्टि किसी व्यक्ति से सम्प्रेषण करने की आवश्यकता से आती है। इसलिए कोई भी अर्थपूर्ण लेखन कार्य वास्तविक श्रोताओं से कुछ बात कहने की आवश्यकता की भावना से जन्म लेता है। कक्षा–कक्ष में लेखन विकसित करने के लिए स्वाभाविक अनुकूल तरीके आदि में संप्रेषण के बहुत अवसर होने चाहिए। यह स्वाभाविक भाषा परिवेश के निर्माण द्वारा होता है जिसमें बच्चे उत्साह से लिखित भाषा के साथ प्रयोग करते हैं।

लेखन की क्रियाविधि

बच्चे विद्यालय जाने से काफी पहले लेखन के बारे में सीखना आरंभ करते हैं। वे अपने आस–पास के बड़ों की नकल करना प्रारंभ कर देते हैं। प्रारंभिक लेखन केवल अभिव्यक्ति है, यह नए रूप में अभिव्यक्त करने का आनंद लेना मात्र ही है। यहाँ कोई वास्तविक लेखक नहीं होता है।

बच्चे प्रारंभिक लेखन में निम्नलिखित अवस्थाओं से गुजरते हैं–

- आड़ा–टेढ़ा लिखना।
- चित्र बनाना।

- ❖ अक्षरों की मिलती–जुलती आकृतियाँ बनाना।
- ❖ लिखने का अभिनय करना (अक्षरों का प्रयोग करना; जैसे– श्यामपट्ट से देखकर आकृतियाँ और आड़ी–तिरछी रेखाएँ बनाना)

थोड़ी सी सावधानीपूर्वक यदि देखा जाए तो पता चलेगा कि बड़े बच्चों या वयस्कों की तुलना में छोटे बच्चे अपने हाथ के संचालन में कम कुशल होते हैं। बच्चों का हस्त–संचालन कम स्थिर, कम सही और कम तीव्र होता है। छोटे बच्चे को कई अनुभवों से गुजरना पड़ता है जो उसकी उंगली का बढ़िया संचालन, आँख–हाथ का समन्वय तथा अन्य दक्षताओं को बढ़ाता है। ये बाद में लेखन कौशल के विकास के आधार का निर्माण करते हैं। यह हस्तलेख–पूर्व अवस्था महत्वपूर्ण है क्योंकि बच्चे कुछ कौशल विकसित करते हैं जो बाद में लेखन कौशल के विकास में सहायता करते हैं। इनका पुनर्बलन प्राथमिक अवस्था में क्रियाकलापों के माध्यम से किया जाना आवश्यक है।

4.5 संतुलित साक्षरता दृष्टिकोण

भाषा और साक्षरता के घटकों को विकसित करने के लिए एक व्यापक एवं व्यवस्थित पद्धति की आवश्यकता होती है। व्यवस्थित पद्धति के साथ–साथ अर्थ–निर्माण पर भी ध्यान केन्द्रित करना होता है। संतुलित भाषा पद्धति शब्द पहचान कौशल के साथ–साथ अर्थ–निर्माण पर ध्यान केन्द्रित करती है। यह डिकोडिंग के दौरान समग्र भाषा (whole language) के उपयोग से संतुलित होता है। इसके साथ ही मौखिक भाषा और पढ़ने लिखने के बीच संतुलन होता है। भाषा और साक्षरता का कौशल दो व्यापक श्रेणियों से संबन्धित कौशल प्राप्त कर रहे बच्चों पर केन्द्रित होना चाहिए।

4.5.1 निम्न क्रम कौशल : शब्द पहचान और शब्दों को लिखने में सटीकता : प्रिंट जागरूकता और ध्वनि जागरूकता, डिकोडिंग, अक्षरों और शब्दों को सही ढंग से लिखना सम्मिलित है।

4.5.2 उच्चस्तरीय कौशल : भाषा की समझ और अभिव्यक्ति : मौखिक भाषा विकास, शब्दावली समझ के साथ पढ़ना और मौलिक लेखन या रचना।

निम्न और उच्च स्तरीय कौशल के बीच संतुलन की योजना मौखिक खेलों, ध्वनि जागरूकता की गतिविधियाँ, वर्ण पहचान के लिए स्पष्ट निर्देश, डिकोडिंग व शब्द कार्य, सूक्ष्म मोटर गतिविधियाँ, पढ़कर सुनाना, साझा पठन, निर्देशित/मार्गदर्शित पठन, स्वतंत्र पठन, आदर्श लेखन और स्वतंत्र लेखन जैसी विभिन्न गतिविधियों के उपयोग के माध्यम से की जाती है।

4.5.3 मौखिक भाषा विकास : इसके लिए रणनीतियों में बच्चों को कहानी सुनाना फिर उस पर चर्चा करना, बच्चों को भी कहानी सुनाने को या किसी घटना को सुनाने को कहना, कोई चित्र/वस्तु दिखाकर उस पर बातचीत करना, किसी मुद्दे/विषय पर बातचीत करना, बच्चों के लिए स्वतंत्र या निर्देशित माध्यम से बातचीत करने और उनको अपने विचार साझा करने का अवसर देना। इसके साथ ही अभिनय करने की गतिविधियाँ भी सम्मिलित करनी चाहिए।

4.5.4 डिकोडिंग निर्देश और शब्द समूह से अर्थ निकालना : डिकोडिंग शिक्षण के दौरान ध्वनि जागरूकता की गतिविधियों का पालन करना चाहिए। यहाँ पर शुरुआत मे प्रथम, मध्य और अंतिम ध्वनि पर ध्यान देने की जरूरत है। इस दौरान अक्षरों और शब्दों को एक साथ रखना चाहिए जिससे अर्थ निकालना भाषा और साक्षरता के केंद्र में रहे। बच्चों को प्राप्त हो चुके अक्षर ज्ञान ध्यान मे रखते हुये उनसे शब्द निर्माण की गतिविधियों को भी

कराया जा सकता है। शब्दों के खंड करने और अक्षरों को मिलाने से शब्द डिकोडिंग और वर्तनी के लिए स्पष्ट निर्देश दिये जाने की जरूरत है।

4.5.5 पढ़ने की रणनीतियाँ :

(क) पढ़कर सुनाना :

इसमें शिक्षक बाल साहित्य को पढ़कर सुनाता है। इसका उद्देश्य, शिक्षक जो भी पढ़ा रहा है बच्चों द्वारा उसको दोहराने का न होकर उनकी भाषा क्षमताओं और शब्दावली को विकसित करने का होता है। यह गतिविधि बच्चों को साहित्य से परिचित कराने और उन्हें शब्दावली और भाषा के उपयोग और अर्थ–निर्माण से परिचित होने का मौका देती है। इस गतिविधि का अनिवार्य हिस्सा चर्चा और बातचीत करना है, जिससे बच्चे पढ़कर सुनाये जा रहे साहित्य से सक्रिय रूप से जुड़े रहें।

(ख) साझा पठन :

इसमे शिक्षक बड़े अक्षरों वाले साहित्य को चुनते हैं और बच्चों को साथ–साथ पढ़ने के लिए कहते हैं। जैसे–जैसे बच्चे साथ में पढ़ना शुरू करते हैं, वे वर्तमान स्तर से आगे बढ़ सकते हैं। इसके साथ उनके अंदर पढ़ने के क्षमता के प्रति आत्मविश्वास बढ़ता है।

(ग) मार्गदर्शित पठन :

मार्गदर्शित पठन में पढ़ने की जिम्मेदारी शिक्षक से बच्चों में स्थानांतरित हो जाती है। इसमें बच्चे पाठ को पढ़ते हैं और शिक्षक आवश्कतानुसार उनकी मदद करते है। इस प्रक्रिया मे पढ़कर सुनाने और साझा पठन के दौरान शिक्षक द्वारा अपनाई गयी रणनीतियों और तकनीकों के पुनर्बलन का अभ्यास किया जाना चाहिए।

(घ) स्वतंत्र पठन :

इस गतिविधि मे बच्चों को स्वतंत्र रूप से या किसी एक साथी के साथ पढ़ने का अवसर देना चाहिए। वे स्वतंत्र रूप से पढ़ने के दौरान पढ़ने की आदत, पढ़ने व उस पर चिंतन के कार्य को महत्व देने लगते हैं। पुस्तकों के साथ आनंद का अनुभव करने लगते हैं। इसमें बच्चों को स्वतंत्र रूप से पुस्तक को चुनने का अवसर देना चाहिए कि वे कौन–सी पुस्तक स्वयं या अपने साथी के साथ मिलकर पढ़ना चाहते हैं।

4.5.6 लेखन की गतिविधियाँ :

(क) आदर्श लेखन :

जो बच्चे लिखना सीख रहे हैं उनके लिए शिक्षण की प्रक्रिया का मॉडल बनाना आवश्यक है। नकल करके लिखना बच्चों के लेखन प्रवाह मे मदद कर सकता है, परंतु यह बहुत सार्थक प्रक्रिया नहीं है क्योंकि इसमें समझ के साथ लेखन सम्मिलित नहीं है। लेखन की प्रक्रिया की मॉडलिंग करके छोटे बच्चों को बोलने के साथ–साथ लेखन को अभिव्यक्ति की गतिविधि के रूप मे देखना शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

(ख) साझा लेखन :

साझा पठन की तरह साझा लेखन भी शिक्षक के सहयोग के साथ चलने वाली गतिविधि है। इसमें शिक्षक बच्चों के साथ मिलकर लिखने के काम में सहायता करते हैं। उदाहरण के लिए शिक्षक बोर्ड पर लिखे "आम खाने

में ———————— होता है और पढ़ कर सुनाएँ, बच्चों से पूछें कि खाली जगह में क्या भरा जाएगा फिर किसी बच्चे को बुलाकर लिखने को कहें। इस प्रक्रिया में चर्चा करना बातचीत करना लिखना साथ—साथ चलता है। शिक्षक लगातार बच्चों को लेखन प्रक्रिया मे मॉडलिंग, प्रेरित व मार्गदर्शित कर रहे होते हैं।

(ग) मार्गदर्शन में लेखन :

मार्गदर्शन मे पठन की ही तरह मार्गदर्शन में लेखन के दौरान जब बच्चे लेखन कार्य कर रहे होते हैं तो शिक्षक आवश्यकतानुसार बच्चों की मदद करते हैं। लेखन के लिए सोद्देश्यता, क्रियाशीलता और कल्पनाशीलता के तत्वों को जोड़ने वाले उपयुक्त कार्य निर्धारण करने से छोटे बच्चों की लिखने की रुचि बनी रहती है। मार्गदर्शित लेखन में बच्चों के द्वारा मिलजुल कर लिखना और शिक्षक के फीडबैक के साथ लेखन के कई प्रारूप सम्मिलित हो सकते हैं।

(घ) स्वतंत्र लेखन :

बच्चों को कहानी, कविताओं, निर्देशों आदि को लिखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, इससे उनमें रचनात्मकता और कल्पना का उपयोग करने के साथ—साथ साक्षरता के अलग—अलग पहलुओं से जुड़ने का मौका मिलता है। बच्चों को स्वयं से लिखने का मौका देना चाहिए।

फाउण्डेशनल स्टेज पर संतुलित भाषा और साक्षरता शिक्षण में मौखिक भाषा विकास, डिकोडिंग संबंधी कार्य, पढ़ने और लिखने की गतिविधियाँ एक साथ और प्रत्येक दिन होनी चाहिए।

4.6 साक्षरता शिक्षण के लिए चार—ब्लॉक पद्धति

भाषा और साक्षरता शिक्षण में चार प्रमुख घटक हैं— मौखिक भाषा, शब्द पहचान, पढ़ना और लिखना। जबकि

चार ब्लॉकों के लिए गतिविधियों को एकीकृत तरीके से कार्यान्वित किया जा सकता है, साथ ही यह भी जरूरी है कि बच्चे नियमित रूप से हर एक ब्लॉक पर काम करने में समय व्यतीत करें।

जब बच्चे डिकोडिंग सीख रहे होते हैं, तो उन्हें कहानी की किताबों से भी जुड़े रहना चाहिए, जिसमें पढ़ी जा रही कहानी को सुनना और प्रतिक्रिया देना और पढ़े जा रहे साहित्य को सुनकर प्रतिक्रिया में लिखना या चित्र बनाना आदि सम्मिलित है। साथ ही अक्षरों व स्वरों या वर्णों व अक्षरों के शिक्षण को समूहबद्ध तरीके से व्यवस्थित किया जा सकता है, ताकि बच्चे कुछ प्रतीकों को सीखने के तुरन्त बाद सरल शब्दों और अर्थपूर्ण वाक्यों को पढ़ना और लिखना शुरू कर सकें, बजाय इसके कि वे सभी वर्णों और मात्राओं को एक साथ सीखने के लिये प्रतीक्षा करते रहें।

चार–ब्लॉक मॉडल में सम्मिलित हैं–

कक्षा 1 और 2 के अन्त तक, उन बच्चों को अतिरिक्त सहायता के लिए समय देने की आवश्यकता होगी, जिन्होंने बुनियादी शब्द पहचान कौशल हासिल नहीं किया है। ऐसे बच्चों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए शिक्षण की एक अलग पद्धति सभी चार ब्लॉकों में गतिविधियों का हिस्सा होना चाहिए।

4.7 शिक्षण योजना के निर्माण में पाँच चरणों (पंचादि) में सीखने वाली प्रक्रिया को अवश्य ही ध्यान में रखा जाना चाहिए। (संदर्भ– अध्याय–3, 3.2.3)

4.8 मूलभूत साक्षरता एवं भाषा शिक्षा से संबन्धित उत्तर प्रदेश का संदर्भ

बच्चे घर और बाहर विभिन्न प्रकार के वस्तुओं स्थानों, पेड़ पौधों, जीव जंतुओं और विभिन्न घटनाओं के निरंतर संपर्क में रहते है तथा इस प्रकार की विभिन्न वस्तुओं, स्थानों भौगोलिक एवं सामाजिक घटनाओं को देखने, समझने एवं निष्कर्ष निकालने का प्रयास करते हैं। इन अनुभवों को अभिव्यक्त करने मे बच्चों को समर्थ बनाने के लिए उनके परिवेश, वस्तु, स्थानों के दृश्यों को चित्रों के माध्यम से बातचीत के लिए वृहद अवसर उपलब्ध होने चाहिए, जिससे उनमें दृश्य

कौशल का विकास हो सके। इसके द्वारा बच्चों की अवलोकन, संवेदन, स्मृति क्षमता विकसित हो सके। घटनाओं, विभिन्न वस्तुओं/चित्रों के रंग एवं आकार आदि के अंतर/समानता, समान दिखने वाले वर्णों के बीच के अंतर, कहानी के पात्रों, संवादों एवं कथानक को समझने एवं बताने में समर्थ बनाने हेतु प्रिंट रिच सामग्री का अधिकतम समावेश होना चाहिए। बच्चों को अर्थपूर्ण पठन हेतु प्रेरित करने के लिए प्रिंट संसाधनों में उनके सामाजिक सांस्कृतिक, भौगोलिक एवं प्राकृतिक वातावरण से संबन्धित चित्र पुस्तकें, चित्र कार्ड, चित्र आधारित शब्द, वाक्य, कहानी, नाटक और संवादों से संबन्धित सामग्री को सम्मिलित किया जाना चाहिए।

4.8.1 मूलभूत साक्षरता की प्राप्ति के लिए ध्यानपूर्वक 'सुनना' एवं बोलना (मौखिक अभिव्यक्ति) के महत्वपूर्ण आयाम हैं। उनके परिवेशीय वस्तुओं, घरेलू कार्यों, उत्पादन प्रक्रिया, भौगोलिक एवं प्राकृतिक परिवेशों, रहन–सहन, आचार–विचार आधारित शब्दों, वाक्यों, संवादों, कहानियों एवं नाटकों द्वारा सुनने एवं बोलने की दक्षता को विकसित किया जाना चाहिए। बच्चों को अपने भाव, विचार, अनुभव और विविध घटनाओं को बताने में सक्षमता पाने के लिए उन्हें अधिक से अधिक ध्यानपूर्वक सुनने एवं मौखिक अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान किये जाने चाहिए। जिससे बच्चे आगामी समय में अपनी बात को आत्मविश्वास से कहने, विचारों में सुसंगत क्रमबद्धता, स्पष्टता एवं प्रवाहपूर्ण तरीके से अभिव्यक्त करने में समर्थ हो सके। मौखिक भाषा विकास के लिए आँखों देखी तथा सुनी घटनाओं, परिवेश आधारित कहानी, कविता, नाटक, संवाद एवं उनके निजी अनुभवों को अभिव्यक्त करने हेतु अधिक से अधिक सामग्री विकसित किये जाने की जरूरत है। संदर्भ के अनुसार अभिव्यक्ति में शब्द चयन एवं वाक्य निर्माण में सक्षमता पाने के लिए उनके दैनिक एवं सामाजिक जीवन से संबन्धित बिन्दुओं पर बोलने का अवसर दिया जाना चाहिए।

4.8.2 बच्चे अपनी घर की भाषा में ज्यादा तेजी और गहराई से सीखते हैं। इसलिए फाउण्डेशनल स्टेज में शिक्षण की प्रारम्भिक भाषा बच्चे के घर की भाषा/मातृभाषा/परिचित भाषा ही होनी चाहिए। बच्चों की घर की भाषा में उनकी संस्कृति और परम्पराओं का एक समृद्ध अनुभव होता है। स्थानीय बोलियों/घर की भाषा/मातृभाषा के माध्यम से उन्हीं संस्कृति एवं परम्पराओं को बच्चों के भावी ज्ञान के लिए आधारशिला के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है। स्थानीय बोलियों के माध्यम से बच्चे अपने अनुभवों, पूर्व अर्जित ज्ञान एवं नये ज्ञान की अभिव्यक्ति में सहज होते हैं। स्थानीय बोलियां बच्चों के पूर्व ज्ञान और नए ज्ञान के सृजन में संयोजक का कार्य करती है। उनकी बोलियों का शिक्षण में उपयोग करने से सीखने का भयमुक्त वातावरण सृजित होता है एवं बच्चों की उपस्थिति में वृद्धि होती है।

- ❖ पठन सामग्री बच्चों के परिवेश, सामाजिक, सांस्कृतिक, प्राकृतिक, भौगोलिक वातावरण, उत्पादन प्रक्रिया, जीने का सलीका और व्यवहार, सामाजिक कौशल, सांस्कृतिक विविधताओं, समुदायों की प्रथाओं, सम्मानित पेशों और नैतिकता को व्यवहार में लाने हेतु संवेगात्मक बौद्धिक विकास आधारित पाठ्य सामग्री द्वारा बच्चों की आयु के अनुसार निर्धारित पठन कौशल (अर्थपूर्ण) क्षमता विकसित की जा सकती है। अपने सांस्कृतिक इतिहास, भाषाओं, कलाओं और परम्पराओं के दृढ़ बोध के जरिये बच्चे एक सकारात्मक सांस्कृतिक पहचान और आत्म–सम्मान विकसित कर सकते हैं। इसके जरिये सम्प्रेषण और रचनात्मक जैसी सम्बद्ध क्षमताओं का विकास होता है।
- ❖ फाउण्डेशनल स्टेज पर अन्तःक्रिया और शिक्षण के लिए बच्चों की भाषाओं को माध्यम बनाने हेतु इन भाषाओं में बाल साहित्य, चित्र पोस्टर, चित्र के नीचे लिखे गए विषय, शब्द आधारित चित्र आदि सम्मिलित किए जा सकते हैं। स्थानीय बोलियों में उपलब्ध सामग्री द्वारा शिक्षण कार्य करने से भाषाओं के बीच

अंतरसंबंध व दूसरी भाषा जानने में पुल बनाने के लिए बच्चे की भाषा के आधारभूत शब्द ज्ञान और सम्प्रेषण क्षमता को हासिल करने के लक्ष्य होने चाहिए। इन भाषाओं का प्रयोग पढ़ने लिखने और दूसरे विषयों को पढ़ाने में उपयोग में लायी जा रही भाषा से जोड़ने के लिए किया जा सकता है। शिक्षक बनने के लिए आवश्यक कोर्स के पाठ्यक्रम में स्थानीय बोलियों/घर की भाषा/मातृ भाषा के माध्यम से शिक्षण के महत्व को सम्मिलित किया जाना चाहिए।

4.8.3 पढ़ने और लिखने की अवधारणा को शुरुआत में परिचित भाषा के माध्यम से विकसित किया जाना चाहिए, जहां तक सम्भव हो यह भाषा बच्चे की घर की भाषा होनी चाहिए। शुरुआती दौर में बोलने (मौखिक अभिव्यक्ति), पढ़ने (अर्थपूर्ण पठन), चेहरे के भावों, चित्रों, संकेतों, कला, संगीत, नृत्य, नाटक एवं खेल को समझना और व्याख्या करने के साथ–साथ लेखन कौशल में जल्दी सक्षम होने के लिए बच्चों के घर की भाषा/मातृभाषा ही अधिक उपयोगी हो सकती है। स्थानीय भाषा में मौखिक अभिव्यक्ति, सन्दर्भ ग्रहण करते हुए पठन एवं स्वतन्त्र लेखन क्षमता के विकसित होने की प्रक्रिया के साथ कक्षा में पाठ्यपुस्तकों के शिक्षण के लिए स्थानीय भाषा/घर की भाषा/मातृभाषा माध्यम के रूप में प्रयुक्त करते हुए स्कूल की भाषा की ओर धीरे–धीरे अग्रसर होना चाहिए। स्थानीयता के सन्दर्भ में बच्चों के सामाजिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक, प्राकृतिक तथा आर्थिक परिवेश, उत्पादन प्रक्रिया, सामुदायिक प्रथाओं, सांस्कृतिक विविधता पर आधारित पाठ्य सामग्री (कविता, कहानी, नाटक, संवाद, गतिविधि) कार्यपुस्तिका एवं कार्यपत्रक द्वारा पठन एवं लेखन क्षमता को सहज एवं सरल रूप में विकसित किया जाना चाहिए।

❖❖❖

अध्याय-5

फाउण्डेशनल स्टेज में गणितीय शिक्षण सम्बन्धी पाठ्यक्रम, सामग्री, शिक्षण-अधिगम सामग्री

5.1 गणित शिक्षण :

बच्चे कक्षा में अपने परिवेश और संस्कृति से विविध गणितीय कौशल सीख कर आते हैं, जिनको गणित सिखाने का आधार बनाना चाहिए। गणित शिक्षण में अध्यापक द्वारा गणितीय संकल्पनाओं की जानकारी देने और विचारों को स्पष्ट करने के लिए साधारण बोलचाल की भाषा का प्रयोग करना चाहिए। भाषा अनुभवों को यथाक्रम सीखने में सहायक होती है। जिससे प्रत्यक्ष साकार अनुभव को प्रभावित किए बिना कल्पना शक्ति से क्रिया करने की क्षमता उत्पन्न होती है। गणित की संकल्पनाओं की समझ बनाने हेतु प्रथम चरण में बालकों को प्रत्यक्ष साकार वस्तुओं के साथ–साथ क्रियाकलाप के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए फिर साकार वस्तुयें हटा ली जाएं और बच्चों को उन वस्तुओं में निहित अनुभव का स्पष्ट उपयुक्त वर्णन करने को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

गणित सीखने के उद्देश्यों को दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है–

- **उच्चतर उद्देश्य (Higher Goals) :** बच्चों के विचार, प्रक्रियाओं का गणितीकरण (जैसे–अमूर्त चिंतन को समझने की क्षमता, समस्या–समाधान, चित्रण, निरूपण, तर्क करना आदि और सामाजिक क्षेत्रों (domain) के साथ गणित की अवधारणाओं का सम्बन्ध बनाना।
- **विषयवस्तु : संबंधी उद्देश्य (Content & Specific Goals)** जो गणित में विभिन्न अवधारणाओं से संबंधित है, जैसे–संख्याओं, आकृतियों, पैटर्न को समझना आदि।

जब बच्चे गणितीय रूप से कुशल हो जाते हैं तो वे विषयवस्तु–संबंधी उद्देश्यों को प्राप्त कर लेते हैं। किन्तु उच्चतर उद्देश्यों की समझ में कमी देखी जाती है। अतः शुरुआती वर्षों में शिक्षण और सीखने के दोनों लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु ध्यान दिया जाना चाहिए।

गणितीय कौशल सिखाने में सरल से जटिल की ओर जाने वाले तरीकों का इस्तेमाल करना चाहिए। इसका अर्थ है कि शुरुआती वर्षों में बच्चे गणितीय शब्दावली (जैसे–मिलान करना, छाँटना, जोड़े बनाना, क्रम में लगाना, पैटर्न, वर्गीकरण करना, एक–से–एक की संगति) और संख्याओं, आकृतियों, स्थान व मापों से सम्बन्धित गणितीय अवधारणाओं को सीखते हैं। अग्रिम कक्षाओं में ये धीरे–धीरे जटिल और उच्चतर कौशलों (जैसे–मात्रा, आकृति एवं स्थान, मापन) की ओर बढ़ते हैं। गणित सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में उन गणितीय कौशलों जिनमें समझने, हल करने, तर्क करने, संवाद करने और निर्णय लेने की क्षमता का विकास होता है, उन पर ध्यान देने की आवश्यकता है। ऐसी कई विविध गणितीय प्रक्रियाएँ तथा गतिविधियाँ है जो बच्चों को उच्चतर और विषयवस्तु–संबंधी दोनों उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद करती हैं। ये हैं–

- समस्या–समाधान अर्थात् वास्तविक और दैनिक जीवन से जुड़ी दोनों तरह की गणितीय समस्याओं को हल करना।

- ❖ सम्बन्ध बनाना जिसका अर्थ है एक अवधारणा और दूसरी अवधारणा के बीच सम्बन्ध स्थापित करना।
- ❖ निरूपण का अर्थ है कि गणितीय अवधारणाओं और विचारों को निरूपित करने के लिए ठोस वस्तुओं, दृश्य चित्रों का उपयोग करना।
- ❖ सम्प्रेषण का अर्थ है कि गणितीय विचारों को समझाना और सम्प्रेषित करना।
- ❖ अनुमान लगाने का अर्थ है कि मात्रा/परिमाण निर्धारित करने और हल करने के लिए सन्निकटन (approximation) का उपयोग करना।

कक्षा में उक्त प्रक्रियाओं को सम्मिलित करने से बच्चों को एक व्यापक गणितीय अनुभव प्राप्त करने तथा अवधारणात्मक समझ, प्रक्रियात्मक समझ, अनुप्रयोग, तर्क और गणित के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण के रूप में गणितीय निपुणता हासिल करने में मदद मिलती है।

5.2 बुनियादी संख्यात्मकता : राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में बहुत ही स्पष्ट रूप से यह कहा गया है कि बच्चों की बुनियाद अगर अच्छी हो तो आगे सीखने की प्रक्रिया बहुत आसान हो जाती है। इस प्रकार प्राप्त ज्ञान अर्थपूर्ण होता है अन्यथा शिक्षण परीक्षा मात्र के लिए रह जाता है।

संख्या समझ संख्या ज्ञान से ऊपर है। एक क्रम में संख्याओं के नाम बोल देने को ज्यादातर संख्या का ज्ञान कह दिया जाता है। लेकिन संख्या की समझ होना इससे आगे की बात है। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि मेरे पास 5 वस्तुएँ हैं और दूसरे के पास 6 वस्तुए हैं, अब इन 6 वस्तुओं और 5 वस्तुओं में क्या संबंध है? संख्या 6 और संख्या 5 में क्या संबंध है?

संख्या 6, 5 से एक अधिक होती है, संख्या 5, 6 से एक कम होती है, संख्या 5, 3 और 2 मिलकर बनती है या संख्या 6 में 3–3 के दो समूह होते हैं, संख्या 6, 2 और 4 को मिलाकर भी बनती है। यह जो 6 की समझ है या जो 5 की समझ है इसको संख्या की समझ कहते हैं और यह संख्या की समझ होना आवश्यक है क्योंकि यह बाद में जब हम संख्याओं के साथ संक्रियाएं करते हैं जब हम संख्याओं के साथ जोड़–घटा करते हैं तब यह बहुत उपयोग होती है। अगर बच्चों में यह समझ नहीं बन पायी और बच्चा सीधे संख्याओं के नाम एक क्रम में बोल लेता है तब तक हम यह नहीं समझेंगे कि बच्चे में संख्यात्मक ज्ञान आगे बढ़ा। यह बुनियाद सुदृढ़ करने के लिए संख्या की समझ बहुत आवश्यक है।

भाषा, बुनियादी संख्यात्मकता में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भाषा का उपयोग संख्याओं को पढ़ने, लिखने ओर समझने में मदद करता है। यह संख्याओं की सटीकता और सही समझ को बढ़ावा देता है। गणित के नियमों और प्रक्रियाओं को समझने के लिए भाषा का उपयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण है। गणितीय समस्याओं को व्यक्त करने और समझने में भाषा एक महत्त्वपूर्ण कड़ी की भूमिका निभाती है। भाषा का सही उपयोग और स्पष्टता से व्यक्त किया जाना, गणितीय संख्यात्मकता के मुख्य सिद्धांतो की समझाने में मदद करता है। भाषा संख्यात्मकता को संज्ञान में लाने, समझने और सम्प्रेषण करने के लिए एक साधन है जो गणित सीखने और समझने की प्रक्रिया में सहयोगी होता है।

'भाषा का गणित और गणित की भाषा' इस पर चर्चा होनी चाहिए। बच्चे की सीखने की बुनियाद को भाषा और संख्या में अलग–अलग बिंदुओं में नहीं रखा जाना चाहिए। सीखने की सुदृढ़ बुनियाद के लिए यह दोनों ही आवश्यक

हैं। बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता (FLN) ही वह नींव है जिस पर काम किये बिना बच्चों के लिए आगे की दक्षताओं पर कार्य किया जाना सम्भव नहीं होगा।

5.3 मूलभूत संख्यात्मकता के घटक : प्रारंभिक अवस्था में गणित सीखने के दौरान, एक बच्चे से अपेक्षा की जाती है कि वे गिनती करें और अंक प्रणाली को समझें।

- ❖ गणितीय तकनीकियों में योग्यता हासिल करने के लिए आवश्यक परंपराओं को जानें, जैसे संख्याओं को दर्शाने के लिए आधार 10 प्रणाली का उपयोग करें।
- ❖ दो–अंकीय संख्याओं तक की सरल संक्रियाएँ करें और इन्हें विभिन्न संदर्भों में अपनी दिन–प्रतिदिन की गतिविधियों में लागू करें।
- ❖ दो अंको तक की संख्याओं पर जोड़, घटाव, गुणा और भाग करने के लिए मानक तरीकों को समझें और उनका उपयोग करें।
- ❖ स्थान और वस्तुओं की समझ बढ़ाने के लिए संबंधपरक शब्दावली सीखें।
- ❖ दोहराने वाली आकृतियों से लेकर संख्याओं में सरल पैटर्न को पहचानें और उनका विस्तार करें।
- ❖ दैनिक जीवन की गतिविधियों में सरल डेटा–सूचनाओं का संग्रह, निरूपण और व्याख्या करें।

5.3.1 संख्यापूर्व अवधारणाएं :

गणितज्ञों और मनोवैज्ञानिकों ने तर्क दिया है कि इससे पहले कि बच्चे गिनना शुरू करें या संख्याओं की समझ विकसित करें, उन्हें वर्गीकृत करने और कुछ हद तक एक–संग–एक संगतता स्थापित करने में सक्षम होने की आवश्यकता है। चूंकि ये कौशल संख्याओं की समझ के लिए आवश्यक हैं, इसलिए इन्हें संख्या–पूर्व अवधारणाएँ कहा जाता है।

- ❖ गिनने की प्रक्रिया में वस्तुओं और संख्याओं के समूहों में एक–संग–एक संगतता स्थापित की जाती है। उदाहरण के लिए, प्रत्येक समूह के लिए एक और केवल एक ही संख्या होती है और प्रत्येक संख्या के लिए एक समूह बनाया जा सकता है। वर्गीकरण में उन चीजों को एक साथ रखना सम्मिलित है जिनमें कुछ विशेषताएँ समान हैं। इसलिए, वर्गीकरण पर कार्यों का आयोजन करते समय, हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि गतिविधियाँ बच्चों के लिए सार्थक हों और यह भी कि वे उन वस्तुओं से परिचित हों, जिन्हें बच्चों को वर्गीकृत करना है। क्रमबद्धता में कुछ नियमों के अनुसार वस्तुओं के एक समूह को व्यवस्थित करना सम्मिलित है। आंतरिक रूप से इसमें वस्तुओं को दो दिशाओं में व्यवस्थित करना भी सम्मिलित है। उदाहरण के लिए, एक बच्चा एक ही समय में 'इससे बड़ा' और 'इससे छोटा' के संबंध को लागू करता है। इसका अर्थ ट्रांजिटिविटी के तर्क को समझना भी है जिसका अर्थ है कि यदि क, ख से अधिक है और ख, ग से अधिक है, तो क भी ग से अधिक होता है। क्रम भी पैटर्न को समझने के लिए एक आधार बनाता है। एक–संग–एक संगतता में वस्तुओं का मिलान या जोड़ी बनाना सम्मिलित है। बच्चों को 'कई और कुछ', 'से अधिक–कम' और 'जितना हो उतना' का अर्थ समझने की जरूरत है। शिक्षकों को बच्चों के संदर्भ के लिए प्रासंगिक कार्यों को डिजाइन करने की आवश्यकता है ताकि गतिविधियाँ बच्चों के दैनिक जीवन के अनभुवों से संबंधित हों और वे उनका उपयोग करें।

5.3.2 संख्या और संख्याओं पर संक्रियाएँ :

संख्याएँ गिनने और मापने का गणितीय उपकरण हैं। अंकों का प्रयोग अनेक रूपों में किया जाता है। संख्याओं के तीन प्रमुख प्रकार के उपयोग हैं–

मात्रा सूचक संख्याएँ (कार्डिनल संख्याएँ), क्रमसूचक संख्याएँ और नाम के रूप मे उपयोग की जाने वाली संख्याएँ। कार्डिनल नंबरों का उपयोग वस्तुओं के समूह के आकार को मापने और संप्रेषित करने के लिए किया जाता है, उदाहरण के लिए, कक्षा पाँच के 16 छात्रों की पी.टी. टीम है।

एक विशिष्ट क्रम में व्यवस्थित होने पर किसी वस्तु की स्थिति का वर्णन करने के लिए क्रमसूचक संख्याओं का उपयोग किया जाता है, उदाहरण के लिए, बाएँ से चौथे बच्चे का नाम विनोद है। समूह में वस्तु की पहचान करने के लिए संख्याओं को नाम के रूप मे संज्ञा–लेबल के लिए उपयोग किया जाता है, उदाहरण के लिए, ट्रेन संख्या 2298 अभी–अभी निकली है। बुनियादी अंकगणित का उद्देश्य बच्चों में संख्या बोध विकसित करना है, जो संख्याओं के साथ सोचने और काम करने की क्षमता का विशिष्ट रूप है। इस श्रेणी के अतंर्गत आने वाले प्रमुख कौशल हैं– संख्या बोध, प्रतीकों का पढ़ना, शब्दों और प्रतीकों को लिखना, संख्याओं की तुलना जैसे छोटे से बड़ा, बड़े–से छोटा, आदि। मौलिक संक्रियाएँ– जोड़, घटाव, गुणा, भाग और दैनिक जीवन में उनके अनुप्रयोग जोड़, घटाव, गुणा और भाग जैसी संक्रियाओं से जुड़ी समस्याएं, बच्चों को ठोस वस्तुओं की गिनती से आगे बढ़कर संख्याओं के अधिक सारगर्भित उपयोग की ओर ले जाने की अनमुति देती हैं। इन कार्यों के दैनिक जीवन में व्यापक अनुप्रयोग हैं। जोड़ और घटाव की संक्रियाएं एक दूसरे की पूरक हैं। जोड़ समान वस्तुओं के अलग–अलग सेटों का एक संयोजन–एकत्रीकरण है जबकि घटाव इसके ठीक विपरीत है जो तत्वों के एक सेट से निकली हुई या शेष बची हुई वस्तुओं के संख्या को ज्ञात करना होता है। इसी प्रकार गुणा और भाग भी एक दूसरे के पूरक हैं। बार–बार जोड़ के लिए गुणा किया जाता है जबकि बार–बार घटाव या 'के भाग' के लिए विभाजन किया जाता है। ये संक्रियाएं न केवल बच्चों में कम्प्यूटेशनल क्षमताओं को विकसित करने के लिए हैं बल्कि उन्हें दैनिक जीवन के संदर्भ में समस्या समाधान के लिए उपकरण के रूप में उपयोग करने के लिए भी होते हैं। जिन समस्याओं में आमतौर पर जोड़ और घटाव का उपयोग किया जाता है, उनमें कुछ मात्रा में वद्धि या कमी, दो या दो से अधिक वस्तुओं का संयोजन और वस्तुओं की तुलना सम्मिलित होती है। घटाव का प्रतिनिधित्व करने के लिए सामान्यता 'निकाल लो–शेष हटा लो' जैसी समस्याएँ होती हैं। छोटी संख्याओं के जोड़ और घटाव से निपटने के लिए कुछ अनौपचारिक रणनीतियाँ हैं क्योंकि यह 'संख्या बोध' बनाने में मदद करती हैं। ये ऑपरेशन दैनिक जीवन के संदर्भ में सरल समस्याओं की व्याख्या, निरूपण और समाधान के लिए उपयोगी होती हैं। सभी बच्चों के पास अपने सीखने के माहौल के भीतर और बाहर अपने स्थानीय संदर्भ में संख्याओं और संख्याओं पर सक्रियाओं के विचारों को विकसित करने के पर्याप्त अवसर होना चाहिए।

संख्याओं के साथ कार्य करने के कौशल को प्राप्त करने के लिए, निम्नलिखित दृष्टिकोणों का पालन किया जा सकता है:–

- ❖ संख्याओं को पढ़ाते समय, दहाई के समूहों की अवधारणा का उपयोग विभिन्न प्रकार की वस्तुओं जैसे टहनियों, पेंसिल आदि का उपयोग करके किया जाना चाहिए।

- बच्चों को एक–संग–एक संगतता का उपयोग करके वस्तुओं के मिलान और छँटाई में सम्मिलित करना और रंग, आकार या अन्य मापदंड में भिन्न वस्तुओं को क्रमबद्ध करना सम्मिलित होना चाहिए।
- बच्चों को वस्तुओं के विभिन्न समूहों को गिनने और मात्रा और संख्या के बारे में सोचने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
- ऐसी रणनीतियों का उपयोग करें जो बच्चों को सही और कुशलता से गिनना सीखने में मदद करें जैसे कि गिने जा रहे प्रत्येक वस्तु को इंगित करना–छूना–चलाना आदि।
- संख्याओं पर ध्यान केन्द्रित करें और उनका उपयोग कैसे किया जाता है पर बल देना चाहिए। जैसे– घर का पता, पैकेट पर अंकित वस्तुओं की कीमतें आदि।
- अनुमान लगाने से संबंधित शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। जैसे– इससे अधिक, कम, के बारे में, लगभग, लगभग और बीच में आदि।
- बच्चों से वस्तुओं के समूह को देखकर अनुमान लगाने जैसे इसमें कितनी वस्तुएं हैं। उन्हें वास्तविक उत्तर के लिए अनुमान का परीक्षण करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
- ऐसे खेल खेलने चाहिए जिनमें संख्याओं को गिनना और उनका उपयोग करना सम्मिलित है जैसे– साधारण बोर्ड खेल, कार्ड या पासा खेल इत्यादि। बच्चों को समूहों के संयोजन, समूह से वस्तुएँ निकालना, वस्तुओं के समान वितरण से संबंधित समस्या समाधान की स्थितियाँ दें ताकि वे जोड़, घटाव, गुणा और भाग की अवधारणा बना सकें।
- छात्रों को कुछ मनोरंजक और सीखने पर आधारित गतिविधियों में सम्मिलित करें ताकि वे विभिन्न संक्रियाओं की अवधारणा को विकसित कर सकें।
- बच्चों को उपयुक्त शब्दावली का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। जैसे कि एक साथ, वस्तुएँ निकालना, कितनी बार, समान, साझा करना आदि।

5.3.3 आकार और स्थानिक समझ :

गणित वह क्षेत्र है जिसमें आकार, स्थान, स्थिति, दिशा और गति सम्मिलित होती है। यह उस स्थान और परिवेश का वर्णन और वर्गीकरण करने में मदद करता है, जिसमें हम रहते हैं। स्थानिक समझ बच्चों को लोगों और वस्तुओं के संबंध में स्वयं के सापेक्ष जागरूकता प्रदान करती है। प्रमुख अवधारणाओं में त्रि–आयामी आकार और ठोस, ठोस की सपाट और घुमावदार सतहें, ठोस आकार की सतहों पर दिखाई देने वाली द्वि–आयामी आकृतियाँ सम्मिलित हैं, उदाहरण के लिए सीधी रेखाएँ, घुमावदार रेखाएँ, सीधी और घुमावदार रेखाओं से बनी आकृतियाँ, (त्रिकोण, चतुर्भुज, वृत्त,) आदि। चूंकि बच्चे अपने आसपास की वस्तुओं के आकार से परिचित होते हैं, इसलिए अन्य वस्तुओं के साथ संबंध बनाकर आकृतियों के बीच अंतर को समझाना बेहतर होगा। जैसे कि यह एक गेंद की तरह गोल है, आदि। जब बच्चे अपनी भाषा या सामान्य शब्दावली का उपयोग करते हैं, तो वे अपने अन्वेषणों के माध्यम से जो पाते हैं उसे संप्रेषित कर सकते हैं। यह उन्हें सामान्यीकरण करने और अवधारणा को बेहतर ढंग से समझने में मदद करता है। बाद में, समझ के इस आधार को औपचारिक गणितीय शब्दावली से जोड़ दिया जाना चाहिए।

शिक्षक निम्नांकित तरीकों का अनुसरण कर सकते हैं।

- बच्चों को विभिन्न आकृतियों की पहचान करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। जब वे विभिन्न वस्तुओं को देखते हैं, पहेलियाँ बुझाते हैं और बिल्डिंग ब्लॉक्स के साथ काम करते हैं।
- बच्चों को ब्लॉक, बक्से, कंटेनर, अलग हो जाने वाले आकार और जिग्सॉ पहेली जैसी वस्तुओं को संभालने के कई अवसर दें।
- बच्चों को बाहरी उपकरणों पर या उसके आस–पास बक्से या बड़े ब्लॉक संरचनाओं के अंदर और बाहर चढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। आस पास के स्थान में खुद को अनुभव करने के लिए अलग–अलग चीजों के ऊपर, नीचे, आस–पास, अंदर और बाहर जाने के अवसर देना चाहिए।
- अलग–अलग व्यवस्थाओं में सामग्री को एक साथ रखकर और अलग–अलग करके बच्चों को नई आकृतियाँ बनाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। वे मिट्टी को ढालकर या ब्लॉकों से खेलकर ऐसा कर सकते हैं।
- स्थान और स्थिति शब्दों सहित स्थानिक शब्दावली का परिचय देना चाहिए। खुला–बंद, ऊपर–नीचे, अंदर–बाहर, आगे–पीछे, शब्द–ऊपर–नीचे, आगे–पीछे की ओर, दूर, सीधे–घुमावदार। दूरी शब्द– निकट–दूर, नजदीक–पास, सबसे छोटा–सबसे लंबा–बड़ा, आदि।

5.3.4 माप : हमें दैनिक जीवन में असंख्य परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, जिसमें वस्तुओं की मात्रा–माप सम्मिलित होती है, उदाहरण के लिए कपड़े खरीदना, लकड़ी की वस्तुओं और इमारतों का निर्माण करना, मेहमानों के लिए खाना बनाना आदि। मापन मानव जीवन का एक अंतर्निहित हिस्सा है, जो सुचारू कामकाज, नियमित कार्य की सिद्धि में या किसी व्यवसाय में बहुधा उपयोग किया जा रहा है। इसमें मुख्य रूप से माप की निम्नलिखित विशेषताओं की समझ सम्मिलित हैः लंबाई–दूरी, वजन–द्रव्यमान, मात्रा–क्षमता, समय–तापमान।

तुलना और माप करते समय, बच्चों को पहले अनुमान लगाने या एक दृश्य अनुमान लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और बाद में अधिक व्यवस्थित तुलना या माप (किसी विशिष्ट उपकरण का उपयोग) करके अपने अनुमान को सत्यापित करना चाहिए। इस प्रकार, माप एक ऐसा विषय है जो स्वाभाविक रूप से गतिविधि आधारित है। बच्चों के लिए वास्तव में मापने और समूहों में काम करने का भरपूर अवसर है। इसे प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। मापन में समझ और कौशल दोनों सम्मिलित हैं।

शिक्षक निम्नांकित तरीकों का अनुसरण कर सकते हैं–

- तुलना की भाषा (इससे बड़ा–छोटा आदि) का उपयोग करने के पर्याप्त अवसर दें– विभिन्न स्थितियों के लिए उपयुक्त विशेष शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए।
- बच्चों को माप की इकाइयों का पता लगाने कर अवसर दिया जाना चाहिए। बच्चे गैर–मानक इकाइयों में मापने और तुलना करने के अपने तरीके से, काम करने के अपने अनुभव से मानक इकाइयों जैसे मीटर, सेंटीमीटर, ग्राम, लीटर आदि को बेहतर ढंग से समझते हैं।
- ब्लॉक बिल्डिंग, कुकिंग, क्राफ्टवर्क जैसी गतिविधियों और अन्य अनुभवों जिनमें मापन सम्मिलित है, में बच्चों को सम्मिलित किया जाना चाहिए।

- बच्चों को दिन—प्रतिदिन की बातचीत में मात्रा, ऊँचाई, वजन, लंबाई और तापमान की तुलना और माप करने में मदद करने के अवसर दिये जाने चाहिए।
- विभिन्न गतिविधियों में लगने वाले समय की तुलना करके बच्चों को समय की अवधारणा की समझ विकसित करने में मदद करने वाले सरल अनुभव प्रदान किया जाना चाहिए।
- समय के दैनिक संदर्भों से आरम्भ करके (कहानी के बाद, दोपहर के भोजन से पहले) और अधिक अमूर्त अवधारणाओं (कल, महीनों, वर्षों, आदि) से समझ बनाई जानी चाहिए।

5.3.5 पैटर्न : पैटर्न हमारे चारों ओर हैं। पैटर्न को संख्याओं, आकृतियों, ध्वनियों आदि में भी देखा जा सकता है। गणित की कई शाखाओं में व्यवस्था, दोहराव और क्रम महत्वपूर्ण हैं। पैटर्न को रंग, आकार, आदि के आधार पर भी पहचाना जा सकता है। चूंकि पैटर्न हमारे चारों ओर हैं, इसलिए पैटर्न की समझ विकसित करना महत्वपूर्ण है। पैटर्न की पहचान अवलोकन और विश्लेषणात्मक कौशल को बढ़ाने में मदद करती है क्योंकि पैटर्न की पहचान करते समय, समानताएँ, असमानताएँ, दोहराव, गैर—पुनरावृत्ति आदि का निरीक्षण करना होता है। पैटर्न का वर्णन शब्दावली को बढ़ाने और भाषा में सुधार करने में मदद करता है, जो कि गणित सीखने के महत्वपूर्ण पहलू होते हैं। पैटर्न को किसी विशेष नियम के आधार पर पहचाना जा सकता है। उदाहरण के लिए, गिनती की संख्याओ का एक पैटर्न होता है, प्रत्येक संख्या पिछली संख्या से एक अधिक होती है और प्रत्येक संख्या अगली संख्या से एक कम होती है। पैटर्न कई प्रकार के हो सकते हैं जैसे ध्वनि पैटर्न, संख्या पैटर्न, आकृतियों में बच्चों के बीच पैटर्न के विचार/अवधारणा को विकसित करने के लिए शिक्षकों को कक्षाओं के भीतर और बाहर उपयुक्त गतिविधियों का संचालन करने की आवश्यकता होती है। पैटर्न की समझ बनाने के लिए निम्नलिखित चार चरण उपयुक्त होते हैं:

5.3.5.1 पैटर्न की पहचान करना : पैटर्न को उस नियम का पालन करके पहचाना जा सकता है जिसका पैटर्न अनुसरण कर रहा है, चाहे वह दोहराव वाला पैटर्न हो अथवा प्रगति करने वाला पैटर्न, जैसे 1, 2, 1, 2 या 2, 5, 8, 11, आदि।

5.3.5.2 नियम का वर्णन करना : पैटर्न की पहचान के बाद अगला कदम नियम का वर्णन करना और दोहराने की इकाई (दोहराए जाने वाले पैटर्न के मामले में) की पहचान करना है। बच्चों को उनके चारों ओर पैटर्न देखने दें और साड़ियों, टाइलों, बॉर्डर आदि पर समान पैटर्न का विस्तार करने के लिए नियम बनाने के लिए प्रोत्साहित करें।

5.3.5.3 पैटर्न का विस्तार : दोहराने की इकाई का उपयोग करके पैटर्न को और विस्तारित करना। उदाहरण के लिए, पैटर्न 1, 2, 3, 1, 2, 3, 1, 2, 3 में दोहराव की इकाई 1, 2, 3 है। इसलिए पनुरावृत्ति की इस इकाई को पहचानकर, पैटर्न को आगे बढ़ाया जा सकता है। जैसे 1, 2, 3, 1, 2, 3, 1, 2, 3, 1, 2, 3, 1, 2, 3, 1, 2, 3, इत्यादि। इसी तरह किसी भी दोहराए जाने वाले पैटर्न के लिए एक बार बच्चे द्वारा दोहराव की इकाई को पहचान लेने के बाद आसानी से पैटर्न का विस्तार किया जा सकता है।

5.3.5.4 नए पैटर्न बनाना : एक बार जब बच्चा उपरोक्त तीन चरणों को प्राप्त करने में सक्षम हो जाता है, तो वह पैटर्न की पहचान, विश्लेषण, विस्तार और खोज करके और अपनी रचनात्मक क्षमता से नए पैटर्न बनाना शुरू कर सकता है।

5.3.6 आँकड़ों का प्रबंधन : आँकड़े जानकारी के प्रारम्भिक रूप को संदर्भित करते हैं, जिन्हें विभिन्न स्रोतों से एकत्रित किया जाता है। आँकड़ों की उपलब्धता, जो मजबूती से और व्यवस्थित रूप से एकत्र की जाती है, एक प्रणाली को पारदर्शी बनाती है। यह एक लोकतांत्रिक समाज के लिए महत्वपूर्ण है। जब लोगों को सूचनाओं को संभालने और उसकी व्याख्या करने की अपनी क्षमता पर भरोसा होता है, तभी वे आँकड़े की तलाश करते हैं। जब हमें किसी विशिष्ट प्रश्न या समस्या का उत्तर देने की आवश्यकता होती है या जब हम किसी स्थिति को सामान्य रूप से समझना चाहते हैं तब आँकड़े एकत्रित करते हैं। ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि हमें निर्णय लेने की आवश्यकता है। यह उल्लेखनीय है कि आँकड़े कुछ सवालों के जवाब देते हैं, साथ ही यह और सवाल भी उठाते हैं, जिसका जवाब आँकड़ों से नहीं दिया जा सकता है। आँकड़ों का संग्रह और प्रबंधन आमतौर पर सांख्यिकीय गतिविधि के एक हिस्से के रूप में माना जाता है और इसलिए इसमें सांख्यिकी में विशेषज्ञता रखने वाले लोगों की विशेष रुचि होती है। हम शायद ही कभी इस तथ्य को स्वीकार करते हैं कि रोजमर्रा की स्थितियों में, हम आँकड़े एकत्र कर रहे हैं और उसका उपयोग कर रहे हैं। एक शिक्षिका अपनी कक्षा में बच्चों की उपस्थिति लेने पर भी आँकड़ें एकत्रित कर रही है। आँकड़ों के प्रबंधन के प्रमुख घटकों में सरल आँकड़े एकत्र करना, प्रतिनिधित्व करना और व्याख्या करना, मिलान चिह्नों का उपयोग करके आँकड़ों को रिकॉर्ड करना और चित्रलेख के रूप में प्रतिनिधित्व करना, चित्रलेखों के माध्यम से प्रदर्शन के लिए उपयुक्त पैमाने और इकाई का चयन करना और डेटा से निष्कर्ष निकालना सम्मिलित है।

शिक्षक निम्नांकित तरीकों का अनुसरण कर सकते हैं–

- सूचना को व्यवस्थित करना और सूचनाओं को संख्याओं में दर्ज करने और निष्कर्ष निकालने या उससे निर्णय लेने के अवसर प्रदान करने चाहिए।
- रिकॉर्डिंग जानकारी के महत्व को उजागर करने के लिए बच्चों को चर्चा में सम्मिलित करना चाहिए।
- ऐसी स्थितियाँ बनाएं कि बच्चा जानकारी को रिकॉर्ड करने और सार्थक तरीके से प्रस्तुत करने के लिए अपने तरीके का उपयोग करे।
- बच्चों को आँकड़ें रिकॉर्ड करने और प्रस्तुत करने के तरीके तलाशने और निष्कर्ष निकालने का अवसर देना चाहिए।
- बच्चों को गतिविधियों और चर्चा में भाग लेने, प्रश्न उठाने, व्याख्या करने आदि के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
- छात्रों को समूह मूल्यांकन में सम्मिलित करना जहाँ छात्र समूह के रूप में काम करते हैं और आँकड़े एकत्र करते हैं, प्रस्तुत करते हैं और उसके आधार पर निष्कर्ष निकालते हैं।

5.3.6 गणितीय संप्रेषण : गणितीय संप्रेषण एक ऐसी प्रक्रिया को संदर्भित करता है जिसके द्वारा व्यक्तियों के बीच गणितीय प्रतीकों, संकेतों, आरेखों और ग्राफ के माध्यम से सूचनाओं का आदान–प्रदान किया जाता है। इसमें सुनना और पढ़ना (समझना), बोलना और लिखना (अभिव्यक्ति) दोनों सम्मिलित हैं। ज्ञान के निर्माण में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस प्रकार, गणित सीखने में भाषा की भमिूका के बारे में सावधानी से सोचना अनिवार्य हो जाता है। प्रत्येक विषय की एक विशिष्ट भाषा होती है। गणित में भी रोजमर्रा की भाषा के शब्द होते हैं, लेकिन यहाँ उनका विशेष अर्थ होता है। जब बच्चे गणित की कक्षा में शब्दों के माध्यम से प्रस्तुत की गई

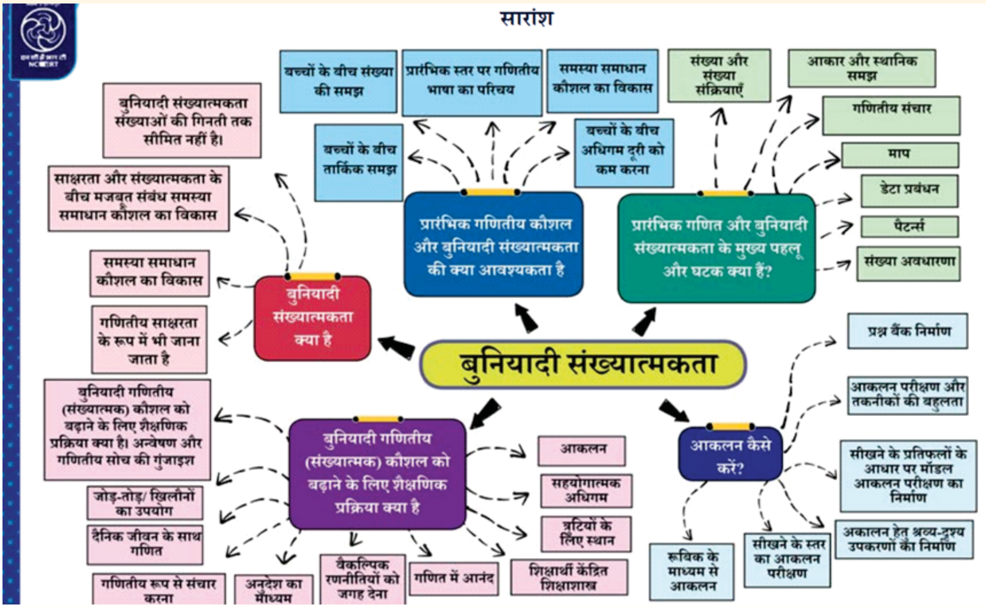

सरल समस्याओं को हल करना शुरू करते हैं, तो वे गणित की भाषा के साथ काम करना शुरू कर देते हैं। कितने?', 'कुल मिलाकर कितने?' 'कितने बचे हैं?' ये सभी गणितीय भाषा के उपयोग के उदाहरण हैं। गणितीय समस्या पर चर्चा करते समय बच्चे ऐसी गणितीय भाषा को अपनी सामान्य, दैनिक भाषा के साथ मिला देते हैं। सभी बच्चों को गणितीय भाषा और घर की भाषा के साथ उसके संबंध को समझने की जरूरत है। संख्यात्मकता और गणितीय कौशल विकसित करने के दौरान उन्हें सार्थक रूप से संवाद करना चाहिए। इससे उन्हें अंकगणित की मजबूत नींव रखने में मदद मिलेगी।

5.4 गणित शिक्षण हेतु दृष्टिकोण :

प्रत्येक बच्चा जन्म से जिज्ञासु होता है। वह वस्तुओं, खिलौनों के साथ खेलता है। उसे जानने/ समझने के लिए प्रश्न करता है। उन्हें तोड़ता–जोड़ता, सजाता–संवारता है। एक ही कार्य को विभिन्न तरीकों से करने की कोशिश करता है। वह नए–नए प्रयोग करता है और यह सब कार्य करने में वह भय एवं असफलताओं से कोसों दूर होता है। एक शिक्षक के रूप में हमें चाहिए कि सकारात्मक दृष्टिकोण को अपनाते हुए बच्चे के इन सभी कौशलों को निखारने का कार्य करें। फाउण्डेशनल स्टेज पर गणित शिक्षक के लिए तो यह और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।

गणित शिक्षण में एक ही प्रश्न को हल करने के कई तरीके/विधियाँ/अप्रोच हो सकती हैं। शिक्षक को चाहिए कि वह बच्चे को एक ऐसा वातावरण प्रदान करें जिससे बच्चा स्वतंत्र रूप से अपने इन्हीं कौशलों का प्रयोग कर प्रश्नों को तोड़–जोड़ कर, अंकों, संख्याओं, संक्रियाओं को विश्लेषित कर प्रश्न हल करने के लिए नए–नए अन्वेषण करें।

बच्चों को अंकों, संख्याओं, संक्रियाओं से भय न हो अपितु वह उनके साथ खेलें उनका प्रयोग अपने वास्तविक जीवन में कर सकें।

प्रत्येक बच्चा सीख सकता है। उसके सीखने की इसी क्षमता को आगे बढ़ाते रहने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित करने का दृष्टिकोण अपनाते हुए शिक्षण कार्य करना चाहिए। बच्चा ज्ञान को अर्जित नहीं करता अपितु अपने पूर्व अनुभवों एवं नवीन अनुभवों को सम्मिलित करते हुए ज्ञान का निर्माण करता है। इसलिए एक ही कक्षा के प्रत्येक बच्चे के ज्ञान का स्तर अलग–अलग होता है। अतः बच्चों को अधिगम हेतु अधिक से अधिक अवसर प्रदान करने चाहिए। जिससे वह अपने पूर्व एवं नवीन अनुभवों को जोड़ सकें। गणित को समस्या–समाधान के रूप में देखा जाना चाहिए। गणित में चर्चा, संप्रेषण, बातचीत होनी चाहिए।

गणित शिक्षक को चाहिए कि वह परिमार्जित वातावरण का सृजन कर अधिगम को सहज, सरल एवं सुगम बनाए। जीवन का गणित/व्यवहारिक गणित पाठशाला में सिखाया जाए न की परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए बच्चों को प्रेरित किया जाए। एक गणित शिक्षक का यह उच्चतर उद्देश्य होना चाहिए कि गणित शिक्षण के माध्यम से बच्चों को सोचने वाला, आलोचनात्मक समझ (क्रिटिकल थिंकिंग), प्रश्न पूछने, नवीन प्रयास करने वाला बनाया जाए। गणित के शिक्षक को शिक्षण करते समय यह चाहिए कि बच्चे घर/परिवेश की चीजों को गणित से तथा गणित की विषय वस्तु को घर/परिवेश से जोड़ कर बता सकें। गणित शिक्षण का एकमात्र उद्देश्य बच्चों को ज्ञान देना ही नहीं होना चाहिए अपितु बच्चों में सकारात्मक सोच के साथ ज्ञान, कौशल एवं मूल्यों का विकास करना होना चाहिए। जिससे वे देश के लिए ही नहीं अपितु वैश्विक स्तर पर एक जिम्मेदार नागरिक बन सकें। बुनियादी स्तर में गणित शिक्षण का दृष्टिकोण होना चाहिए कि प्रत्येक बच्चा भय एवं तनाव मुक्त होकर आनंदमयी वातावरण में स्वतंत्र रूप से गणित सीख सकें।

कक्षा में गणितीय प्रक्रियाओं एवं पद्धतियों को सम्मिलित करने से बच्चों को गणित के अनुप्रयोग करने में, उसकी अवधारणाओं को समझने में, तर्क करने में और गणित के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखने में मदद मिलती है।

5.5 गणित शिक्षण संबंधी पद्धतियाँ : बच्चों को व्यापक गणितीय अनुभव देने के लिए गणित की निम्नलिखित पद्धतियाँ सम्मिलित की जा सकती हैं –

5.5.1 ठोस अनुभव के माध्यम से गणितीय अमूर्त विचारों का विकास करना : गणितीय अवधारणाएँ अमूर्त होती हैं, जैसे– संख्याओं को समझना, संक्रियाएँ करना, आकृतियाँ बनाना आदि। इसलिए बच्चों को इन अमूर्त अवधारणाओं को ठोस अनुभव के माध्यम से सिखाना चाहिए और फिर धीरे–धीरे ठोस से चित्र और फिर प्रतीकों की ओर बढ़ना चाहिए। इस प्रकार की शिक्षण पद्धति के लिए निम्नलिखित अनुक्रम का पालन किया जाना चाहिए–

- **E- अनुभव (Experience) :** ठोस वस्तुओं के माध्यम से गणितीय अवधारणा सीखना, उदाहरण के लिए संख्याओं को सीखने के लिए ठोस वस्तुओं को गिनना।
- **L- बोली जाने वाली भाषा (Language) :** भाषा के अनुभव का वर्णन करना। जैसे– क्या अंदर है ? क्या बाहर है ? या फिर कौन सी वस्तु छोटी या कौन सी बड़ी है ?
- **P- चित्र (Pictures) :** गणितीय अवधारणाओं को चित्र के रूप में प्रदर्शित करना। उदाहरण के लिए यदि चार चिड़ियों की गणना की गई है तो इन्हें चार चिड़ियों के चित्र के माध्यम से दर्शाया जाए।

- **S- प्रतीक (Symbols) :** ठोस अनुभव और चित्र के माध्यम से सीखी गई गणितीय अवधारणाओं को लिखित प्रतीक के रूप में लिखना, जैसे– चार चिड़ियों के लिए संख्या 4 प्रतीक के रूप में लिखना।

5.5.2 : गणित सीखने को बच्चों के वास्तविक जीवन और पूर्व ज्ञान से जोड़ना : गणित सीखना बच्चों के वास्तविक जीवन और उनके पूर्व ज्ञान से संबंधित होना चाहिए। वास्तविक जीवन के उदाहरण बच्चों को गणितीय अवधारणा समझने में मदद करते हैं। साथ ही वास्तविक जीवन में गणितीय कौशल को लागू करने की क्षमता भी विकसित करते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वह गणित को सीखने योग्य और कर पाने योग्य के रूप में देखने लगते हैं। इसलिए गणितीय कौशल विकसित करते समय शिक्षकों को वास्तविक जीवन के उदाहरणों का उपयोग करना चाहिए जिससे बच्चे गणित की अवधारणा को स्पष्ट रूप से समझ सकें व उनमें समस्या–समाधान एवं तर्क करने की क्षमताओं का विकास हो सके।

5.5.3 समस्या–समाधान के साधन के रूप में गणित : समस्या–समाधान गणित सीखने का एक महत्वपूर्ण व उच्चतर उद्देश्य है। बच्चों को समस्या–समाधान के रूप में यह समझ आना चाहिए कि यह उनके वास्तविक जीवन की गणितीय समस्याओं के समाधान से संबंधित है। इसलिए समस्या–समाधान क्षमताएँ बच्चों में कौशलों और ज्ञान के अर्थ निर्माण के साथ–साथ यह समझने का अवसर प्रदान करती हैं कि वे अपने ज्ञान व कौशल को कहाँ लागू कर सकते हैं? बच्चों में समस्या–समाधान की क्षमताओं को विकसित करने में शिक्षकों को निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए।

5.5.3.1 समस्या को समझना : क्या जानते हैं ? क्या नहीं जानते हैं ?

5.5.3.2 एक रणनीति/योजना तैयार करना : क्या मुझे संबंधित समस्या का पता है ? इसे हल करने के लिए कौन–सी रणनीतियाँ उपयोगी हो सकती हैं ?

5.5.3.3 समस्या का समाधान करना : इसे हल करने के लिए मैं क्या कदम उठा रहा/रही हूँ ? क्या मैं सही कदम उठा रहा/रही हूँ ? क्या मैं इस बारे में तर्क कर सकता/सकती हूँ कि मैंने इस समस्या को क्यों और कैसे हल किया ?

5.5.3.4 समाधान की जाँच करना : क्या मैंने सही काम किया ? क्या मैंने सवाल का जवाब दिया?

5.5.3.5 लचीली सोच को प्रोत्साहित करना और समस्या समाधान के लिए कई नीतियों का उपयोग करना : बच्चों को समस्या–समाधान के एक से अधिक तरीके सीखने चाहिए। उदाहरण के लिए (8+7) को हल करने के लिए कई रणनीतियाँ हो सकती हैं । जैसे– 8+7= 15, 10+10=20–5=15, 8+8=16–1=15

शिक्षकों को सभी प्रकार के तरीकों में अपना दृष्टिकोण सकारात्मक रखना चाहिए एवं बच्चों की इस लचीली सोच को प्रोत्साहित करना चाहिए।

5.5.4 गणितीय चर्चा, संप्रेषण और तर्क के लिए प्रोत्साहित करना : गणित की अपनी भाषा होती है जिसका उपयोग बच्चा अपने दैनिक जीवन में नहीं कर रहा होता है, जैसे– जोड़, गुणा, +, –, =, ÷ आदि।

बच्चा गणित की कक्षा में पहली बार उक्त चिह्नों का सामना करता है। इसलिए शिक्षक को बच्चों से समृद्ध बातचीत/चर्चा करनी चाहिए जिससे वह गणित की अवधारणाओं पर ध्यान केंद्रित कर सके, जो बच्चों को उनके

वास्तविक जीवन में मिलती है। बच्चों को उनकी गणितीय सोच को समझाने, तर्क करने और औचित्य देने का पूरा अवसर देना चाहिए। साथ ही शिक्षक के स्पष्टीकरण, तर्क और औचित्य आदि को सुनने का भी पूरा अवसर देना चाहिए। इसलिए कक्षा में अधिक से अधिक मौखिक गणितीय चर्चा को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

5.5.5 गणित सीखने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना : कई शोध बताते हैं कि बच्चों में लगभग 8 वर्ष की आयु से ही गणित के प्रति नापसंदगी व नकारात्मक मनोवृत्तियाँ विकसित होने लगती हैं। इसलिए शिक्षक को चाहिए कि वह बच्चे को गणित का आनंद लेना सिखाएं। इसके लिए शिक्षक को एक डोमेन के रूप में, गणित के साथ सकारात्मक संबंध विकसित करने के लिए, बच्चों की सहायता पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। बच्चों के साथ न केवल गणितीय दक्षताओं को विकसित करने पर कार्य करना चाहिए बल्कि भावनात्मक रूप से भी बच्चों के साथ जुड़ना चाहिए।

5.6 गणित शिक्षण संबंधी प्रक्रियाएँ : मूलभूत संख्या ज्ञान के लिए कक्षा–कक्ष में हमें कुछ रणनीतियों का प्रयोग करना चाहिए। जिनके अंतर्गत शिक्षण के लिए प्रभावी योजना बनाना अति महत्वपूर्ण है। शिक्षण सोच–समझकर किया गया कार्य है, जो बच्चों के सीखने के उद्देश्य से किया जाता है। इसलिए इसे नियोजित रूप में किया जाना आवश्यक है।

योजना में दक्षताओं व प्राप्त किए गए प्रतिफलों के अनुसार कक्षा कार्यों का निर्माण एवं उसकी व्यवस्था, पालन किये जाने वाले शिक्षण शास्त्र (पेडागॉजी), उपयोग किए जाने वाले संसाधन और आकलन सम्मिलित हैं। योजना में बच्चों के लिए सहायक गतिविधियाँ, प्रोजेक्ट कार्य और शिक्षण सामग्री आदि का प्रदर्शन करना भी सम्मिलित है। योजनाएं वार्षिक, त्रैमासिक, साप्ताहिक, दैनिक और एक पाठ के लिए बनाई जाती हैं। वार्षिक और त्रैमासिक योजनाएं शासन द्वारा निर्धारित होंगी जबकि साप्ताहिक, दैनिक व एक पाठ के लिए योजना शिक्षकों द्वारा स्वयं बनायी जानी चाहिए।

5.6.1 शिक्षण योजना के घटक : बेहतरीन योजना बनाने के लिए पाठ्यचर्या के उद्देश्यों, दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों की समझ की आवश्यकता होती है । साथ ही जिन बच्चों के लिए योजना बनाई जा रही है, उनके पूर्व ज्ञान और उपलब्ध सीखने–सिखाने की सामग्री और उपयोग की जाने वाली विषयवस्तु को ध्यान में रखना चाहिए। शिक्षण योजना के प्रमुख घटक निम्नलिखित हैं :–

5.6.1.1 दक्षता, सीखने के प्रतिफल और लक्षित पाठ उद्देश्य :

- ❖ उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए शिक्षक–निर्देशित, शिक्षक–मार्गदर्शित और बच्चों द्वारा संचालित गतिविधियाँ ।
- ❖ गतिविधियों की अवधि व क्रम।
- ❖ गतिविधियों में उपयोग की जाने वाली विषयवस्तु और सामग्री।
- ❖ कक्षा की व्यवस्था जैसे– बैठने, अधिगम शिक्षण सामग्री को प्रदर्शित करने और सामग्री की व्यवस्था।
- ❖ जिन बच्चों को अतिरिक्त मदद की जरूरत है, उनके लिए खास रणनीतियों की आवश्यकता।
- ❖ आकलन के तरीके।

शिक्षक के लिए एक अच्छी शिक्षण योजना बनाना बहुत ही आवश्यक है। जिसे तैयार करने के लिए निम्नलिखित पाँच चरणों की प्रक्रिया को समझना होगा :–

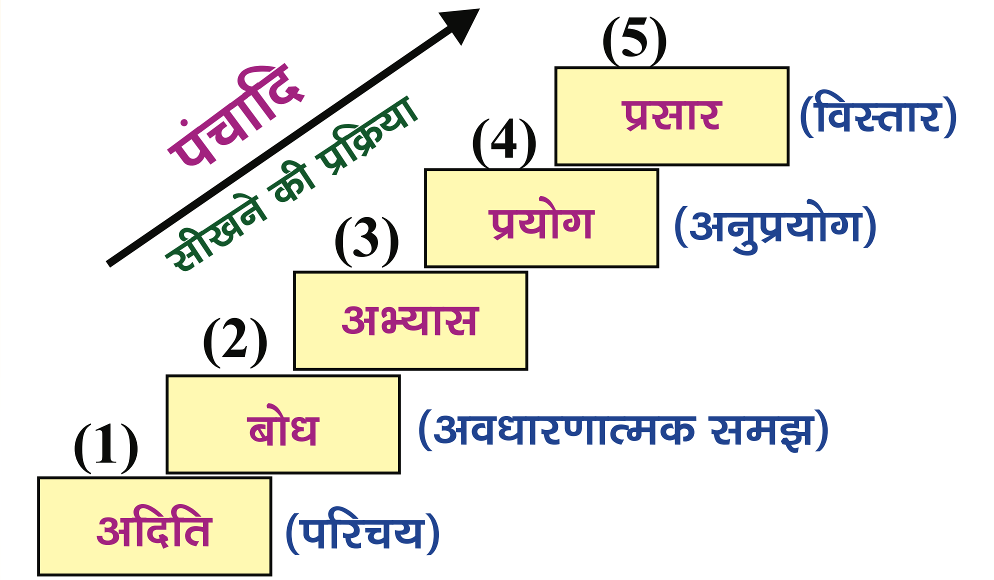

- **अदिति (परिचय) :** बच्चे के पूर्व ज्ञान से जोड़कर, एक नई अवधारणा/टॉपिक का परिचय देना, पहला चरण है। बच्चे सवाल पूछकर, खोजबीन करके और विचारों व सामग्री के साथ प्रयोग करके, शिक्षक की मदद से नए टॉपिक के बारे में आवश्यक जानकारी एकत्र करते हैं।
- **बोध (अवधारणात्मक समझ) :** इस चरण में बच्चे खेल, पूछताछ, प्रयोग, चर्चा या पढ़ने के माध्यम से मूल अवधारणाओं को समझने की कोशिश करते हैं। शिक्षक प्रक्रिया को देखता है और मार्गदर्शन करता है। शिक्षण योजना में बच्चों द्वारा सीखी जाने वाली अवधारणा की सूची होती है।
- **अभ्यास :** इस चरण में विभिन्न प्रकार की गतिविधियों के माध्यम से समझ व कौशल को मजबूत करने के लिए अभ्यास की बात कही गई है। अवधारणात्मक व दक्षताओं की प्राप्ति को सुदृढ़ करने के लिए शिक्षकों द्वारा समूह– कार्य या छोटी परियोजनाओं का आयोजन किया जाना चाहिए।
- **प्रयोग (अनुप्रयोग) :** इस चरण में बच्चों के दैनिक जीवन में अर्जित समझ को लागू करने के बारे में बताया गया है । यह विभिन्न गतिविधियों और छोटी परियोजनाओं के माध्यम से पूरा किया जाना चाहिए।
- **प्रसार (विस्तार) :** इस चरण में सीखे गए नए टॉपिक या अवधारणा को प्रसारित करने के बारे में बताया गया है। क्योंकि ज्ञान बाँटने से मजबूत होता है और सीखने को स्पष्ट व दीर्घकालिक बनाता है।

5.6.1.2 शिक्षण योजना के लिए अन्य महत्वपूर्ण विचार :

(क) विविधतापूर्ण या अलग–अलग शिक्षण के लिए योजना : अलग–अलग रुचियों और क्षमताओं वाले बच्चों के लिए एक शिक्षक, शिक्षण योजनाएं किस प्रकार बनाए ?

ऐसी स्थिति में शिक्षक के लिए किसी एक बच्चे हेतु ऐसा करना मुश्किल होता है। खासकर जब कक्षा में बच्चे अधिक हों। उस स्थिति में शिक्षक समान आवश्यकता वाले बच्चों के छोटे–छोटे समूहों की पहचान कर उन्हें एक समूह के रूप में अलग–अलग तरीके से संबोधित कर सकता है। इसके लिए योजना बनाने से पहले शिक्षक के लिए जरूरी है कि वह बच्चों का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करें और उनके बारे में अधिक से अधिक जानकारी जुटाएं। जैसे– वे एक–दूसरे के साथ कैसे बातचीत करते हैं ?, वह किसी खास खेल को ही क्यों चुनते हैं ?, वह मौखिक भाषा का उपयोग कैसे करते हैं ?, लिखित शब्दों पर उनकी प्रतिक्रिया क्या होती है ? आदि।

(ख) सम्बलन और जिम्मेदारी का क्रमिक हस्तान्तरण (Scaffolding and Gradual Release of Responsibility(GRR) : अनुभवी बच्चों या वयस्कों से व्यवस्थित मदद मिलने पर बच्चे आसानी से नया ज्ञान सीख सकते हैं। नया ज्ञान सीखना एक चुनौती होनी चाहिए, लेकिन चुनौती बच्चों के स्तर की होनी चाहिए। इसलिए बच्चों को सीखने के लिए व्यवस्थित सम्बलन (Scaffolding) की जरूरत होती है। सम्बलन का अर्थ शिक्षण के दौरान मदद, संरचना और मार्गदर्शन देना है। यह सम्बलन 'जिम्मेदारियों से क्रमिक मुक्ति' 'Gradual Release of Responsibility' (GRR) को ध्यान में रखकर प्रदान किया जा सकता है, इसमें शिक्षक पहले मॉडल या विचारों या कौशलों की व्याख्या करते हैं। उसके बाद बच्चे और शिक्षक उन्हीं विचारों और कौशलों पर एक साथ काम करते हैं। जहाँ शिक्षक मार्गदर्शक की भूमिका में होता है और अन्त में, बच्चे व्यक्तिगत रूप से और स्वतंत्र रूप से अभ्यास करते हैं। इस प्रकार गतिविधियों की योजना बनाई जा सकती है और उसे जिम्मेदारी से क्रमिक मुक्ति (GRR) का पालन करने के लिए डिजाइन किया जा सकता है।

(ग) जिम्मेदारी का क्रमिक हस्तान्तरण (GRR) की प्रक्रिया :

- ❖ पहला चरण : मैं करूँगा – शिक्षक मुख्य विचारों या कौशलों का प्रदर्शन/ व्याख्या/मॉडल करता है।
- ❖ दूसरा चरण : हम करते हैं – शिक्षक और बच्चे विचारों या कौशलों पर एक साथ काम करते हैं।
- ❖ तीसरा चरण : आप कीजिए – बच्चे स्वतंत्र रूप से विचारों या कौशलों पर अभ्यास या काम करते हैं। शिक्षक मार्गदर्शक के रुप में कार्य करेंगे।
- ❖ चतुर्थ चरण : आप स्वयं कीजिए – बच्चे स्वतंत्र रूप से विचारों या कौशलों पर अभ्यास या काम करते हैं।

साक्षरता और संख्या ज्ञान सीखने के लिए यह तरीका अच्छी तरह से काम करता है, लेकिन यह भी याद रखना जरूरी है कि साक्षरता और संख्या ज्ञान का हर कौशल इस तरह से नहीं सीखा जा सकता है। उनकी कक्षा में कौन सा

तरीका सबसे बेहतरीन ढंग से काम कर सकता है, इसका निर्णय लेकर शिक्षक इसे अपनी शिक्षण योजना में सम्मिलित कर सकते हैं।

(घ) **प्रोजेक्ट :** जब हम 'प्रोजेक्ट' शब्द कहते हैं, तो हमारे दिमाग में तुरन्त एक बच्चे की तस्वीर आती है जो घण्टों एक कॉपी पर पन्ने–दर–पन्ने लिखे जा रहा है। बुनियादी स्तर पर बच्चों के लिए यह बिल्कुल नहीं होना चाहिए। प्रोजेक्ट मजेदार हो सकता है और एक अलग तरह की दिलचस्प चुनौती प्रदान कर सकता है। यह स्कूल को बच्चे के घर से जोड़ने में भी मदद कर सकता है। बच्चे घर पर क्या कर सकते हैं? इसके कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं :–

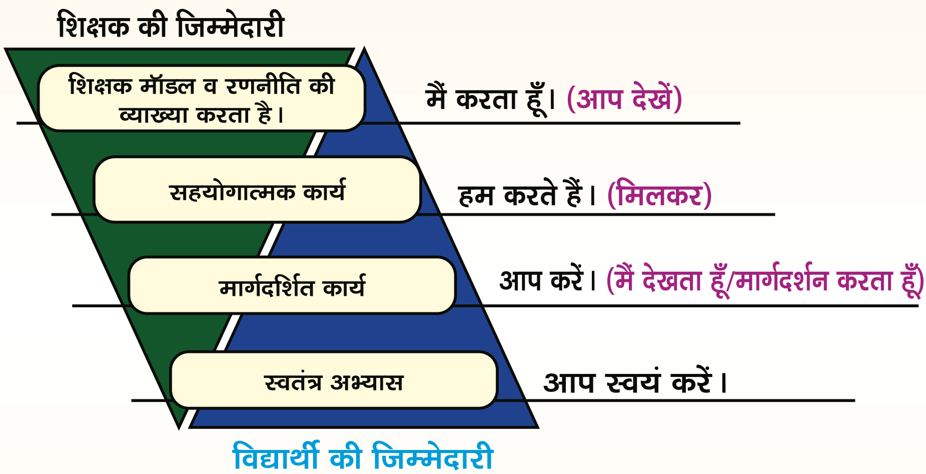

- अपने दादा–दादी से उनके नाम और उनके माता–पिता के नाम पूछें – इसके बारे में स्कूल में बात करें।
- अपने माता या पिता या चाची या पड़ोसी की मदद करें – स्कूल में इसके बारे में बात करें।
- अपने घर के आस–पास फूलों के विभिन्न रंगों को देखें – स्कूल में इसके बारे में बात करें।

ऐसा करते समय, शिक्षक को यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि बच्चे इन कार्यों को स्वयं कर सकें और माता–पिता या अन्य लोगों को उनकी मदद करने की जरूरत न हो।

नोट : शिक्षण योजना में शिक्षण प्रक्रिया के दौरान दीक्षा के प्रयोग से गणित की अवधारणा को स्पष्ट करने में सहायता मिलती है। बच्चों के लिए कटेंट रुचिकर होता है और वे खेल–खेल में अवधारणाएं समझ पाते हैं। साथ ही शिक्षक को कार्यपत्रक, गृहकार्य, आकलन आदि शिक्षण मैटेरियल सहजता से उपलब्ध हो जाता है, जिसकी सहायता से वे अपनी शिक्षण योजना को अधिक प्रभावी, स्पष्ट व मनोरंजक बना सकते हैं। इस प्रकार दीक्षा, गणित शिक्षण में एक महत्वपूर्ण टूल के रूप में मदद करता है।

5.7 गणित शिक्षण के लिए ब्लॉक्स : गणितीय रूप से कुशल बनने के लिए बच्चों को अवधारणात्मक समझ, प्रक्रियात्मक समझ, रणनीतियों की क्षमता/अनुप्रयोग, सम्प्रेषण और तर्क और गणित के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण/रवैया विकसित करने की आवश्यकता है।

गणितीय कुशलता के इन सभी पहलुओं को दैनिक कक्षा–कक्षीय प्रक्रिया के लिए निम्नलिखित चार ब्लॉकों में डिजाइन किया जाता है–

चार ब्लाकों वाला मॉडल– गणित

ब्लॉक 1 मौखिक गणित बातचीत (गणित कविता, मौखिक गणना, अवधारणा, बच्चों के अनुभव)	ब्लॉक 2 कौशल शिक्षण (प्रवीणता के सभी पहलुओं को मिलाएं)
ब्लॉक 3 कौशल अभ्यास (प्रक्रियात्मक, अवधारणात्मक, समस्या समाधान, तर्क)	ब्लॉक 4 गणित खेल (सीखने और समस्या –समधान कौशल को पुख्ता करना)

5.7.1 ब्लॉक 1 : मौखिक गणित सम्बन्धी बातचीत (Oral Math talk): कक्षा की शुरुआत में 5–10 मिनट के लिए बच्चे संख्याओं वाली कविता गा सकते हैं या गणित के बारे में अपने अनुभवों या अपने जीवन में आने वाली समस्याओं पर चर्चा कर सकते हैं। मौखिक गणना, अवधारणा, रणनीतियों और तर्क पर भी चर्चा की जानी चाहिए। यह औपचारिक शिक्षण प्रक्रिया में जाने से पहले वार्म–अप गतिविधि के रूप में काम करता है।

5.7.2 ब्लॉक 2 : कौशल सिखाना (प्रवीणता के सभी पहलुओं को मिलाएँ) (Skills teaching & combining all strands): यह गणितीय अवधारणाओं, समस्या–समाधान एवं सम्प्रेषण को ठोस अनुभव, व्यवस्थित गतिविधियों व निर्देश के माध्यम से सिखाया जाना चाहिए, जो 'जिम्मेदारी का क्रमिक हस्तान्तरण' अप्रोच का पालन करता है, हालांकि हर गतिविधि या गणितीय कार्य के लिए समान क्रम होना जरूरी नहीं है। शिक्षक गणित के किसी

कार्य को सोच सकते हैं और मार्गदर्शित सहायता प्रदान करने से पहले बच्चों को इसे स्वतंत्र रूप से हल करने के लिए देना चाहिए। प्रत्येक बच्चे को सीखने, समझने और प्रतिक्रिया देने का अवसर मिलना चाहिए।

5.7.3 ब्लॉक 3 : कौशलों का अभ्यास (Skills practice): गणितीय कौशल का अभ्यास करने के लिए बच्चों को अवधारणाओं, प्रक्रियाओं, समस्या समाधान, तर्क और सम्प्रेषण पर आधारित विभिन्न प्रकार के समृद्ध गणितीय कार्य प्रदान करना चाहिए। यह कार्य कार्यपुस्तिका (workbook), पाठ्यपुस्तक या शिक्षक–निर्मित टास्क–सेट के माध्यम से होना चाहिए।

5.7.4 ब्लॉक 4– सीखने / समस्या–समाधान को मजबूत करने के लिए गणित खेल (Math game for reinforcing learning/problem solving): बच्चों को खेल खेलने में मजा आता है। कई तरह के गणितीय खेल हो सकते हैं, जो बच्चों के सीखने को कई तरह से पुख्ता करने में मदद करते हैं। ये खेल समस्या–समाधान, अवधारणाओं के साथ–साथ तर्क पर आधारित होने चाहिए। बच्चों के सीखने के स्तर के अनुसार समूहवार खेलों की भी योजना बनाई जानी चाहिए।

5.7.5 : गणित के लिए दिन में कुल सुझाया गया समय 60 मिनट है।

ब्लॉक्स		उद्देश्य	प्रस्तावित रणनीतियाँ और पद्धतियाँ (approaches)	प्रस्तावित समय
ब्लॉक्स 1 और 2	मौखिक गणित सम्बन्धी बातचीत	मौखिक गणित को प्रोत्साहित करने के लिए वार्म–अप गतिविधियों के रूप में	ओपन एंडेड / बड़े समूह में चर्चा, गाना, कविता, बच्चों के वास्तविक जीवन में गणित से जुड़े अनुभव, अवधारणा, मौखिक गणना, तर्क	5–10 मिनट्स
	कौशल सिखाना (प्रवीणता के सभी पहलुओं को मिलाएँ)	संरचित शिक्षण / गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को गणितीय कौशल प्राप्त करने में मदद करना	GRR/ ELPS/ समस्या–समाधान अप्रोच अवधारणाओं, प्रक्रियाओं, अनुप्रयोग, रणनीतियों और तर्क के निर्माण के लिए गतिविधियों का संचालन करना	20–25 मिनट्स
ब्लॉक्स 3 और 4	कौशलों का अभ्यास	कौशल अभ्यास के माध्यम से बच्चों को कौशल में महारत हासिल करने में मदद करना	कार्यपुस्तिकाओं या वर्कशीटों के माध्यम से गणित के कार्य प्रदान करना	15 मिनट्स
	सीखने कोमजबूत करने के लिए गणित का खेल	सीखने को मजबूत करने के लिए गणित का खेल समस्या–समाधान पर ध्यान केन्द्रित करना	व्यक्तिगत, उप–समूह, समूह अभ्यास	15 मिनट्स

बसेड़ा के एक ग्रामीण स्कूल के आसपास एक परिवार खरगोश पालन का कार्य करता था। परिवार के सभी सदस्य इन खरगोशों की अच्छे से देखभाल करते थे। शिक्षिका सोनम अपनी शिक्षण प्रक्रिया में इनका व्यापक रूप से उपयोग करती थी। यहाँ 3 से 6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए उनके द्वारा बनाई गई शिक्षण योजनाओं का एक नमूना है। जबकि यह योजना अधिगम के अन्य प्रतिफलां को प्राप्त करती है। यहाँ आसानी के लिए संज्ञानात्मक विकास के क्षेत्र से संबंधित और इसके भीतर गणितीय समझ व दक्षताओ को विकसित करने के पाठ्यचर्या के उद्देश्य को इस उदाहरण में रेखांकित किया गया है।

एक खरगोश पालनकर्ता की कहानी सुनाइए जो इस प्रकार है ।...

बहुत समय पहले की बात है। एक गाँव में एक परिवार रहता था। उस परिवार के पास बहुत सारे खरगोश थे जो दिन भर घर में और पड़ोस में खेलते रहते थे। सीता प्रत्येक शाम को उन्हें घर और पड़ोस से इकट्ठा करके उनके स्थान पर छोड़ देती थी।

एक दिन खरगोशों के कम हो जाने पर सीता सोचने लगी की वह कैसे पता करें कि कितने खरगोश कम हुए और कितने नहीं इस परेशानी को उसने अपने पिता को बताया। उस समय तक वह गिनती नहीं जानती थी तो उसके पिता ने उसको बताया कि जितने भी खरगोश है उतने कंकड़ अपने पास रखें जब खरगोश आए तो उसने अनुसार वह कंकड़ एक जगह एकत्रित करती रहे यदि कोई कंकड़ रह जाए तो समझ जाना कि कोई खरगोश कम है। यदि कंकड़ के अनुसार खरगोश कम है तो जितना भी कंकड़ बचे हैं उतने खरगोश गायब है।

5.8 आसपास के जानवरों के माध्यम से गणित सीखना :

बच्चों को व्यस्त रखने के लिए कथन को प्रश्नों के साथ जोड़कर प्रस्तुत करें–

कहानी के बाद बच्चों को एक गतिविधि में सम्मिलित करे एक खाली डिब्बा ले कक्षा में जितने बच्चे हैं उतने कंकड़ उस खाली डिब्बे में डालें और एक दूसरा खाली डब्बा लें जितने भी बच्चे कक्षा से बाहर जाते हैं वे उतने कंकड़ ले लेंगे वे दूसरे डब्बे जो खाली है उसमें डाल देगें उससे हमें पता चल जाएगा कि कितने बच्चे कक्षा से बाहर है और कितने कक्षा के अन्दर हैं। हमें बच्चों से तुरंत प्रतिक्रिया नहीं भी मिल सकती है यह देखने और सोचने के अवसर प्रदान करेगा।

अगले दिन इसी कहानी को वहीं से शुरू करें, जहाँ से वह छूटी थी कुछ इस प्रकारः–

सीता खरगोश की गिनती करने के तरीके से खुश हैं एक दिन जब शाम को खरगोश लौटे तो सीता उन खरगोशों को उनके स्थान पर बंद करने लगी तो कंकड़ों के अनुसार खरगोश कम थे। सीता हैरान और परेशान थी, चार कंकड़ अभी भी बचे थे, लेकिन सीता को कोई खरगोश दिखाई नहीं दिया, लेकिन फिर भी खरगोश बाहर थे। इसका क्या मतलब है, बच्चों क्या यह संभव है ?

अगले दिन जितने बच्चों की संख्या है, फर्श से सटे बोर्ड पर उतनी लकीर खींचें। बच्चों से कहे कि हर दिन जब वे कक्षा में आए, तब एक लकीरें उस पर खींचा करें।

कुछ महीनों बाद बच्चों से यह पूछें और उसका पालन करें आज हम केवल बोर्ड को देखकर पता लगा सकते हैं कि कितने बच्चे स्कूल आए हैं और कितने बच्चे स्कूल नहीं आये हैं अगर हम यह जानना चाहते हैं कि कौन स्कूल आए हैं और कौन–कौन स्कूल नहीं आए हैं तो हमें क्या करना चाहिए?

5.9 बेसिक शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित कार्यक्रम :

निपुण भारत मिशनः बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान–

उत्तर प्रदेश में निपुण भारत मिशन के अन्तर्गत फाउण्डेशनल स्टेज में बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (FLN) हेतु योजनाबद्ध ढंग से कार्य प्रारम्भ है। बच्चों के अधिगम को सुनिश्चित करने हेतु ग्रेड आधारित कार्यपुस्तिकाओं, पाठ्यपुस्तकों सहित ढ़ेरों अतिरिक्त सामग्री का निर्माण किया गया है। इस सामग्री के प्रयोग से लेकर अधिगम सुनिश्चित करने तक शिक्षक संदर्शिकाओं के विकास के साथ–साथ शिक्षकों को आवश्यकतानुसार प्रशिक्षण प्रदान किये जाने की व्यवस्था है। विद्यालय से लेकर जनपद स्तर तक मेंटरिंग कैडर के माध्यम से विद्यालयों में सहयोगात्मक पर्यवेक्षण, बच्चों के अधिगम की जाँच हेतु निरंतर एवं नियमित अंतराल पर सुव्यवस्थित आकलन की भी व्यवस्था है।

विद्या प्रवेश : प्राइमरी स्कूल खुलने के बाद पहली कक्षा के बच्चों का तीन महीने का एक विशेष कोर्स कराया जाएगा। विद्या प्रवेश के अंतर्गत बाल वाटिका एवं कक्षा एक के बच्चों का खेल–खेल में जरूरी अक्षर और संख्या ज्ञान दिया जाएगा। इस कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों को स्कूल में सीखने के लिये आवश्यक कौशल ज्ञान और दृष्टिकोण प्रदान करना है जो निपुण भारत मिशन का एक हिस्सा है तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर आधारित है।

उपचारात्मक शिक्षण : उपचारात्मक शिक्षण में कमजोर तथा शिक्षण में पिछड़े छात्रों के निदानात्मक मूल्यांकन के पश्चात उनके सुधार के लिए उपचारात्मक शिक्षण का उपयोग होता है, जिससे कि सभी छात्र शिक्षण की मुख्य धारा में सम्मिलित हो जाएं।

शिक्षक प्रशिक्षण–परिचय

शिक्षा में गुणवत्ता वृद्धि हेतु शिक्षकों की केन्द्रीय भूमिका लंबे समय से रही है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 इस बात पर जोर देती है कि शिक्षक को शिक्षा के मूलभूत परिर्वतन के केन्द्र में लाना होगा। शिक्षकों के सतत् व्यावसायिक विकास की आवश्यकता पर अधिक जोर दिया गया है। शिक्षकों के व्यावसायिक विकास पर नवीन रूप प्रदान करना स्वागत योग्य है। यह शिक्षकों के कार्य की कुशलता और क्षमता संवर्धन से जुड़ा है। सभी शिक्षकों के लिए ही सतत व्यावसायिक विकास नए सीखने, अन्वेषण करने और विकास के अवसर प्रदान करता है। गतिविधि आधारित शिक्षण करना, शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया की योजना बनाना, परियोजना निर्माण करना, बच्चों का समग्र रुप से आकलन करना, पाठ्य सहभागी गतिविधियों में संगठनात्मक कार्य करना, स्कूल प्रशासन और भागीदारी सम्मिलित है। एक व्यावसायिक शिक्षक के लिए केवल ज्ञान का होना आवश्यक नहीं है, उनके अभ्यास में क्या, कब, क्यों और कैसे का ज्ञान होना भी आवश्यक है। इसका मतलब है कि व्यावसायिक शिक्षक केवल अपने विषय का विशेषज्ञ नहीं होता है, बल्कि अत्यधिक तकनीकी रुप से कुशल और वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने में सक्षम होता है। शिक्षकों का सतत एवं व्यावसायिक विकास उन्हें एक व्यवस्थित एवं लचीली कार्य योजना विकसित करने में सहायता करेगा।

5.9.1 शिक्षकों का निरंतर व्यवसायिक विकासः भारत में कई शिक्षा आयोग, समितियों, नीतियों के माध्यम से शिक्षकों के पेशेवर विकास हेतु अनवरत गुणवत्तापूर्ण शिक्षक प्रशिक्षण संचालित किए जाते रहे हैं। स्कूली शिक्षा में

बच्चों के गुणवत्तापूर्ण सर्वांगीण विकास हेतु शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता के लिए कुछ प्रमुख पहल निम्नलिखित हैं–

- प्रशिक्षण नेटवर्क को व्यापक बनाने और सार्वभौमिकता सुनिश्चित करने के लिए शिक्षा आयोग (1964–66) ने सिफारिश कि एक नोडल स्कूल के साथ 'स्कूल कॉम्पलेक्स' की स्थापना की जाए।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 को निर्णायक बनाया गया। जो सभी स्तरों पर शिक्षकों को सेवाकालीन शिक्षा प्रदान करने के लिए एक मजबूत संस्थागत नेटवर्क का निर्माण करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के प्रस्ताव से जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट) की स्थापना की गयी। डायट की संकल्पना एक संसाधन के रूप में की गई थी। डायट का महत्वपूर्ण कार्य सेवापूर्व एवं सेवाकालीन प्रशिक्षण प्रदान करना है।
- सर्व शिक्षा अभियान (SSA) 2001 के रूप में लागू किया गया था। यह प्रारम्भिक शिक्षा को सार्वभौमिक बनाने के लिए भारत का मुख्य कार्यक्रम है। इसके लक्ष्यों में सार्वभौमिक पहुंच और प्रतिधारणा ब्रिजिंग सम्मिलित है।
- सर्व शिक्षा अभियान (SSA) के तहत बाल वाटिका एवं प्राइमरी के शिक्षकों की सेवाकालीन प्रशिक्षण (प्रत्येक वर्ष एक शिक्षक के लिए 20 दिवसीय प्रशिक्षण) की परिकल्पना की गई।
- National Initiative for school Heads, & Teachers' Holistic Advancement (NISHTHA) शिक्षा सीखने में सुधान के लिए MHRD का एक प्रमुख कार्यक्रम है। 21 अगस्त 2019 को प्रथम स्तर का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। NISHTHA Online - Covid-19 महामारी के दौरान, अचानक लॉकडाउन ने इस कार्यक्रम के आमने–सामने के संचालन को प्रभावित किया। अतः शेष 24 लाख शिक्षक और स्कूल प्रमुख को प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए NISHTHA Online मोड के लिए अनुकूलित और डिजिटल के माध्यम से संचालित किया गया। वर्तमान में निष्ठा (NISHTHA) Online कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है तीन संस्करणों में : NISHTHA 1.0 प्राथमिक है, NISHTHA 2.0 द्वितीयक है और NISHTHA 3.0 मूलभूत साक्षरता है।
- **सतत व्यावसायिक विकास की विशेषताएँ :** राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 शिक्षकों, प्रधानाध्यापकों के लिए 50 घंटे की सतत व्यावसायिक विकास का प्रस्ताव करता है। नवीनतम शिक्षा शास्त्र और स्वायत्तता के उपयोग के साथ शिक्षकों को उनकी आवश्यकताओं के अनुसार गतिविधियाँ चुनने का अधिकार दिया जाना चाहिए।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अनुसार स्कूली शिक्षा में 10+2 के ढ़ांचे में नया बदलाव करते हुए 5+3+3+4 के ढ़ांचे का पुनर्गठन किया गया है। वर्तमान में, 3–6 आयु वर्ग के बच्चों को भी इसमें सम्मिलित किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अनुसार उच्च गुणवत्ता वाले Early Childhood Care and Education (ECCE) के अन्तर्गत आंगनबाड़ी कार्यकर्त्री और विद्यालय के शिक्षक को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

5.9.2 शिक्षक प्रशिक्षण की आज की आवश्यकता : बुनियादी स्तर में साक्षारता एवं संख्यात्मक ज्ञान हेतु शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसलिए शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु निम्नांकित सुझाव पर अमल किया जा सकता है–

- शिक्षक प्रशिक्षण आवश्यकतानुसार क्षमता संवर्धन हेतु एवं विषयवार होना चाहिए।
- प्रत्येक शैक्षिक सत्र के प्रारंभ के प्रथम माह में ही शिक्षकों को प्रशिक्षित करने की कार्य योजना राज्य स्तर से लेकर जनपद एवं विकासखण्ड स्तर पर बनाई जानी चाहिए।

- शिक्षक–प्रशिक्षण हेतु प्रशिक्षण हॉल स्वच्छ, हवादार, रोशनी से युक्त होना चाहिए।
- शिक्षक प्रशिक्षण हेतु प्री स्कूल एवं कक्षा 1 व 2 के शिक्षकों के लिए अलग–अलग प्रशिक्षण मॉड्यूल/शिक्षक संदर्शिका का विकास किया जाना चाहिए।
- आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों एवं शिक्षकों के लिए तकनीकी का प्रशिक्षण भी समय–समय पर आयोजित किया जाना चाहिए।
- जिस प्रकार कक्षा–कक्ष का वातावरण सीखने के अनुकूल होता है, उसी प्रकार प्रशिक्षण हॉल का वातावरण सीखने के अनुकूल आदर्श रूप में स्थापित किया जाना चाहिए।
- आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों एवं शिक्षकों को उच्च शिक्षा, क्रियात्मक शोध हेतु प्रेरित किया जाए, इस हेतु कार्य योजना का निर्माण किया जाना चाहिए एवं अवकाश भी स्वीकृत किया जाना चाहिए।
- आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों एवं शिक्षकों को शैक्षिक भ्रमण हेतु अवसर प्रदान किया जाना चाहिए।
- प्रत्येक शैक्षिक सत्र में आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों एवं शिक्षकों के आयोजित होने वाले प्रशिक्षणों का कैलेंडर भी जारी किया जानी चाहिए।
- ऑनलाइन शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन भी समय–समय पर किया जाना चाहिए।
- प्रत्येक शिक्षक के शिक्षण की अद्‌भुत शैली होती है उसे निखारने हेतु प्रशिक्षण आयोजित किया जाना चाहिए। संदर्शिका/मॉड्यूल की सहायता से शिक्षण को आकर्षक बनाने में सहयोग प्राप्त करने हेतु शिक्षकों को प्रेरित किया जाना चाहिए न कि बाध्य किया जाना चाहिए।
- इन प्रशिक्षण में शिक्षकों की जरूरतों, कक्षा–कक्ष की अकादमिक समस्याओं, शिक्षा के परिप्रेक्ष्य और विषय की प्रकृति के बारे में चर्चा की जाना चाहिए।
- शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम की कार्ययोजना निर्माण पर शिक्षकों को सम्मिलित करना जरूरी है चाहे वह विषय वस्तु के बारे में हो या प्रक्रियाओं के बारे में।
- इन प्रशिक्षणों में शिक्षक को यह सिखाना होगा कि वह बच्चे से चर्चा कर संप्रेषण करें तथा उनमें तर्कशक्ति विकसित कर सकें।
- गणित शिक्षकों का स्वास्थ्य तथा अभिप्रेरित प्रशिक्षण भी आयोजित किया जाना चाहिए।
- कार्यपत्रक, अभ्यास पत्रक का विकास का प्रशिक्षण भी दिया जाना चाहिए।
- प्रशिक्षण में शिक्षकों को सिखाना है कि वह बच्चों को क्या, क्यों और कैसे की अवधारणा को सिखा सकें।
- प्रशिक्षण ऐसा हो जो बच्चों को केंद्रित करे तथा बच्चों के जो रोजमर्रा वाले खेल हों उनको सम्मिलित करके गणित विषय से जोड़ सकें जैसे कि गिल्ली–डंडा, स्टापू या सिकड़ी, पिट्ठू, खो–खो, छुपन–छुपाई, बर्फ–पानी आदि।

❖❖❖

अध्याय-6

फाउण्डेशनल स्टेज में अन्य मुद्दों से सम्बंधित पाठ्यक्रम, सामग्री एवं शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया

आधुनिक शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 का क्रियान्वयन एक महत्वपूर्ण बदलाव है। यह शिक्षा को एक समग्र प्रक्रिया के रूप में देखती है, जो भावनात्मक, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता, नैतिक और सांस्कृतिक आयामों को सम्मिलित करने का समर्थन करती है। इसी क्रम में राज्य पाठ्यचर्या का निर्माण किया जा रहा है। यह एक एकीकृत पाठ्यक्रम बनाने के लिए आधारशिला के रूप में साबित होगी जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 की आकांक्षाओं के साथ सहज रूप से संरेखित होगी।

सामाजिक–भावनात्मक एवं नैतिक शिक्षा आधुनिक शैक्षिक दर्शन की आधारशिला के रूप में उभरी है जो भावनाओं, पारम्परिक कौशल और नैतिक समझ के बीच आंतरिक संबंध को स्वीकार करते हुए युवा शिक्षार्थियों को सम्प्रेषण की जटिलताओं को समझने एवं संचालन करने में मदद करती है। यह परस्पर संवाद पर आधारित गतिविधियों और सार्थक चर्चाओं के माध्यम से छात्रों में अपनी भावनाओं को प्रबंधित करने, स्वस्थ संबंध स्थापित करने और नैतिक विकल्प का चयन करने की क्षमता का विकास करने में मदद करती है। साथ ही यह स्व–जागरूकता और सहानुभूति की भावना विकसित करती है, जो छात्रों को न केवल अकादमिक रूप से निपुण बनाएगी बल्कि सामाजिक रूप से भी विकसित करने में मदद करेगी।

समकालीन शिक्षा में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए समावेशी शिक्षा हेतु प्रतिबद्धता होनी चाहिए। समावेशिता प्रत्येक शिक्षार्थी की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शिक्षण पद्धतियों, सामग्रियों और वातावरण के साथ अनुकूलन करने पर जोर देती है। यह इस दृष्टिकोण को स्वीकार करती है कि प्रत्येक बच्चे की क्षमताओं या अक्षमताओं से परे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उनका अधिकार है जो उनके बौद्धिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास को बढ़ावा देने में सहायक साबित होती है।

समानांतर में 'स्वास्थ्य एवं स्वच्छता' और 'जागरूकता' के पाठ्यक्रम का एकीकरण बच्चे के विकास में शारीरिक विकास एवं कल्याण की महत्वपूर्ण भूमिका को संबोधित करेगा। स्वच्छता, पोषण और स्वस्थ आदतों के बारे में ज्ञान प्रदान करके शिक्षक छात्रों को बेहतर विकल्प का चयन करने के लिए सशक्त बना पाएंगे जो उनके समग्र विकास में योगदान देगा। स्वस्थ शरीर और मस्तिष्क के महत्व को पहचानते हुए पाठ्यक्रम का यह पहलू एक संतुलित जीवन शैली के महत्व को रेखांकित करेगा।

नैतिक शिक्षा एक आवश्यक समाजोपयोगी आयाम है, जो बच्चों के मस्तिष्क को मूल्यपरक नैतिकता के साथ जोड़ता है। एक समय में जब सही और गलत के बीच की सीमाएं धुँधली हो जाती हैं, बच्चों में नैतिक मूल्यों को स्थापित करना महत्वपूर्ण हो जाता है। नैतिक दुविधाओं में छात्रों को सम्मिलित करके, सहानुभूति को बढ़ावा देकर और नैतिक मुद्दों के बारे में उनकी सकारात्मक सोच को प्रोत्साहित करके पाठ्यक्रम का यह पहलू सुनिश्चित करेगा कि छात्र न

केवल अकादमिक रूप से उत्कृष्टता प्राप्त करें बल्कि जिम्मेदार एवं वैश्विक नागरिक के रूप में भी विकसित हो सकें। इसके अलावा छात्र को सर्वांगीण रूप से समृद्ध करने के लिए पाठ्यक्रम में सांस्कृतिक शिक्षा का समावेश जरूरी है। सांस्कृतिक जागरूकता दूसरों के प्रति अपनेपन और सम्मान की भावना को बढ़ावा देने का कार्य करती है। विभिन्न लोक परंपराओं, लोक भाषाओं और दृष्टिकोणों को पाठ्यक्रम में एकीकृत करने से सतत् विकास का मार्ग प्रशस्त होगा।

शिक्षा के लिए समग्र दृष्टिकोण छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता, नैतिक अंतर्दृष्टि, स्वास्थ्य कल्याण और सांस्कृतिक प्रशंसा को बढ़ावा देगा। विकास के इन बहुमुखी पहलुओं का एकीकरण करके ऐसी वर्तमान एवं भावी पीढ़ी तैयार होगी जो न केवल अकादमिक रूप से कुशल हो बल्कि सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील और नैतिक रूप से जिम्मेदार भी हो। सामाजिक–भावनात्मक, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता, नैतिक और सांस्कृतिक शिक्षा के धागों को एक साथ बुनकर हम एक ऐसा ताना–बाना बना सकते हैं जो छात्रों को न केवल बौद्धिक कुशलता बल्कि भावनात्मक लचीलापन, नैतिकता, स्वास्थ्य और समाज की विविधता की समझ के साथ उन्हें भविष्य के लिए भी तैयार करे। यह अध्याय निम्न बिन्दुओं पर प्रतिबिंबित है–

6.1 जागरूकता

सीखने का यह चरण बच्चे के प्रारम्भिक वर्षों में समग्र विकास को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस रचनात्मक अवधि के दौरान शिक्षकों और देखभाल करने वालों को कुछ प्रमुख पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। उनमें से एक पहलू जागरूकता है जिसके अंतर्गत स्वयं सहित जीव–जन्तु, पर्यावरण एवं प्राकृतिक संबंधों आदि के बारे में जागरूकता सम्मिलित होनी चाहिए। इस अवस्था में जागरूकता को सम्मिलित करने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो आयु उपयुक्त गतिविधियों, अनुभवात्मक शिक्षा, कहानी कहने और खुले सम्प्रेषण को बढ़ावा देता है। शिक्षक, आंगनबाड़ी कार्यकत्री और माता–पिता सभी सीखने के माहौल को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे विकास के इस पहलू को प्रोत्साहन देकर बच्चों के सर्वांगीण विकास में मदद करते हैं। जागरूकता के महत्वपूर्ण आयाम निम्न हैं–

i. **स्वास्थ्य एवं स्वच्छता :** बच्चों के समग्र विकास में उनके स्वास्थ्य एवं स्वच्छता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए जागरूकता कार्यक्रम एवं विद्यालय स्तर पर संचालित स्वास्थ्य संबंधित गतिविधियों को प्रोत्साहित करना चाहिए।

- बच्चों को उनके आस–पास के वातावरण से परिचित कराकर स्वास्थ्य एवं स्वच्छता संबंधी अच्छी आदतों से परिचित कराना चाहिए।
- बच्चों में स्वस्थ व्यवहार को बढ़ावा देने और रोगों की रोकथाम के लिए शिक्षकों को उचित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
- विद्यालय में सप्ताह के किसी एक दिन को स्वास्थ्य एवं स्वच्छता दिवस के रूप में मनाया जाना चाहिए।
- विद्यालय में बच्चों/शिक्षकों के लिए भौतिक सुविधाएं पर्याप्त रूप से उपलब्ध होनी चाहिए। जैसे– पेयजल, शौचालय, हाथ धोने की व्यवस्था इत्यादि।

ii. **पर्यावरण** : वर्तमान में पर्यावरण–क्षति एक वैश्विक संकट के रूप में उभर रही है। निरंतर धरती के तापमान में वृद्धि हो रही है जिससे गर्मी बढ़ रही है और समुद्र के जलस्तर में बढ़ोत्तरी हो रही है। प्लास्टिक उत्पाद व कचरे से मृदा, तालाब, नदियाँ, एवं समुद्र प्रदूषित हो रहे हैं। वर्तमान पीढ़ी को इन खतरों के प्रति जागरूक करने की आवश्यकता है। फाउण्डेशनल स्टेज पर बच्चों में वृक्ष, मृदा, वन, नदी, तालाब, एवं प्राकृतिक आवास आदि को संरक्षित करने हेतु अभिवृत्ति को विकसित करने की आवश्यकता है। पर्यावरण से सम्बन्धित छोटी–छोटी कविताओं, कहानियों एवं गतिविधियों को पाठ्यक्रम में जोड़ा जा सकता है। भ्रमण व अवलोकन द्वारा पर्यावरण संरक्षण के लिए अभिरुचि का विकास किया जा सकता है।

iii. **नैतिक मूल्य और चारित्रिक विकास** : नैतिक मूल्यों जैसे–ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, न्याय, करुणा, दया, संयम, सहानुभूति, संवेदनशीलता, समानुभूति, स्व–अनुशासन, निष्पक्षता, धैर्य, शालीनता सहजता आदि से बच्चों के चारित्रिक गुणों का विकास होता है। उनके आचरण एवं व्यवहार में ये सभी गुण परिलक्षित होने चाहिए। बुनियादी स्तर पर ही बच्चों में इन गुणों का विकास करने हेतु प्रयास करने चाहिए। आदतें ही भविष्य का निर्माण करती हैं क्योंकि वे आगे चलकर व्यक्तित्व में परिलक्षित होती हैं। अच्छे और बुरे के बीच अन्तर करते हुए सही निर्णय लेने की क्षमता का विकास प्रारम्भिक अवस्था से ही आरंभ करना चाहिए। इसके लिए अध्यापक को कुछ प्रयास करने चाहिए, जैसे–

- ❖ बच्चों के लिए स्वयं व्यवहारिक आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए।
- ❖ बच्चों में नैतिक मूल्यों के प्रति स्वीकार्यता को प्रोत्साहित करने और उन्हें अच्छा व्यवहार करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।
- ❖ बच्चों को नैतिक मूल्यों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।
- ❖ बच्चों में नैतिक तर्कशक्ति का विकास करना चाहिए।
- ❖ बच्चों को प्रतिदिन प्रार्थना–स्थल पर वीर, साहसी, वैज्ञानिकों, महापुरुषों आदि की प्रेरणादायक कहानियाँ सुनाई जानी चाहिए।
- ❖ खेल, नाटक, अभिनय, सामूहिक गतिविधि आदि के माध्यम से नैतिक गुणों का विकास करना चाहिए।

बच्चों में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना का विकास आरम्भिक स्तर से ही किया जाना चाहिए, जिससे उनमें अपने परिवार, पास–पड़ोस व समुदाय में स्वस्थ सम्बन्ध स्थापित करने तथा सभी के प्रति सम्मान का भाव विकसित करने में आसानी होगी। नैतिक मूल्यों के विकास से बच्चों के व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिलता है, जैसे –

- ❖ सभी का आदर करना।
- ❖ ईमानदार रहना।
- ❖ अतिथि का स्वागत और सम्मान करना।
- ❖ सत्य बोलना।

- सभी से विनम्रतापूर्वक बातचीत करना।
- अपने आस–पास के पशु–पक्षियों को हानि न पहुँचाना।
- पेड़–पौधे लगाना और उनका संरक्षण करना।
- बुजुर्गों के प्रति संवेदनशील रहना आदि।

iv. **सांस्कृतिक धरोहर के प्रति जागरूकता :** यद्यपि फाउण्डेशनल स्टेज में सांस्कृतिक धरोहर के प्रति जागरूकता तथा रुचि उत्पन्न करना शिक्षक के लिए चुनौतीपूर्ण है परंतु सर्वप्रथम बच्चों से स्थानीय धरोहरों के बारे में बातचीत कर सकते हैं। हम उन्हें इन धरोहरों की पहचान तथा उनके बारे में जानने के प्रति जागरूक कर सकते हैं। उदाहरणस्वरूप, हम उनसे उनके गाँव/शहर में प्रचलित लोक परम्पराओं, त्योहारों, मेलों एवं लोक कलाओं आदि के बारे में बताकर संस्कृति एवं विरासत से जोड़ सकते हैं। परिवार महत्वपूर्ण सांस्कृतिक जानकारी और सीखने के संसाधन प्रदान कर सकते हैं। कक्षा में खेल–खेल के माध्यम से सीखने के लिए संसाधनों की पहचान करना महत्वपूर्ण है।

विद्यालय स्तर पर बच्चों में इन आदतों को विकसित करने के लिए शिक्षकों की अहम् भूमिका है। बुनियादी अवस्था में बच्चों में सांस्कृतिक धरोहरों को सहेजने के लिए प्रेरित कर सकते है –

- निम्नलिखित सूक्तियों द्वारा बच्चों को सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण हेतु प्रेरित किया जा सकता है–
  - विरासतें किसी देश का पूरा इतिहास और संस्कृति बताती हैं।
  - मुझे अपनी भारतीय विरासत पर गर्व है और रहेगा।
  - विरासतें किसी राष्ट्र का गौरव और ताकत होती हैं।
  - हमारे पूर्वजों की आत्माएँ हमारी विरासत में निहित हैं – उन्हें सुरक्षित रखें।
  - बुनियादी अवस्था में बच्चों को सांस्कृतिक धरोहर से संबंधित कहानियों, गीत, नृत्य, परम्पराओं, त्योहारों आदि के बारे में जानकारी दी जानी चाहिए।
- खेल, नाटक एवं गतिविधियों द्वारा सांस्कृतिक धरोहरों के सम्बन्ध में बच्चों से बातचीत करना।
- फ्लैश कार्ड, फोटो, चार्ट, चित्रों एवं वीडियो द्वारा सांस्कृतिक धरोहरों को दिखाना।

6.2 सामाजिक–भावनात्मक एवं नैतिक अधिगम विकास

सामाजिक–भावनात्मक और नैतिक शिक्षा, भावनात्मक सामंजस्य, सकारात्मक संबंध एवं उत्तरदायित्वपूर्ण नैतिक निर्णय लेने संबंधी कौशल व दक्षताओं को विकसित करने वाला एक शैक्षिक दृष्टिकोण है जो व्यक्ति के सर्वांगीण विकास (सामाजिक, भावनात्मक, नैतिकता सहित) में सहयोग प्रदान करता है।

सामाजिक–भावनात्मक और नैतिक शिक्षा के द्वारा बालकों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता, सकारात्मक कार्य प्रणाली, मानसिक स्वास्थ्य, समायोजन, सार्थक सामाजिक दायित्व, नैतिक मूल्यों की उपादेयता एवं समूह में सामंजस्यपूर्ण कार्य करने जैसे कौशल एवं दक्षताओं को विकसित किया जा सकता है।

- ❖ सामाजिक–भावनात्मक और नैतिक शिक्षा छात्रों में मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का समाधान करने की क्षमता का विकास करती है।
- ❖ यह छात्रों में सहयोग, आपसी सम्प्रेषण, सामंजस्यपूर्ण समूह कार्य एवं मजबूत सामुदायिक संबंधों का निर्माण करने में सार्थक भूमिका निभाती है।
- ❖ इसकी मदद से छात्र परिस्थितिजन्य उत्पन्न हिंसा व सामाजिक संघर्ष में व्यवहार संतुलन से समस्या समाधान करने में सक्षम हो पाएंगें।
- ❖ इसके माध्यम से छात्र शरीर, भावनाओं, विचारों, शक्तियों और कमजोरियों आदि की पहचान करके आत्माभिव्यक्ति की ओर अग्रसर होते हैं।
- ❖ इसके द्वारा छात्र में सामंजस्यपूर्ण भावनाओं, सम्मानजनक संचार, सामाजिक उत्तरदायित्व, विविधता एवं समावेशन आदि विषयगत व समग्र सामाजिक जागरूकता विकसित कर पाने में सक्षम हो पाएंगे।
- ❖ व्यक्तिगत व व्यावसायिक विकास को मजबूत संबंध कौशल द्वारा ही विकसित किया जा सकता है। अतः सामाजिक–भावनात्मक एवं नैतिक शिक्षा द्वारा छात्र संचार, सहयोग व संघर्ष–समाधान की कला सीखते हुए मजबूत संबंध कौशल का विकास कर सकेंगे।
- ❖ यह छात्रों में निर्णय लेने की क्षमता एवं विकल्पों का विश्लेषण करने का अवसर प्रदान करता है, जिसका उपयोग विभिन्न आयु–वर्ग के छात्र अपनी मानसिक व बौद्धिक स्थिति के अनुसार करते हैं।

6.3 लिंग संवेदीकरण

लिंग संवेदीकरण की समझ विकसित करना प्रारम्भिक वर्षों में बहुत महत्वपूर्ण है। यह एक प्रक्रिया है जो सभी लिंगों के लोगों की भिन्नता को पहचानना, स्वीकार करना और उनका सम्मान करना सिखाती है। कुछ सुझायी गई गतिविधियों के माध्यम से कक्षा में लिंग संवेदीकरण को बढ़ावा दिया जा सकता है–

i. **छात्र–नेतृत्व वाली बातचीत :** शिक्षकों द्वारा कक्षा में लैंगिक मुद्दों पर छोटी–छोटी बातचीत/चर्चा की जा सकती है। कुछ सांकेतिक प्रश्न जैसे– क्या तुम्हारे पापा/भैया खाना बना सकते हैं? क्या तुम्हारी दीदी फुटबॉल/क्रिकेट खेल सकती हैं? क्या तुम्हारी मम्मी गाड़ी चला सकती हैं? क्या लड़के रो सकते हैं? इससे बच्चों को रूढ़िवादिता से परे सोचने और तर्क के साथ बहस करने की कोशिश करने का मौका मिलेगा।

ii. **गतिविधियों के माध्यम से :**

- ❖ लिंग चक्र– शिक्षक अलग–अलग भूमिकाओं एवं पेशों के पात्रों को (जैसे– माता–पिता, वैज्ञानिक, फुटबॉलर, ड्राइवर, रसोइया, सफाईकर्मी, माली, गार्ड, चाची– चाचा, भाई–बहन आदि) छात्रों को सौंप दें। फिर उन्हें पुरूष, महिला एवं दोनों के तीन वृत्त बनाने को कहें और भूमिकाओं एवं पेशों के पात्रों के अनुसार इन वृत्तों में से किसी एक में खड़े होने के लिए कहें। शिक्षक बाद में इस तथ्य की ओर संकेत करते हुए गतिविधि का सारांश दे सकते हैं कि पेशे लिंग आधारित नहीं होते हैं और बच्चे बड़े होने पर कोई भी क्षेत्र चुन सकते हैं।

- **भूमिका परिवर्तन :** बच्चों को अपने घर या समुदाय में किसी स्थिति का अभिनय करने के लिए कहा जा सकता है उदाहरण के लिए शिक्षक लड़कों को अपने पिता (या उनके परिवार के किसी पुरुष) का अभिनय करने के लिए कह सकते हैं और लड़कियों को उनकी माँ (या उनके परिवार की किसी महिला) का अभिनय करने के लिए कह सकते हैं। एक बार किसी स्थिति का अभिनय करने के बाद लड़कियों और लड़कों को भूमिकाएँ बदलने के लिए कहा जाएगा। उदाहरण के लिए यदि एक लड़की यह अभिनय कर रही थी कि उसकी माँ किस तरह खाना परोसती हैं, तो एक लड़का भी वैसा ही अभिनय करेगा। फिर शिक्षक पूछ सकते हैं– 'क्या कोई ऐसी गतिविधि थी, जो आप दूसरे दौर में नहीं कर सके?' चर्चा करें कि समाज द्वारा लैंगिक भूमिकाएँ बनाई गई हैं तथा ऐसा नहीं है कि कोई कार्य केवल पुरुषों या महिलाओं द्वारा ही किया जा सकता है।
- **भूमिका निभाना :** साक्षरता या संख्यात्मक पाठ के हिस्से के रूप में गतिविधियों का संचालन करते समय शिक्षक बच्चों को भूमिका निभाने के लिए कह सकते हैं। प्रत्येक बच्चे को विभिन्न भूमिकाएँ निभाने का अवसर दिया जा सकता है, विशेषकर वे भूमिकाएँ जो परंपरागत रूप से उनके लिंग से जुड़ी नहीं हैं। उदाहरण के लिए लड़कियों को वैज्ञानिक या खिलाड़ी की भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित करना आदि।
- **समूह गतिविधियाँ :** समूह गतिविधियों के दौरान विभिन्न भाषायी, धार्मिक और अन्य सामाजिक–सांस्कृतिक पहचान वाले बच्चों को एक साथ समूहीकृत किया जाना चाहिए।

iii. **कक्षा के दायित्व :** कक्षा के दायित्व (जैसे– डेस्क की सफाई करना, कुर्सियों को व्यवस्थित करना, कक्षा को सजाना) सौंपते समय बच्चों के लिंग के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए।

iv. **उदाहरणों का उपयोग :** शिक्षकों द्वारा ऐसे लोगों के सकारात्मक उदाहरण दिये जाने चाहिए जिन्होंने रूढ़िवादी लिंग–भूमिकाओं को चुनौती दी हो। उदाहरण के लिए महिला क्रिकेट टीम, महिला वैज्ञानिक, महिला सैन्य अधिकारी, महिला राजनेता, भोजनालय में खाना पकाने वाले पुरूष, बच्चों की देखभाल करने वाले पुरूष आदि।

v. **शिक्षक–छात्र संपर्क :** यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि शिक्षक समान और समावेशी व्यवहार करें ताकि बच्चे उन्हें आत्मसात् करते हुए अनुकरण कर सकें। उदाहरण के लिए–शिक्षकों को सम्मानपूर्वक असहमत होने के महत्व को बताना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि छात्र असहमत होने में सहज महसूस करें। शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को रचनात्मक फीडबैक दिया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त शिक्षकों को किसी भी परिस्थिति में छात्रों पर पूर्वाग्रहयुक्त या नकारात्मक टिप्पणी करने से बचना चाहिए।

vi. **छात्र–छात्र संपर्क :** शिक्षक को सक्रिय रूप से प्रत्येक बच्चे के लिए मित्रों के एक निश्चित समूह के बजाय अपने सभी साथियों के साथ बातचीत करने के अवसर पैदा करने चाहिए। शिक्षकों को छात्रों को एक–दूसरे से प्रश्न पूछने और दैनिक जीवन व परिप्रेक्ष्य के बारे में जानने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

vii. **कक्षा एक सुरक्षित स्थान के रूप में :** शिक्षकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि प्रत्येक बच्चा कक्षा में सुरक्षित महसूस करे और उसे अपनी भावनाओं को व्यक्त करने की स्वतंत्रता हो।

viii. **इनडोर और आउटडोर खेल :** शिक्षकों को सभी बच्चों को इनडोर और आउटडोर दोनों तरह के खेल खेलने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

ix. **समावेशन को बढ़ावा देने के लिए अभिभावक और समुदाय के साथ जुड़ने के अभ्यास के सुझाव :** माता–पिता/अभिभावक के साथ जुड़ने और उन्हें समानता व समावेशन को बढ़ावा देने में भागीदार बनाने के लिए कुछ सुझायी गई रणनीतियाँ और प्रथाएँ निम्नलिखित हैं–

- **अभिभावक–शिक्षक बैठकें :** अभिभावक– शिक्षक बैठक के दौरान, शिक्षक को माता–पिता/अभिभावकों के साथ बच्चे की शिक्षा के लिए एक समान वातावरण बनाने, सभी लिंग के बच्चों के साथ समान व्यवहार करने, बच्चों में विविधता के प्रति सम्मान पैदा करने और हर पेशे की भूमिका के बारे में बातचीत शुरू करनी चाहिए।
- **अभिभावक कैलेंडर :** परिवार में समानता और समावेशन को बढ़ावा देने के लिए घर पर की जा सकने वाली गतिविधियाँ अभिभावक कैलेंडर में सम्मिलित की जा सकती हैं। उदाहरण के लिए बच्चों को रसोई से भोजन–कक्ष तक भोजन ले जाने के लिए कहना या इस्तेमाल किए गए बर्तनों को धोने की जगह तक ले जाने में मदद करना। यह स्वच्छता के महत्व को स्पष्ट करेगा और साथ ही यह भी बताएगा कि सफाई का कार्य कोई लिंग आधारित गतिविधि नहीं है। माता–पिता को कैलेंडर में सभी बच्चों के लिए पढ़ाई और खेलने का समय निर्धारित करना चाहिए।
- **विद्यालय प्रबन्ध समिति की बैठकें :** विद्यालय प्रबन्ध समिति की बैठकों के दौरान यह चर्चा की जानी चाहिए कि यह कैसे सुनिश्चित किया जा सकता है कि लड़के और लड़कियाँ दोनों नियमित रूप से स्कूल आएँ एवं दिव्यांग बच्चों को कैसे समर्थन दिया जाए ताकि वे सीखने की सामग्री तक पहुँच/उपयोग से वंचित न रहें। विद्यालय के लिए विशिष्ट समावेशन की मौजूदा चुनौतियों (उदाहरण के लिए आस–पास के रास्ते में एकांत क्षेत्र जो लड़कियों को सुरक्षित रूप से स्कूल आने से रोक सकता है) और उन्हें संशोधित करने के लिए क्या किया जा सकता है, के बारे में भी बातचीत हो सकती है।
- **विद्यालय में सामुदायिक कार्यक्रम :** स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, महिला दिवस, बाल दिवस जैसे विशेष अवसरों पर माता–पिता और स्थानीय समुदाय के अन्य सदस्यों को विद्यालय में आमंत्रित किया जा सकता है। बच्चों की भागीदारी के साथ संक्षिप्त नाटक या नुक्कड़ नाटक आयोजित किए जा सकते हैं जिसमें सभी के लिए सम्मान, विविधता की सराहना आदि का संदेश दिया जा सकता है। विद्यालय एक प्रभावशाली माध्यम है जहां सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन शुरू किया जा सकता है और अगली पीढ़ी को जिम्मेदार नागरिक बनाया जा सकता है, जो समानता और समावेशन के संवैधानिक मूल्यों को कायम रखते हुए जीवन यापन करें।

6.4 दिव्यांगता संवेदीकरण

दिव्यांगता संवेदीकरण का अर्थ बच्चों एवं समुदाय के अंदर विशेष आवश्यकता वाले सभी बच्चों के प्रति

समानुभूति का विकास करना है। शिक्षा का समावेशीकरण यह बताता है कि विशेष शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक सामान्य छात्र और एक अशक्त या दिव्यांग छात्र को शिक्षा प्राप्ति के समान अवसर मिलने चाहिए।

i. **प्रारम्भिक पहचान, हस्तक्षेप और समावेश :** बच्चों (जो अपनी विशेष आवश्यकता के कारण विद्यालय जानें में असमर्थ हैं) की शीघ्र पहचान करने के लिए एक प्रारम्भिक हस्तक्षेप योजना बनाकर समय पर पुनर्वास एवं मदद उपलब्ध करायी जानी चाहिए।

ii. **विविधता के प्रति माता–पिता और समुदाय के दृष्टिकोण को बेहतर बनाना :** विविधता के प्रति स्वीकृति और संवेदनशीलता पैदा करने के लिए समुदाय और माता–पिता को जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से संवेदनशील बनाना चाहिए।

iii. **पाठ्यपुस्तक की सामग्री :** पाठ्यपुस्तक बनाते समय विविधता को ध्यान में रखा जाना चाहिए। पुस्तकों और कक्षा में उपयोग की जाने वाली भाषा विविधता के प्रति संवेदनशील होनी चाहिए। पुस्तकों की भाषा सरल और रोचक होनी चाहिए। पाठ्यपुस्तकों में अन्य उपयोगी संसाधन जैसे– बड़े चित्र, ऑडियो या ब्रेल पुस्तकों, सीखने के सार्वभौमिक डिज़ाइन की पुस्तकों आदि का उपयोग भी किया जा सकता है। राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश द्वारा 'प्रज्ञप्ति' यू–ट्यूब चैनल पर मूक बधिर बच्चों हेतु ई–कंटेन्ट प्रस्तुत किया जा रहा है।

iv. **पाठ्यक्रम :** शिक्षा प्रणाली को न केवल बच्चों को कक्षा में आगे बढ़ने के लिए तैयार करना चाहिए, बल्कि उन्हें बेहतर व्यक्ति बनाने पर भी कार्य किया जाना चाहिए। इसके लिए एक बहु–स्तरीय डिजाइन होनी चाहिए। बच्चों को स्व–जागरूक बनाया जाना चाहिए। समानुभूति और संवेदनशीलता आदि जीवन मूल्यों को भी सिखाया जाना चाहिए ताकि वे जान सकें कि विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के साथ कैसे व्यवहार करना चाहिए।

v. **शिक्षण और सीखने के तरीके :** विशिष्ट बच्चों के सीखने के विभिन्न तरीकों एवं गति के अनुसार शिक्षण शैलियों को विकसित करने की आवश्यकता है। रोल–प्ले एक अनुभवात्मक सीखने का उदाहरण हो सकता है। सीखने के सार्वभौमिक डिज़ाइन (Universal Design for Learning – UDL) शिक्षण में कला, नाटक और संगीत को एकीकृत करने आदि जैसी विभिन्न रचनात्मक रणनीतियों को अपनाया जा सकता है। यह सभी छात्रों की भागीदारी सुनिश्चित करने में मदद करेगा। घर–आधारित शिक्षा (Home based learning) जैसे शिक्षा के वैकल्पिक रूपों को अपनाने से उन छात्रों का नामांकन सुनिश्चित करना होगा जो स्कूल पहुँचने में असमर्थ हैं।

vi. **खेल गतिविधियाँ :** खेल गतिविधियों में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को सम्मिलित करने के लिए ऐसे खेल किट और खेल–क्षेत्र को डिजाइन किया जाना चाहिए जो उनके लिए सहायक हों।

vii. **समता मूलक गतिविधियाँ :** समता मूलक गतिविधियाँ आयोजित कराए जाने हेतु कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं–

- ❖ कक्षा में बैठने की व्यवस्था ऐसी की जानी चाहिए जिससे विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) को बैठने में कोई परेशनी न हो तथा वे ऐसा महसूस न करें कि उनको कक्षा से अलग कर दिया गया है।

- ❖ विद्यालय में शिकायत पेटियां लगाने और परामर्शदाताओं की नियुक्ति की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- ❖ संबंधित बच्चों के लिए अभिप्रेरक प्रोत्साहन योजनाओं को शिक्षा के सभी चरणों (प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर) में ससमय और पूर्ण रूप से कार्यान्वित किया जाना चाहिए। इस प्रक्रिया को सरल और पारदर्शी बनाया जाना चाहिए। जीवन, चिकित्सा और स्वास्थ्य बीमा का भी प्रावधान किया जा सकता है।
- ❖ तकनीकी सहायता की पहुँच बढ़ाने की आवश्यकता है। जैसे– मोबाइल वितरण, शैक्षिक उपकरणों का विकास (जो इंटरनेट का उपयोग नहीं करते हैं) और पाठ्यक्रम के अनुसार टैबलेट/मोबाइल ऐप्लीकेशन का विकास किया जा सकता है। एक सरल प्रणाली के साथ उनके लिए विशेष रूप से तैयार किए गए सरकारी प्रोत्साहन और सब्सिडी का प्रावधान भी किया जा सकता है।

viii. आकलन : विशेष आवश्यकता वाले छात्रों को आकलन के लिए लचीले अवसर प्रदान करने चाहिए। कई तरीकों से निरंतर रचनात्मक आकलन किया जाना चाहिए जिसमें न केवल लिखित आकलन बल्कि दृश्य और मौखिक प्रस्तुतियां भी सम्मिलित हों। इसमें बच्चों के समग्र विकास एवं सीखने की गुणवत्ता का आकलन किया जाना चाहिए न कि उनकी स्मृति का। आकलन को प्रौद्योगिकी की मदद से सुलभ बनाया जा सकता है।

ix. सोशल ऑडिट : समाजसेवी या समुदाय के लोगों के माध्यम से ऑडिट भी करवाया जा सकता है जिसमें विशेष आवश्यकता वाले प्रत्येक बच्चे का रिकॉर्ड, उनके अनुरूप भौतिक बुनियादी ढाँचा (बाधामुक्त), पुस्तकों की उपलब्धता (आवश्यकता के अनुसार) और छात्रों की शिकायतों का निवारण आदि सम्मिलित हो सकते हैं।

x. विद्यालय का बुनियादी ढाँचा : विद्यालय का बुनियादी ढाँचा समावेशी एवं बाधामुक्त होना चाहिए। यूनेस्को द्वारा प्रस्तावित सीखने के अनुकूल कक्षा कक्ष निर्माण किया जाना चाहिए। एक समावेशी व सीखने के अनुकूल कक्षा में लिंग, शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक, भाषायी या अन्य विशेषताओं का भेद किए बिना सभी बच्चों को समान अवसर देने चाहिए।

xi. समावेशी शिक्षा से संबंधित शिक्षकों का व्यावसायिक विकास : कक्षा में विशिष्ट बच्चों को पढ़ाने के लिए ज्ञान, समझ और संबंधित कौशल को सुनिश्चित करना आवश्यक है। शिक्षकों के क्षमता–निर्माण और संवेदीकरण के लिए निरंतर शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित करने चाहिए। उन्हें सीखने के सार्वभौमिक डिज़ाइन, शिक्षण योजनाओं के विकास, विभिन्न प्रकार के अनुदेशात्मक तरीकों, और समावेशी कक्षा शिक्षण के लिए संसाधनों एवं रणनीतियों से परिचित कराया जाना चाहिए।

6.5 सुरक्षा एवं संरक्षा

फाउण्डेशनल स्टेज के बच्चे अत्यंत संवेदनशील होते हैं। उन्हें सुरक्षित एवं सहज वातावरण प्रदान करना हम सभी का उत्तरदायित्व है। सुरक्षित एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में ही बच्चों का सर्वांगीण विकास संभव है। प्री–स्कूल से कक्षा 1 व 2 तक के बच्चों को उनके विकासात्मक पहलुओं के अनुरूप सुरक्षा एवं संरक्षा का वातावरण प्रदान करके उनके अधिगम एवं विकास के वांछित लक्ष्यों को प्राप्त कराया जा सकता है।

प्री–स्कूल एवं प्राथमिक विद्यालयों में सुरक्षा एवं संरक्षा की कार्यकारी परिभाषा अग्रलिखित बिंदुओं को सम्मिलित करती है:–

- विद्यालय की वे शर्तें अथवा नियम जिन्हें शारीरिक खतरा, जोखिम या चोट जिसमें शारीरिक दंड भी सम्मिलित है, से सुरक्षा प्रदान करने के लिए निर्मित किया गया है।
- विद्यालय की वे शर्तें अथवा नियम जिन्हें मौखिक उत्पीड़न, मानसिक उत्पीड़न, सामाजिक भेदभाव, निरादर या तिरस्कार से सुरक्षा प्रदान करने के लिए निर्मित किया गया है।
- विद्यालय की वे शर्तें व नियम जिन्हें यौन उत्पीड़न, दुरुपयोग और अन्य अपराधों से बच्चों को सुरक्षा प्रदान करने के लिए निर्मित किया गया है।
- विद्यालय की वे शर्तें अथवा नियम जिन्हें एक समावेशी माहौल में समान गुणवत्ता वाली शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए डिजाइन किया गया है।
- विद्यालय की वे शर्तें अथवा नियम जिन्हें शिक्षा में सुविधा प्राप्त करने और अच्छा प्रदर्शन करने के लिए विशेष आवश्यकताओं वाले या अन्य बच्चों को अतिरिक्त मदद प्रदान करने के लिए निर्मित किया गया है।
- विद्यालय की वे शर्तें अथवा नियम जो पठन–पाठन तथा शिक्षा के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए शिक्षा में सहभागिता, समावेशन और उत्कृष्टता को बढ़ावा देने के लिए निर्मित किया गया है।

6.5.1 सुरक्षा एवं संरक्षा के आयाम

बच्चों की शिक्षा के अंतर्गत सुरक्षा एवं संरक्षा के निम्नलिखित 8 आयामों को संबोधित किया जाता है.

i. शारीरिक आयाम :

कभी–कभी शारीरिक दंड को अनुशासन बनाने का एक साधन मान लिया जाता है जबकि मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि स्नेहपूर्ण एवं सहज वातावरण में अनुशासन स्थापित किया जा सकता है। अतः बच्चों के लिए किसी भी प्रकार के शारीरिक दंड को वर्जित रखना चाहिए ताकि बच्चा स्वाभाविक और सहज रूप से अधिगम व विकास कर सके।

ii. भावनात्मक आयाम :

बच्चों पर मौखिक रूप से असहज अथवा अपमानजनक टिप्पणी करने, भावनात्मक चोट पहुँचाने, डराने, धमकाने, उपेक्षा करने, गलत दोषारोपण करने आदि से बच्चों में भावनात्मक तनाव एवं कुंठा उत्पन्न होती है जिसके कारण बच्चे भावनात्मक रूप से असुरक्षित महसूस करते हैं। अतः शिक्षकों एवं अभिभावकों को इसके प्रति जागरूक करना चाहिए। घर एवं विद्यालय में बच्चों की गरिमा एवं विशिष्टता का आदर करना चाहिए ताकि बच्चे सहज रूप से विकास कर सकें।

iii. सामाजिक आयाम :

सामाजिक पहचान की विशेषताओं (जाति, धर्म, दिव्यांगता, लिंग, भाषा, पैतृक व्यवसाय, क्षेत्र, भोजन की आदतें, वेशभूषा एवं सांस्कृतिक परंपरा) के आधार पर बच्चों के साथ किसी भी प्रकार का सामाजिक भेदभाव असुरक्षा की भावना पैदा करता है जिससे बच्चे के नैसर्गिक मानसिक विकास में बाधा उत्पन्न होती है। अतः विद्यालय या

प्री–स्कूल के समस्त शैक्षणिक एवं सह–शैक्षणिक क्रियाकलापों में सभी बच्चों को समान अवसर एवं स्थान देना चाहिए जिसके लिए शिक्षकों, अभिभावकों एवं समुदाय का संवेदीकरण करना भी आवश्यक है।

iv. यौन उत्पीड़न आयाम :

फाउण्डेशनल स्टेज के बच्चे में यौन उत्पीड़न संबंधी सजगता कम होती है। इसलिए उनके इस मुद्दे के प्रति बहुत ही संवेदनशीलता की आवश्यकता होती है। परिवार, समुदाय एवं विद्यालय के सभी हितधारकों को इसके बारे में जागरूक करना चाहिए ताकि इस स्टेज के बच्चों के साथ किसी भी प्रकार का यौन उत्पीड़न न हो और वे विद्यालय, परिवार एवं समुदाय में स्वयं सुरक्षित महसूस कर सकें।

v. शैक्षिक उपेक्षा आयाम :

बच्चों की शारीरिक, भावनात्मक एवं शैक्षिक आवश्यकताओं की उपेक्षा करने से बच्चों के विकास की गति मंद हो जाती है। अतः अभिभावकों व शिक्षकों को बच्चों की सभी शारीरिक, भावनात्मक एवं शैक्षिक आवश्यकताओं के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है। विद्यालय की गतिविधियों में किसी भी प्रकार का उपेक्षापूर्ण व्यवहार न हो।

vi. बुनियादी सुविधा आयाम :

विद्यालय में सुदृढ़ भवन एवं बुनियादी ढाँचागत सुविधाएँ बच्चों की सुरक्षा एवं संरक्षा के लिए एक पूर्व शर्त है। इनके अभाव में सीखने–सिखाने का आनंददायी वातावरण बनाने में असुविधा होगी। अतः विद्यालय प्रबंध समिति एवं विभाग द्वारा बुनियादी ढाँचागत सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए।

vii. आपातकाल एवं आपदा आयाम :

आपातकाल एवं आपदाओं के दौरान बच्चों की सुरक्षा एवं संरक्षा की विशेष व्यवस्था करनी आवश्यक है क्योंकि इस स्टेज के बच्चे उम्र में छोटे होते हैं। अतः इनको विशेष ध्यान एवं सहज व त्वरित सहायता की आवश्यकता होती है। आपदा एवं आपातकाल के समय त्वरित सुरक्षा, राहत और पुनर्वास सुनिश्चित कराना चाहिए। इस दौरान सीखने–सिखाने की वैकल्पिक गतिविधियों, ऑनलाइन शिक्षण सुविधाओं, शैक्षिक टी0वी0 चैनल, रेडियो आदि के प्रसार को व्यापक एवं सर्वसुलभ बनाने पर जोर दिया जाना चाहिए। परन्तु ऑनलाइन कक्षाओं के संचालन में साइबर सुरक्षा का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए।

viii. स्वास्थ्य एवं स्वच्छता आयाम :

विद्यालय में बच्चों की उपस्थिति, ठहराव, सीखने की गति एवं गुणवत्ता पर स्वास्थ्य का विशेष प्रभाव पड़ता है। स्वच्छता अच्छे स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत पोषण, प्रथम चिकित्सा सहायता, रोगों से बचाव, अच्छी आदतों एवं व्यक्तिगत स्वच्छता के प्रति जागरूकता को बढ़ावा देना आवश्यक है।

6.5.2 सिफारिशें और भावी तरीके

फाउण्डेशनल स्टेज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण घटक 'सुरक्षा एवं संरक्षा' को सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक उपाय किए जाने चाहिए। सभी बच्चों के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक एवं नैतिक विकास हेतु

सुरक्षा एवं संरक्षा के सभी घटकों व मुद्दों को संबोधित करना महत्वपूर्ण है। शिक्षा के सभी हितधारकों एवं तंत्रों को बच्चों की सुरक्षा एवं संरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अपने दृष्टिकोण, व्यवहार, नीतियों एवं क्रियान्वयन में कुछ आवश्यक सुधार करने होंगे, जैसे–

- ❖ बच्चों को हर प्रकार के नुकसान से बचाना।
- ❖ बच्चों को उत्पीड़न से बचाना।
- ❖ ऐसे बच्चों की मदद करना जो उत्पीड़न या असुरक्षा की आशंका का सामना कर रहे हैं।
- ❖ विशेष रूप से सामाजिक भेदभाव से ग्रस्त एवं वंचित वर्ग के बच्चों की शिक्षा के लिए सम्मानजनक व सुरक्षित माहौल उपलब्ध करना।
- ❖ जिन बच्चों को नुकसान पहुँच सकता है उनकी मदद के लिए सभी उपयुक्त तंत्र और उपायों को सक्रिय करना।

उक्त कार्य हेतु नीति, प्रावधान एवं बजट की व्यवस्था करनी होगी तथा सभी हितधारकों को तदनुभूतिपूर्वक सभी बच्चों हेतु सुरक्षा एवं संरक्षा सुनिश्चित करनी होगी। एक ऐसी उत्तरदायित्व युक्त प्रणाली का विकास करना होगा जो हर स्थिति में बच्चों की आवश्यक एवं त्वरित सहायता कर सके।

6.5.3 कैसे करें ?:

सुरक्षा एवं संरक्षा सुनिश्चित करने के लिए निम्नलिखित कार्य किये जाने चाहिए .

i. सुरक्षा व संरक्षा के प्रति जागरूकता.

- ❖ प्रशिक्षण
- ❖ कानूनी साक्षरता
- ❖ सूचना–शिक्षा एवं संचार (IEC) सामग्री

ii. नीतिगत ढाँचे को मजबूत करना.

- ❖ संस्थागत 'सुरक्षा एवं संरक्षा' के ऐसे प्रावधान, नीति एवं दिशानिर्देश विकसित करना जिन्हें विद्यालयों द्वारा अपनाया जा सके।
- ❖ विद्यालयों में दंड, भेदभाव, उत्पीड़न, भय, उपेक्षा, कुपोषण एवं वंचन को संबोधित करने के लिए स्पष्ट दिशानिर्देश विकसित और प्रसारित करना।
- ❖ स्व.नियामक तंत्र विकसित करना जिसमें सुरक्षा एवं संरक्षा से संबंधित ड्यूटी, पदाधिकारियों के लिए आचार संहिता सम्मिलित है।
- ❖ शिक्षा में सुरक्षा एवं संरक्षा के साथ विभिन्न बाल संरक्षण निकायों और तंत्रों के साथ संलग्न होने के लिए दिशानिर्देश विकसित करना।
- ❖ सुरक्षा एवं संरक्षा के मामलों को समग्र शिक्षा की वार्षिक कार्य योजना व बजट में प्रस्तावित करना।

- ❖ विभिन्न अध्ययनों/अनुसंधानों में सुरक्षा एवं संरक्षा को स्थान देना।
- ❖ आसान एवं सुलभ चरणों वाली क्रियान्वयन एवं शिकायत निवारण प्रणाली विकसित करना।

iii. बजट एवं अनुश्रवण :

शिक्षा के लिए आवंटित बजट में विद्यालयी सुरक्षा एवं संरक्षा को सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक धनराशि की व्यवस्था की जानी चाहिए जिससे शिक्षकों, अभिभावकों एवं बच्चों हेतु कार्यशालाएँ, प्रशिक्षण एवं जागरूकता कार्यक्रम संचालित किए जा सकें। निरीक्षकों/पर्यवेक्षकों द्वारा डैशबोर्ड पर विद्यालयी सुरक्षा एवं संरक्षा की स्थिति प्रदर्शित की जाए जो सभी हितधारकों को बेहतर प्रदर्शन करने हेतु प्रेरित करें। डैशबोर्ड के विश्लेषण के आधार पर विद्यालयों में लक्षित हस्तक्षेप (Targeted Interventions) किये जाएं। क्रियाकलापों के क्रियान्वयन के सोशल ऑडिट के आधार पर विद्यालयों की ग्रेडिंग/रैंकिंग भी की जानी चाहिए।

6.6 मनो–सामाजिक विकास

बालक जब प्रथम दिवस विद्यालय आता है तो वह सभी से अपरिचित होता है। ऐसे में उसे विद्यालय के वातावरण में ढालते समय लगाव बढ़ाने की आवश्यकता है। निरन्तर वार्तालाप एवं सम्पर्क से एक पहचान बन जाती है और बालक अपरिचित माहौल से परिचित हो जाता है, अतः अध्यापक को चाहिए कि वह बालक से बार–बार बातचीत करें और अन्य सहपाठियों से भी बातचीत करने हेतु प्रोत्साहित करें।

0 से 2 वर्ष की आयु में शिशु संवेदी अनुभव को शारीरिक क्रियाओं के माध्यम से जगत को जानने का प्रयास करता है। बच्चे द्वारा किये जाने वाली क्रियाएं मष्तिष्क से जुड़ी होती हैं, जो कार्यों को नियंत्रित करती हैं। 2 से 7 वर्ष की अवस्था में बालक प्रतीकों, चिन्हों, शब्दों एवं चित्रों का प्रयोग आरम्भ कर देता है और उसका भाषा विकास भी आरम्भ हो जाता है। उपर्युक्त आयु वर्गों में सौन्दर्यबोध की क्षमता का विकास भी आरम्भ हो जाता है। बालक अच्छे–बुरे आदि की पहचान करने लगता है। स्वाद इन्द्रियों के माध्यम से बालक मीठा, तीखा, खट्टा आदि को समझने लगता है, जिसे फाउण्डेशनल स्टेज में सिखाया जाना चाहिए।

बच्चों में शारीरिक विकास के साथ–साथ मनो–सामाजिक भावना का विकास होता है, जो सामाजिक अनुमोदन द्वारा प्रोत्साहित होता है। बच्चे को उसके किये कार्य हेतु उचित सामाजिक अनुमोदन के द्वारा मार्गदर्शन प्रदान किया जा सकता है। क्रोध करने वाले बच्चे को न रोककर यदि उसकी तारीफ की जाए तो वह स्वभावतः क्रोधी हो जाएगा। इसी तरह अंतर्मुखी और बर्हिमुखी बच्चे को कार्य अनुसार सामाजिक प्रोत्साहन की आवश्यकता है। उत्तर प्रदेश में क्षेत्र विस्तार के साथ सामाजिक अनुमोदन किसी एक कार्य के प्रति अलग–अलग हो सकता है, जैसे– ग्रामीण क्षेत्र के बच्चे मिट्टी में यदि खेलते हैं तो माता–पिता या अन्य इसे स्वीकार करते हैं परन्तु अन्य परिवेश में सम्भवतः स्वीकार न किया जाए। अतः क्षेत्र, परिस्थिति अनुसार बालक/छात्र को सामाजिक अनुमोदन प्रदान किया जाना चाहिए।

बालकों की मनःस्थिति उनके सोचने व व्यवहार करने के तरीकों को प्रभावित करती है, अतः कक्षाओं में एक माहौल बनाना चाहिए कि बालक प्रसन्नचित्त और सुरक्षित अनुभव करे। जब कोई बालक अपनी भावनाओं को छिपाने का कार्य करता है तो वह अक्सर अवाचिक संकेतों के द्वारा अपनी भावनाओं को बाहर निकालता है। चेहरा, आत्मा का प्रतिबिम्ब कहा जाता है, अतः यह कहा जा सकता है कि मानवीय भावना और संवेग चेहरे से परिलक्षित होते हैं। बालकों

के चेहरे की अभिव्यक्ति, नेत्र सम्पर्क, मुद्रा, शारीरिक गतिविधि व अन्य अभिव्यक्त क्रियाओं में परिवर्तन को सावधानीपूर्वक ध्यान देने की आवश्यकता है।

ऐसे व्यवहार जिसमें भाषा का प्रयोग नहीं किया जाता है, उनको शारीरिक भाषा के नाम से जाना जाता है। अतः बालकों को उचित शारीरिक भाषा का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, जिससे वे प्रभावशाली सम्प्रेषण कर सकें।

बालक किसी विशेष विषयवस्तु के सम्बन्ध में एक मानसिक ढाँचा बनाता है, जो उसे सोचने अथवा ज्ञान को समझने में सहायता प्रदान करता है, इसलिए बालकों को अपनी संस्कृति, भाषा और परिवेश के विषय में उचित मानसिक ढाँचा बनाने में मदद करनी चाहिए। इसके द्वारा बालकों के अन्दर राष्ट्रीय भावना एवं पर्यावरण संरक्षण की भावना का विकास किया जा सकता है। विषयवस्तु के प्रति इस प्रकार लगाव पैदा करने की आवश्यकता है कि बालक इसको बोझ न समझे व खुशी–खुशी उसका अध्ययन करे तथा यह समझ सके कि अध्ययन के माध्यम से उसका भविष्य प्रकाशमान होगा। आशावादिता से दूसरों की अपेक्षा बेहतर परिणाम प्राप्त किया जा सकता है, अतः बालकों में आशावादिता को बढ़ाने की आवश्यकता है।

स्थानीय मनोवृत्ति व्यवहार को प्रभावित कर सकती है इसलिए बालकों को स्वस्थ मनोवृत्ति के विकास हेतु अध्यापक को एक उचित वातावरण का सृजन करना चाहिए। बालकों को अपने संवेगों व व्यवहारों को नियंत्रित करना कक्षा–शिक्षण के दौरान सिखाए जाने की आवश्यकता है। स्व–प्रत्यय को विकसित कर बालकों को एक आदर्श नागरिक बनाया जा सकता है।

❖❖❖

अध्याय-7

सीखने-सिखाने की विभिन्न विधियाँ एवं वातावरण

7.1 सीखने की विधियाँ

बच्चे सीखते कैसे हैं ?

सीखना जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। सीखने की प्रक्रिया माँ के गर्भ से ही शुरू हो जाती है और जब तक व्यक्ति जीवित रहता है, सीखता ही रहता है। सीखने का संबंध केवल विद्यालय तक ही सीमित नहीं है। बच्चा अपने माता–पिता तथा आसपास के वातावरण से बहुत कुछ सीखता है। जन्म से आठ वर्ष की आयु तक बच्चे के जीवन में विभिन्न कौशलों के विकास के लिए अलग–अलग संवेदनशील अवधि (सेंसिटिव पीरियड्स) होती हैं, जैसे – ध्यानपूर्वक सुनने और प्रतिक्रिया देने की क्षमता, संख्यात्मक कौशल, भावनाओं पर नियंत्रण आदि। प्रारम्भिक बाल्यावस्था में बच्चों में इन कौशलों का विकास विभिन्न प्रकार की प्रकियाओं से होता है, जो कि निम्नलिखित हैं –

1. करके सीखना

बच्चे ''करके सीखते'' हैं। इसका अर्थ यह है कि बच्चे की किसी भी अवधारणा में समझ एवं कौशलों में बेहतर वृद्धि तब विकसित होती है, जब वह उससे सम्बंधित कोई गतिविधि या कार्य करते हैं। हमारे मस्तिष्क का अधिक विकास, हमारी इंद्रियों एवं शरीर के अंगों के प्रयोग से होता है।

उदाहरण – कक्षा में बच्चों के सामने एक बाल्टी रखी गई है और एक बच्चे के हाथ में गेंद दी गयी है। बच्चे को बाल्टी से थोड़ी दूरी पर खड़ा करके, उसे बाल्टी में गेंद फेंकने के लिए कहा गया। बच्चा पहली कोशिश में ही गेंद को बाल्टी में फेंकने में सक्षम होता है। अब शिक्षक द्वारा एक दूसरे बच्चे को गेंद फेंकने के लिए कहा गया। यह बच्चा शुरूआत की कुछ कोशिशों में गेंद बाल्टी में नहीं फेंक पाया। अगले प्रयास से पहले बच्चे ने अपनी मुद्रा बदली और इस बार गेंद को धीमी गति से फेंकने की कोशिश की एवं सफलता प्राप्त की।

हर बच्चे के सीखने का स्तर एवं गति अलग–अलग होती है। इसलिए जब तक बच्चा किसी गतिविधि को स्वयं नही करता है, उसकी क्षमताओं में उचित वृद्धि नहीं हो पाती है।

2. पूर्वज्ञान एवं अनुभव द्वारा सीखना

बच्चा पूर्वज्ञान और अनुभवों से सीखता है। कक्षा में आने से पहले बच्चे को अपने परिवार, दोस्तों और अलग–अलग परिवेश में से विभिन्न प्रकार की जानकारी एवं अनुभव प्राप्त होते हैं। बच्चा अपने समाज में बहुत कुछ देखता–सुनता है, जिससे उसको विभिन्न अनुभव प्राप्त होते हैं और वह उसमें अपनी अभिरुचि और वातावरण को सामने रखते हुए उसी के अनुरूप सीखता है।

उदाहरण – बच्चे घर पर रोटी या चाय बनाने की प्रक्रिया प्रतिदिन देखते हैं। बच्चे को इन प्रक्रियाओं के बारे में जानकारी पूर्व से ही होती है यथा रोटी बनाने के लिए पहले आटा गूंथना, छोटे–छोटे गोले बनाना,

बेलना और फिर तवे पर सेंकना। इसलिए कक्षा में रोटी बनाने की प्रक्रिया को बच्चा क्रमानुसार बताने में सक्षम होता है।

उदाहरण – बच्चे अपने क्षेत्र में आयोजित मेले में घूमने गये थे। अगले दिन कक्षा में शिक्षक के द्वारा बच्चों से मेले का अनुभव पूछा गया। जिस पर सभी बच्चों की अलग–अलग प्रतिक्रिया रही। कुछ बच्चों ने कहा कि उन्होने अलग–अलग प्रकार के झूलों का आनन्द लिया और कुछ बच्चों ने विभिन्न प्रकार की खाने–पीने की सामग्रियों का आनन्द लिया। इस प्रकार सभी बच्चों ने एक दूसरे के अनुभवों से कुछ नया जाना।

3. दोहराव से सीखना

किसी भी गतिविधि या कार्य को बार–बार दोहराने या करने से बच्चे में कौशलों का विकास अधिक मात्रा में होता है। इसलिए दैनिक दिनचर्या की गतिविधियों को बच्चे बहुत सरलता से कर लेते हैं, जैसे– ब्रश करना, नहाना, हाथ धोना, स्वयं खाना खाना आदि।

4. अनुकरण से सीखना

छोटे बच्चों में अनुकरण की क्षमता तीव्र होती है। घर पर, समुदाय में और कक्षा में अन्य बच्चे, परिवार के सदस्य या शिक्षक जो भी करते हैं, बच्चे उसका अनुकरण करने की कोशिश करते हैं। जैसे– बच्चे अपने से बड़े व्यक्तियों को जिस प्रकार से फोन का प्रयोग करते हुए या फोन पर अन्य लोगों से बात करते हुए देखते या सुनते हैं, बच्चे किसी अन्य वस्तु को अपने कान पर लगाकर उनकी नकल करते हैं। इसलिए हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हम बच्चों के सामने कैसा व्यवहार, भाषा का प्रयोग एवं किस प्रकार के क्रियाकलाप करें। बच्चे अपने परिवेश में जो देखते, सुनते या अनुभव करते हैं, उसका अनुकरण वे अक्सर खेल के रूप में करते हैं। जैसे– परिवार के सदस्यों के बात करने के ढंग, गतिविधियों, उनके व्यवसायों आदि का रोल प्ले करना।

5. परीक्षण से सीखना

बच्चा अपने प्रारम्भिक वर्षों में भी जिज्ञासावश परिवेशीय गतिविधियों का अवलोकन प्रारम्भ कर देता है। अवलोकन करने से बच्चों के लिए अपने परिवेश के विभिन्न तथ्यों को जानने एवं स्वीकार करने में सहजता होती है।

उदाहरण – बच्चे के सामने एक छोटी और एक बड़ी कटोरी रखें और उससे पूछें कि किस कटोरी में ज़्यादा पानी आएगा। बच्चे का जवाब उसके अनुमान के आधार पर हो सकता है। अब बच्चे को एक गिलास से दोनो कटोरियों में पूरी तरह से पानी भरने के लिए कहें और पानी भरते समय उसे प्रत्येक कटोरी के लिए आवश्यक गिलासों की संख्या गिनने के लिए कहें। अब बच्चे से पूछें कि प्रत्येक कटोरी के लिए कितने गिलासों की ज़रूरत है और क्यों। इस गतिविधि से बच्चा बर्तन के आकार और उसके परिमाण के बीच सम्बंध को बेहतर रूप से समझ पाएगा।

6. पड़ताल और विश्लेषण से सीखना

बच्चा किसी वस्तु के बारे में जानने या समझने के लिए उसकी अच्छे से पड़ताल करता है। उसको हाथ में उठाता है, सूंघता है, चखकर देखता है, आदि। बच्चा उस वस्तु के विषय में और जानने की इच्छा करता है और बहुत कुछ जान भी जाता है। वह उस वस्तु के उपयोग का आकलन करने की कोशिश करता है। इस विधि से सीखने में बच्चों को आनन्द आता हैं एवं वह और भी जिज्ञासु होता है।

उदाहरण – बच्चे के सामने विभिन्न आकार, रंग और रूप के डब्बे रखे गए और उन डब्बों के ढक्कन अलग से बच्चे के सामने रखे गए। अब बच्चे को ढक्कनों से डिब्बों को मिलाने के लिए कहा गया। बच्चा एक–एक करके ढक्कनों को अलग–अलग डब्बों पर लगाकर सही मिलान करने की कोशिश करता है।

7. बातचीत

बच्चे आपस में बातचीत करके भी बहुत कुछ सीखते हैं। कक्षा में कुछ मेधावी बच्चों का शांत और संकोची बच्चों के साथ समूह बनाकर उन्हें आपस में बातचीत करने का मौका दिया जाए। इससे शांत बच्चा भी धीरे–धीरे खुद को व्यक्त करना शुरू करता है। कुछ बच्चे शिक्षक के समक्ष बहुत कम बोलते हैं किंतु आपस में एक दूसरे के साथ अपने विचार साझा करते हैं। ऐसे बच्चे बातचीत से बहुत कुछ सीख जाते हैं।

उदाहरण– एक बच्चा अवधी भाषा में बोला ''आजु बिलार आई अउर दूधु पी गै''। अब दूसरे बच्चे भी इस पर और चर्चा करने लगे। शिक्षक के पूछने पर कुछ बच्चे बिल्ली के रंग के बारे, तो कुछ उसकी आँखों के बारे में बताने लगे। यहां शिक्षक के सहयोग से बातचीत को और सार्थक रूप से बढ़ाया गया।

सीखने की विधियों के प्रकार को किन्हीं निश्चित बिंदुओं पर नहीं आँका जा सकता है। व्यक्ति जीवन के हर मोड़ पर कुछ न कुछ सीखता रहता है। कभी बातचीत से, देखने, सुनने, करने, बोलने, प्रयोग करने, खेलने, विभिन्न जगहों पर जाने, गाने, घर के बुजुर्गों से बातचीत करने, तथा किस्से सुनने आदि से बहुत कुछ सीखता और अभिव्यक्त करता है। इसीलिए कहा गया है, सीखना जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है।

7.2 सीखने के क्रियाकलाप

परिचय : शैक्षिक क्रियाकलाप एक संरचित प्रयास है, जिसे सीखने की सुविधा, ज्ञान प्राप्त करने किसी विशिष्ट विषय या रुचि के क्षेत्र में समझ बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। ये गतिविधियाँ उद्देश्य के अनरूप विभिन्न रूप ले सकती है। जैसे–

7.2.1 सीखने पर आधारित खेलों का निर्माण

खेलों का चयन इस प्रकार हो जिसमें बच्चों के अधिगम स्तर का विकास हो। बच्चे सहज व सरलतापूर्वक खेल–खेल में सीख सकें। जैसे– अंक अथवा भाषा आधारित, सांप–सीढ़ी, पज़ल, गोला कूदना, आदान–प्रदान, रंगीन कार्ड्स से आकार बनाना इत्यादि। शिक्षक गतिविधि कराकर खेल के माध्यम से बच्चों में विभिन्न कौशलों को विकसित कर सकते हैं। खेल निम्नलिखित प्रकार से हैं –

1. **मुक्त खेल (Free Play)** : मुक्त खेल में बच्चे किसी नियम के तहत बाध्य नहीं होते हैं। वे स्वयं अपनी

इच्छानुसार खेल का निर्माण करते हैं और खेलते हैं। बच्चों को कक्षा में मुक्त खेल के अवसर देना आवश्यक है। मुक्त खेल के दौरान बच्चों में विभिन्न भावनात्मक एवं सामाजिक कौशलों का विकास होता है, जैसे खिलौनों के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त करना, अन्य बच्चों के साथ खेलते समय अपनी भावनाओं पर नियंत्रण करना, खिलौने साझा करना, एक दूसरे की इच्छा, पसंद–नापसंद का ध्यान रखना आदि। मुक्त खेल के दौरान बच्चों में रचनात्मक विकास व सौंदर्यबोध भी होता है। मुक्त खेल में शिक्षक की भूमिका अवलोकन करने तक ही सीमित है।

2. **मार्गदर्शित खेल (Guided Play) :** मार्गदर्शित खेल बच्चे के नेतृत्व में ही होता है, लेकिन खेल को सुगम बनाने हेतु शिक्षक की प्रतिभागिता भी होती है।

   उदाहरण : शिक्षक द्वारा बच्चों को विभिन्न सामग्रियां दी गई हैं, जैसे– मिट्टी, पुराने कागज़, गोंद, कैंची (बाल मैत्रिक), सेलोटेप, लकड़ियाँ, माचिस की डिब्बियाँ, छोटे पत्थर, गत्ते आदि। बच्चों को इन सामग्रियों से विभिन्न प्रकार के यातायात के साधनों का निर्माण करने के लिए कहा गया। बच्चे अपनी रचनात्मकता एवं शिक्षक के आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन में वाहन का निर्माण करते हैं।

3. **संरचित खेल (Structured Play) :** संरचित खेल शिक्षक के नेतृत्व में संचालित होते हैं। संरचित खेल का निर्माण शिक्षक द्वारा किसी विशेष उद्देश्य की प्राप्ति के लिए किया जाता है। इस प्रकार के खेल में कुछ नियम एवं दिशा–निर्देश होते हैं, जो कि बच्चों में कुछ विशिष्ट दक्षताओं एवं सीखने के प्रतिफलों की उपलब्धियों पर केंद्रित होते हैं।

   उदाहरण – गणित का खेल। शिक्षक बच्चों को एक गोला बनाने के लिए कहेंगें और उन्हे दायीं ओर घूमने के लिए कहेंगें। शिक्षक बच्चों को निर्देश देंगे कि वह एक संख्या बोलेंगे और उन्हें उस संख्या के परिमाण का समूह बनाना होगा। जैसे, अगर शिक्षक 'चार' कहे तो बच्चों को चार–चार के समूह बनाने होंगे। जिन बच्चों का चार का समूह नहीं बन पाएगा, वे बच्चे बैठ जायेंगे। शिक्षक द्वारा इस खेल का संचालन निम्नलिखित उद्देश्यों से किया जाएगा–

   - ❖ बच्चे समूह में खेलना सीखें।
   - ❖ बच्चे निर्देशों के अनुरूप खेलना सीखें।
   - ❖ बच्चों की संख्या और परिमाण पर समझ सुदृढ़ हो।

7.2.2 बातचीत या वार्तालाप

शिक्षक कालांश की शुरुआत बातचीत से करें, जिससे शिक्षक व छात्र के मध्य निकटता हो। साथ ही बातचीत में स्थानीय व उनकी भाषा में छोटे–छोटे विषयों पर चर्चा कर उन्हें बातचीत का पूरा अवसर दें। प्रश्न करने या उत्तर देने के लिए बातचीत में शिक्षक का उद्देश्य बच्चों को निकट लाना और मुखर होने का अवसर प्रदान करना सर्वोपरि हैं। बातचीत से टूटी–फूटी शब्दावली में निरंतर सुधार की सम्भावनाओं का जन्म होगा और बच्चे के उभरते ज्ञान कौशल का विकास होगा। बातचीत अग्रलिखित प्रकार से की जा सकती है –

1. **मुक्त बातचीत (Free Conversation) :** मुक्त बातचीत का अर्थ है कि बच्चे अपनी इच्छानुसार किसी भी विषय पर स्वयं चर्चा की शुरूआत करते हैं। मुक्त चर्चा की शुरूआत बच्चे अपने अनुभवों से, पूर्वज्ञान से, अपने परिवेश में अवलोकित की गयी वस्तुओं/घटनाओं आदि से करते हैं। कक्षा में मुक्त बातचीत, बच्चा अपने दोस्तों अथवा अपने शिक्षक के साथ कर सकता है। बातचीत की शुरूआत बच्चा स्वयं तब करता है, जब वह अपने विचारों अथवा भावनाओं को दूसरों के सामने व्यक्त करना चाहता हो। मुक्त बातचीत की पहल बच्चा दिन में किसी भी समय कर सकता है।

   उदाहरण – सुबह कक्षा में प्रवेश करने के तुरंत बाद ही बच्चा अपने शिक्षक एवं दोस्तों से पिछले दिन अपने घर के पास आयोजित मेले के बारे में बात करने लगता है।

2. **नियोजित बातचीत (Guided Conversation)** – नियोजित बातचीत की शुरूआत शिक्षक द्वारा की जाती है। नियोजित बातचीत में शिक्षक द्वारा एक विषय निर्धारित किया जाता है, जैसे– पाठ्यक्रम में दी गयी किसी विषय–वस्तु पर, सुनायी गई किसी कहानी से सम्बंधित बातचीत आदि। नियोजित बातचीत में बच्चों की प्रतिभागिता को बढ़ावा देने के लिए शिक्षक द्वारा उनसे कुछ बंद छोर के प्रश्न (तथ्य आधारित प्रश्न) एवं कुछ खुले छोर के प्रश्न (अनुभव आधारित प्रश्न) किए जाते हैं। तथ्य आधारित प्रश्न का उत्तर तथ्य अथवा हाँ/नहीं में सीमित होता है। अनुभव आधारित प्रश्न का उत्तर बच्चे के व्यक्तिगत अनुभवों, ज्ञान एवं विचारों पर आधारित होता है।

   उदाहरण – शिक्षक द्वारा फल–सब्ज़ी के विषय पर चर्चा की जानी है। इसके लिए शिक्षक द्वारा पहले बच्चों से बंद छोर के प्रश्न किये गये – "क्या सभी नाश्ता करके आए हैं ?" इस प्रश्न का जवाब "हाँ या नहीं" होगा। इसके बाद शिक्षक द्वारा एक खुले छोर का प्रश्न पूछा गया – "किसने नाश्ते में क्या–क्या खाया ?" इस प्रश्न पर सभी बच्चों का अपना–अपना व्यक्तिगत उत्तर होगा।

7.2.3 कहानी सुनाना

बच्चों की काल्पनिक दुनिया औरों से अलग होती है। उनकी कहानियों में परियां, राजकुमार, राजा, रानी, बहादुर–सिपाही, घोड़े, हाथी, सुपर हीरो, अदभुत झांकियाँ विशेष रूप से उनके, पात्र, घटनाएं तथा सामाजिक रीति–रिवाज और सांस्कृतिक विरासत को समझने में आसानी होती है। कहानी पूरे मनोयोग से सुनने में उनकी रोचकता देखने को मिलती है, जिसका दीर्घकालिक परिणाम यह होता है कि वे पात्र व कहानियां उनकी स्मृति में दीर्घ काल तक बनी रहती हैं।

कहानियाँ विशेष रूप से सामाजिक सम्बन्धों, नैतिक चुनावों व भावनाओं को समझने व अनुभव करने और जीवन कौशल के प्रति जागरूकता के बारे में सीखने के लिए एक अच्छा माध्यम हैं। कहानियों को सुनते समय बच्चे नए शब्द सीखते हैं जिससे उनकी शब्दावली का विस्तार होता है और साथ ही वे वाक्य संरचना एवं समस्या सुलझाने के कौशल भी सीखते हैं। जो बच्चे बहुत ज्यादा समय तक ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाते हैं वे भी कहानी में तल्लीन होकर ज्यादा समय तक ध्यान केन्द्रित करने लगते हैं। सांस्कृतिक रूप से स्थानीय उत्सव, त्योहार तथा प्रसिद्ध प्रासंगिक कहानियों के माध्यम से बच्चों को उनके सांस्कृतिक व सामाजिक मानदण्डों से परिचित करा सकते हैं और उनके परिवेश के बारे

में जागरूक कर सकते हैं। कुछ कहानियाँ जन सामान्य को आज भी सचित्र याद हैं, जैसे– प्यासा कौवा, कछुआ और खरगोश, धूर्त लोमड़ी, अंगूर खट्टे है आदि।

1. **कहानी के स्रोत व माध्यम :** कहानियों का हाव–भाव के साथ मौखिक वाचन तथा संवाद में उतार–चढ़ाव कहानी को और रोचक एवं ग्राह्य बना देता है। इसमें बच्चे पूरे मनोयोग के साथ एकाग्रचित्त होकर आनन्द लेते हैं। इसमें यदि दृश्य–श्रव्य सामग्री का समावेश कर दिया जाय तो यह और भी आनन्दायी वातावरण का निर्माण करता है, जैसे– कठपुतली के नृत्य या कथानकों पर आधारित प्राचीन परम्परा से चली आ रही कला, श्रोता या दर्शक तक अपनी बात पहुंचाने का सशक्त माध्यम है। इसके अतिरिक्त कार्टून कैरेक्टर जो बच्चों के प्रिय व सुपर हीरो होते हैं, उन्हें दिखा कर उन पर कहानी बनाना या संदेशात्मक जागरुकता व ज्ञान प्रसारित किया जा सकता है, जिससे सार्थक परिणाम प्राप्त किया जा सकता है। अलग अलग परिवेशीय जीव–जन्तुओं के रंग–बिरंगे मुखौटे बना कर उससे कहानी या कथानकों में बच्चों द्वारा अभिनय या नाटक कराया जा सकता है। इससे बच्चे बहुत कुछ सीखेंगे। साथ ही कुछ प्रश्न जैसे– क्या आपने शेर को नाचते हुए या गीत गाते हुए देखा है ? क्या कभी शेर को दौड़ लगाते देखा है ? क्या कभी खरगोश को नाचते देखा है? बच्चे जरूर उस पर अपनी प्रतिक्रिया देंगे व मजा लेंगे उन्हें खूब आनंद आयेगा। बच्चे जब अपने सहपाठियों को अलग–अलग जानवरों की पोशाक में देखेंगे तो खूब आनन्दित होगें।

   कहानियाँ सुनाने के लिए चित्रित या मुद्रित फ्लैश कार्ड्स का प्रयोग किया जा सकता है। फ्लैश कार्ड बच्चों को सही क्रम में व्यवस्थित करने के लिए दिये जाने वाले अनुक्रम कार्ड के रूप में कार्य करते हैं। इनके अलावा, कहानी चार्ट, पोस्टर और कहानी आधारित अन्य सामग्री बाजार द्वारा खरीदी जा सकती है। शिक्षक को कहानी सुनाने के बाद यह आकलन अवश्य करना चाहिए कि बच्चों ने कहानी की विषयवस्तु को समझा है या नहीं। शिक्षक– क्या? किससे? क्यों? कहाँ? कैसे और क्या हो अगर? के प्रश्न पूछ सकता है। शिक्षक बच्चों से चर्चा कर सकते हैं। बच्चे कहानी से एक दृश्य या पात्र बना सकते हैं। रोल–प्ले और नाटकीय नकल या रूपान्तरण कर सकते हैं। कहानियों की किताबें भारी व बड़ी नहीं होनी चाहिए। किताबें ऐसी होनी चाहिए जो बच्चों के लिए उठाने और पकड़ने में आसान हों।

2. **कहानी का चयन :** कक्षा में जब भी कहानी का चयन करना हो तो वह उम्र, भाषा, रुचि और उससे मिलने वाले ज्ञान को ध्यान में रखकर करना चाहिए। कहानियों को सुनने के अलावा, बच्चों को कहानियाँ सुनाने का भी अवसर मिलना चाहिए। बच्चे पहले सुनी हुई कहानी सुना सकते हैं या फिर अपने द्वारा बनाई गई कहानी भी सुना सकते हैं। शिक्षक कहानी शुरू करके बीच में बच्चों द्वारा उसे पूरा करने के लिए उत्साहित करें। शिक्षक को सदैव ध्यान रखना चाहिए कि कहानी, बोझिल व उबाऊ न हो तथा बहुत लम्बी भी न हो जिससे कि बच्चों में अरुचि का भाव उत्पन्न होने लगे।

7.2.4 खिलौनों का प्रयोग

बच्चे खिलौनों से संवाद स्थापित करते हैं। क्षेत्रीयता के आधार पर स्थानीय मेले व बाजार में उपलब्ध खिलौने

बच्चों की पहली पसन्द होते हैं, अपने किस्सों, कहानियों में इनको स्थान देते हैं, साथ ही उन खिलौनों के द्वारा अभिनय करते हैं। बच्चों को पता है कि डॉक्टर आला (stethoscope) लगा कर ही इलाज करते हैं। गुड्डा व गुड़िया का विवाह, रसोई में ईट, कंकड़, पत्थर आदि से प्रतीकात्मक भोजन बनाना, सिपाही, राजा, रानी, घोड़े, हाथी आदि अपने परिवेश में देखे गये जीव जन्तुओं के खिलौनों से खेलना उन्हें उपयोगी ज्ञान व सीखने के अवसर देते हैं।

नीचे कुछ विभिन्न खिलौनों के उदाहरण दिए गए हैं, जिनसे बच्चों को बहुत कुछ सिखाना संभव है:

I. **पहेलियाँ (Puzzles):** पहेलियाँ खेलने से बच्चों की सोच और समस्या हल करने की क्षमता विकसित होती है। विभिन्न तरह की पहेलियाँ उन्हें तर्कसंगत सोचने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। विज्ञान, गणित, संख्या पहचान और शिक्षा की दृष्टि से पहेलियाँ शिक्षाप्रद होती हैं। इससे बच्चे अनुक्रमिक और तार्किक क्षमता प्राप्त कर सकते हैं।

II. **ब्लॉक्स (Blocks):** रंगीन ब्लॉक्स बच्चों की बुद्धिमत्ता और निर्माण कौशल को बढ़ाते हैं। वे नयी रूपरेखा बनाने का मजा लेते हैं और अपनी रचनात्मकता को प्रदर्शित करते हैं।

III. **बोर्ड गेम्स (Board Games):** बोर्ड गेम्स जैसे कि लूडो, शतरंज, कैरम इत्यादि सहयोगी संवाद, तार्किक सोच और रणनीति विकसित करते हैं।

IV. **शिक्षा संबंधित खिलौने :** बच्चों के लिए शैक्षिक खिलौने जैसे अक्षरमाला, अंकगणित के खिलौने, शब्द बनाने के खेल आदि उनकी शिक्षा और विकास के लिए उपयोगी होते हैं।

V. **वर्चुअल खिलौने (Virtual Toys):** वर्चुअल खिलौने, जैसे कि एजुकेशनल वीडियो गेम्स, शिक्षा पर केंद्रित मोबाइल ऐप्स भी उपलब्ध हैं। इनका उपयोग भी शिक्षा के लिए किया जा सकता है।

VI. **कला एवं शिल्प (Art and Craft):** कला एवं शिल्प संबंधित सामग्री जैसे रंगीन कागज, रंग, क्ले आदि के उपयोग से बच्चों की रचनात्मकता को प्रोत्साहित करें।

VII. **कठपुतली :** स्टिक पपेट, मुखौटों आदि से रोल–प्ले करने से बच्चों के सामाजिक और भाषायी कौशल विकसित होते हैं।

7.2.5भावगीत व तुकबंदी

I. **भावगीत :** भावगीत एक संगीतमय माध्यम है जिसमें भावुकता, अभिव्यक्ति और भावनाएं गाने के माध्यम से प्रकट होती हैं। बच्चों को भावगीत के माध्यम से सिखाने के लिए निम्नलिखित गतिविधियाँ करायी जा सकती हैं–

- **गाने का अभ्यास :** बच्चों को विभिन्न भावों और भावनाओं के साथ गीत गाने का अभ्यास कराएं। इससे उनका भावनात्मक विकास होगा और वे अपने भावों को स्पष्ट रूप से व्यक्त कर पाएंगें।
- **कहानी और कविताएँ :** बच्चों को भावगीत के माध्यम से कहानियाँ और कविताएँ सुनाएं। इससे उनकी रचनात्मकता को प्रोत्साहन मिलेगा और समझ के साथ गाने का माहौल बनेगा।
- **अभिनय का अवसर :** बच्चों को गाने के साथ–साथ भावगीत में अभिनय को प्रोत्साहित करें। इससे उनकी अभिव्यक्ति और सामाजिक समझ में सुधार होगा।

- **गीत के अर्थ समझाना :** बच्चों को गीत के शब्दों के अर्थ समझाना भी महत्वपूर्ण है। इससे उनकी भाषायी क्षमता विकसित होगी और वे गाने के माध्यम से संवाद करने में सक्षम होंगें। शब्दकोश में वृद्धि होगी। नये शब्द भण्डार की ओर आकृष्ट होंगे।

II. **तुकबंदी :** तुकबंदी एक लोकप्रिय भारतीय रचनात्मक कला है जिसमें लोग एक छोटी सी कविता या भजन को गाते हैं। तुकबंदी एक मनोरंजक और शिक्षाप्रद गतिविधि है जिससे बच्चों को निम्नलिखित बातें सिखायी जा सकती हैं –

- **भजन और कविताएँ :** बच्चों को तुकबंदी के माध्यम से भजन और कविताएँ सिखाएं। इससे उनमें आंतरिक शांति, धैर्य, और संवेदनशीलता का विकास होगा। अभिव्यक्ति क्षमता समृद्ध होगी।
- **राग और ताल का अभ्यास :** तुकबंदी गाने में राग और ताल का अभ्यास कराएं। इससे उनके संगीत ज्ञान और तालमेल में सुधार होगा।
- **सामाजिक संवाद :** तुकबंदी के माध्यम से बच्चों को सामाजिक संवाद का महत्व समझाएँ। इससे उनकी संवेदनशीलता और सामाजिक जागरूकता बढ़ेगी।
- **त्योहारों के गीत :** विभिन्न त्योहारों के गीतों को तुकबंदी के माध्यम से सिखाएँ। इससे बच्चे अपनी संस्कृति और परंपराओं को समझेंगे। जैसे – आरती–गीत, होली–गीत, फगुआ आदि।
- **अभिनय का अभ्यास :** बच्चों को तुकबंदी के साथ–साथ अभिनय का प्रशिक्षण भी दें। इससे उनकी अभिव्यक्ति कौशल और सामाजिक समझ के स्तर में सुधार होगा।

7.2.6 संगीत के साथ थिरकना

संगीत के साथ थिरकना एवं गतिशीलता को निम्नलिखित तरीकों से बच्चों के साथ कराया जा सकता है –

I. **गाने के साथ नृत्य करना :** बच्चों को उनके पसंदीदा गाने के साथ नृत्य करने का अवसर दें। यह उनके शारीरिक स्वास्थ्य को सुधारता है और संगीत के साथ आनंदपूर्वक जुड़ने का मौका प्रदान करता है।

II. **एरोबिक नृत्य (Dance Aerobics) :** एरोबिक नृत्य एक ऐसी संगठित गतिविधि है जो संगीत के संग थिरकने के साथ–साथ शारीरिक फिटनेस को भी सुधारती है और मन को भी प्रसन्न रखती है।

III. **समूह नृत्य (Group Dance) :** संगीत के साथ समूह नृत्य करने से बच्चे सहयोग, समन्वय और सामाजिक जुड़ाव को समझते हैं।

IV. **रचनात्मक नृत्य (Creative Dance) :** बच्चों को स्वतंत्र रूप से नृत्य करने दें और उन्हें खुद के संवेदनशील भावों को अभिव्यक्त करने की स्वतंत्रता दें।

V. **कार्यक्रम आयोजन :** स्कूल और समुदाय के साथ संगीत और नृत्य युक्त कार्यक्रम आयोजित करें। इससे बच्चे को अभिव्यक्ति के अवसर मिलेंगे और सामाजिक संवाद का माहौल बनेगा एवं वे अपने अन्तर्मुखी स्वभाव से बाहर निकलेंगे।

VI. **तालबद्ध नृत्य (Rhythmic Dance) :** तालबद्ध नृत्य एक ऐसा नृत्य है जिसमें गतिशीलता और रचनात्मकता को संबोधित किया जाता है। इसके माध्यम से बच्चे लय और ताल का समन्वय सीखते हैं।

VII. **प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता :** बच्चों को गाने और नृत्य के माध्यम से प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करने के अवसर दें। इससे उनकी सामर्थ्य को और अधिक सुधारा जा सकता है।

7.2.7 लोक गीत व स्थानीय नृत्य

लोकगीत और स्थानीय नृत्य के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए, निम्नलिखित गतिविधियाँ करायी जा सकती है –

I. **गायन और नृत्य के माध्यम से कहानियाँ :** बच्चों को लोकगीत और स्थानीय नृत्य के माध्यम से कहानियों का अनुभव कराएं। यह उनकी सामाजिक समझ को बढ़ाता है।

II. **लोकगीत सामूहिक गायन :** स्कूल और समुदाय में बच्चों को लोकगीत के सामूहिक गायन का मौका दें। इससे उनमें सामूहिकता और आत्मविश्वास का विकास होता है।

III. **स्थानीय नृत्य के अवसर :** बच्चों को स्थानीय नृत्य सीखने का अवसर दें। इससे उनके सांस्कृतिक रूप से संबंध बनते हैं और उनकी सामाजिक संवेदनशीलता बढ़ती है और आत्मविश्वास का प्रतिशत बढ़ता है। बच्चों को स्थानीय नृत्य में भाग लेने का अवसर दें। इससे उन्हें अपनी संस्कृति के प्रति गर्व और सम्मान का अनुभव होता है।

IV. **स्थानीय त्योहारों में भागीदारी :** स्थानीय त्योहारों में बच्चों को भाग लेने का अवसर दें और उन्हें त्योहारों के सांस्कृतिक महत्व का अनुभव बतायें और दिखायें।

V. **लोकगीत और स्थानीय नृत्य का प्रयोग सामाजिक संवाद में :** बच्चों को स्थानीय भाषा में लोकगीत और नृत्य का प्रयोग करके सामाजिक संवाद में भाग लेने का मौका दें। इससे उनके भाषा कौशल का विकास होता है और उनके भाषायी ज्ञान को समृद्ध किया जा सकता है, जैसे– रामलीला, महाभारत आदि।

7.2.8 कला और शिल्प

कक्षा–कक्ष में बच्चों के साथ निम्नलिखित प्रकार की कला और शिल्प की गतिविधियाँ करायी जा सकती हैं–

I. **चित्रकला :** बच्चों को चित्रकला से परिचित कराएं और उन्हें अलग–अलग कला माध्यमों के साथ खेलने का मौका दें। उन्हें अभिव्यक्ति के लिए विभिन्न पेंसिल, क्रेयोन, वॉटरकलर्स उपयोग करने के अवसर दें।

II. **रचनात्मक कार्यशालाएँ :** बच्चों को कला और शिल्प के क्षेत्र में रचनात्मक कार्यशालाओं में प्रतिभाग करने के अवसर दें, जिससे उन्हें सामूहिक रूप से काम करने, समस्याओं का समाधान करने और नई चीजें बनाने की प्रेरणा मिलती रहे।

III. **मिट्टी कला :** मिट्टी कला का प्रयोग करके बच्चों को दीये, मूर्ति, कुल्हड़ और सामान्य संरचनाओं का निर्माण करने का अवसर दें। इससे उनमें हाथों से आकार देने की कला और आत्मसंतुष्टि में सुधार होगा।

IV. **धातु और कागज से कला :** धातु और कागज के उपयोग से बच्चों को सृजनात्मकता का अभ्यास करने का मौका दें।

V. **रंगों का उपयोग :** बच्चों को रंगों का उपयोग करके अपनी रचनात्मकता को व्यक्त करने की अनुमति दें। वे रंगों के माध्यम से अपने विचारों, भावनाओं और अनुभवों को बेहतर ढंग से समझेंगे।

VI. **स्थानीय शिल्प और कारीगरी :** बच्चों को स्थानीय शिल्प और कारीगरी के बारे में जानकारी और अनुभव प्रदान करें। इससे उनको संस्कृति को समझने और सराहने का मौका मिलेगा।

VII. **कला और शिल्प प्रदर्शनी :** विद्यालय और समुदाय में कला और शिल्प प्रदर्शनी का आयोजन करें। इससे बच्चों को अपनी सृजनात्मकता को दिखाने का मौका मिलेगा।

7.2.9 इनडोर और आउटडोर खेल

इनडोर और आउटडोर खेल कई प्रकार के होते हैं, जिसमें से कुछ खेलों के उदाहरण नीचे दिए गए है –

I. **इनडोर खेल :**

- **बोर्ड गेम्स :** लूडो, साँप–सीढ़ी, शतरंज, कैरम आदि बोर्ड गेम्स उनकी मानसिक चुस्ती और योजना बनाने की क्षमता को विकसित करते हैं।
- **पहेलियाँ और ब्रेन गेम्स :** पहेलियों और ब्रेन गेम्स से बच्चों की मानसिक विकास की गति तीव्र होती है और उनमें समस्या समाधान व तार्किक क्षमता का विकास होता है।
- **वीडियो और डांस गेम्स :** वीडियो गेम्स और डांस गेम्स उनकी शारीरिक गतिविधियों को बढ़ाते हैं और उन्हें आनंदपूर्वक विभिन्न गतिविधियों में सम्मिलित करते हैं।

II. **आउटडोर खेल :**

- **बैट–बॉल :** बैट–बॉल बच्चों के शारीरिक स्वास्थ्य और सामूहिक दक्षता को सुधारता है।
- **फुटबॉल :** फुटबॉल बच्चों के सामूहिक सहयोग और शारीरिक क्रियाशीलता को बढ़ाता है।
- **स्थानीय खेल :** स्थानीय खेल बच्चों में खेल के प्रति रूचि को बढ़ाते हैं, क्योंकि वह उन खेलों से पूर्व परिचित होते हैं।
- **साइकिलिंग :** साइकिलिंग उनके शारीरिक स्वास्थ्य के साथ सम्पूर्ण स्वास्थ्य को स्फूर्तिमय रखती है।
- **रस्सी कूद :** रस्सी कूद उनकी शारीरिक क्षमता को विकसित करती है।

7.2.10 क्षेत्रीय भ्रमण

क्षेत्रीय भ्रमण बच्चों के सीखने की प्रक्रियाओं का एक अहम् हिस्सा है। क्षेत्रीय भ्रमण के लिए नीचे कुछ विकल्प दिए गए हैं –

I. **प्राकृतिक स्थलों का दर्शन :** बच्चों को अपने क्षेत्रीय प्राकृतिक संसाधनों और स्थलों का दर्शन कराएं। इससे उनमें प्रकृति प्रेम और उसके संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ेगी।

II. **स्थानीय ऐतिहासिक स्थलों का अध्ययन :** क्षेत्रीय भ्रमण के दौरान बच्चों को स्थानीय ऐतिहासिक स्थलों का अध्ययन करने का मौका मिलेगा। इससे उनके ऐतिहासिक ज्ञान और समझ में सुधार होगा।

III. **स्थानीय फौजी दौरे :** बच्चों के लिए स्थानीय फौजी दौरे का आयोजन करें। इससे उन्हें राष्ट्रीय भावना और सेना के मानदण्डों को समझने का मौका मिलेगा।

IV. **स्थानीय कला, संस्कृति और भोजन :** क्षेत्रीय भ्रमण के दौरान बच्चों को स्थानीय कला, संस्कृति और स्थानीय भोजन का अनुभव कराएं। इससे उनकी सांस्कृतिक जागरूकता और समझ में सुधार होगा।

V. **सामाजिक सेवा और पर्यावरण संरक्षण :** क्षेत्रीय भ्रमण के दौरान बच्चों को सामाजिक सेवा के महत्व और पर्यावरण संरक्षण का संदेश प्राप्त करने का मौका मिलेगा।

VI. **संगठनात्मक दृष्टिकोण :** क्षेत्रीय भ्रमण से बच्चों में संगठनात्मक दृष्टिकोण का विकास होता है, जैसे कि भ्रमण पर जाना, समय सारणी, आपसी समझ, और टीमवर्क क्षमता।

VII. **जीवन शिक्षा का सुधार :** क्षेत्रीय भ्रमण से बच्चों के जीवन और शिक्षा के क्षेत्र में भी सुधार होता है जैसे कि आत्मनिर्भरता, साहस, अनुशासन, विश्वास, नैतिकता, आस्था, सद्विचार आदि।

7.3 विविधतापूर्ण तथा समावेशी अधिगम सामग्री का प्रयोग

विविधतापूर्ण शिक्षा और समावेशी अधिगम सामग्री का प्रयोग एक ऐसी शिक्षण विधि है जो समृद्ध शिक्षा प्रक्रिया को प्रोत्साहित करता है। सीखने की विभिन्न प्रक्रियाओं से बच्चों की अवधारणाओं पर समझ, उनमें अलग–अलग कौशलों का विकास एवं विभिन्न परिस्थितियों में अपने परिवेश से जुड़ने की क्षमता विकसित होती है। इसमें विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक मत, आदि से संबन्धित सामग्री बच्चों के सामने प्रस्तुत की जा सकती है, जिससे उनमें समरसता की भावना विकसित होती है।

विविधतापूर्ण और समावेशी अधिगम सामग्री का प्रयोग करने के लिए निम्नलिखित विधियाँ हो सकती हैं:

1. **बच्चों की व्यक्तिगत ज़रूरतों के लिए विशेष समर्थन :** सभी बच्चों की व्यक्तिगत ज़रूरतें होती हैं। शिक्षक को बच्चों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को चिन्हित करते हुए, उनकी योग्यताओं के अनुसार विशेष समर्थन प्रदान करना चाहिए। इससे बच्चों को अपने आयु अनुसार विकासात्मक उपलब्धियों को प्राप्त करने में सहायता मिलती है। शिक्षक को कक्षा–कक्ष में विभिन्न प्रकार के खेल एवं शिक्षण सामग्रियों की व्यवस्था करनी चाहिए, जिनका प्रयोग बच्चे स्वयं अपनी रूचि एवं योग्यता के अनुरूप कर सकें। शिक्षक समान ज़रूरतों एवं सीखने के स्तर वाले बच्चों का अलग–अलग समूह बनाते हुए उनके लिए उनकी ज़रूरत के अनुसार अलग–अलग प्रकार के खेल या गतिविधि का निर्माण कर सकते हैं।

2. **विशेष ज़रूरत वाले बच्चों को सम्मिलित करने के लिए समावेशी प्रक्रियाओं का चयन :** शिक्षक को सीखने की ऐसी प्रक्रियाओं का चयन करना चाहिए, जिससे कि विशेष ज़रूरत वाले बच्चे अन्य बच्चों के साथ मिलकर सक्रिय रूप से खेल एवं गतिविधियों में प्रतिभाग कर सकें। शिक्षक को ऐसी शिक्षण सामग्रियों का प्रयोग करने का प्रयास करना चाहिए, जिसका प्रयोग सभी प्रकार के बच्चे कर सकें।

3. **समृद्ध छवियों का उपयोग :** विविधतापूर्ण और समावेशी अधिगम शिक्षण को बढ़ावा देने के लिए विविधता से भरी और समरस छवियों का उपयोग कर सकते हैं, जैसे– विभिन्न जातियों के लोगों के साथ एक खुशहाल परिवार, विभिन्न संस्कृतियों के धार्मिक त्योहारों के दृश्य, विशेष ज़रूरत वाले बच्चे का बाकी बच्चों के साथ मिलकर खेल या कक्षा–कक्ष की प्रक्रिया में प्रतिभाग करना आदि।
4. **विविधता से भरी कहानियों का प्रयोग :** विविधता से भरी और समावेशी कहानियाँ छात्रों को समझदारी और सहानुभूति की भावना देने में मदद करती हैं। ऐसी कहानियाँ छात्रों को समाज में रहने वाले विभिन्न व्यक्तियों के साथ एक समरस भाव रखने के लिए प्रेरित करती हैं।
5. **विभिन्न संस्कृतियों का अध्ययन :** विभिन्न संस्कृतियों के साथ संबंधित अधिगम सामग्री का प्रयोग करने से छात्रों को विभिन्न संस्कृतियों, राजनीतिक प्रणालियों, सामाजिक संस्थाओं के बारे में ज्ञान प्राप्त होता है और उन्हें हर संस्कृति को समान रूप से देखने में सक्षम बनाता है।
6. **विभिन्न भाषाओं में पाठ्यपुस्तकें और पाठ योजना :** विभिन्न भाषाओं में लिखी गयी पाठ्यपुस्तकों और पाठ योजना से बच्चों का अलग अलग भाषाओं से परिचय और उनका ज्ञान होता है। इससे उनके अंदर समानान्तर सीखने की क्षमता भी विकसित होती है। इससे बच्चे सभी भाषाओं को समान रूप से देखने में सक्षम होते हैं और भाषाओं के आधार पर भेद–भाव से बचते हैं।
7. **अभिभावकों के सहयोग से संबन्धित सामग्री :** शिक्षा के क्षेत्र में विविधता को बढ़ावा देने के लिए अभिभावक भी संबंधित सामग्री विकसित करने में सहयोग कर सकते हैं और उन्हें शिक्षा के प्रकार, विधि, और अन्य सम्बन्धित विषयों के बारे में जागरूक भी किया जा सकता है।

❖❖❖

अध्याय-8

गतिविधियों के क्रियान्वयन की योजना एवं सहायक सामग्री

गतिविधि शब्द किसी कार्य या क्रिया की गति या चलन को परिभाषित करता है। बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए गतिविधि आधारित शिक्षण रचनात्मक सोच कौशल को विकसित करता है। समस्या–समाधान वाले खेलों और गतिविधियों का उपयोग करना बच्चों को दायरे से बाहर सोचने के लिए प्रेरित करने का एक शानदार माध्यम है। बच्चों के बहुमुखी विकास के लिए गतिविधि आधारित खेल व शिक्षण सामग्री उनकी बौद्धिक क्षमता के विकास के लिए आवश्यक है। सीखने की प्रक्रिया बच्चे पर केन्द्रित होनी चाहिए ताकि गतिविधि आधारित शिक्षण बच्चों के मानसिक, शारीरिक, आध्यात्मिक विकास को बढ़ा सके। विभिन्न प्रकार की शैक्षणिक और सांस्कृतिक क्रियाएं, जैसे– पढ़ाई, खेलकूद, कला, संगीत आदि का आयोजन बच्चों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। गतिविधि आधारित शिक्षा–शिक्षण को रोचक, आनंददायी और ध्यानाकृष्ट करने वाली होती है। गतिविधि से सीखने की पाँच प्रमुख शैलियां हैं–

1. सुनकर, 2. देखकर, 3. पढकर, 4. लिखकर, 5. बोलकर

विद्यालय में गतिविधि क्रियान्वयन का मतलब है कि बच्चों को विभिन्न गतिविधियों और कार्यों में शामिल करते हुए उनकी शिक्षा और बौद्धिक विकास को समृद्ध बनाया जा सकता है। गतिविधि आधारित शिक्षा से बच्चों में स्वतंत्र अभिव्यक्ति, सम्प्रेषण क्षमता व भागीदारी की भावना का विकास होता है। इसके लिए विद्यालय में अनेक कदम उठाए जा सकते हैं–

8.1 गतिविधि के क्रियान्वयन की मुख्य बातें :

1. **बच्चों की भागीदारी :–** गतिविधि इस प्रकार की होनी चाहिए जिसमें सभी बच्चों की भागीदारी हो। भागीदारी सुनिश्चित करने से उनका स्वतंत्र विकास होगा। गतिविधि ऐसी हो जो सभी बच्चों के लिए रूचिकर, आनंददायक व सहज हो। जिसमें सभी बच्चों की पूर्ण प्रतिभागिता हो और उनका बौद्धिक विकास हो सके।

   उदाहरणः– ''बोल भाई कितने'' खेल गतिविधि या संख्याओं के गुणज में ताली बजाना आदि।

2. **सहयोग और संगठन :–** गतिविधि को संचालित करते समय उनमें सहयोग और संगठन की भावना का विकास होना चाहिए। उपयुक्त संसाधनों की उपयोगिता इस प्रकार की होनी चाहिए जिससे बच्चे उनका उपयोग सरलता से कर सकें।

3. **गतिविधि के पूर्व की योजना :–** गतिविधि आरम्भ करने के पूर्व उसकी पूरी तैयारी की जानी चाहिए। जिससे गतिविधि के बीच कोई अवरोध उत्पन्न न हो और बच्चे सरलता से उसमें प्रतिभाग कर सकें। जैसे– स्थान का चुनाव, संसाधनों का चुनाव आदि।

4. **समय–सारणी व मॉनीटरिंग :–** गतिविधि में आने वाले समय का अनुमान लगाना व गतिविधि की अवधि में उनकी मॉनीटरिंग करना महत्वपूर्ण है। समय नियोजन से गतिविधि का उद्देश्य सफलतापूर्वक पूर्ण होगा और मॉनीटरिंग से बच्चों को बिना अवरोध आनंद की प्राप्ति होगी।

5. **गतिविधि बच्चों की आयु के अनुरूप** :– गतिविधि का चयन बच्चों की आयु की संगतता को ध्यान में रखते हुए करना चाहिए जिससे उनके लिए गतिविधि रूचिकर व सरल हो।

   उदाहरण :– जैसे कक्षा–1 के बच्चे के साथ स्थानिक समझ और संख्या ज्ञान से सम्बन्धित गतिविधि।

6. **समावेशी गतिविधि** :– गतिविधि इस प्रकार की होनी चाहिए जिसमें सामान्य तथा विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को सीखने में सहज रूप से गतिविधि करने के समान अवसर मिल सकें।

7. **इन्डोर व आउटडोर खेल** :– जो खेल कक्षा–कक्ष के अन्दर खेले जाते हैं उन्हें इन्डोर खेल तथा जो खुले मैदान में खेले जाते हैं उन्हें आउटडोर खेल कहा जाता है। गतिविधि कराने में इन्डोर तथा आउटडोर दोनों प्रकार के खेलों को सम्मिलित किया जाना चाहिए।

8. **गतिविधि आकलन** :– बच्चों को गतिविधि कराने के पश्चात् उनका आकलन अत्यन्त आवश्यक है। आकलन द्वारा गतिविधि का उद्देश्य सफलतापूर्वक पूर्ण होना चाहिए ताकि बच्चों का शैक्षिक और सामाजिक विकास संभव हो सके। गतिविधि के परिणामस्वरूप बच्चों की अध्ययन शैली और विकास का मूल्यांकन होने पर उनकी शैक्षिक उत्कृष्टता को सरलता से समझा जा सकता है।

9. **गतिविधियों में विविधता** :– गतिविधि को बदल–बदल कर कराने से बच्चों में उत्सुकता तथा रोचकता बनी रहती है जिसके कारण वे गतिविधियों में आनन्द के साथ प्रतिभाग करते हैं।

   उदाहरण : विभिन्न पत्तियों से अलग–अलग प्रकार की आकृतियाँ बनाना, मौरंग से चित्र बनाना, कागज या कपड़े की कतरनों को चिपकाकर विभिन्न चित्र बनाना, कागज के अलग–अलग बांट बनाना आदि।

10. **स्थानीय खेल तथा स्थानीय भाषा** :– गतिविधि में स्थानीय खेल व स्थानीय भाषा को शामिल करने से बच्चे प्रतिभागिता हेतु उत्साहित रहते है तथा उनमें उस खेल के प्रति अपनापन रहता है। बच्चे उस गतिविधि में सहजता का अनुभव करते हैं और टीम भावना से खेलते हैं।

11. **नैतिक मूल्यों का विकास तथा सामाजिक, भावनात्मक एवं नैतिक शिक्षा–(SEEL) आधारित गतिविधि** : गतिविधि इस प्रकार की होनी चाहिए जिसका उद्देश्य बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास करना हो। टीम भावना से खेलने से बच्चों में अनेक नैतिक मूल्यों का विकास होता है और वे रूचि के साथ गतिविधि में भाग लेते हैं। गतिविधि कराते समय बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास करने के लिए कुछ सामान्य नियम बनाये जाने चाहिए। जैसेः– अपनी बारी का इंतजार करना, खेल सामग्री का उचित बँटवारा करना, टीम भावना से खेलना, मनोवेगों को प्रदर्शित करने के लिए आवश्यकतानुसार मौका देना। (इसमें बच्चों के द्वारा किए गये रोल–प्ले को भी स्थान दिया जाता है।)

12. **गतिविधि में तकनीकी का उपयोग** : तकनीकी के उपयोग से शिक्षण को समृद्ध तथा प्रभावशाली बनाया जा सकता है। जैसेः– बच्चों को कागज से अलग–अलग आकृतियों को समझाने के लिए 2डी और 3डी आकृतियों के बीच संबंध के लिए टेनग्राम या ऑरिगामी का उपयोग कर सकते है। कबाड़ से जुगाड़ तकनीक का उपयोग किया जा सकता है। इसमें दृश्य खेल का उपयोग किया जा सकता है।

    विशेष : गतिविधि के लिए अधिगम शिक्षण सामग्री का चुनाव करते समय यह ध्यान रखें कि वह बच्चें की आयु के

अनुरूप हो तथा सिक्के, गोटियाँ, बोतल का ढक्कन आदि का उपयोग करते समय विशेष सावधानी बरतनी चाहिए। यथासम्भव नुकीली तथा बहुत छोटी वस्तुएँ बच्चों को नहीं देनी चाहिए। गतिविधि कराते समय हानिकारक सामग्री के प्रयोग से बचना चाहिए।

कागज के बांट

कागज की रेलगाड़ी

8.2 संस्थागत व्यवस्था

योजना बनाते समय कुछ बातों पर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 एक परिवर्तनकारी नीति है जो एक स्पष्ट रूपरेखा प्रस्तुत करती है कि आगामी 2025 तक प्रारम्भिक बाल्यावस्था के बच्चों को मुक्त, सुरक्षित एवं गुणवत्तापूर्ण देखभाल युक्त शिक्षा प्रदान करें।

इन सभी पहलुओं की सफलता के लिये कुछ सिद्धान्तों व रणनीतियों से ही हम सभी आयामों को हासिल कर पायेंगे। जो बच्चे सुविधासम्पन्न हैं, वो उचित शिक्षा एवं वातावरण प्राप्त कर पा रहे हैं परन्तु एक बड़ा वर्ग छूट रहा है, जिसके कारण समाज में विभेद एवं असंतुलन की स्थिति बन रही है।

1. किसी भी पद्धति को सिखाने से पहले संस्थागत संसाधनों को आवश्यक सुविधा सम्पन्न होना चाहिए। कक्षा में उपयुक्त वातावरण व जगह उपलब्ध हो। वातावरण सुरक्षित एवं हवादार हो। विद्युत, पंखे, पानी, बैठने के लिये कुर्सी–मेज आदि की सम्पूर्ण व्यवस्था हो। शिक्षक के लिये उपयुक्त वातावरण हो और वह गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त हो। शिक्षक जिस भी विषयवस्तु की चर्चा करें उसको प्रेषित करने में सक्षम हों।

   तकनीकी संसाधनों का सहयोग लेकर प्रत्येक माह समुदाय, अभिभावकों को जागरूक करने के लिए प्रयास करना चाहिए जिससे उनका भी सहयोग मिल सके। समुदाय एवं अभिभावक अपने–अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन कर सकें। बच्चे यदि कुपोषित हैं तो अधिकांशतः अनुपस्थित रहेंगे और सभी आयामों को अपनी समझ के अनुरूप प्राप्त नहीं कर पाएंगे। प्रत्येक माह अभिभावकों की बैठक लेकर उनकी समय–समय पर भागीदारी सुनिश्चित कर उनका दृष्टिकोण भी सकारात्मक बनाना चाहिए।

2. मानव संसाधनों की सीमितता पर भी विशेष ध्यान रखकर वार्षिक योजनाओं की रूपरेखा तैयार की जानी चाहिए, यदि कार्यकत्री या शिक्षक का पद रिक्त हो तो सहायक शिक्षक को या सहायिका को प्रशिक्षण देकर शिक्षा को निरन्तरता के साथ लागू करने के लिए वैकल्पिक व्यवस्था अपनानी चाहिए।

3. बच्चों को सिखाने की योजना बनाने में भाषा संप्रेषण सदैव स्थानीय या मातृभाषा से ही प्रारम्भ करें। धीरे–धीरे यह क्रम बढ़ायें। सिखाने की प्रक्रिया में कहानी आधारित पाठ्यक्रम चित्रात्मक हो, जिससे बच्चे के मस्तिष्क में एक चित्र या स्मृति बन जाये ताकि उसे याद रहे। रटने की पद्धति नहीं होनी चाहिए।

4. बच्चों के द्वारा किए गए कार्य का प्रदर्शन करने के लिए उचित कोना / स्थान होना चाहिए।

8.3 शैक्षिक व्यवस्था

1. गतिविधि विषयवस्तु से जुड़ी और उद्देश्यपरक हो

शैक्षिक वातावरण आनन्ददायी होना चाहिए। बच्चों हेतु सुखद, रूचिकर एवं आकर्षक वातावरण तैयार करना शिक्षक का मुख्य उत्तरदायित्व होना चाहिए। गतिविधि की विषयवस्तु सार्थक और बालकेन्द्रित होने के साथ–साथ उनकी आयु, अवस्था तथा उनके सर्वोत्कृष्ट अधिगम और विकास को प्रोत्साहित करने वाला होना चाहिए, जैसे–आकारों से बच्चों को परिचित कराने के लिए गत्ते का डिब्बा, बेलनाकार छड़ी, गेंद आदि के उपयोग द्वारा गतिविधि संचालित करना।

2. गतिविधि, निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार हो

गतिविधि के सभी चरणों का अनुपालन योजना के अनुसार करना चाहिए। उदाहरण के लिए, परिवेश में उपलब्ध अलग–अलग आकार की वस्तुओं को छोटे–बड़े के आधार पर वर्गीकृत करने के लिए, पहले बच्चों को ठोस वस्तुओं से अनुभव कराकर उनको छोटे व बड़े की अवधारणा को बताएं तत्पश्चात् वर्गीकरण समझाएं। अंत में बच्चों को स्वयं से करने का अवसर दें।

3. संभावित समस्याएँ और निवारण

गतिवधि में आने वाली संभावित समस्याओं और उनके निराकरणों को गतिवधि पूर्व अपने पास लिखित रूप में रखकर उनके समाधान की योजना बनानी चाहिए।

जैसे– गिनती सिखाते समय बच्चे पाँचवे को पाँच या दूसरे को दो समझते हैं। यानि ordinality (क्रम सूचक) पर पुनः काम करने की आवश्यकता है।

4. वैकल्पिक योजना (Alternative plan) को तैयार रखना

गतिविधि कराते समय जब बच्चे किसी अवधारणा को समझने में असहज महसूस करते हैं तो उनके लिए वैकल्पिक व्यवस्था के रूप में गतिविधि से जुड़ी अवधारणा को समझाने की योजना बनाए रखना चाहिए।

जैसे– जब कविता के माध्यम से बच्चे दायें / बायें में समझ नहीं बना पाते हैं तो बच्चों को एक गोल घेरे में खड़ा करके उन्हें कोई भी एक जैसे पेड़ की पत्ती दायें हाथ में दें। फिर उन्हें जिस हाथ में पत्ती है उसे ऊपर करने को कहें, उन्हें बताएं कि यह उनका दायाँ हाथ है। यह प्रक्रिया दोहराएं।

5. चुनौतियाँ व उनका समाधान

गतिविधि के संचालन में आने वाली चुनौतियों के समाधान को गतिविधि पूर्व ही योजना बनाकर निस्तारित करने का प्रयास करना चाहिए।

जैसे– बच्चे शून्य की अवधारणा समझते समय, 'शून्य का मतलब कुछ नहीं' कहते हैं, जिसकी वजह से उन्हें स्थानीय मान की अवधारणा स्पष्ट नहीं होती है। शिक्षक/शिक्षिका 'शून्य का अभिप्राय' कुछ नहीं वाक्यों से बचें तथा शून्य को घटाव की प्रक्रिया, चित्रों के माध्यम से समझाएँ।

क्रियान्वयन

बच्चों के सीखने की प्रगति का दस्तावेजीकरण करना आगे की योजना बनाने में मददगार होता है। शिक्षक/शिक्षिका को बच्चों की कक्षा में भागीदारी और प्रतिक्रियाशीलता को समय–समय पर दस्तावेजीकरण करना चाहिए।

शिक्षक/शिक्षिका दस्तावेजीकरण की प्रक्रिया को पोर्टफोलियो, उपाख्यान या ट्रैकर के माध्यम से करें जिसमें किसी दक्षता या उद्देश्य को सिखाने के विभिन्न तरीके हों साथ ही किसी बच्चे को सीखने में आयी हुई चुनौतियों एवं उनके समाधान को भी स्थान देना चाहिए। इन्हें शिक्षक समय–समय पर अवलोकन कर उसके आधार पर आगे की योजना बना सकेंगे। साथ ही गतिविधि की प्रभाविकता एवं कमियों को पहचान एवं सुधार करने का अवसर प्राप्त हो सकेगा।

8.4 वार्षिक योजना

राज्य पाठ्यचर्या को उनके मानकों के अनुरूप व सटीक बनाने के लिये महत्वपूर्ण आयामों को सम्मिलित करना अति आवश्यक है। बच्चों के विकासात्मक लक्ष्यों की प्राप्ति में दक्षताओं और तकनीकी मानकों को सम्मिलित करके कार्य किया जाये, जिससे आगामी पीढ़ी को सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने में बाधा न आये।

सामग्रियों का उपयुक्त प्रयोग करके बच्चों में ऐसी आदतें विकसित करना, जिससे बच्चों में लैंगिक समानता का विकास कर सकें।

1. शारीरिक विकास

- ❖ सीखने के लिए आवश्यक है कि बच्चे शारीरिक रूप से स्वस्थ अनुभव करें।
- ❖ बच्चों को उनके शारीरिक अंगों की साफ–सफाई, उससे सम्बन्धित अच्छी व बुरी आदतों के बारे में चित्रात्मक साधनों, कहानी एवं कविताओं के माध्यम से शिक्षा देनी चाहिए।
- ❖ विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों को सहयोग देकर अन्य बच्चों के साथ अलग–अलग गोले में (उम्र के अनुसार) बैठने की व्यवस्था सुनिश्चित करनी चाहिए।

2. पारिवारिक व सामाजिक विकास

- ❖ मासिक बैठक अभिभावकों के साथ उनकी आवश्यकताओं एवं समस्याओं को ध्यान में रखते हुए बच्चों के स्थानीय परिवेश व परिवार के माहौल के अनुसार करनी चाहिए।

3. बौद्धिक विकास

बाल्यावस्था के दौरान ये पहलू बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस स्तर में बच्चे का सर्वाधिक शारीरिक व बौद्धिक विकास होता है। इंद्रियों के सम्पूर्ण विकास के लिए सूंघना, स्पर्श करना, स्वाद लेना से सम्बन्धित गतिविधियाँ होनी

चाहिए। बौद्धिक क्षमता का विकास करने के लिए कुछ खेल जैसे– पजल, जोड़े बनाना, चित्र को चित्र से मिलाना, समस्या समाधान आदि गतिविधियों को समाहित करना चाहिए। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को गतिविधि में सम्मिलिति कर समानता का भाव रखना चाहिए।

4. भाषा का विकास

❖ तीन स्तरों पर आधारित होनी चाहिए–

1. क्रिया आधारित– रोल–प्ले, कहानी या कविता (ऐक्शन) सहित।
2. छवि आधारित– यदि सम्भव हो इसमें तकनीकी सहायता ले सकते हैं। जैसे– वीडियो–ऑडियो दिखाकर चित्रात्मक गतिविधि के साथ होना चाहिए।
3. भाषा एवं प्रतीक आधारित– भाषा को सिखाने का माध्यम स्थानीय परिवेश व संकेतात्मक पहलू होने चाहिए।

5. रचनात्मक विकास

इस अवस्था के बच्चों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं, आवश्यकताओं, रूचियों तथा क्षमताओं को ध्यान में रखते हुए इस प्रकार का रोचक एवं विकासात्मक वातावरण का सृजन किया जाना चाहिए जिससे बच्चों का रचनात्मक विकास हो सके। बच्चे अपनी कल्पनाशक्ति को कक्षा के विभिन्न कार्यों के माध्यम से प्रदर्शित करते हुए अपनी सोच और कुछ नया करने का साहस जुटा पाते हैं।

साप्ताहिक समय सारणी का उदाहरण

समय–सारणी का प्रयोग करते हुए हम बच्चों के बौद्धिक, शारीरिक एवं मानसिक विकास के माध्यम से गतिविधियों का चयन करेंगे।

उदाहरण के तौर पर, सप्ताह के सातों दिन कुछ विभिन्न गतिविधियाँ कराते हुए बच्चों का विकास करेंगे।

सोमवार :– सोमवार के दिन बच्चों को रोचक कहानियों के माध्यम से प्रकृति, पशु–पक्षियों एवं भौगोलिक जानकारी प्रदान करना।

मंगलवार :– बच्चों को भाव गीत आदि के माध्यम से उनके शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक विकास हेतु गतिविधियाँ कराना।

बुधवार :– बच्चों को मौखिक कहानी के माध्यम से जानकारी प्रदान करना। इसके लिये हम प्रचलित कहानियों का भी सहारा ले सकते हैं।

बृहस्पतिवार :– हिन्दी भावगीत आदि के माध्यम से बच्चों के ज्ञान में वृद्धि करना।

शुक्रवार :– अंग्रेजी भावगीत के माध्यम से जागरूक किया जा सकता है।

शनिवार :– थीम आधारित गतिविधियाँ करवा कर बच्चों के ज्ञान में वृद्धि करना।

थीम आधारित उत्सव में हम मौसम, मेरा परिवार, पेड़–पौधे, त्योहार, यातायात के साधन, मौसमी फल एवं सब्जी, पशु–पक्षी, पानी आदि को प्रदर्शित एवं भौतिक रूप से दिखाते हुए जानकारी दे सकते हैं।

साप्ताहिक समय सारणी (प्रथम चक्र से मध्याह्न भोजन के समय तक)

<table>
<tr><th>सत्र</th><th colspan="12">विवरण</th></tr>
<tr><td>प्रथम चक्र का समय (30 मिनट)</td><td colspan="12">स्वागत, प्रार्थना, स्वच्छता जाँच, उपस्थिति, कैलेण्डर की गतिविधि, नियम पढ़ना, ताजा खबर/समाचार, थीम आधारित वार्तालाप</td></tr>
<tr><td>मार्निंग स्नैक्स (10 मिनट)</td><td colspan="12">हाथ धोना और मॉर्निंग स्नैक्स का वितरण</td></tr>
<tr><td rowspan="5">दूसरे चक्र का समय

(अवधारणाओं के निर्माण हेतु गतिविधियाँ एवं स्वतंत्र खेल = 30 मिनट + 30 मिनट)</td><td colspan="12">प्रथम चक्र के बाद, बच्चों को आयु के अनुसार दो समूह में बांटना है– 3–5 वर्ष और 5–6 वर्ष।</td></tr>
<tr><td colspan="4">समय अवधि</td><td colspan="4">3–4 वर्ष</td><td colspan="4">4–5 वर्ष</td></tr>
<tr><td colspan="4">30 मिनट</td><td colspan="4">स्वतंत्र खेल</td><td colspan="4">अवधारणा निर्माण हेतु गतिविधि</td></tr>
<tr><td colspan="4">30 मिनट</td><td colspan="4">अवधारणा निर्माण हेतु गतिविधि</td><td colspan="4">स्वतंत्र खेल</td></tr>
<tr><td colspan="9">अवधारणा निर्माण सम्बन्धित गतिविधियाँ– इस चक्र में प्राकृतिक, भौतिक व सामाजिक एवं संज्ञानात्मक अवधारणाओं पर समझ बनाने हेतु गतिविधियाँ करवाई जाएँगी। जैसे– रंग, आकार, बड़ा और छोटा, कम और ज्यादा आदि की अवधारणाएँ।</td><td colspan="3">महीने में एक दिन – प्रकृति की सैर एवं आस–पास के क्षेत्र का भ्रमण करना।</td></tr>
<tr><td>तीसरे चक्र का समय (30 मिनट)</td><td colspan="12">बड़ी मांसपेशियों के विकास संबन्धित गतिविधियाँ - इसमें ज़्यादातर बच्चों को बाहर खेले जाने वाले खेल खिलाए जाने चाहिए| जैसे – कूदना, दौड़ना, रेंगना, फेंकना और गेंद को पकड़ना आदि।
यदि कोई बाहरी स्थान उपलब्ध नहीं है, तो इन खेलों को छोटे समूहों में केंद्र के अंदर भी खेला जा सकता हैं।</td></tr>
<tr><td rowspan="4">चौथे चक्र का समय (30 मिनट)</td><td colspan="3">गतिविधि</td><td colspan="3">3–4 वर्ष</td><td colspan="3">4–5 वर्ष</td><td colspan="3">5–6 वर्ष</td></tr>
<tr><td colspan="3">रचनात्मक कार्य</td><td colspan="3">सोमवार, बृहस्पतिवार</td><td colspan="3">सोमवार, बृहस्पतिवार</td><td colspan="3">शुक्रवार</td></tr>
<tr><td colspan="3">विद्यालय की तैयारी</td><td colspan="3">बुधवार, शनिवार</td><td colspan="3">बुधवार, शनिवार</td><td colspan="3">सोमवार, बृहस्पतिवार</td></tr>
<tr><td colspan="3">गतिविधि पुस्तिका</td><td colspan="3">शुक्रवार</td><td colspan="3">शुक्रवार</td><td colspan="3">बुधवार, शनिवार</td></tr>
<tr><td rowspan="2">पाँचवें चक्र का समय (30 मिनट)</td><td colspan="2">सोमवार</td><td colspan="2">मंगलवार</td><td colspan="2">बुधवार</td><td colspan="2">बृहस्पतिवार</td><td colspan="2">शुक्रवार</td><td colspan="2">शनिवार</td></tr>
<tr><td colspan="2">कहानी की किताब</td><td colspan="2">हिंदी भावगीत</td><td colspan="2">मौखिक कहानी</td><td colspan="2">हिंदी भावगीत</td><td colspan="2">अंग्रेज़ी भावगीत</td><td colspan="2">कहानी (किताब या मौखिक)</td></tr>
<tr><td colspan="13">मध्याह्न भोजन</td></tr>
</table>

8.5 पाठ्यक्रम के अनुरूप सामग्रियों का चयन

पाठ्यक्रम के अनुरूप सामग्रियों का चयन करते समय पाठ्यक्रम उद्देश्य बच्चों की आवश्यकताओं और विषयों के स्तर को ध्यान में रखकर करना चाहिए। सामग्री को विभिन्न स्रोतों से चुनकर एकत्रित करना और उसे सम्बोधात्मक, शिक्षात्मक और रोचक बनाने का प्रयास करना चाहिए। बच्चे गतिविधियों में प्रतिभाग करते हैं तो उनको सीखने के अवसर मिलते हैं, साथ ही उनका विकास भी होता है। सभी गतिविधियाँ इस प्रकार बनायी जानी चाहिए जो बच्चे के शारीरिक, मानसिक व नैतिक विकास में सहायक हों। बढ़ते बच्चों में गतिविधि आधारित शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षक को बच्चों की पारिवारिक, सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि समझते हुए गतिविधियाँ तैयार व साझा करनी चाहिए। प्रासंगिक विषयवस्तु के चयन से बच्चों को गतिविधि में रूचि, आनन्द और उत्सुकता का भाव उत्पन्न होता है। उदाहरणस्वरूपः– पशु–पक्षी, रंग, आकार, परिवार, भोजन, पेड़–पौधे, गुब्बारे, पतंग, आस–पड़ोस, मित्र आदि।

बच्चों के लिए खिलौने, रंगीन कागज़ और मूल्यांकन से जुड़ी सामग्री से खेल के साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षाप्रद गतिविधि का निर्माण लाभप्रद होगा जिसके कुछ उदाहरण निम्नवत् हैं–

1. **गणना और गिनती का खेल :–** बच्चों को खिलौने या छोटी गोली की मदद से गिनती और गणना सिखाने के लिए सामग्री तैयार कर सकते हैं। बारहमासी कैलेंडर के महीनों को सही क्रम में पूरा करने की गतिविधि करा सकते हैं।
2. **रंग–रंग के खेल :–** रंगों के नाम और पहचान सिखाने के लिए रंगीन पत्तियों, कागज़ और रंगीन चार्ट पेपर आदि के माध्यम से गतिविधि करा सकते हैं।
3. **अक्षर पहचान और पढ़ाई की शुरूआत :–** वर्णमाला के खिलौने, वर्णों की पहचान के चित्र और छोटे शब्दों की छवियों, शब्दों के चित्र कहानी सुनाओ गतिविधियाँ करा कर अक्षर पहचान और पढ़ाई की शुरूआत करा सकते हैं।
4. **सामुदायिक गतिविधियाँ :–** सामुदायिक गतिविधियों जैसे कि पेड़–पौधों की देखभाल, साफ–सफाई के काम, अपना सामान पहचानो और साथियों का सहयोग करो, अपने सहयोगियों (दूधवाला, कपड़े धोने वाला आदि) की पहचान जैसी गतिविधि करा सकते हैं।
5. **कहानी सुनाओ :–** बच्चों को उनके आयु, रूचि, समझ आदि के अनुसार शब्द या चित्र दिखा कर कहानी का निर्माण कराना एक अच्छी गतिविधि है। इससे बच्चों की कल्पनाशक्ति का विकास होता है।
6. **नामकरण गतिविधि :–** कक्षा–कक्ष में सभी सामग्री का नाम उनपर लिखकर चिपका देने से बच्चे प्रतिदिन उन वस्तुओं के नाम देखकर व बार–बार शिक्षक द्वारा सुनकर याद कर लेते हैं और अक्षर/शब्द की समझ भी बनाने लगते हैं।
7. **संवादात्मक सामग्री :–** बच्चों के संवादात्मक विकास को प्रोत्साहित करने के लिए उचित संवादात्मक सामग्री सम्मिलित की जानी चाहिए, जैसे– कहानियाँ, कविताएँ हाव–भाव सहित गीत आदि। कहानियाँ, गीत, कविताएँ उनकी स्थानीय भाषा में होनी चाहिए जिससे बच्चे जुड़ाव महसूस कर सकें।

8. **स्थानीय सामग्री का चयन :–** बच्चों की स्थानीय सामग्री (अनाज, पेड़–पौधे, फल–फूल, सब्जी), धरोहर आदि उपलब्धता को ध्यान में रखकर गतिविधि का निर्माण करना चाहिए।

पाठ्यक्रम के अनुरूप सामग्रियों के चयन की आवश्यकता

विद्यालयी शिक्षा के आरम्भ में घर तथा विद्यालय के बीच परिवेशीय तथा क्रियाकलाप रूपी अन्तर बच्चों में झिझक व असहजता का भाव उत्पन्न करता है। ऐसे में अगर उन्हें सीधे–सीधे पढ़ना, लिखना, सीखने जैसे कठिन कामों में लगा दिया जाएगा तो वे विद्यालय आने से कतराएंगे। बच्चों में पढ़ने–लिखने के प्रति रूचि उत्पन्न करने के लिए पाठ्यक्रम के अनुरूप शिक्षण सामग्रियों का चयन अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

पाठ्यक्रम के अनुरूप सामग्रियों के चयन में निम्न आवश्यकताओं की पूर्ति होगी–

1. सीखने की स्थिति बनाए रखने में सहयोग होगा।
2. रूचियों को प्रोत्साहन मिलेगा।
3. मनोबल और आत्मविश्वास की भावना का विकास होगा।
4. निर्णय लेने की क्षमता का विकास होगा।
5. सहायता और समर्थन की भावना जागृत होगी।
6. मानसिक, शारीरिक व नैतिक विकास होगा।
7. रचनात्मकता को प्रोत्साहन मिलेगा।
8. स्थानीय भाषा से मानक भाषा की समझ विकसित होगी।

बच्चे के सर्वांगीण विकास हेतु पाठ्यक्रम का चयन होना चाहिए

पाठ्यक्रम के निर्माण में बच्चे के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखना चाहिए। 3 से 8 वर्ष की उम्र में बच्चे का सर्वांगीण विकास होता है, अतः उनके पाठ्यक्रम के निर्माण में विकास के सभी आयाम पर भलीभाँति से विचार करना चाहिए।

1. **शारीरिक विकास :–** बच्चे के शारीरिक विकास का सीधा सम्बन्ध सीधा उसके मस्तिष्क से होता है क्योंकि एक स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ्य मस्तिष्क का वास होता है। इसलिये हमें बच्चों को उनके उम्र के अनुरूप खेल–कूद, व्यायाम व पी.टी. कराना चाहिए। बच्चे को रूचिपूर्ण वातावरण में प्रार्थना के समय ही शारीरिक गतिविधियाँ एवं भावगीत कराना चाहिए। जैसे– तन हो सुंदर, मन हो सुंदर, प्रभु मेरा बचपन हो सुंदर उनकी दिनचर्या से सम्बन्धित कविताएँ या भावगीत करा सकते हैं।
2. **संज्ञानात्मक विकास :–** बच्चे के शारीरिक विकास के साथ उनके संज्ञानात्मक विकास पर भी कार्य करना चाहिए। इसके लिए ग्रीन–बोर्ड, खेल या विभिन्न कोने, पजल एवं गुड्डे गुड़िया, डॉक्टर सेट, किचन सेट आदि से परिचित कराना चाहिए। बच्चों को मुलायम–खुरदरे, ऊँचा–नीचा, सुनने एवं बोलने की गतिविधियों को सम्मिलित करके बच्चों का संज्ञानात्मक विकास किया जाना चाहिए।
3. **भाषा का विकास :–** बच्चों के सर्वांगीण विकास में भाषा का विशेष महत्व है। भाषा उनके स्थानीय परिवेश के अनुरूप होनी चाहिए, इसका आशय है कि जिस स्थान का निवासी है वहाँ की स्थानीय भाषा से

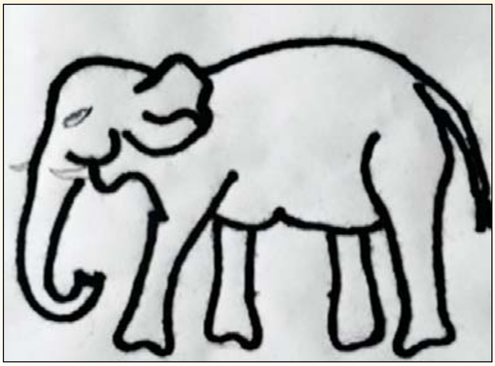
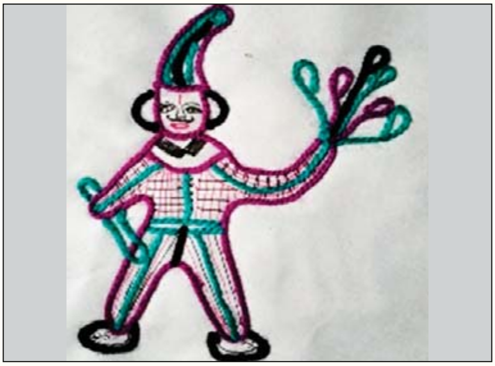

शिक्षक को भली प्रकार से परिचित होना चाहिए जिससे शिक्षक बच्चों में भाषा के प्रति अपनी समझ बना सके। शुरूआती दौर में बच्चों के साथ भावगीत एवं चार्ट पोस्टर, दीवार लेखन आदि से बच्चों में भाषा की समझ बनायी जा सकती है।

4. **सामाजिक एवं भावनात्मक विकास :–** सामाजिक विकास हेतु शिक्षक को सर्वप्रथम बच्चे को उसके परिवार एवं समाज पर उसकी समझ विकसित करनी चाहिए। इसके लिए हम भावगीत का भी सहारा ले सकते हैं, जैसे– 'यह है मेरे पापा, यह है मेरी मम्मी यह है मेरा छोटा संसार ....,' इस प्रकार के भावगीत के माध्यम से उनसे धीरे–धीरे अन्य रिश्तों एवं हमारे मददगारों के बारे में चर्चा की जा सकती है, जैसे– कपड़े कौन सिलता है ? दूध कौन लाता है ? बीमार होने पर हम कहाँ जाते हैं ? आदि।

5. **रचनात्मक विकास :–** बच्चे के जीवन में रचनात्मक विकास एक महत्वपूर्ण आयाम है। बच्चों के लिए 'करके सीखने' के अवसर अवश्य होने चाहिए। बाल सुलभ वस्तुओं को उपलब्ध कराना चाहिए। बच्चे नाव, जहाज आदि बनाकर, बालू पर चित्र उकेरकर, स्लेट पर लिखकर, मोती पिरोकर व रंग भरकर आदि क्रियाएँ करते हुए रचनात्मकता का विकास करते हैं।

आइसक्रीम चम्मच कलरफुल

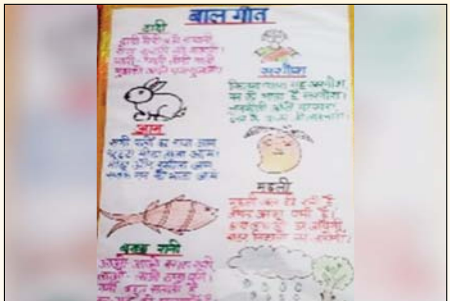

बाल गीत

कपड़े के पपेट

बड़े दफ्ती के डिब्बे

माचिस की तीली

इस प्रकार विभिन्न गतिविधियों के क्रियान्वयन की संगठित एवं योजना व्यस्थित बनाकर तथा अधिगम–शिक्षण सामग्री का उचित उपयोग करके बच्चों में कई प्रकार के गुण और कौशल विकसित करने में सहायता मिल सकती है, जो उनके समग्र विकास के लिए आवश्यक है।

❖❖❖

अध्याय-9

आनन्दपूर्ण आकलन

आकलन (Assessment) शब्द "assidere" से बना है, जिसका अर्थ है – साथ बैठना, इसका आशय है कि आकलन हम ''बच्चों के साथ'' और ''बच्चों के सीखने के लिए'' करते हैं। आकलन एक ऐसी निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसमें ऐसे प्रमाण इकट्ठा करके उनका विश्लेषण किया जाता है, जिससे तर्कयुक्त निर्णय लिया जा सके और बच्चों की सीखने वाली प्रक्रिया बेहतर हो सके। आकलन के उपरांत शिक्षक बेहतर रणनीति बनाते हुए सभी बच्चों के सीखने में सहायता कर सकें। आकलन सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है। बच्चों के सीखने के साथ–साथ कक्षा शिक्षण के दौरान आनन्दपूर्ण वातावरण में आकलन को परीक्षा जैसे किसी भय के बिना सम्पादित किया जाना चाहिए। आकलन से प्राप्त परिणाम के आधार पर बच्चों के प्रगति को एक दूसरे से तुलना किए बिना सभी बच्चों को सीखने के लिए प्रेरित करने के एक साधन के रूप में देखा जाना चाहिए। सभी बच्चों का सीखना सुनिश्चित करने के लिए शिक्षक द्वारा आकलन का उपयोग सीखने–सिखाने की उपयुक्त रणनीतियों का चयन करने तथा उनमें आवश्यकतानुसार संशोधन करने के लिए किया जाना चाहिए। शिक्षक आकलन से प्राप्त समस्त जानकारी का उपयोग अपनी शिक्षण योजना को और बेहतर बनाने तथा बच्चों को सीखने में आ रही कठिनाइयों को दूर कर सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को और उपयुक्त कर सकते हैं।

आकलन के द्वारा प्राप्त जानकारी से बच्चों की उपलब्धियों के बारे में शिक्षक, माता–पिता और स्वयं बच्चों को भी पता चलता है। शिक्षक बच्चों के लिए सीखने के अनुभवों की योजना बनाने और उन्हें व्यवस्थित करने के लिए नियमित रूप से चल रहे आकलन से मिलने वाली जानकारी का इस्तेमाल कर सकते हैं। सर्वविदित है कि बच्चों में व्यक्तिगत विभिन्नता पाई जाती है। व्यक्तिगत विभिन्नता के कारण बच्चों के सीखने की विधि एवं सीखने की गति अलग–अलग होती है। आकलन से मिलने वाले परिणाम से शिक्षक उन बच्चों की भी पहचान कर सकते हैं, जिन्हें अतिरिक्त मदद की आवश्यकता है।

9.1 आकलन के प्रकार

आकलन मुख्य रूप से तीन प्रकार के होते हैं।

1. सीखने का आकलन (Assessment of Learning)

सीखने के आकलन को योगात्मक आकलन भी कहते हैं, क्योंकि यह सीखने की प्रक्रिया के मुख्य चरणों पर किया जाता है। जैसे कि कार्य की समाप्ति पर या वर्ष/चरण की समाप्ति पर, जिसमें यह देखा जाता है कि बच्चों ने वर्ष के अन्त में निर्धारित किए गए सीखने के प्रतिफल प्राप्त कर लिए हैं या नहीं। सीखने का आकलन इस बात की पुष्टि करने के लिए होता है कि बच्चों ने अर्धवार्षिक और वार्षिक परीक्षा में कितने ग्रेड/अंक प्राप्त किए हैं। योगात्मक आकलन के द्वारा बच्चों की तुलनात्मक प्रगति का भी पता चलता है। सीखने का आकलन आमतौर पर सत्र के अंत में किया जाता है, जिसमें एक निश्चित अवधि के दौरान अध्ययन की सामग्री से तैयार किये गये प्रश्न सम्मिलित होते हैं।

2. सीखने के लिए आकलन (Assessment for Learning)

सीखने के लिए आकलन इसलिए किया जाता है, ताकि शिक्षकों को बच्चों की आवश्यकता के अनुरूप सीखने–सिखाने की उपयुक्त शिक्षण विधियों का चयन करने तथा उनमें आवश्यकतानुसार संशोधन करने के लिए जानकारी हासिल हो सके। शिक्षक द्वारा सीखने के लिए किए गए आकलन की जानकारी का उपयोग बच्चों के सीखने को आगे बढ़ाने के लिए किया जाना चाहिए। सीखने के लिए आकलन सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के दौरान ही किया जाता है, जिससे उसी समय बच्चों के सीखने में मदद की जा सके और सीखने में आ रही कठिनाइयों को दूर किया जा सके। आकलन का उपयोग बच्चों को सीखने के लिये प्रेरित किये जाने हेतु किया जाना चाहिए क्योंकि आकलन बेहतर अंक या ग्रेड हासिल करने के बजाए बच्चों को बेहतर ढंग से सीखने में मदद करता है।

3. सीखने के रूप में आकलन (Assessment as Learning)

सीखने के रूप में आकलन एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें बच्चों में मेटाकॉग्निशन यानि अपनी समझ पर पुनर्विचार करने की काबिलियत को विकसित किया जा सके। बच्चे स्व आकलन करते हुए अपने सीखने के प्रतिफल को प्राप्त करते हैं। बच्चे स्वयं अपनी कमजोरियों को खोजकर उसे दूर करने का प्रयास करते हैं। स्वयं कार्य करते हुए, समूह कार्य के दौरान और जोड़ी में कार्य करने के दौरान बच्चे स्वयं का आकलन भी कर रहे होते हैं। बच्चों को अपनी स्वयं की प्रगति का ध्यान रखने, अपने सीखने का आत्म अवलोकन करने का अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। यह तब होता है जब बच्चे अपनी समझ पर नजर रखते हैं और स्वयं अपनी समझ को और बेहतर करते रहते हैं। इस प्रक्रिया में शिक्षक बच्चों को सीखने, अभ्यास करने व पुनर्विचार करने में सहज होने में मदद करते हैं। इसके अंतर्गत बच्चों में विषय पर सोच समझकर निष्कर्ष पर जाने की कला (क्रिटिकल थिंकिंग) का विकास होता है।

उदाहरण : समूह गतिविधि, जोड़ी में कार्य, थिंक–पेयर–शेयर आदि।

9.2 आकलन का उद्देश्य

आकलन का उद्देश्य यह पता लगाना है कि सभी बच्चे अपने सीखने के मार्ग पर कहाँ पर हैं, और सीखने में अवरोध कहाँ पर है, ताकि शिक्षक उन बच्चों का बेहतर तरीके से मार्गदर्शन कर सकें। शिक्षक को आकलन के द्वारा अपने शिक्षण की सफलता व रणनीति पर पुनर्विचार करते हुए और बच्चों के सीखने को आगे बढ़ाने के लिए यथा उचित बदलाव करते रहना चाहिए।

बुनियादी स्तर पर आकलन निम्नलिखित उद्दश्यों को पूरा करता है–

1. बच्चों की जरूरतों, प्राथमिकताओं और रुचियों की पहचान करना, यह जानकारी शिक्षक को विषयवस्तु और शैक्षणिक पद्धतियों के चयन में मार्गदर्शित कर सकती है।
2. आकलन के माध्यम से शिक्षक को बच्चे की सीखने की उपलब्धि के बारे में जानकारी प्राप्त होती है और आगे की रणनीति बनाने के लिए शिक्षक को राह दिखाने में आकलन की भूमिका महत्वपूर्ण है। यह बच्चे की सोच और सीखने की प्रक्रिया को समझने का एक रास्ता देती है। बच्चों की प्रतिक्रियाओं का सावधानीपूर्वक विश्लेषण करना शिक्षक का उतना ही महत्वपूर्ण काम है, जितना कि सोच समझकर आकलन के कार्य को सम्पादित करना।
3. आकलन बच्चों को सार्थक गतिविधि और अभ्यास के माध्यम से उनके सीखने को मजबूत करने में सहायता करता है।
4. आकलन के जरिए जमा की गई जानकारी को बच्चों के सीखने को बढ़ावा देने में रुचि रखने वाले सभी हितधारकों के साथ साझा किया जाना चाहिए।
5. आकलन सभी बच्चों के लिए राज्य पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को हासिल करने के लिए विषयवस्तु एवं शिक्षणशास्त्र (पेडागॉजी) की योजना बनाने और इन्हे संगठित करने में शिक्षक और विद्यालय दोनों के लिए ही मददगार है।
6. बच्चों की अलग–अलग सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि और सीखने की गति में अन्तर को देखते हुए एक ही कक्षा में बच्चों के बीच सीखने में अन्तर जल्दी ही उभरना शुरू हो जाता है और अगर समय रहते इसे सुलझाया नहीं गया तो दूसरी कक्षा तक यह अन्तर और बढ़ जाने की संभावना अधिक रहती है। बेहतर ढंग से डिजाइन किया गया आकलन कार्य पर्याप्त रूप से नहीं सीख पा रहे बच्चों के बारे में अतिरिक्त सीखने की रणनीति बनाने में शिक्षकों की मदद कर सकता है।
7. आकलन बच्चों द्वारा सामना किए जाने वाली संभावित विकासात्मक चुनौतियों या सीखने की कठिनाइयों के बारे में शुरुआती जानकारी देता है। बुनियादी स्तर पर यह जरूरी है कि सभी बच्चों की समान रूप से देखभाल की जाए।

फाउण्डेशनल स्टेज के लिए आकलन के बारे में कुछ विचार :–

फाउण्डेशनल स्टेज में बच्चे बहुत छोटे होते हैं। आकलन की प्रक्रिया की वजह से होने वाला कोई भी गैर–जरूरी भावनात्मक तनाव किसी भी अच्छी शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के खिलाफ है। आगे दी गई बातों का ध्यान रखना जरूरी है:

क) आकलन से बच्चों पर जरूरत से ज्यादा बोझ नहीं पड़ना चाहिए। आकलन उपकरण और प्रक्रियाओं को इस तरह से डिज़ाइन किया जाना चाहिए कि वे बच्चों के लिए सीखने के अनुभव का एक स्वाभाविक हिस्सा हों। इस चरण के लिए निश्चित परीक्षण पूरी तरह से अनुपयुक्त आकलन उपकरण हैं।

ख) आकलन सूचना का एक भरोसेमन्द स्रोत होना चाहिए। चूँकि यह बच्चे के सीखने का महत्वपूर्ण सबूत है, इसलिए इसमें दक्षता और सीखने के प्रतिफलों की उपलब्धि के आकलन के उद्देश्य को सटीकता से प्रतिबिंबित होना चाहिए। अपेक्षित सीखने के प्रतिफल और आकलन के बीच सम्बन्ध को स्पष्ट और सटीक होना चाहिए।

ग) बच्चों और उनके सीखने में विविधता को आकलन में स्वीकार्यता दी जानी चाहिए। बच्चे अलग–अलग तरह से सीखते हैं और अपने सीखने को तरह–तरह से व्यक्त भी करते हैं। किसी सीखने के प्रतिफल या दक्षता की उपलब्धि का आकलन करने के कई तरीके हो सकते हैं। एक ही सीखने के प्रतिफल के लिए अलग–अलग तरह के आकलन कार्य को डिज़ाइन करने और हर एक आकलन का सही उपयोग करने की क्षमता शिक्षक में होनी चाहिए।

घ) आकलन को अभिलेख–संधारण और दस्तावेजीकरण में सहयोगी होना चाहिए। प्रमाणों के व्यवस्थित संग्रह के माध्यम से बच्चों की प्रगति का वर्णन और विश्लेषण किया जाना चाहिए।

ड़) आकलन को शिक्षक पर ज़रूरत से ज्यादा बोझ नहीं बनना चाहिए। शिक्षक के पास आकलन के लिए उचित उपकरण के विवेकपूर्ण ढंग से चयन करने और आकलन से जुड़े रिकॉर्ड बनाने और रखने की अवधि तय करने में स्वायत्तता होनी चाहिए। हालाँकि ऐसी स्वायत्तता महत्वपूर्ण है, लेकिन बच्चों के आकलन का व्यवस्थित रिकॉर्ड रखना शिक्षक की पेशेवर जिम्मेदारियों के एक जरूरी हिस्से के रूप में देखा जाना चाहिए।

9.3 आकलन के तरीके

बुनियादी स्तर पर बच्चों की आकलन प्रक्रिया ऐसी होनी चाहिए, जिससे वह किसी भी प्रकार का तनाव अथवा भार न महसूस करे। आकलन प्रक्रिया ऐसी हो जो बच्चे के संज्ञानात्मक, भावनात्मक व मनोक्रियात्मक पक्षों का परीक्षण कर सके, साथ ही साथ ज्ञानात्मक पक्ष के प्रति उसके रुझान और संभावनाओं का भी पता लगा सके। बुनियादी स्तर पर आकलन की प्रक्रिया ऐसी होनी चाहिए जो कि बच्चों को उनके प्रिय खेल जितनी आनंददायक लगे और उससे प्राप्त संकेत व निष्कर्ष शिक्षकों को शिक्षण विधा में बदलाव करने में मदद कर सके।

विद्यालय के भीतर व बाहर दोनों परिवेश से प्राप्त पृष्ठपोषण (Feedback) के आधार पर बच्चों के सभी पक्षों का आकलन किया जाना चाहिए। आकलन की प्रक्रिया में निम्नलिखित पक्षों से प्राप्त फीडबैक को अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया जाना चाहिए।

1. शिक्षक द्वारा प्राप्त पृष्ठपोषण (Feedback)
2. सहपाठी द्वारा प्राप्त हुए पृष्ठपोषण (Feedback)
3. अभिभावक/समुदाय द्वारा प्राप्त पृष्ठपोषण (Feedback)

उपरोक्त सभी प्रकार के पृष्ठपोषण (Feedback) को प्राप्त करने हेतु आकलन में अवलोकन के उपकरणों का प्रयोग किया जाना सर्वोत्तम विकल्प होगा। इसके अलावा बच्चों के सीखने के हिस्से के रूप में किए गए कार्यों के

विश्लेषण के आधार पर भी बच्चों के विविध पक्षों का आकलन किया जा सकता है। अतः बुनियादी स्तर पर निम्नलिखित दो प्रकार के तरीकों को प्रमुखता से उपयोग किया जाना प्रासंगिक होगा–

1. अवलोकन के आधार पर।
2. बच्चों द्वारा अपने सीखने के अनुभव के हिस्से के रूप में प्रस्तुत किए गए कार्यों के विश्लेषण के आधार पर।

9.4 आकलन के माध्यम और उपकरण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 बुनियादी स्तर पर सतत् और रचनात्मक आकलन पर जोर देती है। आकलन निरंतर एवं नियमित चलने वाली प्रक्रिया है, जो शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के साथ–साथ चलती है, अर्थात् सीखना–सिखाना एवं आकलन दोनों साथ–साथ चलते हैं। शिक्षक अनेक गतिविधियों एवं उपकरणों के माध्यम से यह पता करते हैं कि बच्चों ने क्या सीखा एवं सीखने में उसे कहाँ मदद की आवश्यकता है। आकलन के उपरांत शिक्षक आवश्यकतानुसार अपनी शिक्षण विधा में बदलाव करता है। आकलन करने का यह दायित्व सिर्फ शिक्षक पर ही नहीं होता, बच्चे भी अपना स्व आकलन करते हैं। सहपाठी भी एक दूसरे का आकलन कर यह देखते हैं कि उन्हें किन–किन क्षेत्रों में और अधिक प्रयास करने की आवश्यकता है। सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में शिक्षक एवं बच्चों के बीच एक मैत्रीपूर्ण संबंध होना चाहिए, जहाँ बच्चे बिना किसी भय के अपनी बात शिक्षक से कह सकें और पूछ सकें।

1. आकलन के माध्यम

बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अनुसार आकलन को एक योजनाबद्ध तरीके से सभी बच्चों के सीखने की क्रिया को आगे बढ़ाने के लिए किया जाना चाहिए। आकलन की रूपरेखा स्थान व संदर्भ विशेष की जरूरतों के अनुरूप निम्नलिखित प्रकार से हो सकती है–

बुनियादी स्तर पर एक कक्षा के सभी बच्चों के क्रियाकलापों को अवलोकित करना और सुधार की दृष्टि से बारीकियाँ अभिलेखित (Record) करते हुए शिक्षक को एक बार में एक ही बच्चे पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। अवलोकन को रिकार्ड करने के लिए प्रत्येक कक्षा के लिए शिक्षक द्वारा एक अवलोकन–पंजिका बनाया जाना चाहिए। यह पंजिका हमेशा विद्यालय में रहे, जिसे शिक्षक और बच्चों के माता–पिता जब चाहें बच्चों की प्रगति देख सकें।

2. आकलन के उपकरण

आकलन के दौरान बच्चों ने कितना सीखा, यह जानने के लिए विभिन्न उपकरणों का उपयोग किया जाता है। इससे यह पता चलता है कि बच्चा सीख रहा है या नहीं, सीखने की गति क्या है और यदि नहीं सीख पा रहा है तो कौन–कौन से कारण हो सकते हैं। प्रत्येक बच्चा अपने आप में अद्वितीय होता है। हर बच्चे की पसंद–नापसंद, रुचियाँ, कौशल और व्यवहार के तरीके, सीखने की गति एवं क्षमता अलग–अलग होती है। कोई बच्चा अच्छे से बोल सकता है तो कोई अच्छे से लिख सकता है। कुछ बच्चे गतिविधि से समझ सकते हैं, कुछ बच्चे पुस्तक पढ़कर तो कुछ बच्चे शिक्षक द्वारा कक्षा शिक्षण से सीखते हैं। अतः आकलन के उपकरण भी अधिगम आधारित और विषयानुसार अलग–अलग होने चाहिए।

अवलोकन

बुनियादी स्तर पर अवलोकन के द्वारा बच्चों के न केवल विषय ज्ञान अपितु सर्वांगीण विकास के विविध प्रकार जैसे– मनोक्रियात्मक, गत्यात्मक, संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक एवं नैतिक पक्षों का आकलन किया जाना चाहिए। अवलोकन हेतु साक्ष्यों की आवश्यकता होती है, जैसे– पोर्टफोलियो, कक्षा शिक्षण के दौरान किया गया कार्य, प्रदत्त कार्य, प्रोजेक्ट कार्य तथा बच्चों से बातचीत कर उनके व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन एवं दक्षताओं को देखकर आकलन किया जाना चाहिए। सह–संज्ञानात्मक क्षेत्र के आकलन में अवलोकन का महत्वपूर्ण स्थान है। अवलोकन व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनों रूपों में किया जाना चाहिए। अवलोकन भिन्न–भिन्न गतिविधियों और परिवेश में किया जाना चाहिए। अवलोकन से प्राप्त बिंदुओं को शिक्षक अपनी डायरी में लिखें एवं बच्चे के क्रमिक विकास को देखें, साथ ही और अधिक सुधार पर कार्य करें।

आकलन के लिए अवलोकन में निम्नलिखित चरण सम्मिलित हैं–

1. **योजना बनाना :–**

   कक्षा में अवलोकन करने के लिए दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों की एक सूची बनाएँ जिन्हें आप अवलोकन के माध्यम से बच्चों में देखना चाहते हैं। अवलोकन को रिकॉर्ड करने के लिए आवश्यक उपकरणों का निर्धारण जैसे रिकॉर्डिंग आदि की तैयारी पूर्व में ही कर लें।

2. **प्रमाण इकट्ठा करना :–**

   आयु वय के अनुसार आकलन हेतु जो दक्षताएँ अथवा सीखने के प्रतिफल चिन्हित किए गए हैं उनके आधार पर रिकॉर्डिंग के द्वारा तथा चेकलिस्ट पर टिक करते हुए साक्ष्य के रूप में सटीक अवलोकन को नोट कर सकते हैं। उदाहरण के लिए – अगर यह स्थूल मोटर विकास (gross motor development) के बारे में है तो कक्षा से बाहर खेले जाने वाले खेल के अवलोकन के माध्यम से जानकारी इकट्ठा कर सकते हैं। वहीं यदि यह सामाजिक विकास के बारे में है तो बच्चों से समूह में गतिविधियाँ या नाटकीय खेल करा सकते हैं और इनका अभिलेखीकरण भी कर सकते हैं।

3. **चिंतन और आकलन करना :–**

   प्रत्येक बच्चे की समय–समय पर प्रगति को चिह्नित (Track) करने के लिए साक्ष्य और अभिलेख का अध्ययन करते रहना चाहिए। प्रत्येक साक्ष्य शिक्षक को यह सूचित करेगा कि बच्चों के सीखने के सुधार के लिये शिक्षण की योजना कैसे बनाई जाये और उसे कैसे संशोधित किया जाए।

सामान्य शैक्षणिक प्रक्रिया के दौरान अवलोकन के उदाहरण–

❖ **कहानी सुनाना**

- ➢ क्या बच्चा कहानी सुनाने में सम्मिलित हो रहा है?
- ➢ क्या बच्चा चित्रों का वर्णन कर रहा है?
- ➢ क्या बच्चा कहानी के विभिन्न पात्रों के बारे में सवाल पूछ रहा है?
- ➢ क्या बच्चा अपने अनुभवों को कहानी की घटनाओं से जोड़ पा रहा है?
- ➢ क्या बच्चा कहानी के बारे में पसंद–नापसंद बता पा रहा है?

❖ निर्देशित बातचीत

- क्या बच्चा सामान्य बातचीत के दौरान दूसरों की बात सुन रहा है?
- क्या बच्चा बोलने के लिए अपनी बारी का इंतजार कर रहा है?
- क्या बच्चा शिक्षक द्वारा दिये गए निर्देश को समझ पा रहा है?
- क्या बच्चा दूसरों की बात सुनकर अपनी भावनाओं को व्यक्त कर पा रहा है?
- क्या बच्चा सामान्य बातचीत में आगे की बातों का अंदाजा लगा पा रहा है?

❖ खेल– स्वतंत्र, मार्गदर्शित और संरचित

- क्या बच्चा खेल के दौरान बड़ी और छोटी मांसपेशियों का आयु वर्ग के अनुसार उपयोग करने में सक्षम है?
- क्या बच्चा खेल के दौरान आने वाली सामान्य समस्याओं को हल कर पा रहा है?
- क्या बच्चा खेल के दौरान अपनी भावनाओं को व्यक्त कर पा रहा है?
- क्या बच्चा दूसरों की भावनाओं के लिए उचित प्रतिक्रिया दे पा रहा है?

4. अवलोकन दर्ज करने के उपकरण

शिक्षक बच्चों के द्वारा किए गए कार्यों के अवलोकन को दर्ज करने के लिए उपाख्यानात्मक रिकॉर्ड/वृतांत अभिलेख (Anecdotal Records) चेकलिस्ट और इवेंट सैंपलिंग जैसे उपकरणों का उपयोग किया जा सकता है।

❖ उपख्यानात्मक रिकार्ड/वृतांत अभिलेख (Anecdotal Record)

शिक्षक बच्चों से जुड़ी किसी घटना के बारे में जितनी जल्दी हो सके उस घटना का विस्तृत विवरण लिखें जिसमें मुख्यतः घटना का प्रसंग, तिथि व स्थान, बच्चों/बच्चे का विवरण – नाम, आयु आदि और अवलोकन का उद्देश्य, अवलोकन की व्याख्या तथा अवलोकन के विश्लेषण के आधार पर कार्ययोजना का निर्माण और क्रियान्वयन करें।

उपाख्यानात्मक अवलोकन रिकॉर्ड का एक नमूना	
प्रसंग : मैं 5–6 वर्ष के बच्चों की एक कक्षा को पढ़ाता हूँ। जब मैं अपनी कक्षा के बच्चों के साथ 'कहानी सुनने–सुनाने' पर काम कर रहा था, तब मैंने कुछ ऐसी चीजों का अवलोकन किया, जिन्होंने मेरा ध्यान अपनी तरफ खींचा।	
नाम : सौम्या	उम्र : 6 वर्ष
अवलोकन की तारीख और समय : DDMMYY, HH:MM	स्थान/सेटिंग:कक्षा
अवलोकन का उद्देश्य : भावनात्मक नियमन (Emotional regulation)	

अवलोकन :

मेरी कक्षा में ''राजेश ने अपनी बहन को गले लगाया'' कहानी पढ़ी गयी। सौम्या गुस्सा हो गई और बगल में बैठे बच्चों को धक्का दे दिया। कहानी पढ़ने के बाद मैंने बच्चों से अपने परिवार का चित्र बनाने को कहा। सौम्या ने ऐसा किया लेकिन चित्र में दिख रहे लड़के को क्रेयॉन रंग से काला कर दिया। मैंने उससे इसके बारे में पूछा तब उसने कहा, ''यह मेरा भाई है। मैं उसे पसन्द नहीं करती हूँ। वह हमेशा मुझे चिढ़ाता है और मेरा खाना ले लेता है। माता–पिता उसे ही पसन्द करते हैं।''

व्याख्या :

- ऐसा लगता है कि सौम्या को अपने भाई के लिए अपनी भावनाओं का सामना करने में कठिनाई हो रही है।
- हो सकता है कि वह अपने माता–पिता से अपनी भावनाओं को जताना न जानती हो।
- इसका प्रभाव अन्य बच्चों के साथ उसके व्यवहार पर भी हो रहा था।

कार्ययोजना :

- इस बारे में सौम्या के माता–पिता से बात करना। इसके लिए उन्हें घर पर कुछ इंतजाम करने पड़ सकते हैं – जैसे कि सौम्या और उसके भाई को एक साथ खेलने की सुविधा देना, दोनों को कुछ

चेकलिस्ट (Checklist)

चेकलिस्ट के माध्यम से हम यह जानने का प्रयास करते हैं कि बच्चे ने सूचीबद्ध किये गये सीखने के प्रतिफलों को पूरा किया है अथवा नहीं। शिक्षकों को चेकलिस्ट और प्रश्नावली का उपयोग बच्चों के सीखने में सुधार करने के लिए ही करना चाहिए न कि बच्चों की उपलब्धि के रिपोर्ट कार्ड के रूप में।

क्र.स.	सुनना और बोलना	तिमाही 1	तिमाही 2	तिमाही 3
1	बातचीत और कहानियों को ध्यान से सुनना।			
2	छोटी कविताओं, अभिनय गीतों को सुनाना, दोहराना और संगीत और लयबद्ध गतिविधियों में भाग लेना।			
3	2 या 3 चरण के निर्देशों का पालन करने में सक्षम होना।			

4	उचित रूप से प्रयुक्त वाक्यों के माध्यम से सवालों का जवाब देना।			
5	उपयुक्त शब्दावली का प्रयोग करना और किसी विचार/वस्तु/चित्र/अनुभव के बारे में पूर्ण वाक्य बोलना।			
	शुरूआती पढ़ना (Emergent reading)			
6	प्रिंट जागरूकता और अर्थ निर्माण – कक्षा और परिवेश में छपी हुई सामग्री (प्रिन्ट) के बारे में जागरूकता प्रदर्शित करता है।			
7	अपने नाम और बोले गए शब्दों व लिखित शब्दों के समूह को जोड़ने और पहचानने में सक्षम होना।			
8	पुस्तकों के साथ जुड़ाव – आयु–उपयुक्त पुस्तकों (जैसे– चित्र, पुस्तकें, कविता पुस्तकें, कहानी पुस्तकें) की श्रृंखला को जानने–समझने की क्षमता प्रदर्शित करता है।			

❖ **घटना का नमूनीकरण (Event Sampling)**

जब शिक्षक बच्चों के व्यवहार या कार्य में सुधार करना चाहते हैं तब घटना का नमूनीकरण (Event Sampling) विशेष रूप से उपयोगी होता है। इसमें व्यवहार या कार्य के कारण के पीछे की घटना समय, तारीख, अन्य व्यक्तियों की उपस्थिति और स्थिति जैसे विवरणों को सम्मिलित किया जा सकता है।

इवेंट सैंपल – अवलोकन रिकॉर्ड	
प्रसंग : यह 5–6 वर्ष के बच्चों की कक्षा थी। मैंने अपने बच्चों को समूह कार्य दिया था और अपनी टिप्पणियों को दर्ज किया। इससे मुझे आगे के काम के लिए उपयोगी अन्तर्दृष्टि मिली।	
बच्चों के नाम : रमेश, सुरेश, गीता, कविता	उम्र : 5–6 वर्ष
अवलोकन का समय और तारीख : DDMMYY,HH:MM	स्थान/सेटिंग : रचनात्मक गतिविधि, विद्यालय के परिवेश में
अवलोकन का उद्देश्य : बच्चों का समूह कार्य	
घटना का विवरण	**व्याख्या**
• मैने उन्हें 4 छोटे–छोटे समूहों में टहनियों और पत्तियों का उपयोग करके चित्र बनाने का काम दिया था।	• ये बच्चे अलग–अलग स्तरों पर हैं। • रमेश काम बिगाड़ने वाला व्यवहार प्रदर्शित करता है,

टहनी और पत्ती बाहर से इकट्ठा करना था, और फिर अन्दर आकर काम खत्म करना था। • रमेश, सुरेश, गीता और कविता एक समूह में थे। रमेश ने टहनियों और पत्तियों को छुआ लेकिन कार्य को पूरा करने में योगदान नहीं दिया। वह अन्य बच्चों को बाधित करने के लिए इधर– इधर भागता रहा। • गीता और कविता ने एक–दूसरे का सहयोग किया और अपनी टहनियों और पत्तियों से एक पेड़ का मॉडल बनाया। • सुरेश इस प्रक्रिया का आनन्द लेते दिखा, लेकिन उसने ज्यादा योगदान नहीं दिया।	काम पर ध्यान केन्द्रित करने में सक्षम नहीं है। मुझे उसके साथ मिलकर इस पर काम करना होगा। • हालाँकि सुरेश काम बिगाड़ने वाला नहीं है, लेकिन उचित सामाजिक व्यवहार प्रदर्शित करने के लिए सहयोग की आवश्यकता होगी। • गीता और कविता समूहों में अच्छा काम कर सकते हैं और काम को पूरा कर सकते हैं।
मैं विशेष रूप से रमेश के काम बिगाड़ने वाले व्यवहार के बारे चिन्तित था। इसे और अधिक समझने के लिए, मैने रमेश का अवृत्ति–सैंपल अवलोकन करने का फैसला किया। जैसे–हर एक दिन बाद, दिन में 30 मिनट की अवधि में हर 5 मिनट में उसका अवलोकन करना और उसके व्यवहार की व्याख्या करना, जिसमें वह किसी दिए गए काम पर कितना समय केन्द्रित कर पाता है और उसके व्यवहार के कारण को समझना सम्मिलित है। मैंने इसे एक साधारण चेकलिस्ट के रूप में दर्ज कर लिया है। इसके बाद मैं उसके परिवार के साथ मिलकर इस समस्या को सुलझाने की कोशिश कर सकता हूँ। परिवार रमेश की रूचि के अनुसार उसे कुछ काम देगा और उसे पूरा करने पर रमेश को कुछ इनाम या प्रशंसा की प्राप्ति होगी।	

बच्चों के द्वारा किए गए क्रियाकलापों पर आधारित (Artefacts) आकलन

पोर्टफोलियो बच्चे के समग्र व्यक्तित्व में प्रगति का आकलन है। पोर्टफोलियो एक फाइल होती है जिसका निर्माण बच्चे स्वयं कर सकते हैं। इस पोर्टफोलियो के सामने पृष्ठ में बच्चों की सामान्य जानकारी के साथ–साथ बच्चों की रुचि, मित्र का नाम होता है। इसे बच्चे अपने पास या कक्षा में जगह होने पर रख सकते हैं। इसमें बच्चों द्वारा किए गए उन कार्यों का संग्रह होता है जिसे कक्षा शिक्षक द्वारा आवश्यकतानुसार कराया जाता है, जैसे– बच्चों द्वारा बनाए गए चित्र, लिखी गई कहानी, कविता या स्वयं का अनुभव, किसी घटना का वर्णन, कोई अच्छी बात, स्व–आकलन प्रपत्र आदि। पोर्टफोलियो में खास–खास चीजों को ही रखा जाए अन्यथा अवलोकन करने में कठिनाई होगी। प्रत्येक बच्चा अपने पोर्टफोलियो को आकर्षक ढंग से सजा भी सकता है। बच्चे भी अपने पोर्टफोलियो को देखकर पूर्व में एवं वर्तमान में किए गए कार्यों की तुलना कर स्व–आकलन कर सकते हैं।

कलाकृति (Artwork) के रूप में बच्चों के कार्य का नमूना :–

साक्ष्य के रूप में बच्चों का कार्य

मैं जिन 5–6 वर्ष के बच्चों के साथ का आकलन साझा कर रहा हूँ, उनके सीखने के प्रतिफलों में मोटर कौशल (motor skills) विकसित करना कई सीखने के प्रतिफलों में से एक है। बच्चों के इन कौशलों को विकसित करने में सहायता करने के लिए मैं जिन तरीकों का इस्तेमाल कर रहा हूँ, उनमें से कलाकृति भी एक तरीका है। बच्चों ने शुरू में और सत्र के अंत में जो कलाकृतियाँ बनाई हैं, उनमें साफ फर्क दिखाई देता है। ये कलाकृतियाँ उनकी प्रगति का स्पष्ट प्रमाण हो सकती हैं। यह इनमें से एक बच्चे के काम का नमूना है, जिसमें आप स्पष्ट तौर पर देख सकते हैं कि इस अवधि में हाथ और आँख के समन्वय और मोटर कौशल में प्रगति हुई है।

क्रियाकलापों पर आधारित (Artefacts) आकलन का विश्लेषण

सत्र की शुरुआत में

सत्र के अन्त में

आरंभिक बाल्यावस्था की इस प्रक्रिया का मतलब सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के दौरान बच्चे द्वारा बनाई गई वस्तु व किए गए कार्य से है। Artefacts बच्चे की क्षमताओं के बारे में जानकारी का एक समृद्ध स्रोत उपलब्ध कराती है। शिक्षक बच्चों के द्वारा पूरे किए गए कार्यों या उनके artefacts की तस्वीरें बच्चों के नाम के एक फोल्डर में रख सकते हैं। उदाहरण के लिए जैसे बच्चे द्वारा सत्र की शुरुआत में बनाया गया चित्र व सत्र के अंत में बनाए गए चित्र में प्रगति के माध्यम से सीखने के प्रतिफलों में मोटर कौशल का सतत् विकास होना। बच्चों के फोल्डर में रखे जाने वाले कार्य के अन्य नमूने जैसे–कलाकृति (Artwork) के रूप में बच्चों के काम के नमूने और वर्कशीट (Worksheet) हो सकते हैं।

9.5 आकलन का विश्लेषण

बुनियादी स्तर पर आकलन का उद्देश्य छात्रों के ज्ञान, कौशल, रूचि और जरूरतों को पहचानना है। आकलन शिक्षक और छात्र द्वारा मिलकर की जाने वाली प्रक्रिया है और यह सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का ही एक अंग है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में आकलन और कक्षा–शिक्षण को एक–दूसरे का पूरक माना गया है। आकलन उचित रूप से शिक्षण पद्धति को बेहतर कर पाए इसके लिए यह महत्वपूर्ण है कि आकलन का सावधानीपूर्वक विश्लेषण किया जाए। उल्लेखनीय है कि 'आकलन का विश्लेषण' और अधिगम प्रक्रिया में सुधार लाने के लिए किया गया प्रयास एक गतिमान प्रक्रिया का हिस्सा है। विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष छात्रों, अभिभावकों और अन्य संबंधित हितधारकों के साथ आकलन परिणामों को संप्रेषित करने के लिए भी आवश्यक है।

विश्लेषण से पूर्व :

यह महत्वपूर्ण है कि शिक्षक प्रत्येक आकलन की विश्लेषण योजना तैयार करें। विश्लेषण से पूर्व यह भी ध्यान देना होगा कि विभिन्न आकलनों के माध्यम से बच्चों के सीखने से संबंधित साक्ष्य एकत्रित हैं व उनका दस्तावेजीकरण व्यवस्थित रूप से किया गया है। इसमें कक्षा की प्रतिक्रियाओं, लिखित कार्य और देखे गए व्यवहार आदि से जानकारी को आत्मसात् करना सम्मिलित किया जाना चाहिए। योजना बनाते समय शिक्षक यह निर्धारित करें कि वह किन साक्ष्यों का विश्लेषण में प्रयोग करेंगे। बुनियादी स्तर पर राज्य पाठ्यचर्या इस बात पर जोर देती है कि विश्लेषण एक से अधिक साक्ष्यों पर आधारित होना चाहिए।

विश्लेषण के समय ध्यान रखी जानी वाली बातें–

- शिक्षक निष्पक्ष व पूरी पारदर्शिता से बच्चों की क्षमताओं, रुचि, सामर्थ्य और सीखने की जरूरतों का विश्लेषण करे। उनकी राय किसी भी कारक (जैसे–जाति, लिंग, धर्म, सामाजिक–आर्थिक स्थिति आदि) से प्रभावित ना हो।
- विश्लेषण बुनियादी चरण के सीखने के प्रतिफलों व दक्षताओं के अनुरूप होना चाहिए।
- आकलन के विभिन्न माध्यमों से (जैसे–अवलोकन, कार्यपत्रक, कला–कार्य आदि) बच्चों के सीखने से संबंधित साक्ष्य एकत्रित करने व उनका दस्तावेजीकरण करने की एक व्यवस्था होनी चाहिए।
- विश्लेषण का उद्देश्य मात्र बच्चों की गलतियों की पहचान करने तक सीमित नहीं है, शिक्षक को बच्चों की योग्यताओं को समझने का प्रयास करना चाहिए।

- विश्लेषण करते वक्त शिक्षक को अवधारणाओं की गलत समझ या वैकल्पिक अवधारणाओं की भी पहचान करनी चाहिए।
- बच्चों की सीखने की जरूरत को पूरा करने के लिए आकलन से एकत्रित किए गए साक्ष्यों का उपयोग योजना बनाने अथवा निर्देशों में बदलाव करने के लिए किया जाना चाहिए। इस तरह के निर्देश पहले से तय गतिविधि, क्षमता, समूहीकरण तथा स्वतंत्र रूप से गृहकार्य जैसे कई रूप ले सकते हैं।

विश्लेषण के बाद

आकलन का एक सबसे महत्वपूर्ण व जरूरी पहलू यह है कि अवलोकन या बच्चे के काम से प्राप्त जानकारी का उपयोग उनके सीखने में सहयोग (स्कैफोल्डिंग) के लिए किया जाए। इसलिए विश्लेषण को आधार मानकर, शिक्षक द्वारा आगामी कार्ययोजना का निर्माण किया जाना चाहिए।

यहाँ दी गई कुछ रणनीतियों का उपयोग किया जा सकता है—

- अधिकांश बच्चों द्वारा नहीं सीखे गए कौशलों पर शिक्षक द्वारा अलग से रणनीति बनाते हुए कार्य किया जाना चाहिए।
- उन बच्चों की पहचान करना जिन्हें विशेष दक्षताओं के संबंध में अतिरिक्त ध्यान व सहायता की आवश्यकता है और उनके लिए नए सिरे से कार्ययोजना बनायी जा सकती है। शिक्षकों को आवश्यक सहायता प्रदान करने के लिए एक निश्चित अवधि तक चिह्नित बच्चों के साथ अलग से काम करना चाहिए।

विश्लेषण के उदाहरण—

गणित की कक्षा में दो विद्यार्थियों लता और राज को जोड़ हल करने के लिए एक ही जैसे प्रश्न दिए गए। संयोगवश, दोनों छात्रों का एक ही प्रश्न गलत था।	
विश्लेषण करने पर	**विश्लेषण न करने पर**
शिक्षक दोनों बच्चों की कॉपी देख यह जानने का प्रयास करते हैं कि बच्चों से कहाँ चूक हुई। शिक्षक ने नोट किया कि लता ने कुछ गणना में त्रुटि की, जबकि राज को अवधारणा की समझ नहीं बन पाई है।	शिक्षक बिना गहराई से गलती का कारण समझे दोनों बच्चों के उत्तर गलत मान लेते हैं।
फीडबैक और कार्ययोजना – लता के लिए शिक्षक गणना पर अधिक समय बिताने का सुझाव देते हैं। राज के लिए, शिक्षक अवधारणाओं की समझ बनाने के लिए और प्रश्नों पर अभ्यास करने का अवसर देते हैं।	**फीडबैक और कार्ययोजना –** बिना फीडबैक प्राप्त किये शिक्षक बच्चों को अभ्यास के लिए और प्रश्न देते हैं।

9.6 आकलन का दस्तावेजीकरण और सम्प्रेषण–

आकलन का दस्तावेजीकरण सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को पूरा करने में एक महत्वपूर्ण कड़ी है। दस्तावेजीकरण भी आकलन के समान लगातार करते रहना चाहिए। यह शिक्षक को प्रत्येक बच्चे की विशिष्टता और आवश्यकता का उचित विश्लेषण करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है ।

आकलन के दस्तावेजीकरण में बच्चों की प्रगति, उनको होने वाली कठिनाइयाँ, उनके पारिवारिक व सामाजिक पृष्ठभूमि की सामान्य जानकारी और बच्चों के कार्यों के विश्लेषण को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए। दस्तावेजीकरण का उद्देश्य बच्चों से जुड़ी सभी जानकारियों को विद्यालय स्तर पर व्यवस्थित रूप में रखने से अधिक महत्वपूर्ण इसको शिक्षण कार्य को बेहतर बनाने में उपयोग किया जाना चाहिए।

बच्चों की प्रगति की जानकारी समग्र प्रगति पत्र के रूप में बच्चों और अभिभावकों के साथ साझा करना आवश्यक है। यह बच्चों और अभिभावकों के साथ शिक्षक का जुड़ाव बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और बच्चों से जुड़ी कठिनाइयों के समाधान में सहयोग करता है।

विद्यालय के प्रत्येक बच्चे का फोल्डर सुरक्षित रखना–

बच्चों द्वारा किए गए कार्यों जैसे कार्यपत्रक, पेंटिंग, कविता और कहानी आदि को एकत्रित करके सुरक्षित रूप में रखना चाहिए। दस्तावेजों को सुरक्षित रूप से रखने के लिए सभी बच्चों का अलग–अलग फोल्डर बनाना चाहिए।

शिक्षक का प्रत्येक बच्चे की गुणात्मक जानकारी रखना–

बच्चों की प्रगति की यात्रा एक दूसरे से अलग–अलग होती है और शिक्षक के रूप में सभी बच्चों की विशिष्टताओं को समझना आवश्यक है। बच्चे के विषय में गुणात्मक जानकारी को लिखना और उनका विश्लेषण करना चाहिए।

- बच्चों की क्षमताओं और चुनौतियों के बारे में लिखना और दस्तावेज एकत्रित करना ।
- विकास और सीखने की प्रगति के बारे में लिखना और दस्तावेज एकत्रित करना ।
- बच्चों की रूचियों के बारे में जानना और उनके द्वारा किए गए कार्यों के बारे में लिखना।
- सुदृढ़ करने की आवश्यकता वाले क्षेत्रों के बारे में लिखना और दस्तावेज एकत्रित करना।

पारिवारिक पृष्ठभूमि की सामान्य जानकारी

बच्चों की प्रगति और उन्हें होने वाली कठिनाइयों को समझने के लिए उनके पारिवारिक पृष्ठभूमि को समझना चाहिए। बच्चों का कक्षा में व्यवहार और क्रियाकलापों में प्रतिभागिता उनके आस–पास की परिस्थितियों द्वारा प्रभावित होती है। बच्चों के पारिवारिक परिदृश्य की जानकारी शिक्षक को उनकी प्रगति, क्षमताओं और विशेष आवश्यकताओं को समझने के लिए आवश्यक है।

9.7 आकलन का उपयोग

आकलन की उपयोगिता निम्नलिखित बिन्दुओं से समझा जा सकता है–

❖ **कक्षा–शिक्षण की प्रक्रियाओं में बदलाव लाना :** आकलन के बाद शिक्षक को आवश्यतानुसार अपनी कक्षा–कक्ष की प्रक्रियाओं में बदलाव करना चाहिए। बच्चों की आवश्यकताओं के अनुसार उचित बैठक व्यवस्था

करनी चाहिए। बच्चों को व्यक्तिगत रूप से, जोड़ों में और छोट–छोटे समूह में व्यवस्थित करके शिक्षण कार्य किया जाना चाहिए। इस प्रकार कक्षा–शिक्षण करने से कक्षा के सभी बच्चे सहज महसूस करते हुए अपनी बात शिक्षक और अन्य बच्चों से बिना झिझक कर सकेंगे।

- ❖ **पिछड़ रहे बच्चों के साथ शिक्षक द्वारा अपनी रणनीति में बदलाव करते हुए शिक्षण कार्य करना :** आकलन के बाद यह पता चल जाता है, कि बच्चों को क्या पता है और किन दक्षताओं पर अभी और कार्य करने की जरूरत है। शिक्षक को कक्षा में पिछड़ रहे बच्चों को सीखने–सिखाने कि प्रक्रिया में अधिक समय देना चाहिए। पिछड़ रहे बच्चों के साथ शिक्षक को अतिरिक्त प्रयास करते रहना चाहिए।
- ❖ **शिक्षक द्वारा शिक्षण योजना में आवश्यकतानुसार बदलाव करना :** आकलन के बाद शिक्षक जरूरत के अनुसार अपनी शिक्षण योजना का निर्माण करते हैं । शिक्षण योजना में शिक्षक कक्षा में अलग–अलग स्तर के बच्चों के लिए अलग–अलग गतिविधियों को सम्मिलित करना चाहिए।
- ❖ **जरूरत के अनुसार अधिगम शिक्षण सामग्री का निर्माण करना :** आकलन के उपरांत शिक्षक को बच्चों की अवधारणा निर्माण हेतु उपयुक्त अधिगम शिक्षण सामग्री का निर्माण करना चाहिए जिससे सभी बच्चे सरल, सहज और सुगम तरीके से सीख सकें।

9.8 आकलन करते समय ध्यान रखने योग्य बिंदु

फाउण्डेशनल स्टेज में बच्चों के सीखने के लिए सहज वातावरण और खेल/गतिविधि आधारित शिक्षण प्रक्रिया का विशेष महत्व है, आकलन करते समय शिक्षक को निम्नलिखित बिन्दुओं का विशेष ध्यान रखना चाहिए–

- ❖ आकलन के दौरान बच्चों के स्वास्थ्य, पोषण, शारीरिक और सामाजिक अवस्था को ध्यान में रखना चाहिए।
- ❖ शिक्षक को बच्चों के सीखने में विविधता पर ध्यान देते हुए, प्रत्येक अधिगम प्रतिफल के आकलन के लिए अलग–अलग तरीके का उपयोग करना चाहिए।
- ❖ आकलन का उद्देश्य बच्चों को पास या फेल करना नहीं है। बल्कि बच्चों के विकास के प्रत्येक आयाम पर ध्यान देना हैं। आकलन बच्चों को नए कौशल सीखने के लिए शिक्षक को दिशा निर्देश प्रदान करने वाला होना चाहिए।
- ❖ आकलन का बच्चों पर अतिरिक्त बोझ नहीं पड़ना चाहिए। निश्चित परीक्षण और परीक्षा आकलन के लिए अनुपयुक्त तरीके हैं। आकलन बच्चों की कमजोरी के स्थान पर उनकी क्षमताओं पर केंद्रित होना चाहिए।
- ❖ आकलन बच्चों के सीखने के अनुभव का एक स्वाभाविक हिस्सा होना चाहिए।
- ❖ आकलन उपयुक्त और सूचना का भरोसेमंद स्रोत होना चाहिए। अधिगम प्रतिफल और आकलन का संबंध स्पष्ट होना महत्वपूर्ण है।
- ❖ आकलन से जुड़ी सभी जानकारी को व्यवस्थित रूप से रखना चाहिए। शिक्षक प्रत्येक बच्चे के प्रगति और उनके विषय में गुणात्मक वर्णन कर सकें।

9.8 समग्र प्रगति पत्रक (Holistic Progress Card-HPC)

समग्र–प्रगति पत्रक एक ऐसा अभिलेख है, जिससे बच्चों की बहुआयामी प्रगति ट्रैक की जा सकती है। यह कार्ड

बच्चों की रुचि, उनकी अभिक्षमताएँ, सीखने की जरूरतों व प्रतिफलों को समग्र रूप से दर्शाता है। इस पत्रक के आधार पर शिक्षक यह निर्णय ले सकतें हैं कि बच्चों को कौन सी दक्षताएँ विकसित करने में अधिक सहयोग की जरूरत है। इस ट्रैकर के माध्यम से शिक्षक बच्चों की विभिन्न दक्षताओं की जानकारी एकत्रित कर बच्चों के अभिभावकों को भी साझा कर सकते हैं। माता–पिता, शिक्षक के साथ मिलकर बच्चे की अधिगम प्रक्रिया मे बेहतर सहयोग करने के लिए योजना भी बना सकते हैं।

समग्र प्रगति पत्रक कैसे और कौन भरें ?

समग्र प्रगति पत्रक छः मुख्य आयामों मे बच्चों की प्रगति को अभिलेखित करता है।

इस प्रकार की 360 डिग्री व्यापक प्रगति का रिकॉर्ड शिक्षकों, सहपाठियों, और बच्चों के अभिभावकों के परस्पर सहयोग से ही संभव है। इसके अतिरिक्त बच्चे अपना स्व–आकलन कर इस समग्र पत्रक में स्वयं भी जोड़ सकते हैं।

1. **शिक्षकों की भूमिका :** शिक्षक बच्चों के विकास के सभी आवश्यक पहलुओं के आकलन को प्रगति पत्रक के रूप में संकलित कर सकते हैं। समग्र प्रगति पत्रक भरने के लिए शिक्षकों को कई अवलोकनों को एकीकृत करना होगा और निर्धारित समय अवधि पर इसे पत्रक में दर्शाना होगा। उदाहरण के लिए–कक्षा में बच्चों का प्रदर्शन, उनकी रुचि, अन्य बच्चों के साथ गतिविधियों मे भागीदारी, बच्चों के द्वारा किए क्रियाकलाप की समीक्षा के आधार पर शिक्षक बच्चों के सामाजिक व भावात्मक विकास पर टिप्पणी कर सकते हैं।

2. **अभिभावकों की भूमिका :** समग्र प्रगति पत्र मे बच्चों के माता पिता बच्चे का घर में व्यवहार, उनके शारीरिक विकास से जुड़ी जानकारी, और अन्य टिप्पणी भी जोड़ सकते हैं।

3. **सहपाठियों की भूमिका :** राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अनुसार बुनियादी स्तर पर सहपाठियों की अहम भूमिका होती है। इसलिए यह महत्वपूर्ण कि बच्चों की प्रगति और विकास के विश्लेषण में भी सहपाठियों की टिप्पणी और उनके आकलन को जगह दी जानी चाहिए। इस प्रकार के आकलन का एक उदाहरण यह हो सकता है कि भावात्मक व सामाजिक दक्षताओं की समीक्षा हेतु शिक्षक सहपाठियों से चर्चा करें।

4. **स्व–आकलन :** स्वयं बच्चों द्वारा किए गए स्व–आकलन को भी समग्र प्रगति कार्ड मे जगह दी जानी चाहिए। समग्र प्रगति पत्रक में स्वयं की प्रगति देखकर बच्चों में सीखने की चाह को भी बढ़ावा मिलता है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उत्तर प्रदेश में किए जाने वाले आकलन में सुझाव

वर्तमान में उत्तर प्रदेश में बुनियादी स्तर पर कक्षा 1 और कक्षा 2 में वार्षिक/अर्धवार्षिक परीक्षाओं के साथ ही State Assessment Test और NIPUN Assessment Test के माध्यम से मुख्यतः योगात्मक आकलन की पद्धति प्रचलन

में है। कक्षा 1 और कक्षा 2 के लिए अभ्यास पुस्तिकाओं में प्रत्येक सप्ताह ''मैने सीख लिया'' पत्रक एवं आधारशिला क्रियान्वयन संदर्शिकाओं में दी गई शिक्षण योजनाओं तथा आकलन ट्रैकर के माध्यम से रचनात्मक आकलन करने की व्यवस्था की गई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रावधानों के अनुरूप बुनियादी स्तर पर प्री–प्राइमरी से लेकर कक्षा दो तक रचनात्मक पद्धति द्वारा ही समग्र रूप से (3600) बच्चों के सीखने को आगे बढ़ाने के लिए आकलन प्रक्रिया को संपादित किया जाना चाहिए।

समग्र प्रगति पत्रक की रूपरेखा

आकलन की आनंदपूर्ण एवं इंटरैक्टिव गतिविधियों से छात्रों में सीखने के लिए प्रेरणा व उत्साह बढ़ता है और उनमें समालोचानात्मक सोच और समस्या समाधान जैसे महत्त्वपूर्ण जीवन कौशल के विकास को प्रोत्साहन मिलता है।

1. बच्चे की निजी जानकारी दर्ज की जा सकती है जैसे कि–	
बच्चे का नाम	
बच्चे के अभिभावकों का नाम	
कक्षा	
उम्र	

2. बच्चे के परिवार की जानकारी जैसे कि–	
घर का पता	
भाई की संख्या	
बहन की संख्या	
माता का नाम	
पिता का नाम	

3. शारीरिक विकास की जानकारी जैसे कि–		
ऊँचाई	सत्र की शुरूआत में	सत्र के अंत में
वजन	सत्र की शुरूआत में	सत्र के अंत में
आँख की रोशनी		
सुनने की क्षमता		
CWSN (yes/no)		

शारीरिक और मोटर विकास से सम्बंधित जानकारी जैसे कि	**अप्रैल से जून की प्रगति (जून माह में दर्ज करें)**	**जुलाई से सितम्बर (सितम्बर माह में दर्ज करें)**	**अक्टूबर से दिसम्बर (दिसम्बर माह में दर्ज करें)**	**जनवरी से मार्च (मार्च माह में दर्ज करें)**	**टिप्पणी**
खेल—कूद में भाग लेती/लेता है।					
सरल शारीरिक क्रियाएँ करती/करता है।					
स्वयं को स्वस्थ और सुरक्षित रखने हेतु अच्छी आदतों का पालन करती/करता है।					
सामाजिक व भावनात्मक विकास से सम्बंधित जानकारी जैसे कि—	**अप्रैल से जून की प्रगति (जून माह में दर्ज करें)**	**जुलाई से सितम्बर (सितम्बर माह में दर्ज करें)**	**अक्टूबर से दिसम्बर (दिसम्बर माह में दर्ज करें)**	**जनवरी से मार्च (मार्च माह में दर्ज करें)**	**टिप्पणी**
कक्षा में अपनी पसंद , नापसंद के बारे में अपने सहपाठियों और शिक्षकों से बात करती/करता है।					
जरूरत पड़ने पर अपने सहपाठियों की मदद करता/करती है।					
सौंदर्य और सांस्कृतिक विकास से सम्बंधित जानकारी जैसे—	**अप्रैल से जून की प्रगति (जून माह में दर्ज करें)**	**जुलाई से सितम्बर (सितम्बर माह में दर्ज करें)**	**अक्टूबर से दिसम्बर (दिसम्बर माह में दर्ज करें)**	**जनवरी से मार्च (मार्च माह में दर्ज करें)**	**टिप्पणी**

संगीत, नृत्य और अन्य रचनात्मक एवं सांकृतिक गतिविधियों में भाग लेती / लेता है।					
कलाकृतियाँ बनाने में रूचि रखती / रखता है।					
भाषायी एवं गणितीय दक्षता विकास से सम्बंधित जानकारी जैसे—	**अप्रैल से जून की प्रगति (जून माह में दर्ज करें)**	**जुलाई से सितम्बर (सितम्बर माह में दर्ज करें)**	**अक्टूबर से दिसम्बर (दिसम्बर माह में दर्ज करें)**	**जनवरी से मार्च (मार्च माह में दर्ज करें)**	**टिप्पणी**
हाव भाव के साथ कविता / गीत सुनाती / सुनाता है।					
कहानी पर आधारित सवाल पूछती / पूछता है तथा शिक्षक द्वारा पूछे गए सवालों के जवाब देती / देता है।					
1 से 10 अंकों को समझकर लिख और पढ़ लेता है तथा वस्तुओं की संख्या को अंकों में व्यक्त कर लेता है।					
एक अंकीय जोड़ व घटाव के प्रश्नों को हल कर लेता है।					
दो अंकों की संख्या का जोड़ और घटाव के प्रश्नों को हल कर लेता है।					

❖❖❖

अध्याय-10

एकीकृत, समावेशी एवं सुरक्षित वातावरण निर्माण, दिन की योजना

फाउण्डेशनल स्टेज बच्चों के समुचित विकास और अधिगम का महत्वपूर्ण आधार है, जिसके लिए हमारा उद्देश्य एक सुरक्षित, सहायक, उत्तरदायी वातावरण प्रदान करना है, जो वैयक्तिक विभिन्नता के सापेक्ष प्रत्येक बच्चे की गरिमा बनाए रखता है। एकीकृत वातावरण बनाए रखने के लिए विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को ध्यान में रखना आवश्यक है। यहाँ शिक्षण संस्थान के सभी हित धारक (स्टेक होल्डर्स) की महत्वपूर्ण भूमिका हो जाती है। वो ऐसे बच्चों की पहचान कर विभिन्न संसाधनों और सहयोगात्मक रूप से उनकी समस्या का निराकरण करें। इससे विशेष आवश्यकता वाले बच्चे भी मुख्य धारा के बच्चों की तरह सीखने के उद्देश्यों को सहजता से प्राप्त कर सकेंगे। इसके लिए उन्हें एकीकृत सुरक्षित वातावरण प्रदान करना शिक्षक एवं शिक्षण संस्थानों का प्रमुख उत्तरदायित्व है।

10.1 समावेशी वातावरण :

समावेशी वातावरण बच्चों की विभिन्नताओं जैसे–उम्र, रुचियों, प्राथमिकताओं, क्षमताओं और सीखने की शैलियों को पहचानता है। बच्चे की शिक्षा, विकास और सहभागिता को बढ़ावा देता है। उनमें अपनेपन की भावना सुनिश्चित करता है एवं सकारात्मक सामाजिक संबंधों को बढ़ावा देता है।

बुनियादी स्तर पर समावेशी शिक्षा सुनिश्चित करने का अर्थ यह होगा कि सभी बच्चों को उनकी सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक विविधताओं के साथ, समान बुनियादी शिक्षा के अवसर प्राप्त हों जो उनकी विभिन्न आवश्यकताओं को संबोधित करते हों। उदाहरण के लिए ऐसी कक्षा जहां दिव्यांगता और बिना दिव्यांगता वाले बच्चे एक साथ पढ़ते हैं, जबकि उनकी अलग–अलग सीखने की जरूरतों पर ध्यान दिया जाता है।

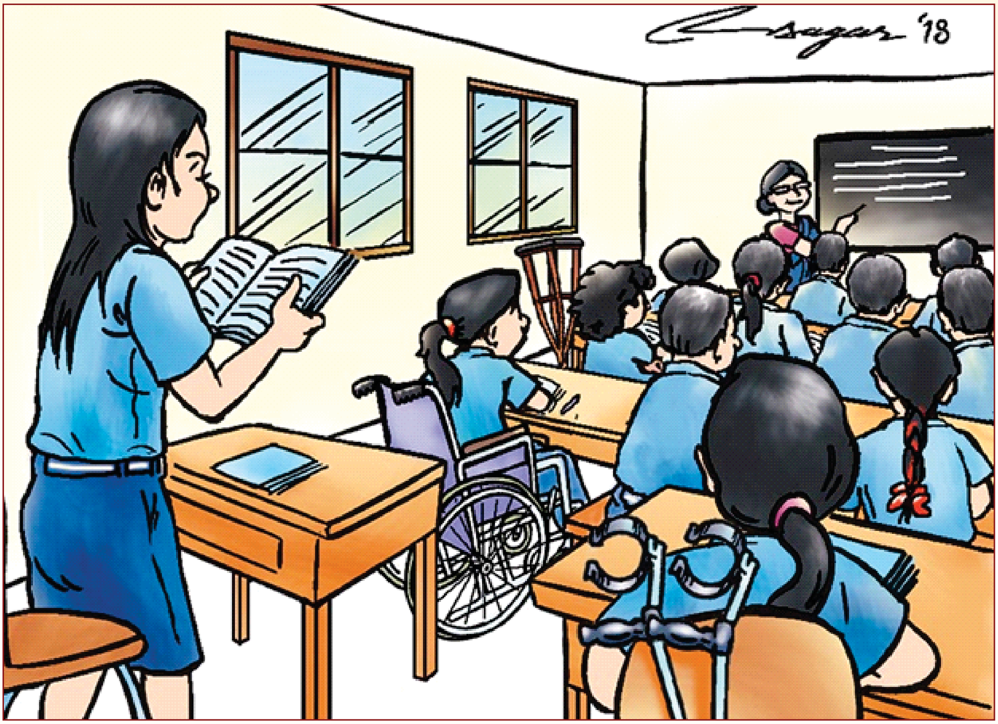

10.2 समावेशी कक्षा :

समावेशी कक्षा में बच्चों की विविधताओं – धार्मिक, जातीय, लिंगगत, सीखने की शैली या क्षमता को अपनाते हुए उन्हें सीखने के वातावरण में शैक्षिक अवसरों तक समान पहुँच प्रदान करना तथा सभी बच्चों को समान रूप से सुरक्षित, मूल्यवान, और सम्मानित समझना सम्मिलित है। समावेशी कक्षा उन छोटे बच्चों का सहयोग करती है जो असमानता और भेदभाव का सामना कर रहे हैं। इस संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति –2020 में भी सामाजिक तथा आर्थिक रूप से वंचित वर्गों (Socio Economicially Disadvantaged Group - SEDG) को मान्यता प्राप्त है जिसे अधोलिखित सारणी में दर्शाया गया है –

अन्य बच्चों से अनेक समानताओं के साथ ही प्रत्येक बच्चा स्वयं में विशेष, होता है। अतः सीखने के क्रम में भी प्रत्येक बच्चा एक ही समय में बिल्कुल एक जैसा सीख सके, आवश्यक नहीं। ऐसा होने का कारण बच्चों की पारिवारिक (सामाजिक–आर्थिक) पृष्ठभूमि, उसका स्वास्थ्य तथा अन्य अस्थायी या अपेक्षाकृत स्थायी कारण हो सकते हैं। वस्तुतः बच्चे के जीवन के पहले 8 वर्ष वृद्धि और विकास की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। प्रारंभिक वर्षों की शिक्षा बच्चे के विकास का एक महत्वपूर्ण चरण है, जो उनकी भविष्य की शैक्षणिक और सामाजिक सफलता की नींव तैयार करती है। उत्तर प्रदेश में, प्रारंभिक शिक्षा प्रणाली में सामाजिक–भावनात्मक और नैतिक

1	लिंग पहचान	पुरुष, महिला एवं ट्रांसजेंडर व्यक्ति
2	सामाजिक–सांस्कृतिक पहचान	अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, दुर्बल आय वर्ग और अल्पसंख्यक
3	भौगोलिक पहचान	गाँव, छोटे शहरों और आकांक्षी जिलों के छात्र
4	सामाजिक–आर्थिक स्थितियाँ	प्रवासी समुदाय, निम्न–आय समूह, कमजोर बच्चे, अनाथ, बाल तस्करी के शिकार बच्चे
5	दिव्यांग	21आर.पी.डब्ल्यू.डी. अधिनियम (2016) में मान्यता प्राप्त

शिक्षा (एस.ई.ई.एल.) को एकीकृत करने के महत्व की भी मान्यता बढ़ रही है। समावेशी कक्षा में बच्चों में सामाजिक, भावात्मक और नैतिक विकास के परिप्रेक्ष में सामाजिक–भावनात्मक और नैतिक शिक्षा (एस.ई.ई.एल.) को समझना आवश्यक है।

सामाजिक–भावनात्मक और नैतिक शिक्षा (एस.ई.ई.एल.) में विभिन्न कौशल और दक्षताएँ सम्मिलित हैं जो बच्चों के समग्र विकास में योगदान करती हैं, उन्हें समाज का जिम्मेदार और संवेदनशील व्यक्ति बनने के लिए तैयार करती है। सामाजिक–भावनात्मक और नैतिक शिक्षा (एस.ई.ई.एल.), एक शैक्षिक दृष्टिकोण है जो भावनाओं को समझने और प्रबंधित करने, सकारात्मक संबंध बनाने, जिम्मेदार एवं नैतिक निर्णय लेने से संबंधित कौशल और दक्षताओं की एक श्रृंखला विकसित करने पर केंद्रित है। इसे बच्चों के सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक विकास को बढ़ावा देने तथा सामाजिक रूप से जिम्मेदार नागरिक बनने में मदद करने के लिए निर्मित किया गया।

यह भविष्य की शिक्षा सम्बन्धित समस्याओं चुनौतियों की पहचान कर उनका यथासम्भव निराकरण करती है। उनके समुचित सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का ससमय निर्वहन में सहायता करती है। सर्वोत्तम पोषण और देखभाल करने वाला उत्प्रेरक वातावरण इस स्तर पर सीखने और विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

दैनिक कक्षा में सामाजिक–भावनात्मक और नैतिक शिक्षा के एकीकरण के लिये सामाजिक–भावनात्मक गतिविधियों को सम्मिलित करें, जैसे टीम वर्क, सहयोग, जिम्मेदारी लेना इत्यादि। दिन की शुरुआत सुबह की बैठक या सर्कल टाइम से करें जहाँ बच्चे एक–दूसरे का अभिवादन कर अनुभव साझा करते हैं और अपनी भावनाओं पर चर्चा करते हैं। आयु–उपयुक्त पुस्तकों और कहानियों का उपयोग करें जिनमें सामाजिक और नैतिक दुविधाओं का सामना करने वाले पात्र हों।

शिक्षकों को एक सेतु की भाँति प्रारम्भिक और आगे की स्कूली शिक्षा के बीच के अन्तर को भरने के लिये समावेशी कक्षा के विशेष आवश्यकता वाले बच्चों जैसे विकासात्मक विलंबन और अक्षमता की पहचान आवश्यक है।

10.3 विकासात्मक विलम्बन :

- विकास के मुख्य पड़ावों को ससमय न प्राप्त कर पाना विकासात्मक विलम्बन है।
- विलम्बन विकास के किसी भी आयाम (शारीरिक भाषा, मनोसामाजिक, संज्ञानात्मक इत्यादि) में हो सकता है।

जैसे–तीन वर्ष के बच्चे को छोटा और सरल वाक्य बोलने में संघर्ष करना पड़े। दो–तीन वर्ष में भी बच्चा आराम से बैठ ना पाए।

10.3.1 अक्षमता :

- ❖ शारीरिक अक्षमता – दृष्टि अक्षमता, श्रवण अक्षमता, हाथ–पैर से असमर्थता इत्यादि।
- ❖ बौद्धिक अक्षमता –स्वलीनता (Autism) सेरेब्रल पैलसी इत्यादि।
- ❖ यह अक्षमता शैशवावस्था में ही स्पष्ट होने लगती है जिससे सीखने, भाषा सम्प्रेषण, संज्ञान, व्यवहार, समाजीकरण या गतिशीलता में संघर्ष द्वारा इन्हें चिह्नित किया जा सकता है।

10.3.2 विकासात्मक विलम्बन एवं अक्षमता में अन्तर :

आमतौर पर लोग विकासात्मक विलम्बन और अक्षमता को एक दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त कर देते हैं। इसके अन्तर को समझना आवश्यक है। जहाँ बच्चे निरन्तर सहयोग प्रोत्साहन से विकासात्मक विलम्ब को कम समय में दूर कर लेते हैं वहीं विकासात्मक अक्षमता अपेक्षाकृत लम्बे समय तक चलती है। हालांकि संसाधनों और सहयोग से ऐसे बच्चों की अक्षमता सम्बन्धी समस्या का निराकरण किया जा सकता है।

10.3.3 फाउण्डेशनल स्टेज पर शिक्षण संस्थानों की भूमिका :

शिक्षकों को–

- ❖ यह अवधारणा स्पष्ट होनी चाहिए कि प्रत्येक बच्चा अपनी गति से सीखता है।
- ❖ सीखने और विकास के स्तरों में अन्तर प्रत्येक बच्चे की बढ़ती उम्र का हिस्सा है।
- ❖ सभी विकासात्मक क्षेत्रों में बच्चों की गतिविधियों का विकासात्मक कार्य (डेवलेपमेन्ट टास्क) प्राप्त करने का अवलोकन करते रहना चाहिए।

10.3.4 WHO द्वारा अवलोकन के लिए दी गयी आधारभूत प्रश्नों की सूची :

- अन्य बच्चों की तुलना में, क्या बच्चे को बैठने, खड़े होने या चलने में कोई गम्भीर विलम्ब हुआ?
- अन्य बच्चों की तुलना में क्या बच्चे को दिन में या रात में देखने में कठिनाई होती है?
- क्या बच्चों को सुनने में कठिनाई होती है?
- जब आप बच्चे को कुछ करने के लिए कहते हैं, तो क्या वह समझ नहीं पा रहा है कि आप क्या कह रहे हैं?
- क्या बच्चे को चलने या हाथ हिलाने में कठिनाई होती है या उसके हाथ या पैर में कमजोरी, अकड़न है?
- क्या बच्चे को कभी–कभी दौरे पड़ते हैं, उसका शरीर कठोर हो जाता है या बेहोशी आ जाती है ?
- क्या बच्चा अपनी उम्र के अन्य बच्चों की तरह काम करना सीखता है?
- क्या बच्चा बोल पाता है? क्या वह खुद के शब्दों में समझा सकता है? क्या वह कोई पहचानने योग्य शब्द कह सकता है?
- 3 से 9 साल के बच्चों के लिए पूछें : क्या बच्चे का बोलना किसी भी तरह से सामान्य से अलग है? उसके परिवार के अलावा अन्य लोगों द्वारा समझने के लिए पर्याप्त स्पष्टता नहीं है? 2 साल के बच्चों के लिए पूछें : क्या वह कम–से–कम एक वस्तु (उदाहरण के लिए एक जानवर, एक खिलौना, एक कप, एक चम्मच) का नाम बता सकता है?
- अपनी उम्र के अन्य बच्चों की तुलना में क्या बच्चा किसी भी तरह से सुस्त या धीमा दिखाई देता है?
- अवलोकन प्रश्न सूची के आधार पर दैनिक और साप्ताहिक रिपोर्ट तैयार करनी है।
- रिपोर्ट के आधार पर बच्चे की समस्या का निवारण व्यक्तिगत स्तर, अभिभावक के स्तर अथवा चिकित्सक के स्तर पर करने का प्रयास करते हुए बच्चे को केन्द्र में रखकर ही व्यवहार की सुनिश्चितता हो।

10.4 समावेशी वातावरण बनाने हेतु सुझाव

कक्षा का वातावरण आपकी कक्षा के सामाजिक, भावनात्मक और शैक्षणिक तत्वों का मिश्रण है। कक्षा का वातावरण समावेशी बनाने हेतु बैठने की सुव्यवस्थित व्यवस्था, कक्षा का भौतिक डिजाइन और मनोवैज्ञानिक वातावरण, सभी छात्रों से प्यार करना और उनके साथ समान व्यवहार करना इत्यादि को सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक है।

10.4.1 समावेशी वातावरण बनाने हेतु कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं :

क. सम्प्रेषण :–

चेहरे पर सौम्यता, मुस्कान, आवाज की प्रकृति, लहजा तथा भाषा के उपयोग के संदर्भ में संवाद का प्रबंधन करें। लचीली और वर्णनात्मक भाषा, गैर–निर्णयात्मक संचार (Non-judgemental communication) और आँख से आँख का सम्पर्क (Eye contact) बहुत महत्वपूर्ण है।

ख. शारीरिक भावभंगिमा (Body language) :–

संकेतों का उपयोग छात्रों और शिक्षकों को सांस्कृतिक रूप से एकजुट करता है और उनके बीच की दूरी को कम या समाप्त करता है।

ग. आवाज़ :–

कक्षा प्रबंधन में स्वर के आरोह–अवरोह का आवश्यकतानुसार ध्यान रखें । स्वर स्पष्ट और प्रभावी होना चाहिए अन्यथा वातावरण नीरस हो सकता है। बच्चों को बोलने का अवसर देना चाहिए। उचित मॉड्यूलेशन और ठहराव आवश्यक है।

घ. विद्यार्थियों को नाम से पुकारना :–

किसी छात्र के नाम का उपयोग संवाद का सबसे प्रभावी तरीका है क्योंकि यह छात्र को विशेष और सम्मानित महसूस कराता है।

ड़. कक्षा के नियम एवं निर्देश :–

समेकित वातावरण के निर्माण के लिए कक्षा प्रबंधन अत्यंत आवश्यक है। कक्षा के वातावरण को अधिक प्रभावी और लोकतांत्रिक बनाने के लिए शिक्षक के साथ ही बच्चों को भी कक्षा के नियम निर्धारण में सम्मिलित करना चाहिए। छात्रों को सूचित करने और उनकी राय जानने से नियमों की वैधता बढ़ जाती है।

च. बैठने की व्यवस्था :–

बैठने की सुनियोजित व्यवस्था बच्चों को बेहतर शैक्षणिक और सामाजिक विकास प्रदान करती है। बैठने की व्यवस्था कक्षा का वह भौतिक नियोजन है जो शिक्षक और विद्यार्थियों को पठन–पाठन के लिए प्रोत्साहित करती है। सीखने में कुर्सियों और मेजों की भौतिक व्यवस्था काफी महत्वपूर्ण और प्रभावी है। कक्षा–कक्ष व्यवस्था में विविधता, समूहीकरण एवं निकटता के मानक सिद्धांत का पालन करना भी समाहित है।

छ. व्यवहार के लिए स्पष्ट न्यूनतम मानक परिभाषित करें :–

- समुचित शब्दों का प्रयोग करें।
- दूसरों का सम्मान करें।
- हर किसी को अपनी बात कहने का अधिकार दें।

ज. निर्धारित मानकों को लगातार लागू करें :–

- बच्चों से आत्मीय व्यवहार करें।
- बच्चों से सहज वार्तालाप करें।
- स्नेह और प्रोत्साहनपूर्ण व्यवहार करें।
- उन्हें नियम का अनुपालन करने के लिये प्रेरित करें।
- यह जानने की कोशिश करें कि उनके अलग व्यवहार का कारण क्या है।
- अपमानजनक शब्दों का प्रयोग न करें।

झ. सभी बच्चों को सुनें :–

- ❖ बच्चों के बीच झगड़ों को सुलझाते समय सभी के पक्ष को समझें।
- ❖ अतिरिक्त कक्षा नियमों के निर्माण में उन्हें सम्मिलित करें।

सीखने के लिए एक ''स्कैफोल्डिंग '' दृष्टिकोण विकसित करें :–

- ❖ ''स्कैफोल्डिंग'' का अर्थ है सहारा देना ताकि सभी विद्यार्थी समान शिक्षा प्राप्त कर सकें।
- ❖ समान उद्देश्यों के साथ गतिविधियों की योजना बनाएं जिसमें गतिविधियाँ बच्चों की आवश्यकताओं के अनुरूप हों ।

ञ. अपनी कक्षा के प्रत्येक बच्चे की विशिष्ट आवश्यकताओं से अवगत रहें :–

- ❖ विभिन्न पृष्ठभूमि के बच्चों की विशेष आवश्यकताएँ होती हैं।
- ❖ उनकी समस्या तथा समाधान में भी भिन्नता होती है।

ट. ऐसे तरीकों से सहायता प्रदान करें जिससे आपकी कक्षा के सभी बच्चों को लाभ हो :–

- ❖ ध्यानाकर्षण के लिए यथासंभव चॉक, स्लाइड का रंग परिवर्तित करें ।
- ❖ अपनी आवाज, पिच और गति बदलें।

ठ. शांत, उद्देश्यपूर्ण सीखने का वातावरण बनाएं :–

- ❖ स्पष्ट रूप से परिभाषित करें कि कब बात और चर्चा करनी है या कब नहीं

ड. समय सारणी और मुख्य जानकारी स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करें :–

- ❖ समय सारणी एवं नियम ऐसे स्थान पर लिखें जो सभी बच्चों के लिए दृष्टिगत हों।
- ❖ समय सारणी एवं नियम स्पष्ट भाषा में लिखें ।
- ❖ वर्तमान में बच्चे जो सीख रहे हैं या बच्चों के पूर्व ज्ञान से सम्बंधित प्रमुख शब्दावली, तथ्य या अवधारणाएँ समय–समय पर प्रदर्शित करें।

बच्चों को यह चुनने दें कि उन्होंने जो सीखा है उसे कैसे दिखाना है, जैसे – रोल–प्ले, कहानी सुनाकर, चित्र बनाकर, खेल इत्यादि के माध्यम से।

ढ. व्यक्तिगत प्रगति महत्वपूर्ण है :–

- ❖ एक बच्चे की प्रगति की तुलना दूसरे बच्चे से न करें।
- ❖ सीखना कोई प्रतिस्पर्धा नहीं है।
- ❖ यह कभी न खत्म होने वाली प्रक्रिया और यात्रा है।

ण. अन्य सुझाव :–

- ❖ जितना हो सके बच्चे के बारे में जानें।

- बच्चे के लिए ऐसे लक्ष्य निर्धारित करके सफलता प्राप्त करें जो व्यवहारिक हो।
- बातचीत बच्चों की मातृभाषा में करें।
- सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करें।
- बच्चे से प्राप्त जानकारी को अन्य स्रोतों से भी पुष्ट करें।
- बच्चे को अभ्यास कार्य के लिए पूरा समय दें।
- विभिन्न क्षमताओं को उभारने वाली कहानियाँ और रोल–प्ले का उपयोग करें।
- अन्य बच्चों को विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के साथ संवाद करने और खेलने के लिए प्रोत्साहित करें।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए कक्षा से ही उनका मेन्टर/दोस्त चुनें।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के साथ स्नेहपूर्ण व्यवहार रखें तथा उन्हें सक्रिय सहभागिता के लिए प्रोत्साहित करें।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की सुरक्षा संबंधी सुनिश्चित स्पष्ट सूची बनाएं और अन्य सभी बच्चों को भी इसके बारे में बताएं और उनमें संवेदना पैदा करें।
- शिक्षकों को ऐसे व्यवहार मॉडल बनाने चाहिए जो वे अपने छात्रों में देखना चाहते हैं।
- बच्चों को अपनी भावनाओं को स्वस्थ तरीके से पहचानना और व्यक्त करना सिखाएं।
- संघर्ष समाधान की रणनीतियों के साथ बच्चों को सशक्त बनायें।
- बच्चों को सचेतन (माइंडफुलनेस) रूप से अभ्यास करने में मदद करें।
- सहकारी खेल और समूह गतिविधियों को प्रोत्साहित करें।
- बच्चों को सकारात्मक प्रतिक्रिया दें।

10.4.2 सुरक्षित वातावरण निर्माण

विद्यालय ही ऐसा स्थान है जहाँ बच्चे घर के अतिरिक्त सबसे अधिक समय व्यतीत करते हैं अतः विकास एवं अधिगम के लिए विद्यालय का वातावरण सुरक्षित होना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि आत्मसम्मान के साथ सुरक्षित वातावरण में विकास करना, प्रत्येक बच्चे का मौलिक अधिकार है।

सुरक्षित वातावरण बच्चों को घर से स्कूल आने, स्कूल के समय तथा घर वापसी तक सुरक्षा प्रदान करने के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इसमें किसी भी प्रकार की मानसिक प्रताड़ना, दुर्व्यवहार, हिंसा, दुर्घटना, आपदा इत्यादि से बचाव तथा उपचार को सम्मिलित किया गया है।

विद्यालय में कार्य करने वाला प्रत्येक व्यक्ति स्वस्थ, सुरक्षित तथा सकारात्मक विद्यालयी वातावरण के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। विद्यालयी सुरक्षा को अनेक भागों में बाँटा जा सकता है। जैसे–

क. भौतिक सुरक्षा

ख. भावात्मक सुरक्षा

ग. स्वास्थ्य एवं स्वच्छता

घ. यौन शोषण से सुरक्षा

ड़. साइबर सुरक्षा

क. भौतिक सुरक्षा :

भौतिक सुरक्षा के अन्तर्गत सुरक्षित विद्यालयी भवन, चिकित्सा कक्ष, परिसर, कक्षा–कक्ष, रसोईघर, शौचालय इत्यादि को सम्मिलित किया गया है।

सुरक्षित भौतिक वातावरण निर्माण हेतु कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं–

- ❖ विद्यालय, कक्षा, शौचालय और खेल के मैदान इत्यादि पर दिव्यांग बच्चों के आवागमन के लिए रैम्प की व्यवस्था होनी चाहिए। रैम्प के दोनों ओर रेलिंग लगी होनी चाहिए।
- ❖ विद्यालय भवन रेल ट्रैक, कारखानों इत्यादि से दूर निर्मित होना चाहिए।
- ❖ विद्युत उपकरणों की समय–समय पर जाँच की जानी चाहिए।
- ❖ विद्युत तार ढीले तथा खुले नहीं होने चाहिए।
- ❖ दृष्टिहीन या कमजोर दृष्टि वाले बच्चों के लिए विद्यालय का नक्शा तथा दिशा चिन्ह ब्रेल लिपि में उपलब्ध होना चाहिए, जिससे वे बिना किसी की सहायता के आसानी से आवागमन कर सकें।
- ❖ विद्यालय की चहारदीवार ऊँची होनी चाहिए।
- ❖ कक्षा–कक्ष की खिड़कियाँ बाहर खुलनी चाहिए तथा उसके काँच टूटे हुए नहीं होने चाहिए।
- ❖ बालकनी, रेलिंग आदि पर मानक के अनुसार रेलिंग लगी होनी चाहिए।
- ❖ विद्युत उपकरणों का प्रयोग सुरक्षा मानकों के आधार पर किया जाना चाहिए।
- ❖ अग्निशमन यंत्र उपयोग में लाने की स्थिति में होना चाहिए।

- शिक्षक अग्निशमन यंत्र का प्रयोग करने के लिए प्रशिक्षित होने चाहिए।
- स्कूल में निश्चित स्थान पर कुछ विशेष आपातकालीन सेवा से सम्बन्धित फोन नम्बर लिखे होने चाहिए। जैसे—दमकल, ऐम्बुलेन्स, चिकित्सा केन्द्र एवं पुलिस स्टेशन इत्यादि।
- हानिकारक पदार्थों जैसे—ब्लेड, कैंची और फिनायल इत्यादि बच्चों की पहुँच से दूर रखना चाहिए।
- आपातकालीन स्थिति में सूचना देने के लिए बच्चों के अभिभावकों की सहज सुलभता आवश्यक है जिसके लिए समय—समय पर उनसे सम्पर्क करते रहना चाहिए।

ख. भावात्मक सुरक्षा :—

- बच्चों को शारीरिक दण्ड देकर या अपमानजनक शब्दों का प्रयोग करके भयभीत या अपमानित नहीं करना चाहिए।
- डराने—धमकाने से पीड़ित विद्यार्थी में आत्मविश्वास की कमी हो जाती है तथा वह तनावग्रस्त हो जाता है।
- दैनिक गतिविधियों में अवसर की समानता होनी चाहिए, जिससे कोई भी विद्यार्थी उपेक्षित न हो। इसके लिए सकारात्मक प्रोत्साहन भी देना चाहिए।
- अस्थायी भावात्मक आघात तथा स्थायी चिकित्सा स्थिति तथा उसके उपचार की जानकारी सम्बन्धित शिक्षक को अवश्य करानी चाहिए।

ग. स्वास्थ्य एवं स्वच्छता :—

- रसोई खुले स्थान पर होनी चाहिए। रसोई घर में चिमनी तथा संवातन (Ventilator) की सुविधा होनी चाहिए।

- खाना बनाते तथा परोसते समय स्वच्छता का विशेष ध्यान रखना चाहिए।
- नशे से सम्बन्धित दुकानें विद्यालय से दूर होनी चाहिए।
- रसोई को कीटमुक्त बनाने के लिए खिड़कियों तथा दरवाजों पर जाली लगी होनी चाहिए।
- भोजन बनाते समय या उससे पूर्व किसी प्रकार के कीटनाशक का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
- शौचालय में साबुन तथा पानी की व्यवस्था होनी चाहिए।
- शौचालय की दैनिक सफाई होनी आवश्यक है।
- बच्चों के खिलौने जोखिम रहित होने चाहिए।
- प्लास्टिक के खिलौनों के स्थान पर भारतीय पारम्परिक खिलौनों (जो मिट्टी या लकड़ी से बने हों) का प्रयोग किया जा सकता है।
- मध्याह्न भोजन पौष्टिक व स्वच्छ होना चाहिए।
- प्राथमिक चिकित्सा किट उपलब्ध होनी चाहिए तथा प्रयोग में लाने की स्थिति में होनी चाहिए।
- शिक्षकों को प्राथमिक चिकित्सा का प्रशिक्षण देना अनिवार्य होना चाहिए।
- प्राथमिक चिकित्सा किट में कुछ प्राकृतिक औषधियों को सम्मिलित किया जा सकता है।
- विद्यालय परिसर में आयुर्वेदिक औषधियों के वृक्ष लगाए जाने चाहिए जिसे आवश्यकता पड़ने पर प्राथमिक उपचार हेतु प्रयोग में लाया जा सके।

घ. यौन शोषण से सुरक्षा :

- ❖ बच्चे के घर तथा विद्यालय के मध्य बहुत अधिक दूरी नहीं होनी चाहिए।
- ❖ बच्चों को विद्यालय तथा घर के बीच के रास्ते की जानकारी कई बार देनी चाहिए।
- ❖ शिक्षक यथासम्भव प्रयास करें कि बच्चे अधिकांश समय उनके सामने ही रहें।
- ❖ शिक्षकों तथा सभी वयस्कों को बाल यौन शोषण और POCSO अधिनियम के बारे में जानकारी होनी चाहिए तथा इसका कड़ाई से अनुपालन भी होना चाहिए।
- ❖ बच्चों को सुरक्षित व असुरक्षित स्पर्श में अंतर की पहचान कराना चाहिए।
- ❖ बच्चों को यौन शोषण सम्बन्धित घटना पर निःसंकोच बात करने हेतु उपयुक्त वातावरण प्रदान करना चाहिए।
- ❖ विद्यालय में मनोवैज्ञानिक, विशेषज्ञ या परामर्शदाता की नियुक्ति या उसकी सेवाएं ली जानी चाहिए।
- ❖ बच्चों को चाइल्ड हैल्पलाइन नम्बर 1098 के बारे में जानकारी देनी चाहिए।

ङ. साइबर सुरक्षा :–

- ❖ यह सुनिश्चित करें कि बच्चे अध्यापक या अविभावक की उपस्थिति में ही साइबर उपकरणों का प्रयोग करें।
- ❖ साइबर उपकरणों यथा मोबाइल, कम्प्यूटर, लैपटॉप इत्यादि पर चाइल्ड लॉक का प्रयोग करें ताकि बच्चे आयु उपयुक्त डाटा ही प्राप्त कर सकें।

- बच्चों को साइबर सुरक्षा के बारे में जागरूक करने के लिये समय–समय पर साइबर सुरक्षा से संबंधित कार्यशाला का आयोजन किया जाना चाहिए।
- साइबर क्राइम से बचाने के लिये अध्यापक निम्नलिखित बिंदुओं पर विद्यार्थियों को जागरूक कर सकते हैं –

बच्चों को बताएं कि –

- वे सुरक्षा सॉफ्टवेयर का प्रयोग करें तथा उसे अपडेट करते रहें ।
- किसी अपरिचित स्रोत से प्राप्त मैसेज, ईमेल, कॉल पर अपनी व्यक्तिगत तथा आर्थिक जानकारी साझा न करें।
- सोशल मीडिया पर किसी अपरिचित व्यक्ति से मित्रता न करें।
- नेट सर्फिंग करते समय आपत्तिजनक ऐड, पॉपअप्स पर क्लिक न करें।
- सोशल मीडिया पर प्राइवेसी सेटिंग का प्रयोग करें।

- ❖ अपरिचित स्रोतों से ऑनलाइन गेम या अन्य ऐप को डाउनलोड न करें।
- ❖ हानि पहुँचाने वाले मैसेज इत्यादि प्राप्त करने पर प्रतिक्रिया न करें अपितु उसे ब्लॉक कर दें अथवा अध्यापक को सूचित करें।
- ❖ लॉग इन अकाउंट का प्रयोग करने के उपरांत लॉग आउट अवश्य करें।

10.5 समय का नियोजन

बच्चों के पंचकोश यथा – अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश और आनंदमय कोश इत्यादि के विकास (सर्वांगीण विकास) हेतु एक सौहार्दपूर्ण एवं सुव्यवस्थित दिनचर्या का होना अति आवश्यक है जिससे बच्चे सुरक्षा भाव के साथ उस समयावधि में क्या–क्या करें, सुनिश्चित हो–

इस उद्देश्य के साथ समय का उपयुक्त नियोजन करना है। जिससे बच्चे सहज ही पंचपदीय विकास (अदिति, बोध, अभ्यास, प्रयोग तथा प्रसार) के सभी क्षेत्र में विकसित हो सकें।

10.5.1 दिन का नियोजन

- ❖ बच्चों में अपने आस–पास के वातावरण को जानने की नैसर्गिक प्रवृत्ति होती है। उनकी इस जिज्ञासा को समय मार्गदर्शित एवं संरचित गतिविधियों के माध्यम से शांत कर वांछित अधिगम सम्प्राप्ति की आवश्यकता होती है।
- ❖ जिसके लिए बच्चे की वैयक्तिक विभिन्नता, पूरी तरह देखरेख (अटैंशन स्पैन) को ध्यान में रखकर दिन के समय का समुचित नियोजन आवश्यक होता है।
- ❖ जिससे बच्चे के विकास के सभी आयाम पर पर्याप्त समय और ध्यान दिया जा सके।
- ❖ कुछ इस तरह की गतिविधियों का चयन समयावधि विशेष में चुनना उपयुक्त होता है, जो एक साथ विभिन्न आयाम के विकास में सहायक हो जिससे बच्चे रूचिपूर्वक सहयोग (जैसे– अभिनय पूर्ण एक अच्छी कहानी–इसमें बच्चे की भाषा के साथ–साथ सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक विकास, शिल्पकला/दस्तकारी, आउटडोर प्ले (क्षेत्रीय) फ्री–प्ले) करें।
- ❖ तय की गयी दिनचर्या में यह सुनिश्चित करना होगा कि बच्चों को अधिक से अधिक अवसर मिलें, जहाँ वे हर क्षेत्र में सहज रूप से अलग–अलग तरह के अनुभव प्राप्त कर सकें।

10.5.2 3–6 वर्ष की उम्र के बच्चों के लिए दिनचर्या की चित्रण सारणी : दिनचर्या नियोजन में आवश्यकतानुसार लचीलेपन का समावेश अवश्य रखना होगा। 3 से 6 वर्ष के बच्चों की सुनियोजित दिनचर्या के कुछ अलग–अलग उपयुक्त तरीके हो सकते हैं। इस आयुवर्ग के (3–6 वर्ष) बच्चों के दिनचर्या नियोजन के उदाहरण–

दिन	09:00 से 9:30 (30 मि)	09:30 से 10:00 (30 मि)	10:00 से 10:30 (30 मि)	10:30 से 11:00 (30 मि)	11:00 से 11:30 (30 मि)	11:30 से 12:00 (30 मि)
सोमवार	स्वागत सभा/गीत/बातचीत (सर्कल टाइम)	शारीरिक क्रियाकलाप (Psychomotor development) art and craft, pretend play , pulling	संख्या और भाषा अवधारणा (Cognitive development) Activity, flash card, letter and number games, sorting sizes, shapes and colors	भोजनावकाश (healthy and balanced diet)	Sociocultural awareness team work excurtion tour nearby	Emotional development कथानक, अभिनय पूर्ण
मंगलवार	स्वागत सभा/गीत/बातचीत	कक्षा में मनोकूल खेल Pushing, coloring etc.	Number and rhyme learning	भोजनावकाश (healthy and balanced diet)	Outdoor group game under observation निगरानी में बाहरी समूह–खेल	सहयोग भावना वाले खेल
बुधवार	स्वागत सभा/गीत/बातचीत	बाहर मनोनुकूलन संयोजित खेल (in proper observation)	संख्या और भाषा अवधारणा को चित्रों के माध्यम से पुष्ट करना	भोजनावकाश (healthy and balanced diet)	Story telling कहानी सुनाना	प्रकृति से समीप सम्बन्धी क्रियाकलाप
बृहस्पतिवार	स्वागत सभा/गीत/बातचीत	रोले प्ले /पंचतंत्र based and same	Memory based games, indoor games (recogn ition of number, name and objects)	भोजनावकाश (healthy and balanced diet)	कला/शिल्प /फ्री प्ले	जीवजंतु से प्रेमभाव सम्बन्धी गतिविधि
शुक्रवार	स्वागत सभा/गीत/बातचीत	कक्षा खेल (blocks, puzzle, tower making etc.)	विषय आधारित गतिविधि	भोजनावकाश (healthy and balanced diet)	सामूहिक खेल कूद / प्रोजेक्ट वर्क	नृत्य नाटक आधारित गतिविधि

इस तरह के दैनिक/साप्ताहिक नियोजन का फोकस बिन्दु–

3–6 वर्ष के बच्चों के लिए 3 घण्टे की समयावधि उपयुक्त होगी।

कब से	कब तक	अवधि	गतिविधि
09:00	09:30	30 मिनट	सर्कल समय /असेम्ब्ली प्रार्थना/गीत/ उछल–कूद
09:30	10:00	30 मिनट	L-1: मौखिक भाषा (मातृ भाषा से मानक भाषा की ओर)
10:00	10:20	20 मिनट	L-2: शब्द पहचान
10:20	10:35	15 मिनट	नाश्ता
10:35	11:25	50 मिनट	गणित (Numeracy)
11:25	12:10	45 मिनट	कला और शिल्प (art and craft)
12:10	12:55	45 मिनट	L-1: पढ़ना/लिखना
12:55	13:35	40 मिनट	भोजनावकाश
13:35	14:20	45 मिनट	L-2: मौखिक भाषा (शब्द पहचान)
14:20	15:00	45 मिनट	खेल

बच्चे का सर्कल टाइम, कहानी समय, संख्यापूर्व या भाषा सम्बन्धी अवधारणा विकास साथ ही फ्री–प्ले और कॉर्नर टाइम छुपन–छुपाई, आँख पर पट्टी, टेडी और टॉयस आदि होते हैं। इसमें अलग और स्वतंत्र गतिविधियाँ होती हैं।

6 से 8 साल के बच्चों के लिए दैनिक/साप्ताहिक दिनचर्या की चित्र सारणी–

इस वयवर्ग के बच्चों की समयावधि अपेक्षाकृत लम्बी और अधिक व्यवस्थित रखनी होगी जिससे विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से व्यक्तित्व के समस्त आयामों का विकास हो सकेगा। 6–8 वयवर्ग के बच्चों की विद्यालय में 5:30 घण्टे की समयावधि उपयुक्त है।

समयावधि दैनिक/साप्ताहिक सारणी मुख्य उद्देश्य में बदलाव किए बिना समय सारणी में आवश्यकतानुसार परिवर्तन किया जा सकता है।

❖❖❖

अध्याय-11

शिक्षण में सहयोगी पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण

राज्य पाठ्यचर्या : फाउण्डेशनल स्टेज उत्तर प्रदेश, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखाः फाउण्डेशनल स्टेज 2022 तथा शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के अनुक्रम में उत्तर प्रदेश के लिए एक परिवर्तनकारी और क्षमता युक्त मार्गदर्शी सिद्धांत है। राज्य पाठ्यचर्या : फाउण्डेशनल स्टेज, उत्तर प्रदेश के लिए स्थानीय विषयवस्तु, शिक्षणशास्त्र की ऐसी विधियाँ जो पारंपरिक मूल्यों, विश्वासों और आधुनिक वैज्ञानिक सिद्धांतों के अनुरूप हों, को लागू करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। फाउण्डेशनल स्टेज में विद्यालयों में एक पारस्परिक सौहार्द का वातावरण बनाने में प्रधानाध्यापकों, अध्यापकों, शिक्षाधिकारियों, अभिभावकों, विद्यालय प्रबंधन समिति और समुदाय सहित अन्य हितधारकों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

प्रारम्भिक बाल्यावस्था में बच्चे के सर्वांगीण विकास में आस–पास के वातावरण की अहम भूमिका होती है। परिवार, समुदाय, कक्षा एवं विद्यालय बच्चे के पारिस्थितिकी तंत्र का हिस्सा हैं। एक अच्छे तंत्र के निर्माण के लिए आवश्यकता है कक्षा एवं विद्यालय में सीखने के बेहतर माहौल की, जिम्मेदार परिवार एवं समुदाय की तथा तंत्र में सम्मिलित सभी अकादमिक एवं प्रशासनिक अधिकारियों की परिभाषित भूमिका एवं जिम्मेदारी की।

प्रारम्भिक बाल्यावस्था में बच्चे के अधिगम में परिवेशीय वातावरण, सशक्त शिक्षक, आवश्यक ढाँचा एवं सहयोगी संसाधन, अभिभावक व समुदाय का सकारात्मक सहयोग, शिक्षण में तकनीकी सहयोग और अकादमिक व प्रशासनिक पदाधिकारियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

विकासोन्मुख परिवार एवं समुदाय के बालक में फाउण्डेशनल स्टेज पर व्यक्तित्व में संस्कृति, सहनशीलता, सृजनात्मकता, भाषा, शिष्टाचार, सहयोग की भावना, मानवीयता, स्वास्थ्य सम्बन्धी आदतें, अभिवृत्ति व विचारधाराएं एवं नैतिकता आदि गुणों का धीरे–धीरे विकास होता है, जिससे वे कालान्तर में समृद्ध, समर्थ एवं समाज के प्रति जिम्मेदार नागरिक बन सकें।

11.1 सीखने हेतु परिवेशीय संसाधन एवं अनुकूल समुचित वातावरण का सृजन करना

शिक्षण कार्य बौद्धिक नैतिक, सामाजिक रूप से संभावनाओं से युक्त एवं दायित्वपूर्ण पेशा है। फाउण्डेशनल स्टेज पर शिक्षण कार्य करने वाले शिक्षकों में देखभाल करने, ऊर्जा, मेहनत, धैर्य और रुचिकर तरीके से काम करने जैसे शिक्षण सहयोगी विशिष्ट गुणों का होना नितान्त आवश्यक है, जिससे वे छात्रों के साथ सहज रूप से शिक्षण कार्य कर सकें।

11.1.1 फाउण्डेशनल स्टेज पर बहुउद्देशीय शिक्षक को तैयार करना

आरम्भिक स्तर पर छात्रों को सिखाने हेतु नैतिकतायुक्त, विश्वास, सम्मान, आत्मीय संबंध एवं परिवेशीय संसाधन आधारित गतिविधियों द्वारा अधिगम कराया जाना चाहिए। जहाँ छात्र भयमुक्त होकर अपनी बात कर सकें। शिक्षक संसाधन सम्पन्न, प्रेरक माहौल में निरन्तर सीखने वाला एवं सामंजस्य करने में दक्ष हो, इस हेतु इनका विभिन्न समय एवं प्रकरणों पर प्रशिक्षण कराया जाना चाहिए।

- फाउण्डेशनल स्टेज पर शिक्षकों की मांग और आपूर्ति के आकलन से यह सुनिश्चित करने में मदद होगी कि सही संख्या और विशिष्टता वाले विश्वविद्यालय बुनियादी स्तर में विशेषज्ञता वाले चार वर्षीय समेकित शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (Integrated Teacher Education Programme-ITEP) चला सकें। (राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020)
- इस पाठ्यचर्या में फाउण्डेशनल स्टेज के सभी तरह के परिवेशों– आँगनबाड़ी, बालवाटिका, अकेले चल रहे प्री–स्कूल, प्राइवेट विद्यालयों की प्री–स्कूल कक्षाओं एवं कक्षा 1 व 2 के स्तर पर विद्यार्थियों के लिए शिक्षक द्वारा समुचित अभ्यास के अवसर सुनिश्चित किये गये हैं।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 फाउण्डेशनल स्टेज सहित शिक्षा के पूर्व माध्यमिक स्तर तक शिक्षक योग्यता परीक्षा (Teacher Eligibility Test - TET) के दायरे में लाने की परिकल्पना करता है।
- शिक्षकों का पेशेवर विकास मार्ग शैक्षिक सुधारों का संचालन करने की योग्यता हासिल करते हुए सक्षम और चिंतनशील व्यक्ति बनाने वाला होना चाहिए, इस हेतु सभी आवश्यक ढाँचा व साधन उपलब्ध होने चाहिए।
- शिक्षकों को अपने पेशेवर विकास में विभिन्न साधनों व कार्यों –व्यापक विषयवस्तु, सहायक सामग्री विकसित करना, क्षमता संवर्द्धन सत्र आयोजित करना, कार्यस्थल निरीक्षण, गुणवत्ता, निगरानी एवं कक्षा–कक्ष से जुड़ी शिक्षकों के सामने आने वाली चुनौतियों आदि का समावेशन करते हुए अधिगम को सुनिश्चित करना चाहिए।
- फाउण्डेशनल स्टेज के शिक्षकों को विद्यार्थियों के लिए सीखने का सुरक्षित, प्रेरक और रूचिकर माहौल मुहैया कराना चाहिए, जिसकी क्रिया विधि खेलने एवं खोजने पर आधारित हो।
- NCERT, SCERT, DIETs जैसे अन्य महत्वपूर्ण अकादमिक संस्थान शिक्षकों के व्यवसायिक विकास के अवसरों को निरन्तर उपलब्ध कराना सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

11.1.2 शिक्षक की स्वायत्तता और जवाबदेही

विद्यार्थियों के सीखने के लिए शिक्षक की जवाबदेही तय की जानी चाहिए, लेकिन इस जवाबदेही की पूर्व शर्त शिक्षक का सशक्तिकरण और उसकी स्वायत्तता है। जवाबदेही महत्वपूर्ण तो है पर उतनी ही महत्वपूर्ण स्वायत्तता है। स्वायत्तता पर आधारित सशक्त बनाने वाली संस्कृति जवाबदेही की अनिवार्य शर्त है।

सीखने की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के लिए के लिए सक्षम और योग्य शिक्षक महत्वपूर्ण हैं। विद्यालय के भीतर सहयोगी माहौल और पारिस्थितिकी तंत्र शिक्षक के प्रभाव को बढ़ा देते हैं। शिक्षक विशिष्ट (unique) व्यक्ति होते हैं जिनके सीखने और शिक्षा के बारे में अपने विश्वास और सिद्धान्त होते हैं।

एक रचनात्मक और विवेकशील शिक्षक के लिए सीखने का हर प्रसंग स्वतःस्फूर्त और स्वाभाविक तरीके से उस सीखने को प्रोत्साहित करने का एक अप्रत्याशित अवसर होता है। खास मौकों पर सीखने के प्रसंग ऐसे अवसर सामने लाते हैं जहाँ जो पढ़ाया जाना था या जिसकी योजना बनाई गई थी, उसे रचनात्मक और विवेकशील शिक्षक छोड़ देता है। विषयवस्तु की योजना बनाने, उसे संगठित करने, क्रम निर्धारित करने, परिस्थितियों के मुताबिक बच्चों के लिए शिक्षण विधियों और विद्यार्थियों के सीखे हुए के आकलन करने के तरीकों के मामलों में शिक्षकों को शिक्षणशास्त्रीय स्वायत्तता अवश्य प्राप्त होनी चाहिए। यह फाउण्डेशनल स्टेज में निर्धारित पाठ्यचर्या के उद्देश्यों, दक्षताओं, सीखने के प्रतिफलों, शिक्षणशास्त्रीय पद्धतियों व सिद्धान्तों पर आधारित होना चाहिए।

11.1.3 अच्छे विद्यालय में प्रोत्साहन युक्त कार्य प्रणाली

विद्यालय की कार्य प्रणाली छात्र की आयु एवं सीखने की क्षमतानुसार नैतिकता, संस्कृति, पर्यावरण, संसाधन

संरक्षण, व्यक्तिगत स्वच्छता एवं पोषण जागरूकता से सम्बन्धित होनी चाहिए। फाउण्डेशनल स्टेज तक की कक्षाओं में पाठ्यक्रम सम्बन्धित गतिविधियों एवं करके सीखने जैसी शिक्षण विधाओं पर आधारित होना चाहिए।

11.1.4 फाउण्डेशनल स्टेज पर शिक्षकों की मांग एवं आपूर्ति में सामंजस्य

प्रारम्भिक कक्षाओं में छात्र की जिज्ञासा प्रबल होती है, वह वस्तुओं को जानने, समझने का प्रयास करता है। ऐसी स्थिति में छात्रों पर विशेष ध्यान दिये जाने की आवश्यकता होती है, इसीलिए फाउण्डेशनल स्टेज में छात्र–शिक्षक के अनुपात में सन्तुलन की विशेष आवश्यकता है।

11.1.5 बुनियादी ढाँचे से युक्त विद्यालय (अभिभावक एवं समुदाय के अनुसार)

उत्तर प्रदेश में ऑपरेशन कायाकल्प के द्वारा विद्यालयों की भौतिक स्थिति में सकारात्मक बदलाव आया है।

विद्यालय की मूलभूत सुविधाएँ–सुरक्षित पेयजल, शौचालय, डेस्क–बेंच, विद्युत आपूर्ति, खेल–कूद की सामग्री, हाथ धोने की मूलभूत सुविधा, बाल साहित्य, सीखने का कोना, विविध प्रकार की सहयोगी–अधिगम शिक्षण सामग्री, छात्र, अभिभावक एवं समुदाय आदि सभी को आकर्षित करते हुए शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सहयोग करती हैं।

11.1.6 कक्षा 1 एवं 2 के लिए पृथक कक्ष की व्यवस्था

फाउण्डेशनल स्टेज में कक्षा–1 एवं कक्षा–2 के छात्रों के शिक्षण हेतु पृथक कक्षाओं का होना आवश्यक है, क्योंकि छात्रों की अधिगम प्रकिया में क्रमशः चरणबद्ध उत्तरोत्तर अधिगम का नियमित रूप से होते रहना आवश्यक होता है।

11.1.7 फाउण्डेशनल स्टेज पर कार्यरत संविदा/अस्थायी शिक्षकों के वेतन, सेवा शर्तें एवं पेशेवर विकास की संभावनाएँ

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों पर सेवा शर्तों में बराबरी की बात करता है। इसका मतलब यह है कि जल्द–से–जल्द शिक्षकों का वेतन और सेवा शर्तें उनकी सामाजिक और पेशेवर जिम्मेदारियों के अनुरूप होंगी। वेतन और सेवा शर्तें प्रतिभाशाली शिक्षकों को शिक्षण के पेशे में बनाये रखने और आकर्षित करने के लिहाज से तय की जानी चाहिए। फाउण्डेशनल स्तर से लेकर सेकेण्डरी स्तर तक सभी शिक्षकों को उनके काम की जरूरतों के मुताबिक मानक सेवा शर्तों और समान वेतन ढाँचे पर भर्ती करना चाहिए।

सभी शिक्षकों के पास अपनी आजीविका में प्रगति करने (वेतन व पदोन्नति आदि के संदर्भ से) के अवसर होंगे हालाँकि वे शिक्षा के समान स्तर पर शिक्षक बने रहेंगे (जैसे– बुनियादी, प्रिपरेटरी, मिडिल या सेकेण्डरी)। इससे यह भी तय होगा कि किसी एक विद्यालय स्तर के भीतर शिक्षक के लिए आजीविका (वेतन और पदोन्नति) का विकास सुनिश्चित किया जा सके। इससे यह भी सुनिश्चित किया जा सकेगा कि शुरुआती स्तर से बाद के स्तरों में जाने का आजीविका विकास सम्बन्धी प्रोत्साहन नहीं हो। (हालाँकि अगर शिक्षक की इच्छा हो और उसके पास यथोचित योग्यताएँ हों तो विभिन्न शिक्षा स्तरों के बीच आजीविका बदलने की इजाजत दी जानी चाहिए)।

फाउण्डेशनल स्टेज पर कार्यरत संविदा/अस्थायी शिक्षकों का वेतन व सेवा शर्तें आकर्षक होनी चाहिए जिससे कि वह शिक्षण कार्य में अपना विशेष ध्यान दें, इसके अतिरिक्त इन शिक्षकों के लिए समय–समय पर प्रशिक्षण की भी व्यवस्था की जानी चाहिए।

11.1.8 आँगनबाड़ी एवं प्री–स्कूल का महत्व

विद्यालय आने से पहले आँगनबाडी एवं प्री–स्कूल के माध्यम से छात्रों को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया से जोड़ दिये जाने से इनकी ऊर्जा एवं जिज्ञासा का सही इस्तेमाल किया जा सकता है। इसका दूसरा पक्ष यह है कि यहाँ छात्र पोषण, विद्यालयी परिवेश एवं माहौल, स्वच्छता सम्बन्धी आदतों से भी परिचित हो जाते हैं।

11.1.9 शिक्षकों की तकनीकी दक्षता

वर्तमान परिवर्तनशील शैक्षिक स्वरूप में तकनीकी का प्रमुख स्थान है। इसलिए शिक्षक को भी तकनीकी रूप से दक्ष किया जाना जरूरी है। इस हेतु समय–समय पर शिक्षकों को कक्षावार व पाठ्य विषय सम्बन्धी तकनीकों का प्रशिक्षण दिया जाना जरूरी है।

11.1.10 शैक्षिक परिवेश में तकनीकी

वर्तमान समय में शिक्षण कार्य को तकनीक के उपयोग से प्रभावी बनाया जा सकता है। इसके विभिन्न आयाम होते हैं, जिससे शिक्षकों को परिचित कराना आवश्यक है। कक्षा शिक्षण को निम्न तरीकों से प्रभावी बनाया जा सकता है–

- पाठ योजनाः शिक्षण में पाठ्यक्रम आधारित परिवेशीय संसाधनों का उदाहरण प्रस्तुत करना।
- ई–कंटेन्ट एवं अधिगम शिक्षण सामग्री (L.T.M.) के रूप में प्रयोग करके कक्षा का माहौल रोचक बनाया जा सकता है।
- गतिविधियों द्वारा पाठ्य विषय की मूल संकल्पना से छात्रों को जोड़ना।
- विषयवस्तु आधारित विभिन्न शैक्षिक वीडियो, आरेख, ऐनीमेशन द्वारा छात्रों को पढ़ाए गए विषयों की पुनरावृत्ति कराना।
- पढ़ाए गए विषय के प्रत्येक पक्ष को छात्र प्रकट/प्रस्तुत करें।
- कक्षा अधिगम अनुसार अभ्यास पत्रक/आकलन प्रपत्र का निर्माण किया जा सकता है।

तकनीकी एवं शिक्षक का क्षमता संवर्धन द्वारा शैक्षिक माहौल का सृजन

वर्तमान समय के परिवर्तनशील शैक्षिक आयाम के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु शिक्षकों में बुनियादी तकनीकी कौशल का विकास जैसे– एम.एस. ऑफिस, इत्यादि की सहायता से प्रभावी शिक्षण सहज विद्यालय प्रबंधन संबंधित आंकड़ों का संकलन एवं विश्लेषण से क्षमता संवर्धन किया जाना चाहिए। वर्तमान परिवर्तनशील शैक्षिक स्वरूप में तकनीकी का प्रमुख स्थान है। इसलिए शिक्षक को भी तकनीकी रूप से दक्ष किया जाना जरूरी है। इस हेतु समय–समय पर शिक्षकों को कक्षावार व पाठ्य विषय संबंधित तकनीकों का प्रशिक्षण दिया जाना जरूरी है।

तकनीकी के माध्यम से शिक्षण में विद्यालय एवं समुदाय को जोड़ने के प्रयास

बालक अपने परिवेश एवं समुदाय से भी सीखता है। ऐसे में विद्यालय, अभिभावक एवं समुदाय के संबंध शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में उत्तरोत्तर वृद्धि करने वाले होने चाहिए। शिक्षा के महत्व को रेखांकित करने वाले ग्रामवार/विद्यालयवार व्हाट्सऐप ग्रुप का निर्माण किया जाए। जिसमें छात्र, अभिभावक, प्रधान, शैक्षिक स्वयंसेवी, एस. एम.सी. सदस्य एवं अन्य उत्सुक स्वयंसेवी को जोड़कर यथासंभव आवश्यक शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सहयोग लिया जाए। जैसे– छात्रों की विद्यालय में अधिकतम उपस्थिति सुनिश्चित करना, बाल मेला, वार्षिक उत्सव, अवकाश की

सूचना एवं विद्यालय में मनाए जाने वाले दिवसों एवं जयंती आदि के बारे में सभी को बताया जाए एवं इनका विभिन्न तकनीकी विधाओं से प्रचार–प्रसार किया जाना चाहिए।

शिक्षण तकनीकी एवं छात्र के व्यक्तित्व का निर्माण

वर्तमान समय में छोटे बालक व बालिकाओं को मोबाइल एवं कम्प्यूटर आदि बेहद तीव्र गति से आकर्षित कर रहे हैं और इन चीजों की प्राप्ति न होने से बालक/बालिकाओं के व्यवहार में नकारात्मक परिवर्तन दृष्टिगत हो रहा है। ऐसी स्थिति में विभिन्न प्रकार के वीडियो, गतिविधियों, पहेली व कहानियों आदि का निर्माण कर छात्रों में नैतिकता एवं उनके व्यक्तित्व का विकास किया जा सकता है।

अनुभव एवं बेस्ट प्रैक्टिस

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में अनुभव एवं बेस्ट प्रैक्टिस का महत्वपूर्ण स्थान है। इसके द्वारा शिक्षण में आने वाली शैक्षिक समस्याओं का सहज और व्यावहारिक समाधान किया जा सकता है।

विषय/प्रकरण से संबंधित शिक्षण में शिक्षकों द्वारा विभिन्न विधाओं का उपयोग किया जाता है, इनमें से बेहतरीन विधा को क्रमशः विद्यालय, संकुल, विकासखंड एवं जनपद पर जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान तक पहुँचाया जाए। इसके उपरांत संकलित कर जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के स्तर से ई–जर्नल का निर्माण कर प्रचारित–प्रसारित किया जाए। इसके साथ ही विशेषज्ञ की उपस्थिति में डायट जनपदीय वार्षिक नवाचार उत्सव का आयोजन कराना शैक्षिक तकनीकी के विकास को प्रेरणा प्रदान करेगा।

डिजिटल रिसोर्स की उपलब्धता एवं उनका सर्वोत्तम उपयोग

वर्तमान समय में शिक्षा के दोनों महत्वपूर्ण पक्षों–अकादमिक एवं प्रशासनिक में डिजिटल रिसोर्स का उपयोग एवं स्वीकार्यता तेजी से बढ़ रहा है। जिससे कार्य में तीव्रता एवं सुगमता हो गई है। सभी हित धारकों का डिजिटल एवं तकनीकी शिक्षा से सम्बन्धित प्रशिक्षण कराया जाना उचित एवं प्रासंगिक होगा।

छात्र के अधिगम में कक्षा–कक्ष का आन्तरिक एवं बाह्य वातावरण सहायक तत्व के रूप में

फाउण्डेशनल स्टेज पर बच्चों का मन खेल–कूद में अधिक लगता है। इसलिए कक्षा–कक्ष के आन्तरिक एवं बाहरी भागों में खेलकूद से सम्बन्धित पोस्टर/चार्ट, गतिविधियों आदि के द्वारा अधिगम को रोचक बनाया जाना उचित होगा।

11.2 अकादमिक और प्रशासनिक पदाधिकारियों की भूमिका

शिक्षा के उत्तरोत्तर विकास हेतु अकादमिक के साथ प्रशासनिक पदाधिकारियों की भूमिका तब अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है जब प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में चुनौतियां हों। उत्तर प्रदेश में जहाँ क्षेत्रफल के साथ–साथ जनसंख्या घनत्व और विस्तार अधिक है वहाँ पर इन पदाधिकारियों की जिम्मेदारी बढ़ जाती है। स्थानीय चुनौतियों को दूर करने में जिला स्तर के शिक्षाधिकारियों के साथ अकादमिक नेतृत्वकर्ताओं की भूमिका महत्वपूर्ण है।

11.2.1 प्रधानाध्यापक की भूमिका

विद्यालय का प्रधानाध्यापक मुख्य नेतृत्वकर्ता है, जिसे विद्यालय के प्रबंधन और जवाबदेही को सुनिश्चित करना है, साथ ही स्कूल में एक सहयोगी और सशक्त वातावरण का निर्माण करना है। प्रधानाध्यापक को विद्यालय में उपयुक्त संसाधन तक सभी बच्चों की पहुँच बनानी चाहिए और कक्षाओं का अवलोकन कर शिक्षकों को उपयुक्त रचनात्मक

प्रतिपुष्टि देनी होगी। उसे विद्यालय की एक योजना बनानी चाहिए जिसमें विद्यालय के उद्देश्यों का स्पष्ट वर्णन होना चाहिए। छात्र और अध्यापक के मध्य सम्बन्धों को प्रगाढ़ बनाने हेतु एक नेतृत्वकर्ता के रूप में कार्य करे और समय–समय पर कक्षा अध्यापन करे।

विद्यालयों में छात्रों की नियमित उपस्थिति हेतु अभिभावकों से सम्पर्क स्थापित कर शिक्षा के महत्व को समझाना चाहिए और उन्हें प्रेरित करना चाहिए। शिक्षक–अभिभावक बैठकों को नियमित रूप से आयोजित करना भी संपर्क हेतु एक उचित प्रयास है। इस प्रकार की बैठक में शिक्षा की चुनौतियों से अभिभावकों को अवगत कराया जा सकता है। बच्चों के विकास हेतु आगामी चुनौतियों से अभिभावकों को जागरूक करना चाहिए।

बैठक में अभिभावक को अपने विचार व्यक्त करने का अवसर प्रदान करना चाहिए। अभिभावकों के साथ बातचीत बार–बार होनी चाहिए। अभिभावकों को बच्चों की प्रगति के विषय में लगातार बताते रहना चाहिए और घर–घर जाकर नियमित संपर्क करना चाहिए। अभिभावकों को बच्चों के क्रमागत विकास के विषय में बताने की आवश्यकता है, जिससे बच्चों में होने वाले शारीरिक और मानसिक बदलाव को अभिभावक जान सकें। घर का शैक्षिक माहौल किस प्रकार बनाना है इस विषय पर भी अभिभावकों को जागरूक करने की आवश्यकता है।

11.2.2 जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट) की भूमिका

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान को इस बात पर विशेष ध्यान देना चाहिए कि सेवा पूर्व प्रशिक्षण के साथ–साथ सेवारत प्रशिक्षण में फाउण्डेशनल स्टेज हेतु शिक्षकों के सेवारत प्रशिक्षण में स्थानीय भाषा व बोलियों के प्रयोग हेतु बढ़ावा दिया जाए। स्थानीय संदर्भों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करें और उसका निर्माण कराएं। डायट को जिले के प्रत्येक विकास खण्ड में फाउण्डेशनल स्टेज पर शिक्षकों को सहयोग देने के लिए विशेषज्ञ अकादमिक विद्वानों का एक समूह विकसित करना चाहिए। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के विभागाध्यक्ष/वरिष्ठ प्रवक्ता को शिक्षण कार्य करना चाहिए। विभागाध्यक्ष अपने विभाग में एक ऐसी कार्य योजना बनाएं जो जनपद स्तर पर फाउण्डेशनल स्टेज हेतु शिक्षकों को आगामी शिक्षण चुनौतियों का सामना करने में मदद कर सके। प्रवक्ता को अकादमिक विशेषज्ञ समूह में अवश्य सम्मिलित करना चाहिए तथा पर्यवेक्षण आदि कार्यों हेतु इन्हें पर्याप्त समय प्रदान करना चाहिए।

11.2.3 संदर्भदाता समूह की भूमिका

उत्तर प्रदेश में संदर्भदाता समूह तीन स्तरों पर कार्य कर रहे हैं– राज्य स्तर पर राज्य संदर्भ समूह (एस.आर.जी.), विकासखण्ड स्तर पर अकादमिक संदर्भदाता समूह (ए.आर.पी.), न्याय पंचायत स्तर पर शिक्षक संकुल समूह। अकादमिक संदर्भदाता समूह को विद्यालयों में एक सहयोगात्मक माहौल बनाने पर कार्य करना चाहिए। अध्यापक, प्रधानाध्यापक के साथ एक ऐसा समन्वय विकसित करना चाहिए, जिससे सभी अपनी शैक्षणिक समस्याओं को खुलकर व्यक्त कर सकें। अकादमिक संदर्भदाता समूह का निर्माण इस प्रकार करना चाहिए कि अकादमिक संदर्भदाता विषय और पाठ्यक्रम का विशेषज्ञ हों।

समय के साथ–साथ शैक्षिक चुनौतियाँ परिवर्तनशील होती हैं, जिससे निपटने के लिए अकादमिक संदर्भदाता समूह की क्षमता संवर्धन के लिए समय–समय पर प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है। विशेषज्ञों के माध्यम से, राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान प्रयागराज एवं जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों आदि में प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन प्रदान किया जा सकता है।

11.2.4 शिक्षाधिकारी की भूमिका

शिक्षा अधिकारी को निरीक्षण कार्य समय–समय पर करते रहना चाहिए और विद्यालयों में पर्याप्त व्यवस्था हेतु संसाधनों के उचित प्रबंधन के साथ ही प्रशासनिक निर्णय द्वारा एक शैक्षिक वातावरण का निर्माण करना चाहिए। शिक्षक–छात्र अनुपात, मूलभूत आवश्यकताओं, अध्यापकों की उपस्थिति आदि पर विशेष कार्य करना चाहिए। शिक्षा के लिए जागरूकता हेतु समय–समय पर ग्राम चौपाल/नगर चौपाल का आयोजन करना चाहिए।

जनपद और ब्लॉक स्तर के शिक्षा अधिकारियों को अपने जनपद और ब्लॉक हेतु एक शैक्षिक योजना बनानी चाहिए जिसके अंतर्गत जनपद के शैक्षिक स्तर को बढ़ाने का कार्य हो। निरक्षर व्यक्तियों की पहचान कर उनके बच्चों को विशेष रूप से शिक्षा हेतु बढ़ावा देना चाहिए। शिक्षा अधिकारियों को अपने निरीक्षण कार्य के दौरान एक ऐसे माहौल का निर्माण करना चाहिए जिसमें सहयोगात्मक दृष्टिकोण हो। शिक्षकों की उपलब्धता, अधिगम शिक्षण संसाधन (किट, किताबें, अभ्यास पुस्तिका) की आपूर्ति और वितरण समय से कराना महत्वपूर्ण है। पाठ्यचर्या की जरूरतों और शिक्षक के पेशेवर विकास के लिए सशक्त निगरानी और प्रक्रिया की समीक्षा के साथ समुचित बजट का प्रावधान किया जाना चाहिए।

सावधानी और योजनाबद्ध ढंग से एकत्र किए गए आँकड़े सामाजिक व आर्थिक रूप से वंचित समूहों (Socially and Economically Disadvantaged Groups, SEDGs) की शिक्षा तक पहुँच को सुनिश्चित कराने में सहयोगी हो सकते हैं। खासकर 3 से 8 साल की उम्र वाले बच्चों की जनसंख्या का सही आकलन जरूरी है, जिससे कि समुचित योजना बनाई जा सके। इसके लिए आगे की योजना और निगरानी, दोनों की जरूरत होगी। जहाँ सम्भव हो, न्यूनतम प्रयास और अधिकतम जवाबदेही के साथ सटीक आँकड़े इकट्ठा करने में तकनीकी का इस्तेमाल किया जाना चाहिए ताकि ये आकड़े शीघ्र उपलब्ध हो सकें और आगे की रणनीति बनाई जा सके। फाउण्डेशनल स्टेज पर शिक्षा की गुणवत्ता का सूचक प्रतिफलों की उपलब्धि, खासकर कक्षा 3 में बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मकता (FLN) से सम्बन्धित प्रतिफलों की उपलब्धि होनी चाहिए। राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (NAS) ने इसकी निगरानी सम्भव बना दी है। राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (NAS) के अलावा, राज्य इस पर केन्द्रित अपने राज्य अधिगम उपलब्धि सर्वेक्षण (SLAS) बना सकते हैं।

जन सेवा संदेशों और मीडिया अभियानों के जरिए बड़े स्तर पर प्रचार–प्रसार, अभिभावकों से सीधी बातचीत और बड़े पैमाने पर उन सहज विधियों और सामग्रियों को प्रसारित करने की योजना भी बनानी चाहिए, जिनसे अभिभावक अपने बच्चों की बुनियादी शिक्षा की जरूरतों में मदद करने में खुद को सक्षम बना सकें।

11.2.5 राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद एवं इकाइयों की भूमिका

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के अकादमिक पदाधिकारियों को फाउण्डेशनल स्टेज के लिए पाठ्यचर्या कक्षा 1 व 2 के लिए पाठ्यपुस्तकों व कार्य पुस्तिकाओं का निर्माण करना चाहिए। फाउण्डेशनल स्टेज के लिए प्रयोग होने वाली सामग्री के अनुवाद के लिए राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद को स्रोत, संदर्भ और समन्वय संबंधी जिम्मेदारी उठानी चाहिए। राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद को अपने अधीनस्थ इकाइयों को अकादमिक कार्यों को वितरित कर विकेंद्रीकृत करना चाहिए। फाउण्डेशनल स्टेज के शिक्षकों के लिए डायट में मनोविज्ञान केंद्र की स्थापना कराना चाहिए।

11.3 प्रारम्भिक बाल्यावस्था में परिवार एवं समुदाय की भूमिका

शिक्षाविदों ने परिवार के वातावरण के महत्व को समझने के लिए कई शोध किए हैं। उनके अनुसार यह कहा जा

सकता है कि दो बालक भले ही एक ही विद्यालय में पढ़ते हों, एक ही शिक्षक से पढ़ते हों, फिर भी सामान्य ज्ञान, रुचियों, भाषा, व्यवहार और नैतिकता में अपने–अपने अलग वातावरण के कारण भिन्न होते हैं। परिवार ही शिशु की पहली पाठशाला होती है तथा समुदाय शिशु का विस्तारित वातावरण बनाता है। परिवार और समुदाय द्वारा प्रदान किए गए समर्थन, संसाधन और मूल्य एक बच्चे की शैक्षिक सफलता और आजीवन सीखने की क्षमता को प्रभावित करते हैं। इसलिए परिवार एवं समुदाय की शिक्षा में भागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण है। राज्य पाठ्यचर्या में परिवारों और समुदायों को प्रभावी ढंग से सम्मिलित करने में विभिन्न चुनौतियों का सामना भी करना पड़ेगा। इस संबंध में कुछ प्रमुख चुनौतियाँ हो सकती हैं, जैसे.

- ❖ परिवार और सामुदायिक पृष्ठभूमि में विविधता
- ❖ भाषा में विविधता से उत्पन्न संवाद संबंधित बाधाएँ
- ❖ सीमित उपलब्ध संसाधन
- ❖ अभिभावकों के पास समय की कमी
- ❖ भागीदारी में स्थिरता

इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए, परिवारों और समुदाय के सदस्यों को सक्रिय रूप से सम्मिलित करने की आवश्यकता है। लचीलापन, सांस्कृतिक जवाबदेही, विद्यालयों और समुदायों के बीच मजबूत साझेदारी बनाने की प्रतिबद्धता राज्य पाठ्यचर्या को सफलतापूर्वक तैयार करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। यह शिक्षा में परिवार और सामुदायिक भागीदारी को सार्थक बढ़ावा देगी। निम्नलिखित कुछ प्रभावी तरीके हो सकते हैं जिनसे परिवार और समुदाय की सहभागिता को बढ़ाया जा सकता है :

- ❖ **नियमित संवाद :** शिक्षकों, विद्यालय कर्मियों, माता–पिता और समुदाय के सदस्यों के बीच नियमित संवाद की आवश्यकता है। ई–मेल, टेलीविजन, रेडियो, समाचार पत्र, फोन कॉल, व्हॉट्सऐप या अन्य सोशल मीडिया जैसे विभिन्न माध्यमों का उपयोग करके उन्हें स्कूल में होने वाले कार्यक्रम, छात्र की प्रगति और आगामी गतिविधियों के बारे में सूचित किया जाना चाहिए।
- ❖ **अभिभावक : शिक्षक बैठक:** नियमित रूप से माता–पिता–शिक्षक बैठक आयोजित करें ताकि वे विद्यार्थी की प्रगति, विकास और किसी भी चिंता के बारे में चर्चा कर सकें। यह बैठक माता–पिता को अपने बच्चे के शिक्षा में सक्रिय भागीदारी के लिए एक मौका प्रदान करती है। विभिन्न प्रकार की बैठक जैसे–माता समूह, विद्यालय प्रबंध समिति या अभिभावक की बैठक का दिन एवं समय पुष्टाहार वितरण के दिन भी रखा जा सकता है, जिससे अभिभावकों की उपस्थिति को भी बढ़ाया जा सकता है। साथ ही सूचना का भी बेहतर प्रसार एवं प्रचार हो सकता है। बैठकों के समय में लचीलापन होना चाहिए और साथ ही अभिभावकों की उपलब्धता के अनुसार भी होना चाहिए। बैठकें छात्रों की कुल संख्या के अनुसार साप्ताहिक रूप से रखी जा सकती हैं।
- ❖ **परिवार के लिए कार्यशाला और प्रशिक्षण :** माता–पिता और समुदाय के सदस्यों को उनके बच्चों की शिक्षा की समझ बढ़ाने के लिए कार्यशाला और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं। इन कार्यक्रमों में उन्हें पाठ्यक्रम, शिक्षण पद्धतियों और घर पर अपने बच्चे की शिक्षा में सहयोग करने के तरीके के बारे में भी जागरूक किया जा सकता है।

- **स्वयंसेवक कार्यक्रम :** परिवार और समुदाय के सदस्यों को विद्यालय में स्वयंसेवक कार्यक्रम में सहयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। वे कक्षाओं, पुस्तकालय, अतिरिक्त–शैक्षणिक गतिविधियों (जैसे : प्राथमिक उपचार पर आधारित जागरूकता कार्यक्रम, पौष्टिक आहार की सरल एवं स्थानीय विधियाँ, स्थानीय व्यवसाय तथा आस–पास की फैक्ट्री एवं खेतों का दौरा या दर्शन आदि) या खास आयोजनों में सहायता कर सकते हैं, जिससे उन्हें समुदाय में सहभागिता का एहसास होगा।
- **सांस्कृतिक कार्यक्रम, बाल मेला और उत्सव :** समुदाय के सदस्यों को सम्मिलित करने के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम, कला उत्सव और स्थानीय उत्सव आयोजित किये जा सकते हैं जिसमें अभिभावकों की मदद ली जा सकती है तथा जिसके माध्यम से विद्यालय में पढ़ रहे बच्चों के समुदाय की विविधता और परंपराओं का प्रदर्शन भी किया जा सकता है।
- **समुदाय संपर्क कार्यक्रम :** स्थानीय संगठनों और समुदाय के नेताओं के साथ मिलकर विद्यालय की जरूरतों को पूरा करने के लिए समुदाय संपर्क कार्यक्रम आयोजित किया जाना चाहिए जिससे विद्यार्थियों की शिक्षा को समर्थन प्राप्त होगा तथा विद्यालय की आधारभूत आवश्यकताओं को भी पूर्ण किया जा सकेगा। जो एक बेहतर शैक्षिक वातावरण बनाने में सहायक होगा।
- **सहभागिता की प्रशंसा :** विद्यालय की गतिविधियों में परिवार और समुदाय के सदस्यों के योगदान को उचित सम्मान और प्रशंसा देकर उनकी सहभागिता का प्रोत्साहन करना चाहिए।
- शैक्षिक गतिविधियों में परिवारों और समुदायों के जुड़ाव के स्तर काफी भिन्न हो सकते हैं। कुछ परिवार शैक्षिक गतिविधियों में अत्यधिक सम्मिलित हो सकते हैं, जबकि अन्य कम हो सकते हैं। इसका आधार उनकी शैक्षिक योग्यता, अभिरूचि, जागरूकता, व्यवसायिक कुशलता एवं सामाजिक स्तर हो सकता है।
- पाठ्य सहगामी गतिविधियाँ सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील और स्थानीय समुदाय के मूल्यों, परंपराओं और आकांक्षाओं के लिए प्रासंगिक होनी चाहिए।
- लंबी अवधि में परिवार और सामुदायिक भागीदारी को बनाए रखने के लिए सभी हित धारकों से निरंतर प्रतिबद्धता और प्रयास की आवश्यकता होती है। अतः भागीदारी में स्थिरता बनाए रखने के लिए अभिभावकों से समय–समय पर संवाद करना चाहिए।
- शिक्षकों और विद्यालय के कर्मचारियों को परिवारों और समुदायों के साथ प्रभावी ढंग से सहयोग करने के लिए प्रशिक्षण और समर्थन की आवश्यकता हो सकती है, इसलिए शिक्षकों के क्षमता–संवर्धन को सम्मिलित किया जाना चाहिए।
- माता–पिता की चिंताओं और गलत धारणाओं को संबोधित करना और खुले संवाद को बढ़ावा देना विश्वास और जुड़ाव के निर्माण के लिए आवश्यक है। अतः प्रभावी संवाद किया जाना चाहिए।

उपरोक्त सुझावों का पालन करके, विद्यालय परिवार और समुदाय की सक्रिय सहभागिता, सहयोग और समर्थन की संस्कृति को प्रोत्साहित कर सकते हैं, जिससे छात्रों की शिक्षा में उन्नति का सकारात्मक परिणाम मिल सकता है।

अध्याय-12

शिक्षण के लिए पाठ्यक्रम का विकास, विषयवस्तु का चयन, संगठन और संदर्भीकरण

फाउण्डेशनल स्टेज पर राज्य पाठ्यचर्या में दिए गए शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति पाठ्यक्रम द्वारा ही सम्भव है। बच्चों के गुणवत्तापूर्ण सर्वांगीण विकास, लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास, नैतिक मूल्यों का विकास, तर्क और चिंतन करने का विकास शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति और एक अच्छा नागरिक बनाने के विकास हेतु उत्कृष्ट पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाना चाहिए। पाठ्यचर्या की रुपरेखा, पाठ्यक्रम के उद्देश्यों और सीखने के प्रतिफलों तथा दक्षताओं को निर्धारित करती है। अधिगम शिक्षण प्रक्रिया में उपयोग की जाने वाली विषयवस्तु में सीखने का उत्साहवर्धक वातावरण, अधिगम शिक्षण सामग्री (LTM) और किताबें सम्मिलित हैं। फाउण्डेशनल स्टेज पर विषयवस्तु बच्चों के सीखने के क्षेत्रों अर्थात संज्ञानात्मक, भावात्मक, गत्यात्मक और मनोक्रियात्मक कौशलों को विकसित करने वाली होनी चाहिए। विषयवस्तु का चयन दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों के साथ–साथ अपनाई जाने वाली शैक्षणिक पद्धति (Pedagogical approach) से निर्धारित होता है। बच्चे विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आते हैं, अतः विषयवस्तु संस्कृति के प्रति संवेदनशील होनी चाहिए। फाउण्डेशनल स्टेज पर विषयवस्तु या सामग्री का संगठन और प्रारूप बच्चों की प्रकृति के अनुरूप होना चाहिए।

फाउण्डेशनल स्टेज पर सीखने के सौहार्दपूर्ण वातावरण की व्यवस्था और सीखने के माहौल का निर्माण बहुत ही महत्वपूर्ण है। फाउण्डेशनल स्टेज पर बच्चे सबसे रोचक एवं प्रभावी ढंग से अपने आस पास के परिवेश में उपलब्ध वस्तुओं को उलट पलट कर और उससे सक्रिय रूप से जुड़कर सीखते हैं। इस समृद्ध संवेदी अनुभव को सुनिश्चित करने तथा शिक्षण को आनंददायी, रोचक, सरल और सुगम बनाने हेतु अधिगम शिक्षण सामग्री (LTM) कक्षाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

फाउण्डेशनल स्टेज के लिए राज्य पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम विकसित करने की प्रक्रिया के बारे में आगे विस्तार से बताया गया है। इसमें फाउण्डेशनल स्टेज पर सभी आयु वर्गों में विषयवस्तु चयन के सिद्धांतों और विचारों की रुपरेखा को भी उल्लिखित किया गया है। विषयवस्तु के चयन में भाषा, गणित और कला आदि को अपनी विशिष्ट मांग के अनुरूप को सम्मिलित किया गया है। सभी सामग्री को व्यवस्थित करने के विभिन्न तरीकों की रूपरेखा को भी उल्लिखित किया गया है। इसमें फाउण्डेशनल स्टेज के लिए उपयुक्त अधिगम शिक्षण सामग्री को भी सूचीबद्ध किया गया है। फाउण्डेशनल स्टेज के लिए उपयुक्त पुस्तकों के चयन और पाठ्यपुस्तक निर्माण के लिए दिशा–निर्देश भी दिये गये हैं। इसमें सीखने के उत्साहवर्धक वातावरण को कक्षा–कक्ष के अन्दर और बाहर भी व्यवस्थित करने के लिए दिशा–निर्देश और सुझाव दिए गए हैं।

12.1 पाठयक्रम का विकास

फाउण्डेशनल स्टेज पर राज्य पाठ्यचर्या के उद्देश्यों, सीखने के प्रतिफलों और दक्षताओं को निर्धारित करती है। बुनियादी स्तर पर शिक्षण के लिए विषयवस्तु का चयन प्रासंगिक शैक्षणिक पद्धतियों और उपयुक्त

आनन्दपूर्ण आकलन की प्रक्रियाओं के लिए मार्गदर्शक सिद्धान्त देती है। पाठ्यक्रम शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति का एक साधन है। पाठ्यक्रम का निर्माण पाठ्यचर्या के सुझावों के अनुरूप स्थानीय संदर्भों में बच्चों के सामाजिक, भावनात्मक और सांस्कृतिक वातावरण और प्रथाओं, शिक्षकों की क्षमता, विद्यालयों के बुनियादी ढाँचे और भौतिक वातावरण आदि पर विचार करने के बाद ही किया जाना चाहिए। राज्य पाठ्यचर्या में उल्लिखित प्रत्येक दक्षता और अभीष्ट सीखने के प्रतिफलों को पाठ्यक्रम का विकास करते समय उसमें अवश्य सम्मिलित किया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम को स्थानीय संदर्भ के लिए विचारों के साथ–साथ सीखने के प्रतिफलों, राज्य पाठ्यचर्या के सिद्धान्तों और दिशा–निर्देशों के आधार पर विषयवस्तु का चयन करना चाहिए। इसमें आगे के हिस्सों में विषयवस्तु चयन के सिद्धान्त, विषयवस्तु को संगठित करने की पद्धतियाँ, शिक्षण अधिगम सामग्रियों में से बेहतर और प्रासंगिक सामग्रियों का चयन आदि के बारे में विस्तार से बताया गया है। शिक्षकों द्वारा शिक्षण को रोचक और सुगम बनाए जाने के लिए सीखने के प्रतिफलों और विषयवस्तु चयन के आधार पर, पाठ्यक्रम को उन गतिविधियों के अनुक्रम और सीखने के अनुभवों को स्पष्ट करना चाहिए। इस अनुक्रमण के लिए विभिन्न सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने के लिए समय आवंटन को उचित रूप से संतुलित करने की आवश्यकता है। बुनियादी स्तर पर शिक्षको के लिए गतिविधि पुस्तकें और अन्य पुस्तिकाएं (Handbooks) विकसित किया जाना चाहिए। ये पुस्तकें पाठ्यक्रम और उसमे नियोजित अनुक्रम के बारे में शिक्षकों का मार्गदर्शन करेंगी। इसमें आगे विस्तार से पुस्तकों और पाठ्यपुस्तकों के बारे में दिया गया है। यह पाठ्यक्रम बनाने वालों के लिए मार्गदर्शन करेगा। पाठ्यक्रम का विकास करते समय समग्र रूप से आनन्दपूर्ण आकलन हेतु व्यापक दिशा–निर्देश तैयार करना चाहिए, जो पाठ्यक्रम में समग्र रूप से सीखने के प्रतिफलों की उपलब्धि की जाँच करता है, तथा बच्चों के सीखने को आगे बढ़ाने में सहायता करता है। इन दिशा–निर्देशों से शिक्षकों को विद्यालय में आयोजित किए जाने वाले आकलन विकसित करने में सहायता मिलेगी। इस चरण के लिए लक्षित दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों के आधार पर पाठ्यक्रम को समग्र प्रगति कार्ड के लिए एक विशिष्ट प्रारूप तैयार करना चाहिए। फाउण्डेशनल स्टेज पर बच्चे खेल खेलने में बहुत अधिक रुचि रखते हैं, और बच्चों को सबसे अधिक आनन्द खेल खेलने में आता है। फाउण्डेशनल स्टेज पर पाठ्यक्रम के विकास में इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि बच्चे सीखने के प्रतिफलों को खेल गतिविधियों के माध्यम से आनन्द लेते हुए प्राप्त कर सकें। पाठ्यक्रम में विविधता एवं लचीलापन होना अति आवश्यक है।

12.2 विषयवस्तु चयन के सिद्धांत

शैक्षिक उद्देश्य, प्रस्तावित उपलब्धि एवं दक्षताओं के द्वारा यह स्पष्ट होता है कि बच्चों के सीखने के अनुभव का निर्माण करने के लिए किस प्रकार की विषयवस्तु का उपयोग करना चाहिए। विषयवस्तु का चयन करते समय दार्शनिक, सामाजिक, वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों के महत्व को ध्यान में रखते हुए निम्नवत् बिंदुओं को विषयवस्तु में सम्मिलित किए जाने की आवश्यकता है:

❖ ऐसी सभी विषयवस्तु एवं गतिविधियों का समावेश होना चाहिए जो बच्चों के जीवन की आवश्यकताओं से संबंधित हों एवं भावी जीवन के लिए उपयोगी हों।

❖ शैक्षिक उद्देश्यों से सम्बन्धित होना चाहिए।

❖ उपयोगिता पर आधारित होना चाहिए।

- बाल केंद्रित होना चाहिए।
- रचनात्मक एवं सृजनात्मक क्षमता पर आधारित होना चाहिए।
- खेल एवं कार्य की क्रियाओं के अंतः सम्बन्ध पर आधारित होना चाहिए।
- संस्कृति एवं सभ्यता के ज्ञान का समावेश किया जाना चाहिए।
- पाठ्यक्रम में लचीलापन एवं व्यक्तिगत भिन्नता का समावेशन होना चाहिए।
- उत्तम आचरण के आदर्शों की प्राप्ति का साधन होना चाहिए।
- जीवन संबंधित क्रियाओं एवं अनुभवों के समावेश पर आधारित होना चाहिए।
- विषयवस्तु सह–सम्बन्धित होनी चाहिए।
- लोकतांत्रिक भावना के विकास पर केंद्रित होना चाहिए।
- वैश्विक सद्भावना विकसित करने हेतु विषयवस्तु को सम्मिलित किया जाना चाहिए।
- पर्यावरण की सुरक्षा एवं संरक्षण के प्रति जागरूकता सम्बन्धी क्रियाकलापों को सम्मिलित जाना चाहिए।
- रूढ़िवादिता को बढ़ावा ना मिले इसके लिए तर्कसंगत संदर्भों को समाहित किया जाना चाहिए।
- जीवन कौशल जैसे– समानुभूति, समालोचनात्मक चिंतन, सृजनात्मकता, स्वजागरुकता इत्यादि के विकास के लिए विषयवस्तु में विशेष स्थान होना चाहिए।
- बच्चों में स्वास्थ्य एवं स्वच्छता जागरूकता सम्बन्धी गतिविधियों एवं क्रियाकलापों को विषयवस्तु में समाहित किया जाना चाहिए।

12.2.1 भाषा के लिए विषयवस्तु

भाषा के लिए दी गयी विषयवस्तु से बच्चों की कल्पनाशीलता और भाषायी क्षमताएं तो बढ़ती ही हैं साथ ही पेड़–पौधे, जीवों, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं पर समझ हासिल करने में सहायता मिलती है। इसके लिए भाषा के विषयवस्तु में स्थानीय प्राकृतिक और मानवीय वातावरण से संबन्धित विषयवस्तु के साथ–साथ कहानियों और कविताओं का भी अच्छा संतुलन होना चाहिए।

क) प्रारम्भिक स्तर (0–3 वर्ष) पर पाठ्यपरक विषयवस्तु में चित्रों वाली सामग्री अधिक होनी चाहिए ताकि बच्चे उसका अर्थ आसानी से समझ सकें।

ख) फॉन्ट का साइज कम से कम 14 होना चाहिए जो बच्चों के लिए दृश्य हो साथ ही टेक्स्ट ऐसा हो कि वह चित्र को समझने मे मदद करे।

ग) शब्दावली का मानक लिखित रूप की तुलना मे परिचित और अपरिचित शब्दों का मिश्रण होना चाहिए जो सामान्य बातचीत मे बोले जाने वाली बोली, भाषा के करीब हो। (उत्तर प्रदेश के अलग अलग हिस्सों मे बोले जाने वाली बोलियों मे अलग–अलग शब्दावली होती है।)

विषयवस्तु का स्वरूप

क) पाठ्यपुस्तकें एवं कार्यपुस्तिकाएँ– कक्षा 1 से ही पाठ्यपुस्तकें और कार्यपुस्तिकाएँ उपलब्ध होनी चाहिए। पाठ्यपुस्तकें ऐसी हों जिनमें दृश्य सामग्री अधिक हो। कार्यपुस्तिकाओं में अलग–अलग तरह की गतिविधियाँ हों साथ ही कार्यपुस्तिकाएँ रंगीन व आकर्षक हों।

ख) बाल साहित्य– किसी भी साक्षारता की कक्षा में प्रचुर मात्रा में बाल साहित्य का होना और उन तक बच्चों की पहुँच का होना आवश्यक है। इनमें स्थानीय संस्कृति की कहानियाँ, गीत और साहित्य के अन्य रूप सम्मिलित होने चाहिए। उदाहरण के लिए भोजपुरी और अवधी में इस गीत को गाने के लिए सम्मिलित किया जा सकता है।

भोजपुरी	अवधी
सुन ला अँजोरिया चलि जा बजरिया।। दूध के कटोरा लावा मिसिरी के बोरा लावा, अम्मा के कोरा लावा नींद के झकोरा लावा।। दू गो हाथी घोड़ा लावा हाँके खातिर कोड़ा लावा, गाड़ी–मोटर जोड़ा लावा जूड़ पानी थोड़ा लावा ।। सुन ला अँजोरिया चलि जा बजरिया।।	चंदा मामा आय जाव भइया का सोवाय जाव।। दूध कटोरा दइके जाव पूड़ी सब्जी धइके जाव।। सुंदर सुंदर बस्ता लाव महंगा चाहय सस्ता लाव मेवा मिसिरी खस्ता लाव।। चदरा ओढाय जाव चंदा मामा आय जाव।।

कक्षा–कक्ष में बच्चों की किताबें ऐसी जगह पर रखी हों, जो बच्चों की पहुँच में हों और वे स्वतंत्र रूप से अपनी पसंद की किताबों को पढ़ सकें। शिक्षकों को कुछ समय अंतराल में इनकी जगहों को बदलते रहना चाहिए।

ग) कार्यपत्रक – शिक्षकों को कुछ ऐसे कार्यपत्रक बनाकर रखना चाहिए, जिसको देखकर बच्चे उनकी ओर आकर्षित हों।

घ) सामग्री – कार्डबोर्ड एवं सैंडपेपर से निर्मित फ्लैश कार्ड और अक्षर फॉर्म के अतिरिक्त खेल, पहेली एवं अन्य गतिविधियों का उपयोग करना चाहिए जिससे भाषा और साक्षरता की गतिविधियों को आकर्षक व रोचक बनाया जा सके।

ङ) श्रव्य–दृश्य सामग्री– कक्षा–कक्ष मे उपलब्ध डिजिटल उपकरणों का उपयोग करते हुए बच्चों को अच्छी गुणवत्ता वाली सामग्रियों को बच्चों को सुना व दिखा सकते हैं। यह सामग्रियाँ कक्षा 1 व 2 के बच्चों के लिए बहुत उपयोगी होती हैं। यह बच्चों के मौखिक भाषा विकास में सहायक हैं।

12.2.2 गणित के लिए विषयवस्तु–

भाषा के समान, गणित की विषयवस्तु स्थानीय वातावरण के साथ जुड़ाव दर्शाती है। आकृतियों को समझने या गिनने जैसी गणितीय गतिविधियों को परिवेशीय वातावरण के साथ जोड़ा जा सकता है।

क) पाठ्यपुस्तकें और कार्यपुस्तिकाएँ– कक्षा 1 और 2 में गणित के लिए अवधारणात्मक विषयवस्तु को एक ऐसी कहानी में पिरोने की आवश्यकता है जो बच्चों के लिए आकर्षक और दिलचस्प हो। पाठ्यपुस्तकों और कार्यपुस्तिकाओं की विषयवस्तु के साथ कक्षा में उपयुक्त जोड़–तोड़ भी किया जाना चाहिए। गिनना, आकृतियों को क्रम में लगाना, इन्हें ठोस रूप में जोड़–तोड़ के साथ–साथ कलम और कागज के माध्यम से भी सिखाने की जरूरत है।

ख) अभ्यास पत्रक– अभ्यास पत्रक का प्राथमिक उद्देश्य बच्चों को गणितीय कौशल का पर्याप्त अभ्यास कराना और उनके सीखने को बेहतर करना है। यह अभ्यास सार्थक सन्दर्भ में होना चाहिए और इसे विशेष तरह के गणितीय कार्यों पर ध्यान देना चाहिए। वर्कशीट में स्पष्ट निर्देशों के साथ पर्याप्त जगह भी होनी चाहिए।

गणित की विषयवस्तु व पाठ्यक्रम का निर्माण छात्र, अध्यापक, समाज तथा देश की आवश्यकताओं के अनुरूप निम्न बिन्दुओं को ध्यान रखकर किया जाना चाहिए–

1. गणित का पाठ्यक्रम बाल केन्द्रित होना चाहिए।
2. गणित का पाठ्यक्रम क्रिया प्रधान होना चाहिए। गणित की विषयवस्तु जो प्रयोगात्मक नहीं हो सकती, उन्हें खेल विधियों से आकर्षक एवं रुचिपूर्ण बनाया जा सकता है। इसके लिए सहायक सामग्री, चित्र, चार्ट, मॉडल, ग्राफ या अन्य बातों को अपनाकर इनका निर्माण तथा प्रयोग करना चाहिए।
3. विषयवस्तु को मनोवैज्ञानिक तथा तार्किक ढंग से व्यवस्थित करना चाहिए।
4. व्यक्तिगत भिन्नताओं को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम के निर्माण में अध्यापक की सहभागिता होनी चाहिए।
5. गणित में कठिनाई के स्तर को ध्यान में रखकर उद्देश्यों को आवश्यकतानुसार परिवर्तनीय बनाना चाहिए।
6. विषयों में सहसंबंध दर्शाना चाहिए।
7. गणित का विज्ञान में अधिकतम प्रयोग होना चाहिए।
8. पाठ्यक्रम लचीला व रूचिकर होना चाहिए।

9. गणित पाठ्यक्रम में पहेलियों तथा मनोरंजनात्मक समस्याओं का समावेश होना चाहिए।
10. संस्कृति तथा सभ्यता के संरक्षण के लिए ज्ञान के सिद्धांत का समावेश होना चाहिए।
11. गणित का पाठ्यक्रम जीवन से संबन्धित होना चाहिए।

12.2.3 कला के लिए विषयवस्तु–

प्रत्येक विषय में कला के माध्यम से सीखने के कौशल निहित होते हैं। कला सीखने के अनुभवों का विशेष सीखने के प्रतिफलों पर केन्द्रित गतिविधियों के रूप में नियोजित किया जाना चाहिए और विषयवस्तु विद्यालय के स्थानीय सन्दर्भ में ली जानी चाहिए। शिक्षक को सहजता व सरलतापूर्वक बच्चों के उभरते कौशल को अवसर देना, जिससे लेखन, रचनात्मकता, स्मृति, नवाचार और संवेदनात्मक कौशल का विकास देखने को मिलता है। कला की कक्षा के विषयवस्तु में स्वतंत्र भाव प्रकाशन के लिए स्थान देना (ग्रीन पट्टी पर कुछ भी लिखने बनाने का अवसर) या विद्यार्थी कॉर्नर का प्रयोग उनकी रुचि के अनुसार आर्ट, क्राफ्ट मिट्टी कला, कोलाज बनाना, प्राकृतिक फूल–पत्तियों के द्वारा रंगोली बनाना। इसी तरह गायन, वादन, नृत्य, तुकबंदी, कविता, कहावतें और कहानियों (लोकगीत व स्थानीय प्रसिद्ध गीत, प्रार्थना) के माध्यम से जोड़ना।

12.3 विषयवस्तु को संगठित करने की पद्धतियाँ

विषयवस्तु बच्चे के पूर्व ज्ञान एवं क्षेत्रीय ज्ञान को देखते हुए तैयार की जानी चाहिए। इसमें बच्चे की समझ, मानसिक स्तर, तार्किक समझ, भाषा, क्षेत्रीयता आदि को ध्यान में रखते हुए विषयवस्तु का निर्माण एवं संगठन करना चाहिए। यदि किसी कहानी की विषयवस्तु **'सत्य की जीत'** है तो हमारी कहानी भी उसी क्षेत्र, परिवेश, भाषा, बोली के अनुसार होगी और उसकी विषयवस्तु पूर्णतया सत्य पर आधारित होगी।

विषयवस्तु चयन के मानदण्ड को इस अर्द्धचक्र मॉडल से समझा जा सकता है:–

आरिम्भक वर्षों में सीखने के लिए विषयवस्तु को कई तरह से संगठित किया जा सकता है। सबसे अधिक इस्तेमाल किए जाने वाली कुछ पद्धतियों का वर्णन निम्नलिखित है–

12.3.1 परियोजना आधारित पद्धति (Project-based Approach)

फाउण्डेशनल स्टेज पर बच्चों का स्वयं करके सीखना कौशलों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और स्वयं करके सीखने से बच्चों में आत्मविश्वास को भी बढ़ावा मिलता है। यह पद्धति कौशलों का विकास, क्रम और श्रृंखला के रूप में करती है। बच्चे अपने पूर्व अनुभव का उपयोग करते हुए नई अवधारणाओं को समझते हुए नए कौशलों का विकास करते हैं। परियोजना आधारित पद्धति बच्चों को समस्या समाधान और चुनौतियों पर कार्य करने के लिए भी अवसर देती है। बच्चे जब अपने परिवेश से जुड़े मुद्दों पर कार्य करते है तब सीखना और अधिक सार्थक बन जाता है।

परियोजना आधारित पद्धति शिक्षण प्रक्रिया को लचीला और निरंतर बनाती है। बच्चों को अपनी गति से कार्य करने अथवा एक–दूसरे से सीखते हुए कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करती है। प्रश्न करना, छानबीन करना, खोज करना और विवेचना करना इस पद्धति को और प्रभावशाली बनाता है। परियोजना आधारित पद्धति परिणाम पर केन्द्रित न होकर प्रक्रिया पर जोर देती है जिससे बच्चे बिना असफलता के डर के कार्य को पूरा करते हैं और उनमें रचनात्मक चिंतन का विस्तार होता है। यह पद्धति बच्चों में जिज्ञासा बढ़ाती है और कार्य को पूरा करने हेतु नए–नए तरीके ढूँढने के लिए प्रोत्साहित करती है। परियोजना आधारित पद्धति एक समावेशी पद्धति है जो सहज रूप से सभी विषयों को एक साथ जोड़ती है और कौशलों को प्राप्त करने, अभ्यास करने और अनुप्रयोग के लिए समुचित अवसर देती है।

इसकी विशेषताओं को इस प्रकार समझा जा सकता है:–

12.3.2 कहानी आधारित पद्धति (Story-based Approach) कहानी आधारित दृष्टिकोण कहानी सुनाने से पहले, सुनाने के दौरान और बाद की गतिविधियों के इर्द–गिर्द संरचित होता है। सबसे पहले, शिक्षकों को अपने शिक्षण उद्देश्यों और अपने छात्रों की जरूरतों के अनुसार सावधानीपूर्वक कहानियों का चयन करने की आवश्यकता है। फिर उन्हें संभावित गतिविधियों के लिए विचार–मंथन करना चाहिए और एक पाठ योजना बनाना शुरू करना चाहिए। कहानी आधारित पद्धति की मुख्य विशेषताएँ निम्नवत् हैं–

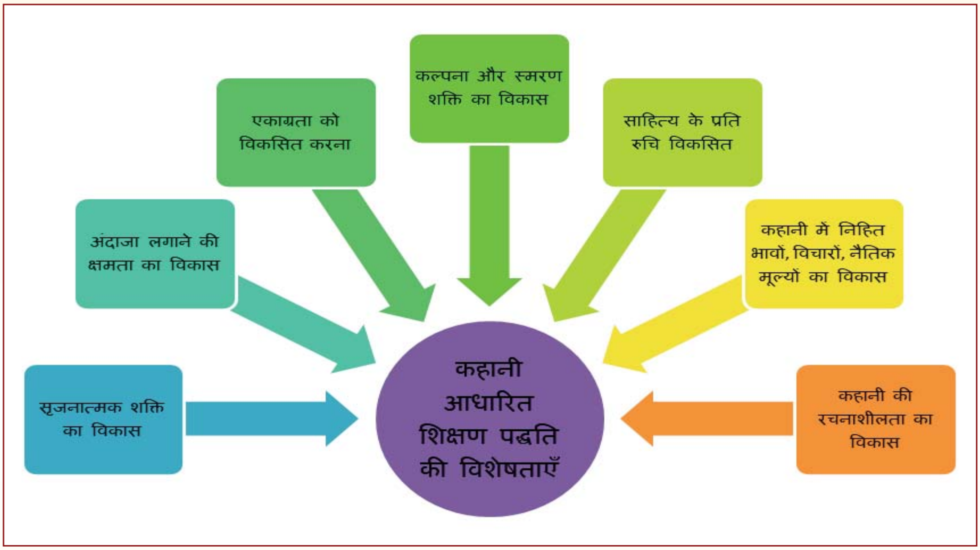

हमारी संस्कृति में कहानियाँ परिवारों और समुदायों को एक साथ जोड़ने में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। अच्छी कहानी सभी को पसन्द होती है, खासकर बच्चों को। कहानियाँ सम्प्रेषण के सबसे पुराने माध्यमों में से एक है। कहानियाँ पारिवारिक और सामुदायिक सम्बन्धों को बनाए रखने का एक प्रभावी माध्यम भी रही हैं।

बच्चे बुनियादी स्तर पर कहानियों से सहज तरीके से जुड़ जाते हैं। कहानी आधारित पद्धति बच्चों के लिए सीखने की प्रक्रिया को आनंददायी और सरल बनाती है। भावनात्मक जुड़ाव के कारण कहानियाँ बच्चों के ध्यान व स्मृति को विकसित करने में सक्षम होती हैं। कहानियाँ आस–पास में होती हुई घटनाओं से जोड़ते हुए दैनिक जीवन के बारे में बातचीत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। बच्चे कहानियों के माध्यम से अपने परिवेश और जीवन के अनुभवों को साझा करते हैं। कहानी न केवल अवधारणाओं को समझने एवं दैनिक जीवन में उनके अनुप्रयोग में मदद करती है अपितु उपयोगी कौशलों के विकास में भी सहायक है।

सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में बच्चे कहानी के माध्यम से सीधे जुडते हैं। बच्चे अपने विचार व्यक्त करते हैं और शब्द भंडार का विस्तार करते हैं। कहानी भाषा सीखने व सिखाने का एक समृद्ध संसाधन होने के साथ–साथ बच्चों को

उनके परिवेश के बाहर के संदर्भों और चीजों से परिचित कराती हैं। शिक्षक को ऐसी कहानियाँ चुननी चाहिए जो बच्चों को सहज रूप से समझ आएं और वे उसे अपनी भाषा में बता पाएँ।

कहानियाँ न केवल भाषा विकास में सहायक हैं अपितु अन्य विषयों जैसे– गणित शिक्षण को भी कहानी के माध्यम से रुचिकर बनाया जा सकता है। कहानी गणितीय अवधारणाओं को बच्चों के वास्तविक अनुभवों से जोड़ने का काम करती है और बच्चे आसानी से यह समझ पाते हैं कि गणितीय कौशल का उपयोग किन परिस्थितियों में और किस प्रकार किया जाना चाहिए। जैसे – एक समूह के बच्चों को बराबर हिस्सों में केक अथवा गुब्बारों को कैसे बाँट सकते हैं ?

शिक्षक कहानी को दिलचस्प बनाने के लिए कहानी सुनाने से पहले कहानी के किसी एक पात्र का चयन कर, अभिनय करते हुए कक्षा में प्रवेश कर सकते हैं जिसे देख बच्चों में जिज्ञासा उत्पन्न होगी कि आज कक्षा में क्या होने वाला है? आज शिक्षक इस तरह कक्षा में क्यों आए? वे कौतूहलवश शिक्षक को सुनने के लिए तैयार होंगे। बच्चों का मन बहुत चंचल होता है। उन्हें एकाग्रचित्त रखने के लिए बीच–बीच में कहानी को रोककर उनसे पूछे कि बताओ आगे क्या होगा, उन्हें सोचने का मौका दें, जिससे उनकी कल्पनाशीलता व रचनात्मक सोच को बढ़ावा मिले। कहानी सुनाते समय विभिन्न आवाजों और पिचों को बदलकर कहानी सुनाएं। कहानी के अंत में बच्चों से पूछे कि यदि वह कहानी के उस पात्र के स्थान पर होते तो क्या करते? यह पूछने से बच्चों की कल्पना एवं चिंतन करने की क्षमता को बढ़ावा मिलता है।

कहानी की विषयवस्तु का एक उदाहरण निम्नवत है–

उदाहरण : कहानी – सच्चे दोस्त–अच्छे दोस्त्

एक बार की बात है, एक गांव में गुल्लू नाम का 7 साल का लड़का रहता था। गुल्लू को जानवरों से बहुत प्यार था। वह रोज स्कूल के बाद गांव में घूमने वाले बिल्ली, कुत्ते, गाय, बकरियों और उनके बच्चों के साथ खेलता व उनकी देखभाल करता था। गुल्लू का सबसे प्यारा दोस्त उसका पिल्ला शेरू था। एक दिन एक सुंदर सी तितली का पीछा करते–करते गुल्लू और शेरू गांव के एक पुराने गड्ढे में गिर गए। गड्ढे में गिरते ही गुल्लू ने सबसे पहले यह सुनिश्चित किया कि शेरु ठीक है या नहीं। वह जानता था कि बिना किसी की मदद के वह गड्ढे से नहीं निकल सकता, अतः वह जोर–जोर से मदद के लिए चिल्लाने लगा, 'बचाओ! बचाओ!' उसकी आवाज सुनकर उसके सबसे करीबी दोस्त सोनू, गुड़िया, इमरान और इकरा उसकी मदद के लिए भागे। वहाँ पहुँचकर इकरा ने गुल्लू से पूछा, क्या तुम ठीक हो? सोनू जल्दी से रस्सी लेने अपने घर गया। सभी दोस्तों ने मिलकर गुल्लू और शेरू को गड्ढे से बाहर निकाला। गुल्लू ने अपने सभी दोस्तों को गले लगाया और उनका शुक्रिया किया।

12.3.3 थीम आधारित पद्धति (Theme-based Approach)

थीम आधारित शिक्षा एक निर्देशात्मक दृष्टिकोण है जो एक केन्द्रीय विषय के आस–पास विभिन्न विषयों को एकीकृत करता है। यह दृष्टिकोण छात्रों के अलग–अलग विषयों को पढ़ाने के स्थान पर उन्हें बहु–विषयक लेंस के माध्यम से सीखने और अन्वेषण के लिए प्रेरित करता है। प्रारम्भिक स्तर पर शिक्षा में थीम आधारित पद्धति का उपयोग करने से छात्रों की सहभागिता और समझ में वृद्धि होती है। एक केन्द्रीय विषय के आस–पास विषयों को एकीकृत करने से समग्र शिक्षा और वास्तविक दुनिया में अनुप्रयोग को बढ़ावा मिलता है। कम उम्र से ही छात्रों में आलोचनात्मक

सीख– ''जरुरत में काम आने वाला दोस्त ही सच्चा दोस्त होता है।''

चिंतन, रचनात्मकता और गहरी समझ का विकास होता है। यह दृष्टिकोण सैद्धान्तिक ज्ञान और व्यवहारिक कौशल के बीच अंतर को पाटने में भी मदद करता है, जो छात्रों को भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

थीम आधारित शिक्षा गणित, भाषा, विज्ञान और कला जैसे विषयों के एकीकरण को प्रोत्साहित करती है। उदाहरण के लिए, ''ऋतुएँ'' जैसी थीम में विभिन्न ऋतुओं के बारे में पढ़ना, ऋतुओं के पैटर्न को समझना और ऋतुओं से सम्बन्धित कला बनाना सम्मिलित है। उत्तर प्रदेश जैसे विविधतापूर्ण राज्य में, शिक्षक स्थानीय संस्कृति, परंपराओं और मुद्दों को सम्मिलित करने के लिए थीम तैयार कर सकते हैं। इससे छात्रों में सांस्कृतिक जागरूकता और अपनेपन की भावना को बढ़ावा मिलता है। थीम आधारित शिक्षा छात्रों को विचार करने, संबंध बनाने और समस्याओं को हल करने के लिए अपनी सीख को लागू करने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह उनके विश्लेषणात्मक कौशल का पोषण करता है और रचनात्मक सोच को बढ़ावा देता है। छात्रों की रूचियों और वास्तविक दुनिया के संदर्भों से मेल खाने वाले विषयों को चुनकर, शिक्षक सीखने को अधिक प्रासंगिक और आकर्षक बना सकते हैं। इससे छात्रों में प्रेरणा और जिज्ञासा बढ़ती है। शिक्षक थीम आधारित शिक्षा का प्रारूप तैयार करने और लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्हें प्रभावी ढंग से योजना बनाने, अंतःविषय सम्बन्ध बनाने और विभिन्न शिक्षण शैलियों के अनुरूप शिक्षण रणनीतियों को अपनाने की आवश्यकता है।

उदाहरण : थीम–मेला

(उप–विषय – स्थानीय मेला)

मेलों की संस्कृति किसी भी स्थान के लोगों को समझने का सबसे बड़ा आईना है। मेला ऐसा स्थान होता है जहां बच्चा अपनी संस्कृति से जुड़ाव महसूस करता है। मेले मे पकवानों की खुशबू, गुल्लक, गुब्बारा, चकिया–बेलन, बच्चों

के खिलौने, स्थानीय सामान, चूरन की चटकार, कैथा, इमली, झूले, पानी के बताशे, लइया, पट्टी, वर्तन आदि क्या कुछ नहीं उपलब्ध होता है। इसके अलावा मेले जैसे आयोजनों में दूर गांव के रिश्तेदार भी मिलते हैं। इनसे बच्चा, स्थानीय चीजों एवं समाज से जुड़ता है। नई–नई शब्दावलियों से परिचित होता है। नये–नये पकवानों की समझ प्राप्त करता है। अपनों से बिछड़ न जाय इसका डर बच्चे को सचेत होना सिखाता है। मेले परिवार और दोस्तों के साथ एक गुणवत्तापूर्ण समय गुजारने का मौका देते हैं। बच्चों की सुरक्षा से संबन्धित सावधानियाँ भी विषयवस्तु का हिस्सा हो सकती हैं और इस प्रकार एक समावेशी विषयवस्तु का निर्माण होता है।

12.3.4 खेल आधारित पद्धति (Play Based Approach)

खेल विधि मुख्य रूप से बाल केंद्रित विधि है जिसमें बच्चों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं, रुचियों तथा क्षमताओं का ध्यान रखा जाता है। खेलना बच्चों की स्वाभाविक प्रकृति है। बच्चा कार्य को पूर्ण हृदय से तभी करता है जब वह खेल में होता है। खेल द्वारा किए जाने वाले कार्य से बच्चे की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आत्मिक शक्तियां क्रियाशील होती हैं। उनके कार्य और विचारों में सामंजस्य स्थापित होता है और वह प्रगति कर पाते हैं। खेल के दौरान बच्चों की विभिन्न इंद्रियों का भी विकास होता है। बच्चों को खेल–खेल में शैक्षिक ज्ञान उपलब्ध कराने का प्रयास किया जाता है। इस प्रणाली में शिक्षा क्रियात्मक विधि द्वारा दी जाती है। इस प्रणाली में शिक्षा बच्चों के लिए बोझ या भार नहीं होती। उन्हें शैक्षिक क्रियाकलापों में आनंद आता है। यहां बच्चों को अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता होती है। उनके सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहन मिलता है।

खेल द्वारा शिक्षण पद्धति में बच्चा जो कार्य करता है वह किसी के दबाव में ना करके स्वेच्छा से करता है। अतएव कठिन, शुष्क एवं नीरस कार्य सरल, बोधगम्य और रुचिकर हो जाता है। खेल द्वारा शिक्षण में बालक जो भी ज्ञानात्मक एवं क्रियात्मक व्यवहार करता है उसमें वह अपने आप को पूरी तरह से अभिव्यक्त करता है। इस पद्धति में बच्चों को करके सीखने का अवसर प्राप्त होता है। बच्चे स्वतंत्रता और उत्तरदायित्व का अनुभव करते हैं। इस विधि द्वारा प्राप्त ज्ञान को वह कभी नहीं भूलते। इसमें बच्चा जो ज्ञान प्राप्त करता है वह उसकी आवश्यकताओं, प्रवृत्तियों, रुचियों और क्षमताओं के अनुकूल होता है। इस विधि का उपयोग करने से बच्चों में सहयोग, प्रतिस्पर्धा, तर्क व चिंतन का विकास होता है। शिक्षकों को ध्यान देना चाहिए कि खेल विधि की विषयवस्तु के साथ पहले मैं (शिक्षक) करूं, फिर हम (शिक्षक और शिक्षार्थी) करें और फिर तुम (शिक्षार्थी) करो। इस तरीके से बच्चों के आत्मविश्वास के साथ–साथ अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास भी होता है। खेल पद्धति की मुख्य विशेषताएँ निम्नवत हैं–

तर्क व चिंतन का विकास	अभिव्यक्ति का सर्वोत्तम साधन	सहयोग व प्रतिस्पर्धा की भावना का विकास	उत्तरदायित्व की भावना का विकास	सौन्दर्य भावना का विकास	स्व-शिक्षा की भावना का विकास	शारीरिक व मानसिक विकास

12.3.5 चयनशील पद्धतियाँ (Eclectic Approaches)

चयनशील आधारित पद्धति का अर्थ है विभिन्न विधियों के अच्छे बिंदुओं का संग्रह करना और उन्हें कक्षा कक्ष में प्रभावी शिक्षण के लिए उपयोग करना। बच्चे को सिखाने में विभिन्न विधियाँ और दृष्टिकोण काफी प्रभावी होते हैं। यह कक्षा में रचनात्मकता, जुड़ाव और अनुकूलनशीलता को प्रोत्साहित करता है। शिक्षक अपने सन्दर्भ और जरूरतों के आधार पर सीखने के लिए विषयवस्तु का प्रारूप तैयार करने के लिए सही प्रकार की पद्धति चुन सकते हैं।

उत्तर प्रदेश के परिप्रेक्ष्य में आरम्भिक स्तर पर उदार शिक्षण दृष्टिकोण में छात्रों के लिए एक प्रभावी और आकर्षक शिक्षण वातावरण बनाने के लिए अनुभवनात्मक शिक्षा, सक्रिय भागीदारी, मल्टीमीडिया संसाधनों (ऐनीमेशन, ग्राफिक्स, ऑडियो–वीडियो) और सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक सामग्री जैसी विधियों को सम्मिलित किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त मूलभूत चरण में चयनशील शिक्षण पद्धति के द्वारा सीखने को और अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए पारंपरिक व्याख्यान–शैली शिक्षण को व्यावहारिक गतिविधियों, जैसे– जोड–तोड़ या इंटरैक्टिव खेलों के उपयोग के साथ संलग्न किया जा सकता है।

शिक्षक अक्सर खास तरह की दक्षताओं के लिए विषयवस्तु को संगठित करने के लिए विशेष पद्धतियों का उपयोग करते हैं। सीखने के अनुभवों को व्यक्तिगत सीखने के प्रतिफलों को ध्यान में रखकर विषयवस्तु, शिक्षण विधियों और आकलन के खास तरह के संयोजन में नियोजित किया जा सकता है। किसी विशिष्ट पद्धति का पालन किए बिना भी सीखने के अनुभवों का एक अच्छी तरह से डिजाइन किया गया अनुक्रम सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने में समान रूप से आकर्षक और प्रभावी हो सकता है। चयनशील पद्धति के कुछ सुझाव नीचे दिये गए हैं–

1. छात्रों और उनकी पृष्ठभूमि से जुड़ने के लिए शिक्षण में क्षेत्रीय भाषाओं को सम्मिलित करना।
2. स्थानीय कलाकारों, इतिहासकारों या उद्यमियों को छात्रों के साथ अपने अनुभव और अंतर्दृष्टि साझा करने के लिए आमंत्रित करना।
3. उत्तर प्रदेश में स्थानीय परंपराओं और प्रथाओं की तुलना अन्य क्षेत्रों से करना, समानताएँ और अंतर को उजागर करना। (तुलनात्मक अध्ययन)
4. विशिष्ट नैतिक मूल्यों और ऐतिहासिक घटनाओं को सिखाने के लिए लोक कथाओं, क्षेत्रीय कहानियों का उपयोग करना।

5. सांस्कृतिक प्रशंसा के प्रति जिम्मेदारी और सहानुभूति की भावना पैदा करने के लिए स्थानीय सामुदायिक सेवा परियोजनाओं में छात्रों को सम्मिलित करना।

ये दृष्टिकोण एक सर्वांगीण और आकर्षक शिक्षण वातावरण बनाने में मदद कर सकते हैं जो छात्रों को उनकी स्थानीय संस्कृति से जोड़ता है और विभिन्न विषयों की गहरी समझ को बढ़ावा देता है।

खेल आधारित विषयवस्तु	•स्थानिक जागरूकता और गणितीय अवधारणाओं को सीखाने के लिए बिल्डिंग ब्लॉक्स का उपयोग करना
सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक गतिविधियाँ	•पारंपरिक शिल्प बनाकर या स्थानीय लोक कथाओं के बारे में सीखना
सहयोगात्मक शिक्षण	•समूह में चर्चा, समस्या समाधान कार्य या सहयोगात्मक परियोजनाएँ।
कहानी सुनना और भावगीत करना	•छात्र ऐतिहासिक घटनाओं, साहित्य के पात्रों का अभिनय कर सकते हैं या अपनी खुद की कहानी बना सकते हैं।
अनुभवात्मक शिक्षण	•कक्षा शिक्षण को बाहरी दुनिया से जोड़ने के लिए आस-पास व क्षेत्रीय यात्राओं पर ले जाएँ।

12.4 अधिगम शिक्षण सामग्री

फाउण्डेशनल स्टेज पर बच्चे इन्द्रियों का उपयोग करके ज्यादा सीखते हैं, इसलिए उन्हें ऐसे खिलौने और वस्तुएँ मिलनी चाहिए जिससे उन्हें इन्द्रियों का उपयोग करने का अधिक से अधिक मौका मिले। साधारण खेलने के खिलौने से लेकर घर की वस्तुएँ, कक्षा–कक्ष में उपयोग होने वाली अधिगम शिक्षण सामग्री और सभी प्रकार की परिवेशीय वस्तुएँ इस चरण में सीखने में उपयुक्त सामग्री होती हैं।

सामान्य रूप से 3 से 8 वर्ष के बच्चे के लिए सीखने का माहौल समृद्ध होना अति आवश्यक है। जहाँ खेल, खोज, सोच और आनन्द के साथ साथ क्रमशः पढ़ने के लिए उत्साह को भी बढ़ावा दिया जाना चाहिए। जैसे–जैसे बच्चे बड़े होते जाते हैं उन्हें कार्यपुस्तिकाओं और कार्यपत्रकों का उपयोग भी कराया जाना चाहिए।

12.4.1 अधिगम शिक्षण सामग्री के चयन के कुछ प्रमुख सिद्धांत हैं–

- बच्चे अधिगम शिक्षण सामग्री का सरल उपयोग कर सकें, सामग्री आकर्षक और सुरक्षित होनी चाहिए। सामग्री में इस्तेमाल होने वाले पदार्थ और रंग सुरक्षित होने चाहिए जो किसी प्रकार की विषाक्तता उत्पन्न ना करते हों।
- चुनी गई सामग्री बच्चों को खोज और प्रयोग करने के पर्याप्त अवसर देने वाली होनी चाहिए। सामग्री टिकाऊ और अच्छे तरीके से बनाई हुई हो, जिससे उसका लंबे समय तक उपयोग हो सके।
- जहाँ तक सम्भव हो सामग्री शिक्षक द्वारा स्वयं या बच्चों की सहायता लेते हुए निर्मित की जानी चाहिए या स्थानीय परिवेश से ली जानी चाहिए जिसमें आसानी से बदलाव किए जा सकें।
- LTM में कुछ खरीदी हुई सामग्री, शिक्षकों द्वारा बनाई गई सामग्री यहाँ तक कि बच्चों द्वारा बनाई गई सामग्री भी सम्मिलित होनी चाहिए। साथ ही दृश्य–श्रव्य सामग्री, विद्यालय भवन का सामग्री के रूप में उपयोग (BALA), परिवेशीय वस्तुओं का उपयोग आदि भी सुनिश्चित होना चाहिए।
- अधिगम शिक्षण सामग्री यथासंभव शून्य या अल्प–निवेश नीति आधारित होनी चाहिए।

12.4.2 शिक्षक द्वारा तैयार की जा सकने वाली सामग्री– फाण्उडेशनल स्टेज के लिए शिक्षकों को स्थानीय उपलब्ध सामग्री से सरल सामग्री LTM बनाने की कोशिश करनी चाहिए।

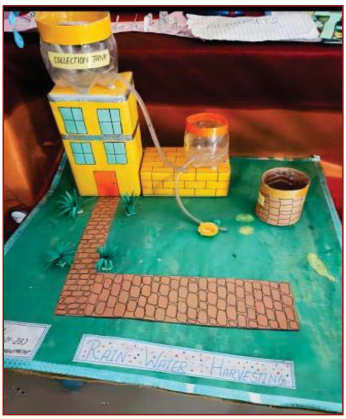

12.4.3 बच्चों द्वारा तैयार की जा सकने वाली सामग्री– बच्चे अपनी कला–शिल्प (SUPW) के हिस्से के रूप में सरल सामग्री बनाते हैं। जैसे– छोटे बच्चों के लिए मिट्टी के गोले बनाना, साधारण खिलौने, लकड़ी के खिलौने छोटे–छोटे कागज के टुकड़े चिपका कर वस्तुओं को सजाना आदि बहुत आकर्षित गतिविधियाँ हो सकती हैं जिससे वे अपनी सूक्ष्म मांसपेशियों को विकसित भी कर सकते हैं।

12.4.4 सामग्री की उपलब्धता–

1. बाजार से खरीदी जाने वाली सामग्री

2. स्थानीय परिवेश से प्राप्त सामग्री

3. विद्यालय भवन का शिक्षण सामग्री के रूप में उपयोग (BALA)

12.4.4.1. बाजार से खरीदी जाने वाली सामग्री–

कुछ LTM ऐसी सामग्रियों से बने होते हैं जो स्थानीय रूप से उपलब्ध नहीं होते। उन्हें बनाने के लिए अधिक परिष्कृत उपकरणों और औजारों की जरूरत हो सकती है। ये सामग्री बाजार से मंगवाई जा सकती हैं। ऐसी सामग्री की एक उदाहरण सूची नीचे दी गई है–

बिल्डिंग ब्लॉक सेट (जो रंग, आकार और मोटाई में भिन्न हों) रंगीन मोती और तार मॉडलिंग सामग्री (जैसे– लोई, क्ले, मिट्टी) विभिन्न आकार की गेंद, सरल पहेलियाँ (जैसे– पहेली, रंग पहेली, शरीर के अंगों की पहेली और आकृति पहेली (jigsaw puzzle) आदि।	डॉट और नम्बर डोमिनोज कार्ड, वर्णमाला और नम्बर कार्ड चित्र कार्ड या फ्लैश कार्ड एक या दो पंक्तियाँ लिखी हुई चित्र पुस्तकें, कहानी की किताबें मैग्नीफाइंग ग्लास अलग–अलग क्षमता के मैग्नेट आदि।	अनेक तरह के कंटेनर (जैसे– कटोरे, बाल्टी, जग) विभिन्न प्रकार के उपकरण (जैसे– चम्मच, कुप्पी, मापने वाले कप, पेंट ब्रश) विविध प्रकार के कागज (जैसे– अखबारी कागज, चमकीला कागज, रिसाइकिल किया हुआ कागज) क्रेयॉन, मार्कर, रंगीन पेन्सिल, रंगीन चॉक, स्केच पेन आदि।

12.4.4.2. स्थानीय परिवेश से प्राप्त हो सकने वाली वस्तुएँ–

कंकड़, डंडियाँ, सुखाये हुए पत्ते, बीज, पुराने तार, पुराने टब, बाल्टी, कंटेनर, टायर, प्लास्टिक की बोतलें, रस्सी,

इस्तेमाल किये हुए कागज, पुराने अखबार, माचिस की तीलियाँ, इमली / जामुन के सूखे बीज, प्लास्टिक की चूड़ियाँ, प्लास्टिक की बोतल के ढक्कन आदि।

12.4.4.3 विद्यालय भवन का शिक्षण सामग्री के रूप में उपयोग (BALA)

शिक्षक विद्यालय भवन और उसमें उपलब्ध समस्त सामग्री का उपयोग अधिगम शिक्षण सामग्री के रूप में कर सकते हैं जैसे– रसोई के बर्तन, अनाज, कक्षा–कक्ष, दीवारें, चहारदीवारी, पेड़–पौधे, किचन गार्डेन आदि।

12.4.4.4. अन्य सामग्री– समय–समय पर उत्तर प्रदेश सरकार/भारत सरकार द्वारा प्रदत्त सामग्री, जैसे–

1. पुस्तकालय हेतु पुस्तकें
2. बिग बुक
3. गणित किट
4. प्रिंट–रिच सामग्री

अधिगम शिक्षण सामग्री के निर्माण हेतु प्रमुख विधियाँ– कठपुतली विधि, मॉडल प्रोजेक्ट, फलालैन बोर्ड, फ्लैश बोर्ड आदि।

अधिगम शिक्षण सामग्री कैसी होनी चाहिए–

- सामग्री बच्चों को सीखने में संलग्न/व्यस्त रखे।
- बच्चों के जीवन से जुड़ी हुई हो।
- सरल से कठिन की ओर ले जाती हुई हो।
- विविधतापूर्ण और समावेशी हो।
- रूढ़िवादिता और पूर्वाग्रहों से मुक्त हो।

12.4.5. पुस्तकालय/बाल साहित्य पुस्तकालय– भारतीय सन्दर्भ में पुस्तकों को देखना और उन्हें पढ़ना बहुत आवश्यक है क्योंकि यहाँ पुस्तकों से पढ़ने की संस्कृति अभी भी उभर ही रही है। पढ़ना सीखने के लिए पुस्तकालय एक बड़ी प्रेरणा हो सकते हैं और आसानी से सुलभ बाल साहित्य इस प्रेरणा और पढ़ने में रुचि पैदा करने में मददगार हो सकता है। पुस्तकालय के संदर्भ में कुछ महत्वपूर्ण बिंदु इस प्रकार हैं–

- विद्यालय और आंगनबाड़ी केन्द्रों में पुस्तकों का आकर्षक प्रदर्शन किया जाए जिससे बच्चों का ध्यान आकर्षित हो।
- पुस्तकालय को पढ़ने की एक सक्रिय जगह के रूप में विकसित किया जाना चाहिए, इसके लिए समय–समय पर योजनानुसार किताबों के प्रदर्शन और दीवारों पर चित्र–चार्ट बदलते रहने चाहिए।
- शिक्षक और अन्य वयस्क जैसे आंगनबाड़ी कार्यकर्त्री, सहायिका, और अभिभावक पुस्तकालयों में पढ़ने के व्यवहार का मॉडल बन सकते हैं। बच्चो के अभिभावकों को भी किसी पुस्तकालय में आकर पढ़ने और कहानियाँ सुनाने आदि के लिए आमंत्रित किया जाना चाहिए।
- बच्चों को पुस्तकालय से किताबें उधार लेने, उन्हें घर ले जाने और पुस्तकालय में समय पर वापस लाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- छोटी कक्षाओं/आंगनबाड़ी केन्द्रों में पढ़ने के कोने कक्षा में ही बनाए जा सकते हैं। जहाँ किताबें एक खुले कार्टन/रैक या अन्य किसी प्रकार से रखने की व्यवस्था की जानी चाहिए। उत्तर प्रदेश के परिप्रेक्ष्य में विद्यालयों को चित्र–चार्ट व बिग बुक्स प्रदान की गयी हैं, उन्हें भी रीडिंग कोने में होना चाहिए। बच्चों के प्रोफाइल, उनके द्वारा किये हुए कार्य भी इस कोने में रखे जा सकते हैं।

- पुस्तकालय में बाल साहित्य के साथ साथ बच्चों के लिए सन्दर्भ सामग्री भी होनी चाहिए।
- पुस्तकालय में भारतीय लोककथाओं और पंचतंत्र की कथाओं जैसे शिक्षाप्रद साहित्य का भी समावेश होना चाहिए।
- आयुसंगत क्रम में चित्र पुस्तकें, बहुत छोटे वाक्यों वाली चित्र कहानियाँ फाउण्डेशनल स्टेज के बच्चों के लिए उपयुक्त हैं।
- पुस्तकालय समावेशी होना चाहिए, आवश्यकतानुसार ऑडियो बुक्स, ब्रेल पुस्तकें भी उपलब्ध होनी चाहिए।

12.4.6. अधिगम शिक्षण सामग्री के उपयोग की संस्कृति–

- जितना आवश्यक विद्यालय में सामग्री और पुस्तकों का भण्डारण है, उतना ही आवश्यक है कि इन सामग्रियों के उपयोग में सावधानी रखी जाए और उनकी देखभाल और रखरखाव की संस्कृति पर जोर दिया जाए।
- सामग्री को अलमारी में बन्द न रखा जाए और उसका उपयोग नियमित होना चाहिए। साथ ही बच्चों की सुरक्षा और सक्रियता का भी ध्यान रखा जाना चाहिए।
- बच्चों के पास सार्थक रूप में स्वतंत्र रूप से खोज, खेल और आनंद के साथ सीखने का पर्याप्त अवसर होना चाहिए।
- अधिगम सामग्री का कक्षा कक्ष और आंगनबाड़ी केंद्र में प्रदर्शन योजनाबद्ध तरीके से विशेष उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए।
- सामग्री का उपयोग करने और साझा करने के दौरान देखभाल और जिम्मेदारी की संस्कृति को एक जरूरी सीखने के प्रतिफल के रूप में देखा जाना चाहिए। ये आदतें विद्यालयी शिक्षा के बाद भी जीवनपर्यंत बनी रहती हैं। उदाहरणस्वरुप– बच्चा सामान को उपयोग में लेने के बाद व्यवस्थित रूप से वापस रखता है, पुस्तकालय की पुस्तकें निर्गत करवा कर घर ले जाकर पढ़ता है और नियत तिथि पर अच्छी स्थिति में वापस कर देता है।

12.4.7 तकनीकी, डिजिटल और श्रव्य–दृश्य सामग्रीः इस खण्ड में हम तकनीकी के उपयोग, विषयवस्तु, प्रारूप, बच्चों के लिए इंफोटेनमेंट और सावधानियों की बात करेंगे।

12.4.7.1 फाउण्डेशनल स्तर पर तकनीकी का उपयोग कैसे किया जाना चाहिए ?

1. दिव्यांग बच्चों समेत सभी बच्चों की प्रासंगिक विषयवस्तु और सामग्री की विविध रेंज तक पहुँच सुनिश्चित होनी चाहिए जो उनकी आयु के उपयुक्त हो और सरल, स्थानीय व मानक भाषाओं में हो।
2. यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सामग्री का मुख्य फोकस शिक्षार्थी के लिए एक सुखद अनुभव का निर्माण करना है। बच्चे स्वयं भी सहज जिज्ञासु होकर इस सामग्री का उपयोग करने को तत्पर होने चाहिए।
3. शिक्षकों, माता–पिता और समुदाय की क्षमता के विकास में सहयोग करना चाहिए, जैसे– दीक्षा और रीड अलॉन्ग ऐप का उपयोग बच्चे घर पर भी कर सकते है और अभिभावकों को उनके पठन अभ्यास और अन्य गतिविधियों को सीखने में मदद करने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

12.4.7.2. विषयवस्तु, प्रारूप और पहुँच में विविधता–

1. ऑडियो सामग्री बच्चों में सुनने के कौशल को बढ़ाने वाली और भाषा के विकास में सहायता करने वाली होनी चाहिए, विशेष रूप से दृष्टिबाधित दिव्यांग बच्चों के परिप्रेक्ष्य में तो यह अति उपयोगी होती है।
2. वीडियो दृश्य आकर्षक होने चाहिए और उपशीर्षक (subtitles) वाली विषयवस्तु भाषा उपलब्धि को बढ़ाने में सहायक होनी चाहिए।
3. चित्रात्मक पुस्तकें उपलब्ध करानी चाहिए।
4. परस्पर संवादात्मक सामग्री जैसे– ऑडियो सहित बुक्स, खेल, पहेलियाँ आदि का उपयोग किया जाना चाहिए।
5. कठपुतली जैसी सामग्री का भी उपयोग किया जाना चाहिए।
6. संवर्द्धित वास्तविकता / आभासी वास्तविकता (AR,VR) आधारित विषयवस्तु, जो बच्चों और वयस्कों को किसी घटना, स्थान, या अनुभव का एक आभासी अनुभव दे सकती है, जिसका अनुभव करना मुश्किल है। उदाहरण के लिए मानव शरीर के अंदर, चन्द्रमा की सतह पर, सागर के भीतर। उदाहरण के तौर पर 3D साइंस फिक्शन चलचित्र, AR टूल्स का उपयोग आदि किया जाना चाहिए।

तकनीकी, डिजिटल सहायक सामग्री के कुछ उदाहरण –

- रेडियो, लाउडस्पीकर
- टीवी, प्रोजेक्टर
- स्मार्टफोन (ऑडियो, वीडियो, टेक्स्ट और परस्पर संवादात्मक कंटेंट जैसे रीड अलॉन्ग ऐप)
- टैबलेट (ऑडियो, वीडियो, टेक्स्ट और इंटरैक्टिव कंटेंट)
- कंप्यूटर / लैपटॉप (ऑडियो, वीडियो, टेक्स्ट और इंटरैक्टिव कंटेंट)
- स्मार्टबोर्ड (ऑडियो, वीडियो, टेक्स्ट और इंटरैक्टिव कंटेंट)
- अन्य सहायक तकनीकियाँ उदाहरणस्वरूप– AR LOOPA जैसे संवर्धित वास्तविकता ऐप का प्रयोग करके बच्चों को आभासी रूप से कोई भी वस्तु दिखाई जा सकती है।

12.4.8. डिजिटल संरचना (Infrastructure) और मंचों का लाभ उठाना–

- पारिस्थितिकी तंत्र के योगदानों से सामग्री जुटानाः विषयवस्तु निर्माताओं के जीवन्त पारिस्थितिकी तंत्र को एनडीईएआर (NDEAR) (ndear-gov-in) और विद्यादान (vdn.diksha.gov.in) का उपयोग करके बच्चों, शिक्षकों, माता–पिता और समुदाय के लिए विषयवस्तु का निर्माण करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। इन प्लेटफॉर्मों पर शिक्षकों के पास विभिन्न प्रारूपों में अनेक प्रकार की विषयवस्तु उपलब्ध होती है। वे अपनी कक्षा की जरूरतों के आधार पर डिजिटल सामग्री का विवेकपूर्ण तरीके से उपयोग कर सकते हैं।
- संदर्भगत पाठ्यचर्या से जुड़ी विषयवस्तु तक पहुँच में आसानी के लिए पुस्तकों में दिए हुए QR कोड का उपयोग करते हुए शिक्षक और विद्यार्थी सामग्री को 'जीवन्त' बनाना। QR कोड का उपयोग यह भी सुनिश्चित करता है कि लिंक की गई सामग्री में समयानुसार बदलाव किया जा सकता है।

❖ बहुभाषी स्थितियों में तकनीकी, शिक्षकों की सहायता करती है ताकि वे प्रत्येक बच्चे की उसकी मातृभाषा में सीखने की आवश्यकता का ध्यान रख सकें। स्थानीय/क्षेत्रीय भाषाओं में अधिगम शिक्षण सामग्री के अनुवाद के लिए भाषिनी (https://bhashini-gov-in/en) और ULCA (https://bhashini-gov-in/ulca) जैसे कार्यक्रमों का लाभ उठाया जाना चाहिए साथ ही अर्थ गूगल डॉट कॉम के संग्रह से भी सहायता ली जा सकती है।

12.4.9. बच्चों के लिए डिजिटल इन्फोटेनमेंट –

❖ इस वास्तविकता को स्वीकार करते हुए कि सभी उम्र और पृष्ठभूमि के बच्चे डिजिटल विषयवस्तु के उपभोक्ता और इंटरनेट के उपयोगकर्ता बन गए हैं। मनोरंजन उद्देश्यों के लिए भी सामग्री का जिम्मेदार तरीके से निर्माण आवश्यक है। यह बच्चों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने वाली गुणवत्तापूर्ण सामग्री में निवेश करने और विकसित करने का भी एक अवसर है। स्थानीय व मानक भाषा में गाने, तुकबन्दी, पहेलियाँ, कहानियाँ, फिल्में, लघु फिल्में और ऐनिमेशन सीरीज शुरुआती वर्षों में बहुत जरूरी हैं।

❖ टीवी हमेशा से बच्चों के लिए शैक्षिक और मनोरंजक रहा हैं। उत्तर प्रदेश को पी.एम.ई.विद्या योजना के अंतर्गत 5DTH चैनल मिले हैं। पहला चैनल UP173 में (कक्षा 1 से 2) अपने विशाल मनोरंजन और रचनात्मक प्रतिभा के साथ प्रारम्भिक वर्षों में बच्चों के विकास के वैज्ञानिक ज्ञान के आधार पर कई विषयों में अद्वितीय सामग्रियों का उत्पादन कर रहा है। इन फ्री टू एयर चैनल का प्रसारण देखने की व्यवस्था सामुदायिक सहयोग या अन्य स्त्रोतों से आंगनबाड़ी केन्द्रों और विद्यालयों में की जानी चाहिए।

❖ रेडियो, सार्वजनिक प्रसारण, मीडिया, साथ ही सामुदायिक रेडियो पहल, प्रारम्भिक वर्षों के बच्चों के लिए विषयवस्तु वितरित करने के लिए बहुत शक्तिशाली सहयोगी हो सकते हैं।

❖ इंटरनेट– बच्चे को उनके मनोरंजन की सामग्री की तलाश के समय थोड़े समय के लिए डिजिटल उपकरण दिए जाने चाहिए और उनमें बच्चों के लिए सुरक्षित अनुकूल सामग्री ही दिखे यह भी सुनिश्चित करना चाहिए। जैसे– लवनजनइम की जगह लवनजनइम ापके देखने दिया जाये।

❖ किसी चित्र पुस्तक से पढ़कर सुनाई जाने वाली कहानी या ऑडियोबुक बच्चों को उपलब्ध होगी। खुद पढ़कर सुनाना एक आदर्श स्थिति है लेकिन एक विशेषज्ञ नैरेटर द्वारा पढ़ी गई कहानियों का वीडियो भी उतना ही फायदेमन्द होगा। खासकर दिव्यांग बच्चों के समावेशन हेतु यह अति उपयोगी है।

❖ बच्चों के साथ पढ़ने में मदद करने के लिए ऐप के रूप में उपकरण जैसे ब्लूटूथ स्पीकर, स्क्रीन व प्रोजेक्टर, मुफ्त डिजिटल किताबें, पहेलियाँ और खेल संज्ञानात्मक विकास के लिए फायदेमन्द होंगे।

12.4.10. समावेशी पहुँच के लिए तकनीकी (दिव्यांग बच्चों के लिए)

❖ डिजिटल विषयवस्तु– सभी डिजिटल विषयवस्तु सुलभ, समावेशी और प्रयोग करने योग्य होनी चाहिए। तकनीकी समाधानों में दिव्यांगों के लिए उपयोगिता पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। सीखने के लिए किसी भी डिजिटल माध्यम का सभी दिव्यांग बच्चों के लिए भाषा और संख्या ज्ञान कौशल विकसित करने की आवश्यकता पूर्ति का उद्देश्य अति महत्त्वपूर्ण है।

- सुलभ स्वरूपों के उपकरण, ऐसे कई शब्दों को शीघ्रता से समझने के लिए जिन्हें बच्चा पहचानना और पढ़ना जानता है या शिक्षकों के लिए डिजिटल रूप से उपलब्ध है, श्रवण बाधित बच्चे के पढ़ने के स्तर और संख्या ज्ञान में स्तर का आकलन करने के लिए मददगार हो सकते हैं। उनके लिए सांकेतिक भाषा के वीडियो आदि उपलब्ध कराने चाहिए। सरल दृश्य सामग्री उनके लिए ज्यादा उपयोगी रहेगी।
- विषयवस्तु के निर्माण और संग्रहण को प्रोत्साहित करने के लिए सभी प्रकार के बच्चों के लिए एक समान प्लेटफॉर्म होना चाहिए। दिव्यांग बच्चों को भी ध्यान में रखकर डिजिटल रूप से बनाई गई कहानियों, गीतों, कविताओं और नाटकों की आवश्यकता होती है ताकि उनका कक्षा में पूर्ण समावेशन हो सके।
- दिव्यांग विद्यार्थियों के सीखने की जरूरतों को पूरा करने के लिए विशेष रूप से ऑडियो, वीडियो, और अन्य डिजिटल प्रारूप जैसे फ्लिप बुक्स, इंटरैक्टिव ऑनलाइन/ऑफलाइन सामग्री उपलब्ध होनी चाहिए।

12.4.11. फाउण्डेशनल स्तर पर डिजिटल तकनीकी का उपयोग करने में सावधानियाँः डिजिटल सामग्री का उपयोग अपने साथ अनेक अवांछित और अप्रत्याशित अनुभव भी ला सकता है। जिनके सन्दर्भ में बाल अधिकारों का ध्यान रखते हुए डिजिटल प्लेटफार्म पर सुरक्षा के बिंदु को अति महत्वपूर्ण मानना चाहिए।

बच्चों के डिजिटल अधिकार : समानता के लिए आवश्यक है कि प्रत्येक बच्चे को तकनीकी की भागीदारी और उपयोग का अधिकार हो और उस तक पहुँच हो। सुरक्षा और भागीदारी के बीच एक सन्तुलित दृष्टिकोण सुनिश्चित किया जाना चाहिए। बाल अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र आयोग ने 2021 में बच्चों के डिजिटल अधिकारों पर सामान्य टिप्पणी 25 को अपनाया और निम्नलिखित मार्गदर्शन जारी किए –

बाल अधिकारों के चार सिद्धान्त हैं :

1. **गैर–भेदभाव–** बच्चों को सभी प्रकार के भेदभाव से बचाया जाना चाहिए और उनके साथ उचित व्यवहार किया जाना चाहिए।
2. **उत्तरजीविता और विकास–** बच्चे हानिकारक हस्तक्षेप के बिना बड़े होकर जैसा भी बनना चाहते हैं, इसके लिए उनका समर्थन किया जाना चाहिए। इस सन्दर्भ में, बच्चों के डेटा की गोपनीयता और उपयोग को सावधानी से संभाला जाना चाहिए। सभी प्रकार के आकलन आदि भी सार्वजानिक नहीं होने चाहिए।
3. **बच्चे का सर्वोत्तम हित–** कोई भी निर्णय लेते समय–वयस्कों, सरकारों और किसी भी संस्था को वही करना चाहिए जो बच्चों के लिए सबसे अच्छा हो न कि स्वयं के लिए।
4. **बच्चों के विचारों का सम्मान–** बच्चों की भी अपनी राय होती है इसलिए उन सभी चीजों को ध्यान में रखा जाना चाहिए जिनका उन पर प्रभाव पड़ सकता है।

UNICEF द्वारा अनुशंसित और NDEAR (national digital education architecture) द्वारा स्वीकृत बिंदु –

"एक डिजिटल दुनिया में, जहाँ उनके कार्य और बातचीत उन्हें वयस्कता में प्रभावित कर सकती हैं, बच्चों की रक्षा करने का कर्तव्य सरकारों, निजी संगठनों और नागरिक समाज का है।"

- बच्चों को गोपनीयता और उनके व्यक्तिगत डेटा की सुरक्षा का अधिकार है।

- ❖ बच्चों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और विविध स्रोतों से जानकारी प्राप्त करने का अधिकार है।
- ❖ बच्चों को उनकी प्रतिष्ठा पर हमले का शिकार नहीं होने का अधिकार है।
- ❖ बच्चों की निजता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को उनकी विकसित क्षमताओं के अनुसार संरक्षित और सम्मानित किया जाना चाहिए।
- ❖ बच्चों को निजता और स्वतंत्र अभिव्यक्ति के अपने अधिकारों के उल्लंघन, दुर्व्यवहार और उनकी प्रतिष्ठा पर हमलों के लिए उपचार प्राप्त करने का अधिकार है।

अन्य चिन्ताएँ

1. बच्चों द्वारा डिजिटल तकनीक का उपयोग करने में लगने वाले समय और उनकी शारीरिक गतिविधि और मानसिक स्वास्थ्य पर इसके प्रभाव के बारे में कई चिन्ताएँ भी उठाई गई हैं। साक्ष्य बताते हैं कि डिजिटल तकनीक का माध्यम और नियंत्रित उपयोग बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए फायदेमन्द हो सकता है, जबकि अत्यधिक उपयोग हानिकारक हो सकता है।
2. बच्चों को सब कुछ यदि किसी खास तरीके से दिखाया जाता है तो इस से उनकी कल्पनाशीलता बाधित होने की सम्भावना है।

उदाहरणस्वरुप– बच्चे चित्र में हमेशा आसमान को नीला और पहाड़ को भूरा ही बनाते हैं, जबकि आकाश हमेशा नीला नहीं होता मटमैला, धूसर, स्लेटी या अन्य रंग का भी दिख सकता है, ऐसे ही पहाड़ भी सर्दियों में बर्फ से ढंके हों तो सफेद, हरियाली से भरे हों तो हरे या हरियाली रहित हों तो भूरे दिखते हैं।

12.5 पुस्तकें एवं पाठ्यपुस्तकें

सामान्यतः पाठ्यपुस्तकें कक्षा के अनुरूप पाठ्यक्रम आधारित होती हैं, जिनका अध्ययन करना अनिवार्य होता है, जिन्हें पढ़कर बच्चे की कक्षा प्रगति निर्धारित होती है। जबकि पुस्तकें विशेष पाठ्यक्रम आधारित नहीं होती हैं। पुस्तकें प्रत्येक उम्र में और किसी भी समय में कोई भी अपनी रूचि के अनुसार पढ़ सकता है एवं उनकी सीख को अपने जीवन में उतार सकता है। अतः 3 से 6 वर्ष के बच्चों के लिए पुस्तकें व 6 से 8 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए पुस्तकें व पाठ्यपुस्तकें दोनों निर्मित होनी चाहिए।

12.5.1 फाउण्डेशनल स्टेज के पहले तीन वर्षों में 3 से 6 वर्ष के बच्चों के लिए कोई निर्धारित पाठ्यपुस्तक नहीं होनी चाहिए क्योंकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अनुसार इस आयु वर्ग के बच्चों पर पाठ्यपुस्तकों का बोझ नहीं डालना चाहिए बल्कि गतिविधि आधारित पुस्तकें निर्मित होनी चाहिए। पाठ्यपुस्तकों का उद्देश्य उच्च गुणवत्तापूर्ण, विकासात्मक दृष्टिकोण एवं उपयुक्त पूर्व बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ECCE) को बच्चों तक पहुँचाना है। उक्त को दृष्टिगत रखते हुए फाउण्डेशनल स्टेज की पुस्तकें व पाठ्यपुस्तकें स्पष्ट एवं क्रियाशील होनी चाहिए। अतः फाउण्डेशनल स्टेज पर पुस्तकों एवं पाठ्यपुस्तकों का निर्माण निम्न दो आयु वर्गों में बाँट कर करना उचित होगा–

(क) 3 से 6 आयु वर्ग वाले बच्चों के लिए।

(ख) 6 से 8 आयु वर्ग वाले बच्चों के लिए।

(क) 3 से 6 आयु वर्ग वाले बच्चों के लिए:–

इस आयु वर्ग के बच्चों के लिए पाठ्यपुस्तकों का बोझ नहीं होना चाहिए चूँकि बच्चे अपने परिवार एवं परिवेश के अनुभवों से सीख कर विद्यालय आते हैं। अतः उनके पूर्व ज्ञान को जोड़ते हुए पुस्तकों का निर्माण गतिविधि आधारित, रूचिपूर्ण, आकर्षक एवं बाल साहित्य आधारित होना चाहिए।

- ❖ पुस्तकों में परिवेश से संबंधित बड़े व रंगीन चित्रों का समावेश होना चाहिए।
- ❖ पुस्तकों में हाव–भाव के चित्रों से सजी छोटी–छोटी कहानियों / कविताओं (लेख कम से कम व चित्रों का प्रतिशत अधिक) को सम्मिलित किया जाना चाहिए। इस प्रकार की पुस्तकें लोगोग्राफिक रीडिंग को विकसित करती हैं और बच्चे की कल्पनाशक्ति का विकास करने एवं विचार रखने का अवसर देती हैं।

- ❖ स्क्रिबलिंग आधारित ऐसी पुस्तकों का निर्माण हो, जिसमें कुछ पृष्ठ छोटी मांसपेशियों का विकास करने हेतु होने चाहिए, जिनमें विभिन्न प्रकार की रेखाएँ, आकृतियाँ आदि उभरे बिन्दुओं से बनी हों जिस पर बच्चे अपने हाथों की उंगलियों से आकृतियों को फेरकर अनुभव करें। उपरोक्त के क्रम में कुछ पृष्ठ खाली छोड़ दिए जाएँ (स्क्रिबलिंग हेतु) जिसमें बच्चे पिछले पृष्ठ के अनुभवों को पेंसिल की सहायता से बनाएँ। आगे के पृष्ठों में घने बिन्दुओं से बनी आकृतियों को स्थान दें और उसके उपरान्त पृष्ठों में बनी आकृतियों में बिन्दुओं के बीच की दूरी बढ़ाते जाएँ (सरल से कठिन की ओर)। इस प्रकार के अभ्यास बच्चों के अनुभवों को समाहित करते हुए उनके हाथों की मांसपेशियों का विकास करते हैं।

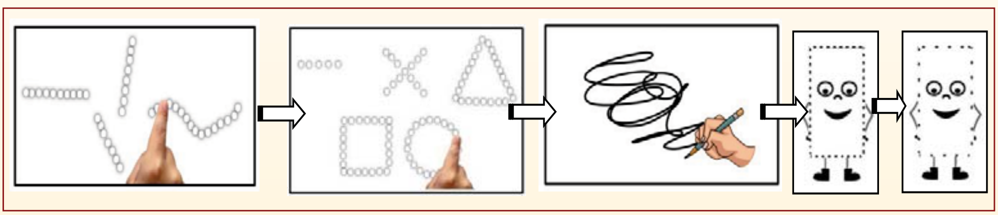

- बच्चों को रंग भरने हेतु चित्र दिए जाएँ जिससे रंगों की पहचान व वस्तु से सम्बंधित रंगों की अवधारणा विकसित होने के साथ मांसपेशियाँ सक्रिय होंगी।
- संख्या पूर्व अवधारणा से सम्बन्धित पुस्तकों का निर्माण होना चाहिए ।

  भाषा विकास हेतु बाल साहित्य को ध्यान में रखते हुए पुस्तकों का निर्माण होना चाहिए।

  नोट– उपरोक्त पुस्तकों के निर्माण के लिए कक्षा के अनुभवों, उनकी योजनाओं को ध्यान में रखते हुए बच्चों में अवधारणाएँ (भाषायी एवं गणितीय) स्पष्ट करने हेतु शिक्षक हैंडबुक भी विकसित कर सकते हैं।

(ख) 6 से 8 वर्ष के आयु वर्ग के लिए:–

इस आयु वर्ग हेतु पुस्तकों व पाठ्यपुस्तकों में विषयवस्तु कम, पाठ्यक्रम में लचीलापन, रचनात्मकता, चर्चा, विश्लेषण, उदाहरण और अनुप्रयोगों को सम्मिलित किया जाना अति आवश्यक है। अतः पुस्तकों व पाठ्यपुस्तक निर्माण हेतु निम्नलिखित मुख्य बातों को ध्यान में रखना चाहिए–

- विषयवस्तु लचीली, सरल व आकर्षक होने के साथ ही ऐसी हो जिसमें बच्चों को स्वयं कार्य करने का अवसर मिले। कार्यपुस्तिका का निर्माण इसमें सहायक हो सकता है।
- पाठ्यपुस्तकों की विषयवस्तु व गतिविधियाँ केवल पाठ्यपुस्तक तक सीमित न रहकर ऑडियो–विजुअल सामग्री द्वारा संवर्धित की जानी चाहिए। इसके लिए पाठ्यपुस्तकों पर उपयुक्त QR कोड की सहायता ली जा सकती है।
- विषयवस्तु लर्निंग आउटकम आधारित अवश्य होना चाहिए।
- पाठ्यपुस्तकों में शिक्षकों को उनकी पसन्द की सामग्री का उपयोग करने की आवश्यकतानुसार स्वतन्त्रता दी जानी चाहिए।
- पाठ्यपुस्तक में ज्मगज सरल लिखा गया हो और उससे संबंधित चित्र आवश्यकतानुसार रंगीन व स्पष्ट होना चाहिए। लेकिन सरलता से कठिनाई का प्रतिशत बढ़ता रहना चाहिए।

उक्त तथ्यों को समाहित करने के साथ दोनों आयु वर्ग वाले बच्चों के लिए पुस्तकों व पाठ्यपुस्तकों को निर्माण हेतु कुछ संयुक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखना चाहिए:–

पुस्तकों / पाठ्यपुस्तकों का निर्माण पूर्व में निश्चित दक्षताओं को प्राप्त करने पर आधारित होना चाहिए।

- पुस्तकों / पाठ्यपुस्तकों का निर्माण करते समय भाषा में मौखिक भाषा, phonics और शब्द समाधान, निर्देश, अर्थ निर्माण, विषयवस्तु के सुसंगत मैपिंग, अधिगम सम्प्राप्ति आदि को ध्यान में रखना चाहिए।
- पुस्तकों / पाठ्यपुस्तकों का निर्माण करते समय डिजिटल तकनीकी का सहयोग लिया जाना चाहिए।
- विषयवस्तु सरल से कठिन की ओर, परिचित से अपरिचित की ओर संतुलित होनी चाहिए।
- चित्रों में प्रयोग किए गए रंग, थीम और डिजाइन आकर्षक व सुसंगत होना चाहिए। लिखित सामग्री के फॉन्ट का आकार स्पष्ट व बड़ा होना चाहिए।

- ❖ विषयवस्तु के चयन में राज्य के अन्तर्गत क्षेत्रीय भिन्नताओं, लिंग, समानता, सामुदायिक प्रतिनिधित्व, संस्कृति आदि को समाहित किया जाना चाहिए।
- ❖ पाठ्यपुस्तक में सीखने के कार्यों, गतिविधियों, परियोजनाओं, सरल प्रयोगों के साथ–साथ आकलन प्रक्रियाएँ भी सम्मिलित की जानी चाहिए। आकलन हेतु आकलन उपकरण, रूब्रिक, वर्कशीट्स, गतिविधि शीट्स आदि को इस प्रकार सम्मिलित किया जाना चाहिए कि बच्चे स्वयं स्वतन्त्र रूप में करके सीख सकें।

12.5.2 पुस्तक/पाठ्यपुस्तक के विकास की प्रक्रियाः–

पाठ्यपुस्तक विकास के सिद्धांतों को लागू करने के लिए अग्रलिखित चरण हो सकते हैं–

(क) पाठ्यक्रम दस्तावेज का निर्माण– विषयवस्तु की दक्षताएँ, सीखने के प्रतिफलों, विषयवस्तु की प्रकृति, शिक्षणशास्त्र और आकलन, उद्देश्यों, अवधारणाओं, प्रश्नों, गतिविधियों, रणनीतियों, आदि को पाठ्यक्रम दस्तावेजों में चयन करना चाहिए लेकिन चयन संज्ञानात्मक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक हो।

(ख) पाठ्यपुस्तक लेखकों, डिजाइनरों/चित्रकारों और समीक्षकों का पैनल–

(i) पाठ्यपुस्तक लेखक और समीक्षक– इसमें विषय विशेषज्ञ, विश्वविद्यालयों के अध्यापक, शोधकर्ता व शिक्षकों का एक समूह अवश्य ही सम्मिलित होना चाहिए।

(ii) डिजाइनर/चित्रकार– इस कार्य हेतु ऐसे लोग/संगठन सम्मिलित किए जाने चाहिए जिन्हें संदर्भ एवं डिजाइन की समझ हो।

(iii) तकनीकी विशेषज्ञ– तकनीकी विशेषज्ञ शुरू से ही पाठ्यपुस्तक टीम का हिस्सा होना चाहिए जिससे पाठ्यक्रम व गतिविधियों को ध्यान में रखते हुए डिजिटल सामग्री क्यू आर कोड के माध्यम से उपलब्ध हो सके।

(ग) पेडागॉजी (शिक्षणशास्त्र), विषयवस्तु और आकलन का चयन– प्रत्येक कक्षा की विषयवस्तु अगली कक्षा के लिए अग्रगामी होनी चाहिए। विषयवस्तु और सीखने के प्रतिफलों के साथ पेडागॉजी और आकलन का संरेखण सुनिश्चित करना आवश्यक है।

(घ) पाठ्यपुस्तक की संरचना और प्रयुक्त भाषा– पाठ्यपुस्तक की भाषा सरल व स्पष्ट होनी चाहिए। विषयवस्तु का संक्षिप्त ब्योरा हर अध्याय के बाद अधिगम प्रतिफल के साथ देना चाहिए। विशिष्ट उदाहरणों के साथ आकलन के विभिन्न तरीके होने चाहिए।

(ङ) लेखन, समीक्षा और प्रायोगिक संचालन– पाठ्यपुस्तक में लेखन आवश्यकता को परिभाषित करने और दोहराने के लिए चित्रकारों के साथ नियमित बैठकें आवश्यक हैं। इसके द्वारा लेख, छवियों, विचारों की पुनरावृत्ति से बचने में सहायता मिलती है। फीडबैक में सुझाव और वैकल्पिक विचार सम्मिलित होने चाहिए। पाठ्यपुस्तक के लिए समीक्षा अध्यायवार और फिर समग्ररूप से की जानी चाहिए। पाठ्यपुस्तकों के प्रायोगिक संचालन के दौरान लेखकों को विद्यालय का दौरा करना चाहिए और कक्षा के अवलोकन, शिक्षकों, बच्चों, अभिभावकों के साथ बातचीत और पाठ्यपुस्तक के बारे में प्रतिक्रिया प्राप्त करनी चाहिए।

(च) पाठ्यपुस्तकों पर शिक्षकों का उन्मुखीकरण (Orientation)– पाठ्यपुस्तक की उत्पत्ति, उसके तर्क, शिक्षणशास्त्र और आकलन के दृष्टिकोण, कक्षा में इसके उचित उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए शिक्षकों का आमुखीकरण करने का प्रावधान होना चाहिए।

12.5.3 पाठ्यपुस्तकों के सार्थक उपयोग के लिए शिक्षक सहायता :–

यह प्रकरण पाठ्यपुस्तक में अवश्य सम्मिलित होनी चाहिए क्योंकि यह शिक्षक को पाठ्यपुस्तक के सार्थक उपयोग के बारे में इंगित करता है। इस प्रकरण में निम्नलिखित बिन्दुओं को सम्मिलित कर सकते हैं।

- ❖ प्रत्येक अध्याय / इकाई / पाठ हेतु दक्षतायें व सीखने के प्रतिफल हेतु दिशा–निर्देश होने चाहिए।
- ❖ पाठ्यपुस्तक में सीखने–सिखाने के कार्यों हेतु गतिविधियों, परियोजनाओं, क्षेत्र अध्ययन भ्रमण, आकलन जैसी प्रक्रियाओं पर शिक्षकों के लिए दिशा–निर्देश होने चाहिए।
- ❖ सीखने के प्रतिफलों व गतिविधियों से मिलती–जुलती सामग्रियों के बारे में भी बताया जा सकता है।
- ❖ पाठ्यपुस्तक की मूल भावना को समझने वाले मैनुअल को पुस्तकों में जोड़ा जाना चाहिए। जिससे शिक्षक पुस्तकों की मूलभाव को समझ कर शिक्षण कर सकें।
- ❖ पाठ्यपुस्तकों को अद्यतन (update) करने के लिए एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म (online Plateform) (ई–मेल आई. डी., फोन नंबर, व्हॉट्सऐप, विद्या समीक्षा केंद्र का सहयोग) होना चाहिए। जिस पर अध्यापक अपनी प्रतिपुष्टि (feedback) व सुझावों को साझा / प्रेषित कर सकें।

12.6 सीखने का सौहार्दपूर्ण वातावरण

फाउण्डेशनल स्टेज पर बच्चों के सीखने का परिवेश आकर्षक, खेल गतिविधियों युक्त, मनोरंजक, बालमैत्रिक, भयमुक्त, भेदभावमुक्त, तथा उनकी रुचियों के अनुसार खेल सामग्री से युक्त होना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 भी बच्चों के भयमुक्त एवं मनोरंजन गतिविधि के माध्यम से सीखने सिखाने के प्रक्रिया की सिफारिश करती है। सीखने के सौहार्दपूर्ण वातावरण के अंतर्गत ऐसा सकारात्मक, नवोन्मेषी वातावरण तैयार करना जिसमें प्रत्येक बच्चा सीखने के लिए स्वतः प्रेरित हो सके। समावेशी, स्वागत करने वाला, आनंदमय वातावरण का सृजन करना जिसमें प्रत्येक बच्चे की भागीदारी भी सुनिश्चित हो सके। बुनियादी स्तर पर बच्चों के सीखने के परिवेश में निम्नलिखित सुझावों को सम्मिलित कर बच्चों के सीखने की गति को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

- ❖ कक्षा कक्ष का वातावरण, स्वच्छ, प्रकाशमय एवं हवादार होना चाहिए।
- ❖ बच्चे स्वयं को सुरक्षित एवं आमंत्रित महसूस कर सके।
- ❖ बच्चों के पूर्व और नवीन अनुभवों का सन्तुलन होना चाहिए। समावेशी, सीखने के वातावरण में प्रत्येक बच्चे की भागीदारी सुनिश्चित हो सके।
- ❖ बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु विभिन्न सामग्रियों का संतुलन होना चाहिए।
- ❖ बच्चों को व्यक्तिगत एवं सहकारी कार्य करने हेतु स्वतंत्रता होनी चाहिए।
- ❖ बच्चों के कार्यों को प्रदर्शित करने हेतु एवं कार्यों की प्रगति को संरक्षित करने की भी स्वतन्त्रता होनी चाहिए।

BALA (Building As Learning Aid)- BALA आधारित विद्यालय भवन व कक्षा कक्ष की दीवारें ऐसी होनी चाहिए जिन पर बच्चों के पसंद के चित्र, कार्टून व अन्य ऐसी आकृतियाँ उकेरी गई हों जो बच्चों के प्रारंभिक स्तर के पठन, गणितीय कौशल को बढ़ाने वाली हों। ऐसी आकृतियों में कार्टूनों के माध्यम से अक्षर, जानवरों, पशु–पक्षियों, फलों–फूलों आदि के चित्र सम्मिलित होने चाहिए। दीवारों, फर्श व छतों के निचले हिस्से पर इस तरह की पेंटिंग का समावेश करना चाहिए जो भाषा व गणितीय कौशल को सीखने व उनके सर्वांगीण विकास में बच्चों के लिए मददगार होगा।

बैठक व्यवस्था– कक्षा–कक्ष में बैठक व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जिससे शिक्षक कक्षा के प्रत्येक बच्चे से सीधे नेत्र सम्पर्क रख सकें और बच्चों को स्वतंत्र रूप से कार्य करने के साथ ही समूह में कार्य करने का अवसर मिल सके। बच्चों को कक्षा–कक्ष में स्वच्छ मैट या छोटे–छोटे डेस्क बेंच पर बैठने की व्यवस्था हो। हर बच्चे के पहुँच में कम से कम 2*1 का ब्लैकबोर्ड भी उपलब्ध हो जिस पर बच्चे अपने पसंद के अभ्यास कार्य भी कर सकें।

खेलने का स्थान– खेलना छोटे बच्चों को बहुत प्रिय होता है। अतः खेल–खेल के माध्यम से बच्चों को सीखने का अवसर उपलब्ध कराने के लिए इस प्रकार इंडोर/आउटडोर खेलने का स्थान निर्धारित करना चाहिए जहाँ उन्हें किसी भी प्रकार की बाधा, चोट अथवा अवरोध उत्पन्न न हो।

अभ्यास बोर्ड– प्रत्येक कक्षा में हर बच्चे की पहुँच में इस प्रकार का छोटा ब्लैक बोर्ड होना चाहिए जिस पर बच्चे अपने मनपसंद के चित्र, कार्टून, रेखाएं व आकृतियाँ बना सकें, उन्हें मिटा सकें और उसमें सुधार कर सकें। संभव हो तो इस तरह के बोर्ड बच्चों की बैठने वाली जगह से सटे दीवार की 1 फुट ऊँचाई पर बना हो, जिससे बच्चे बैठे–बैठे उस बोर्ड तक पहुँचकर अपना कार्य कर सकें।

लर्निंग कॉर्नर– फाउण्डेशनल स्टेज पर बच्चों को सीखने के लिए चार सीखने के कोनों का प्रबंध बच्चों की सीखने की गति को और अधिक बढ़ा सकता है। प्रत्येक कक्षा–कक्ष में नाटक कोना, ब्लॉक, पहेली व गणित कोना, चित्रकला का कोना, पुस्तकें और भाषा कोना बनाया जाना चाहिए, जहाँ पर उससे संबंधित सामग्री रखी हो और बच्चे अपने रुचि के अनुरूप उस सामग्री का प्रयोग करके सीखने को एक सही दिशा में आगे बढ़ा सकें।

पोर्टफोलियो– बुनियादी स्तर पर बच्चों के सीखने का आकलन करने और उसे सही दिशा में आगे बढ़ाने के लिए हर बच्चे का एक पोर्टफोलियो लिफाफा होना चाहिए, जिसके ऊपर आकर्षक ढंग से बच्चे का नाम लिखा हो तथा लिफाफे के भीतर बच्चों द्वारा की जाने वाली चित्रकला, लेखन व अन्य गतिविधियों के रिकॉर्ड संरक्षित किये जा सकें।

समय–सारणी– कक्षा–कक्ष में आकर्षक ढंग से बनी हुई समय–सारणी भी ऐसी जगह पर प्रदर्शित होनी चाहिए जो बच्चों को आसानी से दिखाई पड़े एवं बच्चे उसे देखकर समझ सकें।

नियम चार्ट– कक्षा में एक नियम चार्ट ऐसे स्थान पर लगा होना चाहिए जिस पर बच्चों के लिए व्यवस्थागत , स्वच्छता, अनुशासन आदि के निर्देश लिखे हों।

तिथि, दिन, समय व मौसम चार्ट– कक्षा में एक ऐसा चार्ट लगा होना चाहिए जिस पर तिथि, दिन व उस दिन के मौसम आदि की जानकारी आकर्षक ढंग से प्रदर्शित हो।

बाल गतिविधि बुलेटिन बोर्ड– कक्षा–कक्ष में एक ऐसा चार्ट हो जिस पर बच्चे अपनी पसंद के कार्टून, चित्र, आकृतियाँ, अक्षर, छोटे–छोटे शब्द, वाक्य आदि लिखकर या बनाकर चिपका सकें। इसी तरह शिक्षक द्वारा तैयार बाल उपयोगी आकृतियाँ, जानकारियाँ व निर्देश भी एक चार्ट पर लगा होना चाहिए।

मिट्टी या क्ले का डिब्बा– बच्चों को गीली मिट्टी या क्ले का एक ऐसा डिब्बा उपलब्ध होना चाहिए जिसमें गीली मिट्टी या क्ले का उपयोग बच्चे विभिन्न आकृतियों को बनाने में कर सकें। इससे उनकी मांसपेशियाँ मजबूत होती हैं और वह आकृतियाँ बनाने में दक्ष हो पाते हैं।

पोषण वाटिका– परिसर में एक ऐसी जगह हो जहाँ पोषण वाटिका (किचन गार्डेन) विकसित किया जाए जिसमें बच्चे छोटे–छोटे पौधों को उगने से लेकर उनके बड़े होने व फल देने आदि को प्रत्यक्ष देखकर महसूस कर सकें।

ट्रैकर– कक्षा–कक्ष में एक स्थान ऐसा होना चाहिए जहाँ बच्चों के व्यक्तित्व के विकास के विविध पक्षों का अंकन शिक्षक द्वारा किया जा सके। यह उनके सीखने की प्रक्रिया को और उन्नत बनाने में मददगार साबित हो सके।

लर्निंग रूफ– कक्षा–कक्ष की छत से कुछ नीचे रस्सी एवं तार के माध्यम से आकृतियों का निर्माण कर शिक्षण सामग्रियों को टाँगा जा सकता है।

गणित वाटिका– विद्यालय प्रांगण में गणित के विभिन्न पैटर्न व आकृतियों का निर्माण अनुपयोगी वस्तुओं जैसे बोतल, टायर, लकड़ी, ईंट के माध्यम से किया जा सकता है।

रीडिंग कॉर्नर– कक्षा–कक्ष में एक कोना, अलमारी व मेज पर बच्चों की रुचि एवं आयु के अनुरूप कहानी, कविताओं मूल्य पर आधारित पुस्तकों का संकलन किया जा सकता है जो बच्चों की पहुँच तक हो।

बिंदु, लाइन बोर्ड– श्यामपट्ट पर या हरी पट्टी पर कुछ स्थान में बिंदुओं एवं लाइनों के माध्यम से एक बोर्ड का निर्माण किया जा सकता है जिसमें बच्चे बिंदुओं को मिलाकर, लाइनों में लिखकर अपने लेखन कौशल में दक्षता हासिल कर सकते हैं।

मैग्नेटिक बोर्ड– लकड़ी के फ्रेम के ऊपर लोहे की पतली चद्दर की शीट से तैयार किया जा सकता है। इसमें वर्ण, अंकों, शब्दों के पीछे चुम्बक को पेस्ट कर सीखने को रोचक और स्थायी बनाया जा सकता है।

लिस्निंग कॉर्नर– कक्षा–कक्ष में एक कोने पर ऑडियो डिवाइस के माध्यम से लिस्निंग कॉर्नर का निर्माण किया जा सकता है। इसमें विभिन्न प्रकार के ऑडियो डिवाइस को रखा जा सकता है जिससे बच्चों में ध्यान से सुनने की आदत का विकास हो सके।

चित्र हमारे मित्र– चार्ट पेपर, कार्ड शीट आदि के माध्यम से विद्यालय के आंतरिक एवं वाह्य वातावरण को आकर्षक एवं सीखने योग्य बनाया जा सकता है।

अभिवादन द्वार– बच्चों का स्वागत अलग–अलग ढंग से किया जा सकता है। जैसे– हाथ जोड़कर, मिलकर, बिंगो करके, उंगलियाँ मिलाकर हाथ मिलाना आदि। इसके लिए कक्षा–कक्ष, विद्यालय के मुख्य दरवाजे को सजाया भी जा सकता है।

ईजल बोर्ड– यह बोर्ड कक्षा में रखकर उसमें फुरैरी एवं रंग के साथ बच्चा स्वतंत्र चित्रण कर सकता है।

फलालैन बोर्ड– यह बोर्ड कक्षा में रखकर बच्चे उसमें से पसंद के पात्र उठाकर कोई भी कहानी बना सकते हैं।

गुड़िया घर– इसमें कठपुतलियाँ, सॉफ्ट टॉय आदि चीजें रखकर बच्चे टेडी बेयर को कपड़े, जूते पहना कर, बटन लगा सकते हैं, जिप लगाना, जूते के फीते बांधना आदि कार्य किया जा सकता हैं।

कार्ड फिट करना– बच्चों के लिए अलग–अलग विषयों के बोर्ड (जैसे– छोटा–बड़ा, कम–ज्यादा) रखकर उनमें दूसरी ओर उसी विषय का कार्ड फिट किया जा सकता है।

अभिव्यक्ति मंच– यह एक कोने में निर्माण कर बच्चों को स्वतंत्र छोड़ दिया जाए जिसमें बच्चे जाकर कुछ बजायें और माइक पर कुछ बोलें या बात करें।

इस प्रकार उपरोक्त सामग्रियों के सम्मिलन से सीखने का ऐसा सौहार्दपूर्ण वातावरण तैयार होगा जो बच्चों को सीखने के अधिक व सुविधाजनक अवसर प्रदान करेगा।

❖❖❖

भविष्य की संभावनाएँ

राज्य पाठ्यचर्या : फाउण्डेशनल स्टेज, उत्तर प्रदेश जैसे बहुभाषी, बहुसांस्कृतिक, बहुधर्मी राज्य के लिए फाउण्डेशनल स्टेज की शिक्षा का एक ऐसा रोडमैप तैयार करता है, जिस पर सभी बच्चे स्वतंत्रतापूर्वक, आनंददायी परिवेश में खेल–खेल में सीखते हुए अपने आचार–विचार को परिष्कृत कर वांछित अधिगम सम्प्राप्ति कर सकेंगे। जहाँ सीखना उबाऊ न होकर रूचिपूर्ण होगा तथा अभिव्यक्ति के अवसर निरंतर कक्षा व कक्षा के बाहर भी उपलब्ध रहेंगे। जहाँ आकलन किसी बोझिल परीक्षा प्रणाली पर आधारित न होकर आनन्ददायी व बच्चों को बिना संज्ञानित कराये होगा।

राज्य पाठ्यचर्या शैक्षिक उत्कृष्टता की दिशा में एक व्यापक दिशा–निर्देश के रूप में विकसित की गयी है। प्रगतिशील शिक्षण पद्धतियों, अंतर–विषयक शिक्षा, राज्य की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत, विभिन्न क्षेत्रों में बोली जाने वाली भाषाओं की विस्तृत श्रृंखला, अद्वितीय साहित्य, कला, स्थानीय समुदायों और हितधारकों की अधिक सक्रिय भूमिका जैसे विविध तत्वों को एक साथ जोड़कर यह रूपरेखा प्रत्येक छात्र के लिए एक समृद्ध शैक्षिक अनुभव की कल्पना करती है। नवाचार और अनुकूलनशीलता के माहौल को बढावा देकर यह रूपरेखा ऐसे व्यक्तियों को तैयार करने का प्रयास करती है, जो तेजी से विकसित हो रही दुनिया में आगे बढ़ने के लिए अच्छी तरह से सुसज्जित है।

हम एक परिवर्तनकारी यात्रा पर आगे बढ रहे हैं। राज्य पाठ्यचर्या बौद्धिक जिज्ञासा, सामाजिक चेतना के पोषण के साथ शैक्षणिक रूप से सुदृढ़ व जिम्मेदार वैश्विक नागरिक तैयार करने हेतु प्रतिबद्ध है।

आज के नौनिहाल कल के नागरिक हैं, उनकी शिक्षा व्यवस्था जितनी बेहतर होगी, हमारे राष्ट्र की प्रगति का स्तर भी उतना ही उच्च होगा। राज्य पाठ्यचर्या इस बात को बड़ी तन्मयता एवं प्रतिबद्धता के साथ अपने सुझावों में प्रदर्शित करती है। इसके सुझाव नई पीढ़ी को पुरातन सांस्कृतिक मूल्यों, संस्कृति एवं आचार–विचार से परिचित कराते हुए भविष्य की आधारशिला तैयार करते हैं। राज्य पाठ्यचर्या बच्चों को आरंभिक स्तर पर स्वतंत्रता, पोषण, देखभाल, मार्गदर्शन एवं सहयोग के उन सिद्धान्तों पर आधारित है जो बौद्धिक स्तर के साथ–साथ सामाजिक, भावनात्मक एवं सांस्कृतिक विकास के लिए परम आवश्यक हैं। यह रूपरेखा वैश्वीकरण के दौर में अपनी सांस्कृतिक विरासत एवं प्राचीन ज्ञान पद्धति को अक्षुण्ण रखते हुए तकनीकी की नवीन पद्धतियों को अंगीकार कर शिक्षा व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन के साथ **'एक भारत–श्रेष्ठ भारत'** की संकल्पना को साकार करेगी।

समग्र विकास, आलोचनात्मक सोच, समावेशन और 21वीं सदी के कौशल पर जोर देकर इस रूपरेखा का लक्ष्य एक मजबूत शैक्षिक पारिस्थितिकी तंत्र बनाना है जो छात्रों को लगातार बदलती दुनिया में सफलता के लिए तैयार करती है। सीखने के परिणामों को बढ़ाने, शिक्षकों को सशक्त बनाने और उत्तर प्रदेश के शैक्षिक परिदृश्य के समग्र विकास में योगदान प्रदान करने हेतु इसका प्रभाव उत्सुकता से अपेक्षित है।

अपने लचीले और समावेशी प्रारूप के माध्यम से यह रूपरेखा शिक्षार्थियों की एक ऐसी पीढ़ी को प्रेरित करती है जो चुनौतियों का सामना करने, अवसरों को अपनाने और बड़े पैमाने पर अपने समुदायों और दुनिया के लिए सार्थक योगदान देने के लिए तैयार है। राज्य पाठ्यचर्या के सुझावों के आधार पर हम यह आशा करते हैं कि उत्तर प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था के प्रारम्भिक स्तर पर एक ऐसा ढाँचा खड़ा होगा जो भविष्य के जिम्मेदार, नैतिक, विवेकशील, कर्तव्यपरायण, स्वस्थ मनःस्थिति के ऐसे नागरिक तैयार करेगा जो प्रदेश एवं देश ही नहीं अपितु वैश्विक विकास में अपना सर्वोत्कृष्ट योगदान प्रदान कर सकेंगे।

❖❖❖

सन्दर्भ (References)

1. Pre-Primary Curriculum (age group 3-6) S.C.E.R.T. U.P
2. National Education Policy (NEP 2020), HRD Ministry, Government of India.
3. National Curriculum Framework: Foundation Stage, Ministry of Education, Government of India.
4. School Readiness, Activity Calendar (2023-24) Samagra Shiksha, SPO, U.P., Lucknow.
5. NIPUN Bharat Document 2021, Government of India.
6. https://censusindia.gov.in/
7. http://egyankosh.ac.in
8. Mathematics Teachers Resource Book, 2019, NCERT, New Delhi ISBN978-93-5292-132-4
9. Mathematics Learning Kit, 2017, NCERT, New Delhi
10. Manual of Mathematics Learning Kit, 2017, NCERT, New Delhi ISBN978-93-5007-832-7
11. मजेदार है गणित 2019, NCERT, New Delhi ISBN- 978-93-5292-157-7
12. The Salmanca statement and framework for action of special needs education spain : UNESCO (1994).
13. World Declaration on Education for all Jomtien : UNESCO (1990).
14. Ahuja, A. (2020). Universal Design of Learning for Effective Learning. Retrieved from Education. gov:https://www.education.gov.in/shikshakparv/does/Anupam_ahuja.pdf.
15. Handbook of Inclusive Education. Delhi:CBSE (2020)
16. Safety and Security: Framework and Approach- Samagra Shiksha, SPO, U.P., Lucknow.
17. Collaboration for Academic, Social and Emotional Learning (CASEL).
18. https://www.education.org/programs/social-emotional-learning
19. https://asantelim.files.wordpress.com/2018/05/daniel-goleman-emotional-intelligence.pdf.
20. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
21. https://compassion.emory.edu/SEE-learning.pdf
22. ACER India- Australian Council for Educational Research
23. Continuous and Comprehensive Evaluation- Guidelines (CCE) NCERT, New Delhi.
24. Textbook (Mathematics-Grade-1) NCERT, New Delhi.
25. NDEAR (ndear.gov.in)
26. vdn.diksha.gov.in
27. https://bhashini.gov.in/en
28. Earthgoogle.in
29. https://bhashini.gov.in/ulca
30. शबरी के बेर – डॉ. कुसुम मानसी द्विवेदी

राज्य पाठ्यचर्याः फाउण्डेशनल स्टेज, उत्तर प्रदेश का विकासशील स्वरूप एवं समावेशन

राज्य पाठ्यचर्याः फाउण्डेशनल स्टेज, उत्तर प्रदेश का विकास राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश, लखनऊ द्वारा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखाः फाउण्डेशनल स्टेज एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के आलोक में शैक्षिक गुणवत्ता के विस्तृत विकास क्रम, समावेशी और पुनरावृत्ति वाली प्रक्रिया के अंतर्गत किया गया है। इस हेतु देश के प्रख्यात शिक्षाविदों, प्रदेश के विभिन्न विद्यालयों के शिक्षकों व प्रशिक्षण संस्थानों के शिक्षक–प्रशिक्षकों एवं कई स्वयंसेवी संस्थाओं के विशेषज्ञों ने कार्यशालाओं में उपस्थित रहकर विस्तृत चर्चा की, जिसके फलस्वरूप शिक्षा के नए आयाम गढ़ने हेतु यह पाठ्यचर्या प्रस्तुत है।

संगोष्ठियों एवं कार्यशालाओं का आवश्यकतानुसार आयोजन किया गया, जिसमें प्रतिभागियों ने प्रत्येक बिंदु पर अपने अनुभव एवं विचार साझा किये। बुनियादी शिक्षा पर विषय–विशेषज्ञों की अपेक्षाएँ जानकर एवं सुझाव आमंत्रित कर यथावश्यक समावेशित किये गए। पाठ्यचर्या विकास के क्रम में विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अभिभावकों को केन्द्र में रखते हुए कई विषयों के बहुतायत विद्वान, विशेषज्ञ, तथा तमाम प्रतिभागियों के बहुमूल्य विचार सम्मिलित कर एक सुगठित प्रक्रिया तैयार की गयी।

यह राज्य पाठ्यचर्या उस प्रभावी समावेशी प्रक्रिया का सकारात्मक परिणाम है, जिसमें ख्यातिलब्ध शिक्षाविदों, शिक्षकों, राज्य के प्रासंगिक सरकारी विभागों, प्रशासकों, विद्यालयों, शिक्षा क्षेत्र में काम कर रहे सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों, विभिन्न क्षेत्रों के परामर्शदाताओं व प्रदेश के अन्य नागरिकों की सहभागिता समाहित है।

संस्करण 1.0 (ड्राफ्ट प्रारूप)
इस दस्तावेज को अद्यतन करना जारी रहेगा।
अमूल्य सुझाव आवश्यकता एवं उपादेयता के अनुसार सम्मिलित किये जा सकेंगे।

मुझे इस बात की अत्यन्त प्रसन्नता है कि उत्तर प्रदेश राज्य, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रुपरेखारू फाउण्डेशन स्टेज के आलोक में राज्य पाठ्यचर्याः फाउण्डेशनल स्टेज प्रस्तावित करने वाले कुछ आणी राज्यों में है। यह कदम सामग्री निर्माण की प्रक्रियाओं, शिक्षक–प्रशिक्षणों और कक्षा–कक्ष में सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं को राज्य पाठ्यचर्या के सिद्धांतों के अनुरूप बनाने में शिक्षक–प्रशिक्षकों और शिक्षकों की मदद करेगा। इसके परिणामस्वरूप उत्तर प्रदेश के सन्दर्भ में अनुकूलित राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रुपरेखा फाउण्डेशनल स्टेज की सिफारिशें केवल कागजों पर ही नहीं होगी, बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वाले सभी व्यक्तियों एवं संस्थाओं के लिए आसानी से उपलब्ध रहेंगी। यह राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश और उन सभी लोगों द्वारा जो इसे इस स्वरूप में लाने में शामिल रहे हैं, उनके द्वारा किया गया एक वृहद और महत्वपूर्ण प्रयास है। मैं, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश को उनके इस कार्य के लिए बहुत शुभकामनाएँ देता हूँ और आशा करता हूँ कि राज्य द्वारा प्रस्तावित राज्य पाठ्यचर्याः फाउण्डेशनल स्टेज, राज्य में शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वाली सभी इकाइयों के लिए मार्गदर्शक का काम करेगी।

धीर झिंगरन
संस्थापक एवं कार्यकारी निदेशक
लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउण्डेशन, नई दिल्ली

I express my heartfelt appreciation to the SCERT Uttar Pradesh for the outstanding task of development of State Curriculum: Foundational Stage. The dedication, hard work and attention to details covered in this document are truly remarkable. The seamless organisation of content with so much clarity over content makes it a robust document that would help the State and other stakeholders in the smooth execution of all its aspects. The flow of the document is engaging and covers all aspects of foundational stages viz creating learning environment, seamless assessment process, achievable curricular goals, joyful pedagogy and engagement of various stakeholders, etc. I congratulate once again to the whole team, especially to the teachers who have come out from their comfort zone and owned this mammoth task of development of State Curriculum: Foundational Stage. Your tremendous amount of time spent on it and efforts placed while developing this document would surely be helpful in bringing remarkable impact on young children, in the years to come.

Dr. Reetu Chandra
Deputy Secretary
ECCE & FLN Mission
Ministry of Education,
Government of India

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

पता : जे.बी.टी.सी. कैम्पस, निशातगंज, लखनऊ
दूरभाष : 0522–2780385, 2780505, फैक्स : 0522–2781125
ई–मेल : dscertup@gmail.com
वेबसाइट : www.scert-up.in
फेसबुक : @dscertup

मुद्रक : प्रकाश पैकेजर्स, लखनऊ